

सिद्धि प्रकाशन

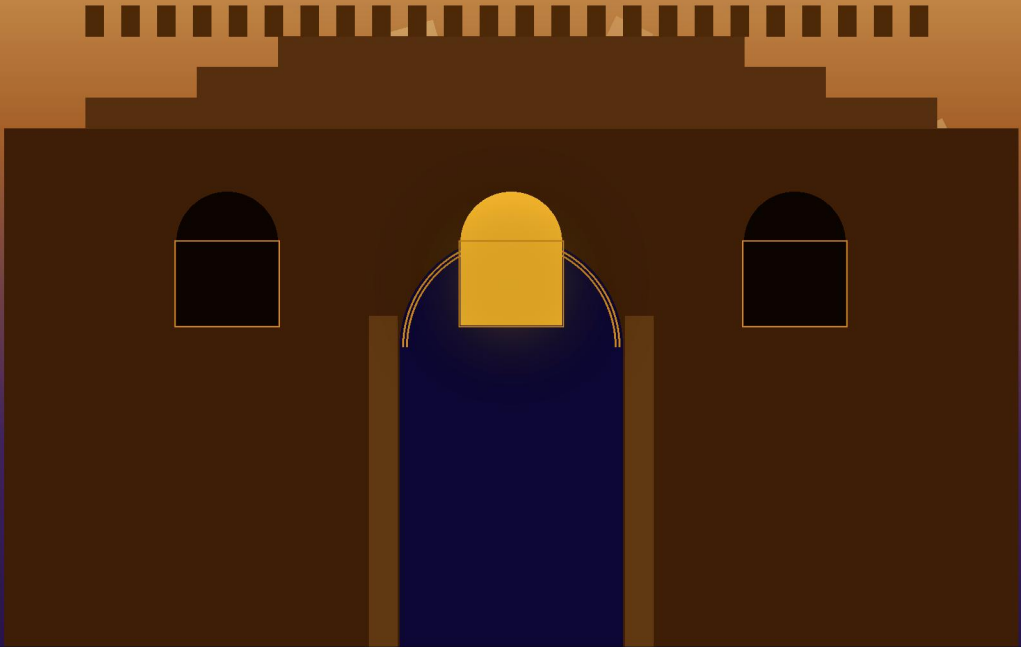
मैथिली उपन्यास

पातक भीतर लिखल नाँव

१९३४ केर मिथिला · २०२६ केर वर्तमान

एकटा घर · एकटा ताला · अनभिमत नामहीन कागच

३२० पन्नास · १०९९ शब्द



गजेन्द्र ठाकुर

पातक भीतर लिखल नाँव

पातक भीतर लिखल नाँव

मैथिली उपन्यास

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह • २०२६

© गजेन्द्र ठाकुर, २०२६

सर्वाधिकार सुरक्षित।

प्रथम संस्करण: २०२६

भाषा: मैथिली

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

अनुक्रमणिका

अध्याय १ — घर खोलबाक दिन	१
अध्याय २ — दोसर लिखाइ	११
अध्याय ३ — पात	२६
अध्याय ४ — पन्द्रह जनवरी	४२
अध्याय ५ — खिच्चड़ घर	५३
अध्याय ६ — माधवी	६५
अध्याय ७ — कुर्थीक मास	७८
अध्याय ८ — नूनक माप	८९
अध्याय ९ — तिलकोर	१०६
अध्याय १० — पोखरिक आँखि	११८
अध्याय ११ — भाप	१२७
अध्याय १२ — माछक काँट	१३६
अध्याय १३ — अक्षर	१४५
अध्याय १४ — जे शब्दक अनुवाद नहि	१५५
अध्याय १५ — तरुआक थारी	१६५
अध्याय १६ — आमक अमट	१७३

अनुक्रमणिका — क्रमशः

अध्याय १७ — अरिकञ्चन	१८६
अध्याय १८ — नाम रहित विधि	१९७
अध्याय १९ — जनकपुरक बाट	२०६
अध्याय २० — वर्षा	२१६
अध्याय २१ — अदौरी	२२६
अध्याय २२ — पिरुकियाक मोड़	२३५
अध्याय २३ — काटल पाँति	२४५
अध्याय २४ — भोजक बाहर	२५७
अध्याय २५ — छपल लेख	२६८
अध्याय २६ — जे नहि कहल गेल	२८०
अध्याय २७ — एखनक भानस	२९३
अध्याय २८ — स्वादक मालिक	३०४
अध्याय २९ — रेणुकाक स्मृति	३१४
अध्याय ३० — अन्तिम पात	३२५
अध्याय ३१ — सम्पादकक अपराध	३३६
अध्याय ३२ — नाँव सहित	३४८

अध्याय १ — घर खोलबाक दिन

फाटक पर लटकैत पुरान ताला मृणालिनी केँ पहिल नजरिमे ओतेक पुरान नहि लगल जतेक ओकर भीतरक संकोच। पीतल पर हरियर मैल चढ़ि गेल छल, मुदा कुंजी छेदक चारू कात अँगुरीक घिसावट एखनो चमकि रहल छल—जेना घर बहुत दिन सँ बन्द रहितहुँ ककरो प्रतीक्षा करैत रहल हो। गलीक ओ पार पीपड़क छाँह धरि धूप सरकि गेल छल। भादवक दुपहरि छल; हवा भारी, स्थिर। ओ अपन थैला जमीन पर राखि कुंजीक गुच्छा निकाललक। तीन कुंजी पहिने सँ चिन्हल छल, मुदा चौठम, जे सबसँ छोट छल, ताहिपर बसन्ती काकी लाल सूत बन्दि देने छलीह। फोन पर हुनक बात मोन पड़ल—“लाल सूतवला कुंजी फाटकक अछि। जोर नहि दिअ, धीरे घुमायब; ताला बूढ़ भऽ गेल अछि।”

मृणालिनी हँसल नहि। बूढ़ ताला, बूढ़ घर, बूढ़ स्मृति—घर छोड़ि शहरमे बीतल वर्षसभ ओकर भीतर एहन शब्दक प्रति सहिष्णुता घटा देने छल। मुदा कुंजी घुमेबाक पहिल प्रयत्नमे जखन ताला अड़ि गेल, तखन ओ सचमुच ओकरा मनुख जकाँ मनबयबाक ढङ्ग अपनौलक। एक बेर उलटा घुमेलक, फेर धीरे भीतर धकेललक। धातुक भीतर सँ किरकिराहट उठल। दोसर घुमाव पर ताला खुलि गेल।

फाटक धकेलिते धूलिक महीन गन्ध आ पुरान पातक सड़ल गन्ध एक संग बाहर आयल। आँगन पर आमक पात, सुखायल फूल, दुई-तीन पतरा आ कतहुँ सँ उड़ि आयल प्लास्टिकक हलुक टुकड़ा पड़ल छल। मृणालिनी पहिले ओहि प्लास्टिके पर नजरि अटकौलक। घरक भित्ति पर पलस्तर झड़ल छल, ओसारक एक कोनमे काई जमल छल, लकड़ीक झरोखा धूसर भेल छल; मुदा बीच आँगनमे प्लास्टिकक उज्जर-नील टुकड़ा सभसँ नबका वस्तु छल, आ तँ सभसँ बेसी अनुपयुक्त। ओ झुकि ओकरा उठा कऽ थैलाक बाहरी खोहमे राखलक।

आँगनक बीच ठाढ़ भऽ ओ चारू दिश ताकलक। एहि घरमे ओ कोन उम्र धरि अपन छल? प्रश्न सहज नहि छल। बाल्यकालमे ग्रीष्मक छुट्टी, विवाह-उत्सव, श्राद्ध, कोनो बुजुर्गक बीमारी, ककरो जन्म—घर एक समय परिवारक घटना-पंजी छल। पाछाँ लोक कम भेल, कोठली बन्द होइत गेल, छत पर वस्त्र सुखौनिहार स्त्रीसभ नहि रहल, आँगनक हँसी फोनक आवाजमे सिमटि गेल। अन्तिम बेर ओ पाँच वर्ष पहिने आयल छल, तखन बाबा जीवित

छलाह। बाबा कहने छलाह, “घरक कागज एक बेर देखिहें। जे बाँचल अछि, ओकर अर्थ बुझनिहार लोक कम होइत जा रहल अछि।” ओ हँसि कऽ कहने रहए—“अहाँ रहब तऽ अर्थ कहाँ भागत?” बाबा उत्तर नहि देने छलाह।

एखन ओहि वाक्यक उत्तर पूरा घर बनि कऽ सोझाँ ठाढ़ छल।

ओसारक पहिल कोठली खोलला पर बन्द हवा ओकर चेहरा पर लागल। खटियाक बुनावट ढीली पड़ल छल। भित्ति पर काँचक भीतर राखल कृष्ण-राधाक पुरान छवि टेढ़ भेल छल। कोनमे पितरक लोटा उलटल पड़ल, ओकर भीतर छिपकलीक सुखायल बीट। मृणालिनी खिड़की खोलबाक प्रयास केलक, मुदा किवाड़ फँसल। ओ जोर लगेलक। लकड़ीक पट एकाएक छुटि खुलल आ बाहरक धूपक चौकोर टुकड़ा भुईँ पर पड़ल। धूलिक कण ओहि उजासमे एना तैरय लागल जेना बन्द समयक भीतर असंख्य छोट अक्षर उड़ि रहल हो।

मृणालिनी फोन निकालि पहिल फोटो लेल। फेर दोसर। फोटो खींचब ओकर आदत छल; किछु देखल जा रहल अछि, एहि बातक प्रमाण तुरन्त बनि जाइत छल। मुदा कैमरा बन्द करिते ओकरा बुझायल—फोटोमे गन्ध नहि जाएत। एहि कोठलीक गन्धमे सीलन, पुरान कपड़ा, सरिसो तेल, धूप, आ काठक किछु एहन शेष गन्ध छल जे ओकरा सीधा एक दुपहरिमे लऽ गेल, जखन ओ सात वर्षक छल आ ओही खटियाक नीचाँ लुकि कऽ पिरुकिया खा रहल छल।

“कनी धीरे-धीरे घर केँ पहचानू।”

पाछाँ सँ आवाज आयल। मृणालिनी घुमि देखलक। बसन्ती काकी फाटकक भीतर ठाढ़ छलीह। माथ पर सूती आँचर, एक हाथमे छोट झोरा, दोसर हाथमे स्टीलक डब्बा। हुनकर चाल पहिने सँ धीमा भऽ गेल छल, मुदा आँखिक चमक ओही छल।

“अहाँ कहने छलहुँ नौ बजे,” मृणालिनी कहलक।

“कहने रही, मुदा एतय आबि कऽ घड़ी देखब आवश्यक अछि?” बसन्ती काकी मुस्की देलीह। “घर पाँच बरख रुकल, अहाँ आध घंटा नहि रुकि सकलहुँ?”

मृणालिनी उत्तर खोजैत रहि गेल। बसन्ती काकी ओकर हाथ सँ कुंजीक गुच्छा लेलनि, एक नजरि आँगन पर फेरलनि आ बिना कोनो टिप्पणीक सीधा पाछाँ दिस बढ़ि गेलीह। ओ हुनका पाछाँ चलि पड़ल।

पाछाँक छोट ओसार सँ लगल भानसघरक किवाड़ बसन्ती काकी बिना कुंजी खोलि देलीह। “ई ताला कखनो बन्द नहि भेल,” ओ कहलनि। भीतर अन्हार छल। काकी पहिने रोशनदानक लकड़ी हटेलनि, तखन मृणालिनी देखलक—भित्ति पर कालिखक पुरान तह, नीचाँ ईटक चूल्हिक मुँह, बगलमे नवका गैस-चूल्हि जकर पाइप बहुत दिन सँ अलग पड़ल छल, ऊपर बाँसक मचान पर पितर-काँसक बासन। एक कोनमे सिलौट, जकर कात पर हरदि आ मरिचक रंग पत्थरमे घुसि कऽ स्थायी भऽ गेल छल।

“ई सभ राखब कि बेचब?” बसन्ती काकी पूछलनि।

“एखन किछु नहि। पहिने सूची बनत।”

“सूचीमे सिलौट लिखब?”

“हँ।”

“आ ई लिखब जे एहि पर अहाँक दादीक हाथ सँ पीसल सरिसोमे माछक झोरक स्वाद आबैत छल?”

मृणालिनी हुनकर मुख दिस ताकलक। “ओ सूचीमे कोना लिखब?”

“तखन सूची आधा होएत।” काकी बासन उतारैत सहज स्वरमे कहलनि।

ई हुनकर पुरान ढङ्ग छल। प्रश्न एना फेकैत छलीह जे उत्तर देनिहार पाछाँ जा कऽ ओकर भार बुझय। मृणालिनी किछु नहि कहलक।

काकी डब्बा खोललनि। भीतर चूड़ा छल। झोरामे सँ दहीक माटिक छोट हाँड़ी, दू केला, कनी गुड़, आ नूनक पुड़िया निकाललनि। “गैस चलत नहि। आगि धरबाक इंझट एखन नहि। पहिने किछु खा लिअ।”

“हम जलखै कऽ लेने छी।”

“शहरक जलखै घर खोलबाक जलखै नहि होइत अछि।”

मृणालिनी फेर हँसय चाहलक, एहि बेर हँसी निकलियो गेल। “घर खोलबाक जलखै अलग होइत अछि?”

“निश्चित। बन्द घर खाली पेट खोलल जाए तऽ सभ वस्तु बोझ लगैत अछि।”

काकी पुरान पीतलक थारी धोलनि। नल खोलला पर पहिने भूरा पानी आयल, फेर स्वच्छ। मृणालिनी कहलक—“एहि थारीमे नहि, स्टीलक थारी अछि न?”

“किएक?”

ओ किछु कहि नहि सकल। पीतलक थारीक किनारपर महीन खरोच छल; बीचक पीतल उज्जर पड़ल, बाहरी घेरा गाढ़। बसन्ती काकी चूड़ा राखलनि, ऊपर दही डाललनि, केला काटलनि, गुड़क छोट टुकड़ा कातमे, आ नून एक चुटकी अलग। “मिला कऽ खायब कि अलग?”

“अलग।”

“एखनहुँ?”

“की एखनहुँ?”

“बचपनमे सेहो अहाँ दही-चूड़ा मिला कऽ नहि खाइत छलहुँ। कहैत छलहुँ, सभ पदार्थ अपन रूपमे देखाइत रहय।”

मृणालिनी थारी दिस देखलक। ओकरा ई बात मोन नहि छल। मुदा चूड़ाक ऊपर दही नहि मिलौनिहार सात वर्षक बच्ची एक क्षण लेल ओकर सोझाँ आबि गेल—ओ बच्ची जे केलाक गोल टुकड़ा क्रम सँ सजाबैत छल, गुड़ अन्तमे खाइत छल, आ नूनक चुटकी दहीमे नहि, चूड़ाक एक किनार पर छिड़कैत छल।

पहिल कौर मुखमे पड़िते घरक गन्ध बदलि गेल। सीलनक ऊपर दहीक हलुक खट्टापन, चूड़ाक माटि-सन सुखायल गन्ध, केलाक मिठास, गुड़क धुँआर स्वाद। भोजन अत्यन्त साधारण छल; कदाचित एही कारण स्वादक बीच कोनो आडम्बर नहि छल जे स्मृति केँ रोकय। मृणालिनी धीरे खय लागल।

“दही बजारक अछि?” ओ पूछलक।

“नहि। काल्हि राति जमौने रही।”

“एतेक नीक जमल?”

“दही जमेनाइ सेहो सूचीमे लिखब?”

“अहाँ फेर शुरू भऽ गेलहुँ।”

“हम नहि, घर शुरू भेल अछि।”

मृणालिनी कौर रोकि काकी दिस देखलक। काकी अपन थारीमे चूड़ा भिजबैत छलीह, आँखि नीचाँ। हुनकर वाक्यमे नाटकीयता नहि छल। तँ ओकर असर बेसी भेल।

भोजनक बीच काकी पुरान बातसभ खोलय लगलीह—कोन बरख आम खूब भेल, कोन साल पोखरि सुखा गेल, दादी कतऽ सँ तिलकोरक बेल अनने छलीह, बाबा केँ कुर्थी दालि बहुत पसिन छल कि नहि, एहि पर हुनका स्वयं संशय छल। “जाड़मे एक मास तऽ घरमे कुर्थी चलबे करैत छल,” ओ कहलनि, “जानकी दाइ कहैत छलीह, सालमे एक मास खा लिअ, पथरी नै होएत। हम सभ सुनैत रही। केतेक सच, केतेक घरक मान्यता—ई तऽ अहाँ सभ पढ़ल लोक जानू।”

मृणालिनी सहज भावें फोनक नोट खोलय चाहलक, फेर हाथ रोकि लेलक। काकी खाइत छलीह। ई बात कागज बनबाक पहिने किछु क्षण बाते रहय, ई उचित लगल।

“जानकी दाइ?”

“अहाँक परदादीक ज्येष्ठ जेठानी। घरक भानसक सबसँ पैघ हुकुम हुनके चलैत छल।”

“हुनकर फोटो अछि?”

“फोटो होएत। मुदा फोटोमे आवाज कतऽ?”

मृणालिनी चुप रहि गेल। आइक दुपहरिमे दोसर बेर एके चोट लगल—पहिने फोटोमे गन्ध नहि, आब फोटोमे आवाज नहि। ओ बुझय लागल जे एतय कागज बचेनाइ मात्र काज नहि होएत।

**

दही-चूड़ा समाप्त भेला बाद बसन्ती काकी थारी धोबाक जिद केलनि। मृणालिनी रोकलक नहि। ओ आँगनमे कुर्सी निकालि फोन खोललक। ईशानक पाँच मिस्ट कॉल छल। ओ फोन करिते ओहि पार सँ तेज आवाज आयल—“पहुँचि गेलहुँ? दलाल चारि बजे आएत। मापी करनिहार सेहो भेंट करत। पाछाँक हिस्सा देखेनाइ आवश्यक अछि।”

“आइये?”

“हम तीन बेर लिखने रही।”

“हम बुझने रही कागज देखब पहिने।”

“कागज देखू, मुदा घरक बात तीन मासमे पूरा करबाक अछि। खरीदार प्रतीक्षा नहि करत। छत फेर मरम्मत चाहैत अछि, कर एखन धरि भरल अछि, आ खाली घर राखब सभ मास खर्च अछि।”

मृणालिनी आँगनक चारू कात देखलक। फोनक ओहि पार ईशानक तर्क बेठीक नहि छल। ई घर भावनासँ कर-मुक्त नहि होइत। भित्ति अपन मरम्मत स्वयं नहि करैत। किवाड़ स्मृतिक बल पर दीमकसँ नहि बचैत।

“तीन मास निश्चित?”

“अधिकतम। सभ सहमत अछि। बस कागज, फोटो, जे राखबाक हो से छाँटि लिअ। बाँकी हम देखब।”

‘सभ सहमत’ शब्द ओकरा चुभल। परिवारक कतेक ‘सभ’ एखन एहि घरक कोठलीक गन्ध चिन्हैत? मुदा ओ ईशान सँ झगड़ा नहि केलक। “चारि बजे आबू। मुदा कोनो सामान आइ बाहर नहि जाएत।”

“नीक। अहाँ पहिने संग्रहक सूची बना लिअ। एहि लेल तऽ अहाँ कँ बोलाओल गेल अछि।”

फोन कटि गेल।

“तीन मास?” पाछाँ सँ काकी पूछलनि।

“अहाँ सुनि रहल छलहुँ?”

“एहि आँगनमे धीरे बात करब तखनो सुनाइत अछि। पहिने एहि गुणक लाभ छल, आब दोष कहू।”

मृणालिनी फोन टेबुल पर राखलक। “घर बेचब निश्चित अछि।”

बसन्ती काकी कनी देर चुप रहलीह। हुनकर आँखि भित्तिक ओहि हिस्सा पर ठहरल जतय पलस्तरक नीचाँ पुरान मिथिला चित्रक लाल रेखा झलकैत छल। “घर लोकक रहला सँ घर रहैत अछि। खाली भेला पर देह बनि जाइत अछि। देह कतेक दिन सम्हारब?”

“तखन अहाँ बेचबाक विरोध नहि करैत छी?”

“हमरा विरोध करबाक अधिकार के देने अछि?”

प्रश्न फेर हलुक स्वरमे आयल, मुदा मृणालिनी कैँ उत्तर खोजय पड़ल। काकी एहि घरमे चालीस वर्षसँ अधिक समय विभिन्न रूपमे जुड़ल छलीह—पहिने दादीक संग काज, पाछाँ घर देखब, पूजा-पर्व पर आबि झाड़-पोछ, बन्द भेला पर मासमे एक बेर खिड़की खोलब। कागज पर घरमे हुनकर एक धूर जमीन नहि छल। स्मृतिमे कदाचित अनेक कोठली हुनकर बिना अधूर छल।

“अधिकार कागजसँ मात्र होइत अछि?” मृणालिनी स्वयं सँ बेसी हुनकासँ पूछलक।

काकी थारी पोछैत कहलीह, “अहाँ आइ बड्ड कठिन प्रश्न पूछैत छी। दही-चूड़ा खाइत समय एतेक कठिन प्रश्न नहि पूछल जाए।”

ओ मुस्की देलीह; तनावक गाँठ कनी ढीली भेल।

मृणालिनी अपन कार्य-योजना बनबय लागल। पहिल सप्ताह—कागज, पोथी, फोटो, पत्र, प्रमाणपत्र, पुरान खाताबही अलग। दोसर—बासन, वस्त्र, चित्र, हस्तशिल्प, पारिवारिक वस्तु। तेसर—जे डिजिटल प्रतिलिपि बनि सकय, ओकर फोटो वा स्कैन। ओ नोटमे लिखलक: “किछु फेकब नहि, जखन धरि दू बेर जाँच नहि।” फेर कनी सोचि जोड़लक: “नामहीन कागज सेहो राखब।”

बसन्ती काकी ओकर कान्ह पर झुकि पढ़य लगलीह। “नामहीन लोक?”

“की?”

“नामहीन कागज राखब लिखल अछि। नामहीन लोकक बात?”

मृणालिनी फोन बन्द कऽ देलक। “अहाँ आइ हमरा काज नहि करय देब।”

“काज कराउत घर। हम तऽ दही नेने आयल रही।”

काकी चलि गेलीह। फाटक बन्द करबाक पहिने कहलीह, “ऊपरक कोठली एकसरि नहि खोलिहें। बाँसक सीढ़ी ढीली अछि।”

“किएक? ओतय की अछि?”

“जखन खोलब तखन देखब।”

“अहाँ कैँ बुझल अछि?”

काकी फाटकक बाहर ठाढ़ भऽ एक क्षण सोचलीह। “बुझल छल। एखन मोन नहि। पुरान घरमे ‘मोन नहि’ आ ‘कहब नहि’ दुनू अलग बात होइत अछि। हम पहिल कहि रहल छी।”

फाटक बन्द भेल। मृणालिनी आँगनमे एकसरि रहि गेल।

**

चारि बजयमे एखन दू घंटा छल। मृणालिनी पहिल कोठली सँ शुरू केलक। अलमारीक प्रत्येक खण्ड खोलि फोटो, कागज, वस्त्र अलग करैत गेल। दादा-दादीक विवाहक चित्र, बाबा केर नियुक्तिपत्र, एक पुरान रेडियो-लाइसेंस, संस्कृतक पोथीक दू पन्ना, जर्जर मैथिली पत्रिकाक अंक, स्कूलक प्रमाणपत्र, चिट्ठी जकर लिफाफापर टिकट आधा उखड़ल। किछु वस्तु तुरन्त चिन्हाइत छल, किछु अपन परिचय गमा देने छल।

एक छोट टीनक डब्बामे बीज भेटल। बहुत पुरान, सुखायल, पहिचानब कठिन। ऊपर पेंसिलसँ लिखल छल—“तिलकोर—पाछाँ बारी।” मृणालिनी डब्बा हाथमे घुमेलक। तिलकोर नाम दुपहरिक दही-चूड़ासँ जुड़ल काकीक बातमे नहि आयल छल; मुदा शब्द ओकरा परिचित छल—तरुआक थारी, विवाहक भोज, दादीक आवाज। ओ डब्बा ‘वनस्पति/बीज’ नामक अलग डब्बामे रखलक।

ओहि समय ऊपर सँ किछु खसबाक आवाज आयल। पहिने हलुक खरखराहट, फेर ठक्। मृणालिनी ठिठकि गेल। घरमे दोसर केओ नहि। ओ आँगनमे आबि ऊपर ताकलक। छत लगक छोट कोठलीक किवाड़ आधा खुलल छल कि ओकरा एना बुझायल? बसन्ती काकी मना केने छलीह।

मनाहीक अपन आकर्षण होइत अछि। विशेषतः जखन ओकर कारण “सीढ़ी ढीली” कहल जाए, आ मनक भीतर संशय हो जे असली कारण दोसर अछि।

बाँसक सीढ़ी ओसारक भित्तिसँ टेकायल छल। मृणालिनी पहिल डण्डा दबा कऽ देखलक। चरमराहट। दोसर। तेसर। ओ फोन जेबमे राखि एक-एक पएर चढ़य लागल। ऊपर पहुँचला पर बुझायल जे किवाड़ सचमुच आधा खुलल अछि। कदाचित हवा? मुदा घरमे हवा कहाँ छल?

ओ किवाड़ धकेललक। अन्हार। फोनक प्रकाश जरेलक। कोठली बहुत छोट छल; छतक ढलानक कारण सीधा ठाढ़ रहब कठिन। पुरान खाटी, बाँसक टोकरी, दू लोहेक

सन्दूक, एक काठक पेटी, अखबारमे लपेटल बासन, टूटल चरखा, आ भित्तिक कात कपड़ासँ झाँपल किछु। धूलि एतेक छल जे पएर धरिते निशान बनैत गेल।

ठक् आवाजक कारण तुरन्त भेटल—एक पीतलक ढक्कन जमीन पर खसल छल। ओकर ऊपर चूहाक छोट पएरक निशान। मृणालिनी राहतक साँस लेलक। रहस्यसभक पहिल कारण बहुत बेर चूहा होइत अछि, ई बात ओकरा पसिन पड़ल।

मुदा काठक पेटी पर नजरि पड़िते ओ रुकि गेल। पेटी लोहेक पट्टीसँ बान्हल, ऊपर धूलिक मोट तह। बीचमे छोट ताला, जंग लागल। ताला पर चिपकल कागज लगभग नष्ट, मुदा दू अक्षर पढ़ाइत—“भा...”।

मृणालिनी घुटना टेकलक। धूलि फूँकबाक भूल नहि केलक; रूमाल सँ धीरे पोंछलक। कागजक शेष भागमे स्याहीक छाया उभरल। “भानस...” कदाचित। नीचाँ किछु संख्या? १९...? पूरा स्पष्ट नहि।

कुंजीक गुच्छा नीचाँ छल। ओ घुरि उतरि आनलक। लाल सूतवला फाटकक, दू पैघ अलमारीक, एक गोल माथक, कदाचित पेटीक। पहिल नहि। दोसर नहि। तेसर घुसल, घुमल नहि। ओ जोर देब चाहलक, फेर बसन्ती काकीक वाक्य मोन पड़ल—ताला बूढ़ भऽ गेल अछि, धीरे घुमायब। ओ कुंजी कनी बाहर खींचलक, उलटा घुमेलक, फेर भीतर धकेलि धीरे दहिना। क्लिक।

पेटी खुलल।

ऊपर मलमल कपड़ाक तह छल, जे स्पर्श करिते धूलि-सन झड़य लागल। मृणालिनी ओकरा किनार सँ उठेलक। नीचे कागजक बण्डल, दू पुरान खाताबही, एक कपड़ामे बान्हल पोथी, एक छोट डिब्बा, आ किछु ढीला पन्ना। कागजक बीच हरदि-जकाँ पीयर दाग, कतहुँ तेलक गोल निशान। ई साधारण पारिवारिक कागजसँ अलग देखाइत छल।

ओ कपड़ामे बान्हल पोथी उठेलक। कपड़ा खोलला पर भूरा जिल्द देखायल। जिल्दक बीच हाथक लिखाइ छल—“भानस-पोथी।” अक्षर देवनागरीक, गाढ़ स्याहीक। नीचाँ छोट लिखाइ—“देवकान्त झा”—कि “देवकान्त”? अन्तिम उपनाम धुँधला छल।

मृणालिनी कै बाबा केर आवाज फेर मोन पड़ल—“घरक कागज एक बेर देखिहें।”

ओ पोथी खोलबाक पहिने फोन निकालि पेटीक फोटो लेलक। फेर जिल्दक। फेर पहिल पृष्ठक। पहिल पृष्ठ अपेक्षाकृत स्पष्ट छल—तिथि, सामग्रीक शीर्षक, किछु पकवानक नाम। देवनागरी सुव्यवस्थित। ओ पन्ना पलटल। दोसर पृष्ठ। तेसर। चारिम।

पाँचम पृष्ठ पर ओकर अँगुरी रुकि गेल।

मुख्य लिखाइ गाढ़, सीधा। मुदा कातमे एकदम अलग महीन अक्षर छल—वक्र, जटिल, परिचित होइतहुँ अपरिचित। मृणालिनी ओकरा तुरन्त पढ़ि नहि सकल। तिरहुता? बाबा कखनो देखौने छलाह? ओकरा पूर्ण विश्वास नहि।

ओ फोनक प्रकाश कातमे आनलक। मुख्य लिखाइमे सामग्रीक मात्रा छल। किनारक अक्षरक बाद देवनागरीमे ककरो हाथसँ एक छोट शब्द जोड़ल छल—“ऋतु।”

मृणालिनी पोथी बंद नहि केलक। ओकर साँस धीमा भऽ गेल।

नीचाँ आँगनमे फाटक खटखटायल। कदाचित ईशान आबि गेल छल।

ओ उत्तर देबाक लेल मुँह खोललक, मुदा आवाज तुरन्त नहि निकलल। ओकर नजरि पोथीक कातक ओहि महीन लिखाइ पर अटकल छल। घर खोलबाक दुपहरि एखन धरि ओकरा बुझाइत छल जे ओ वस्तुसभक सूची बनेबाक लेल आयल अछि—कागज, बासन, फोटो, कपड़ा, पोथी; जे राखब, जे छोड़ब, जे स्कैन करब।

एखन पहिल बेर ओकरा लागल—कदाचित सूची ओकरा नहि, घर ओकर सूची बनाबय जा रहल अछि।

फाटक फेर खटखटायल।

मृणालिनी पोथी केँ कपड़ामे फेर नहि बान्हलक। ओकरा अपन बाँहमे दबा कऽ सीढ़ी दिस बढ़ल। धूलिक बीच ओकर पएरक नव निशान छल; आब घुरि उतरैत समय ओहि निशानक जोड़ी बनि रहल छल।

अध्याय २ — दोसर लिखाइ

फाटक तेसर बेर खटखटायल तखन मृणालिनी सीढ़ीक बीचमे छल। एक हाथमे भानस-पोथी, दोसर हाथसँ बाँसक डण्डा पकड़ने। नीचे उतरैत ओकरा बुझाइट छल जे पुरान घरमे वस्तु उठेबाक ढंग सेहो निर्णय होइत अछि—किछु वस्तु पेटोमे छोड़ल जा सकैत अछि, किछु केँ हाथमे नेने बिना मन मानैत नहि।

“एतेक बेर फाटक पीटब तँ घर बिकबाक पहिने फाटक टूटि जाएत,” ओ भीतरसँ कहल।

बाहर सँ ईशानक आवाज आयल, “तखन एक वस्तु कम बेचय पड़त।”

मृणालिनी फाटक खोललक। ईशान दू कप चाय आ कागजक थैलामे किछु नमकीन नेने ठाढ़ छल। ओकर आँखि पहिने मृणालिनीक धूलि लागल कपड़ा पर गेल, फेर बाँहमे दबायल पोथी पर।

“हमरा लगैत अछि अहाँ ऊपर गेल रही।”

“सीढ़ी ढीली अछि, से बात अहाँ सभकेँ बहुत पसिन अछि।”

“काकी फोन कऽ कहलीह जे अहाँ ऊपर नहि जाउ।”

“ताहि लेल गेल रही।”

ईशान हँसल। “घरक पुरान नियमसभक ईहे दुर्भाग्य अछि—मनाही पढ़िते नव पीढ़ी ओकरा निमन्त्रण बुझि लैत अछि।”

ओ भीतर आयल। मृणालिनी फाटक लगा कऽ पोथी केँ ओसारक चौकी पर राखलक। ईशान चाय रखैत पूछलक, “की भेटल?”

“पहिने हाथ धोउ।”

“पोथी खायब?”

“नहि। मुदा अहाँक अँगुरी पर नमकीनक तेल अछि।”

ईशान बिना प्रतिवाद नल दिस चलि गेल। मृणालिनी पोथी सोझाँ राखि ओकर जिल्द फेर देखलक। “भानस-पोथी”—बस एतेक। लेखकक नाँव नहि, घरक नाँव नहि, साल नहि। भीतर पहिल पृष्ठपर तिथि आ सामग्रीक सूची, मुदा पाँचम पृष्ठसँ कातमे ओहि महीन लिखाइक आरम्भ।

ईशान हाथ पोछि लौटला पर ओ पोथीक सोझाँ नहि बैसल; पहिने मोबाइल निकालि फोटो खिंचय लागल।

“रुकू।”

“किएक?”

“पहिने देखू। फोटो पाछाँ।”

“हमरा व्यवसायी मानि कऽ अहाँ सभ बातमे रोक लगबैत छी।”

“अहाँ व्यवसायी छी।”

“तँ?”

“तँ पहिने वस्तु केँ वस्तु रहय दिअ। तुरन्त प्रचार-सामग्री नहि बनाउ।”

ईशान मोबाइल उल्टा राखि देलक। “नीक। गुरुजी, देखाउ।”

मृणालिनी पहिल पन्ना खोललक। गाढ़ स्याहीक लिखाइ सीधा, व्यवस्थित, लगभग दफ्तरी अनुशासनवला। शीर्ष पर एक तिथि। तकर नीचे सामग्री: चाउर, दालि, नून, तेल, पात, मसाला। बीच-बीचमे मात्रा। किछु शब्दक बाद छोट निशान, जे कदाचित पाछाँ जोड़ल गेल छल।

“ई बाबा केर बाबा देवकान्तक लिखाइ हो सकैत अछि?” ईशान पूछलक।

“कदाचित। घरमे हुनकर चिट्ठी रहत। मिलान करब।”

दोसरा पृष्ठपर वएह हाथ छल। तेसर पर सेहो। चारिम पृष्ठक अन्तमे एक पाँति बीचमे छोड़ल गेल। पाँचम पृष्ठपर मुख्य लिखाइ चलैत रहल, मुदा बाम कातमे महीन, घुमावदार अक्षरक दू पाँति उभरल।

ईशान झुकि गेल। “ई देवनागरी नहि।”

“तिरहुता हो सकैत अछि।”

“अहाँ पढ़ि सकैत छी?”

“अक्षर चिन्हैत छी, मुदा एना पुरान हाथ पूरा नहि।”

“हमरा तऽ चित्र जकाँ बुझाइत अछि।”

मृणालिनी कातक लिखाइ पर अँगुरी नहि रखलक; बस हवा मे ओकर रेखा अनुसरलक। मुख्य लिखाइ जकाँ पाँति सीधा नहि छल। शब्द कखनो ऊपर उठैत, कखनो नीचे झुकैत, मानो लिखनिहार कागजक बचल ठामसँ बातचीत कऽ रहल हो।

“एक हाथ पोथी लिखलक,” ओ धीरे कहल, “दोसर हाथ कातमे उत्तर दैत रहल।”

ईशान हँसबाक लेल मुँह खोललक, फेर नहि हँसल। “उत्तर? टिप्पणी नहि?”

“टिप्पणी सेहो उत्तर हो सकैत अछि।”

ओ आगाँक पृष्ठ पलटल। कतहुँ एक शब्द, कतहुँ तीन पाँति। किछु ठाम महीन लिखाइक बाद मुख्य हाथसँ देवनागरीमे एक छोट सुधार जोड़ल गेल छल। एक पृष्ठपर मात्रा काटि दोसर मात्रा। दोसर पर पकवानक नाँवक बाद प्रश्नचिह्न। तेसर पर केवल तिरहुता पाँति आ ओकर सोझाँ खाली ठाम।

ईशान चाय उठेलक। “ई रोचक अछि।”

मृणालिनी ओकरा देखलक। “रोचक?”

“हँ। पुरान भानस-पोथी, दू हाथक लिखाइ, रहस्य—”

“फेर आरम्भ।”

“हम केवल कहि रहल छी जे एहि मे पुस्तक बनबाक दम अछि।”

“एखन ई पुस्तक नहि। एखन ई प्रमाणो नहि। एखन केवल कागज अछि।”

ईशान चुप भऽ गेल। मृणालिनी केँ अपना स्वरक कठोरता बुझायल। ओ चायक कप उठेलक। चाय कनी ठंढा भऽ गेल छल।

“हमरा माफ करू,” ओ कहल। “घरक वस्तु देखिते अहाँ भविष्य देखैत छी। हम कदाचित उल्टा—पहिने अतीत देखय चाहैत छी।”

ईशान नमकीनक थैला खोललक, मुदा पोथीसँ दूर राखलक। “नीक। मुदा अतीत केँ कोनो दिन भविष्य चाही। नहि तँ चूहा पढ़त।”

मृणालिनी मुस्की देलक। बात बेठीक नहि छल।

ओ एक-एक पृष्ठक फोटो खिंचबाक निर्णय केलक—बिना पोथी समतल दबेने, बिना फ्लैश। ईशान मोबाइलक स्टैण्ड बनयबाक लेल पुरान पीतलक कटोरी उल्टा करय चाहलक, मृणालिनी रोकलक। अन्तमे दू मोट पुरान पत्रिका पर फोन टिकाओल गेल।

पहिल फोटो खींचला पर स्क्रीनमे अक्षर कागजसँ बेसी स्पष्ट देखायल। महीन लिखाइक किछु चिह्न स्पष्ट भेल। मृणालिनी बड़ा कऽ देखलक। एक ठाम तिरहुता पाँतिक बाद मुख्य हाथसँ देवनागरीमे छोट शब्द लिखल छल—“नहि।”

“केकर ‘नहि’?” ईशान पूछलक।

“एखन नहि बुझल।”

“ई प्रश्न अहाँ सभ ठाम लगा सकैत छी।”

“नीक।”

“आ उत्तर?”

“जतऽ भेटत, ततऽ लिखब। जतऽ नहि भेटत, ततऽ खाली छोड़ब।”

ईशान ओकरा एक क्षण देखलक। “अहाँ सचमुच एहि काजमे घुसि गेलहुँ।”

“एखन पाँच पृष्ठ भेल अछि।”

“कखनो-कखनो पाँच पृष्ठ बहुत होइत अछि।”

**

साँझ पड़बा सँ पहिने मृणालिनी पोथीक बाहरी जिल्द, पहिल-दसम पृष्ठ, धागाक सिलाइ आ कागजक बनावट अलग-अलग फोटोमे दर्ज कऽ चुकल छल। ईशान बीचमे दुइ बेर फोन पर बात कऽ बाहर गेल, फेर लौटि एकटा पुरान कपड़ा आनलक जाहिपर पोथी राखल जा सकय।

“लेखकक नाँव कतहुँ नहि?” ओ फेर पूछलक।

मृणालिनी पहिल पृष्ठ पलटि देखेलक। “नहि।”

“पाछाँ?”

पाछाँक जिल्द खाली। भीतरक अन्तिम पृष्ठसभमे किछु हिसाब, फेर दू पृष्ठ फाटल। अन्तिम बाँचल पृष्ठपर एक अधूर सूची, मुदा नाँव नहि।

“ई विचित्र अछि,” ईशान कहल। “जे लोक एतेक व्यवस्थित लिखलक, ओ अपन नाँव नहि लिखलक?”

“घरक उपयोगक पोथी हो तँ नाँव आवश्यक नहि।”

“मुदा तिथि अछि।”

“तिथि उपयोगी अछि। नाँव घरमे सभ केँ बुझल रहैत।”

ईशान माथ हिलेलक। “तखन पाछाँ लोक बिसरि जाइत।”

एहि एक वाक्य पर मृणालिनी चुप भऽ गेल। कागजक समस्या कदाचित एतबे छल— जे समयमे जे बात सभ केँ बुझल रहैत अछि, ओ लिखल नहि जाइत; पाछाँ जे लिखल अछि, केवल वएह सत्य बुझाइत अछि।

ओ पेटीसँ भेटल दोसर कागज खोलय लागल। एक खाताबहीक पहिल पृष्ठपर घरक मालिकक नाँव छल। दोसरा बण्डलमे विवाहक खर्चा। तेसरमे बीस वर्ष बादक जमीनक कागज। सभ ठाम पुरुषक नाँव स्पष्ट। भानस-पोथी मात्र नामहीन।

“लेखकक नाँव नहि,” मृणालिनी कहल, “मुदा एहि घरमे ककरा नाँव लिखल जाए, ओकर नियम बहुत स्पष्ट छल।”

ईशान ओकर आशय बुझलक कि नहि, कहल नहि। ओ विवाहक खर्चाउरा पन्ना पढ़य लागल—चाउर एतेक मन, दही एतेक, घी एतेक, पान एतेक सैकड़ा। किछु बेर बाद ओ हँसल।

“पानक खर्चा देखू। एहि घरक प्रतिष्ठा आधा पान पर चलैत छल।”

“आ आधा उधार पर।”

“उधारो प्रतिष्ठाक अंग अछि।”

मृणालिनी बण्डल फेर बाँधि देलक। ओकर ध्यान भानस-पोथीक नामहीनतापर अटकल रहल। परिवारक पुरान सूची याद आयल—दादा, परदादा, जमीन, उपाधि, पढ़ाई, नौकरी। स्त्रीसभक नाँव विवाहक सम्बन्धमे, “फलाँक कन्या”, “फलाँक पत्नी” रूपमे। भानसघरक ज्ञान तँ ओकरा सूचीमे कोना भेटत?

ओ अपन लैपटॉप खोलि अस्थायी सूची बनय लागल:

भानस-पोथी — अनुमानित १९३० दशक।

मुख्य हाथ — अज्ञात; सम्भवतः देवकान्त।

किनार-लिखाइ — अज्ञात; सम्भवतः तिरहुता।

लेखकत्व — निर्धारित नहि।

स्थिति — नाजुक; किछु पृष्ठ फाटल/दागदार।

ईशान स्क्रीन पढ़ि कहल, “सम्भवतः देवकान्त? शशिभूषण काका ई पढ़ताह तँ
‘सम्भवतः’ पर आपत्ति करताह।”

“तँ करथि।”

“ओ कहल करैत छथि देवकान्त सभ लिखैत छलाह—डायरी, लेख, कविता, खेतक
हिसाब धरि।”

“तखन तुलना सहज होएत।”

“अहाँ हुनका फोन करब?”

मृणालिनी घड़ी देखलक। “एखन नहि।”

ओहि समय ईशानक फोन बजल। स्क्रीन देखिते ओ हँसल। “जिनकर चर्चा, हुनकर
फोन।”

शशिभूषण छलाह।

ईशान स्पीकर नहि केलक, मुदा ओकर उत्तरसँ मृणालिनी आधा बातचीत बुझि गेल। “हँ
काका... हँ, घरमे छी... मृणालिनी सेहो... नहि, किछु टूटल नहि... पोथी? के कहल?”

ओ मृणालिनी दिस देखलक। मृणालिनी आँखि सँ पूछलक—के?

ईशान फोन कानसँ दूर कऽ फुसफुसायल, “बसन्ती काकी।”

फोनमे फेर कहल, “हँ, भेटल अछि... नहि, एखन किछु तय नहि... अहाँ आबि रहल
छी? एखन?”

मृणालिनी माथ पकड़बाक भाव केलक।

ईशान फोन रखि कहल, “दस मिनट।”

“ओ दस मिनटमे कोना?”

“काका जखन कहैत छथि दस मिनट, तकर अर्थ ओ घरसँ निकलि चुकल छथि।”

सचमुच सात मिनट बाद फाटकक बाहर स्कूटर रुकबाक आवाज आयल।

❖❖

शशिभूषणक उम्र सत्तरक आसपास छल, मुदा चलबमे एखनहुँ जल्दबाजी। फाटक भीतर अबिते पहिल प्रश्न घरक नहि, पोथीक छल।

“कतऽ अछि?”

मृणालिनी ओसार दिस इशारा केलक। “पहिने बैसू।”

“बैसब पाछाँ।”

ओ चौकी लग गेलाह, मुदा पोथी छूबला सँ पहिने अपना हाथ देखलनि। “पानि कतऽ?”

मृणालिनी चकित भेल। ईशान मुस्की रोकलक। शशिभूषण हाथ धो कऽ, गमछासँ पोछि, फेर चौकी पर बैसलाह। एहि एक सावधानी सँ मृणालिनीक भीतर हुनका प्रति कनी कोमलता आयल।

ओ जिल्द देखलनि। “भानस-पोथी।” शब्द एना कहलनि जे पुरान परिचितक नाँव पढ़ि रहल होथि।

“अहाँ पहिने देखलहुँ?” मृणालिनी पूछलक।

“छोट रहिते। निश्चयपूर्वक ईहे अछि कि दोसर, से नहि कहि सकैत छी। घरमे एहन किछु पोथी छल।”

“के लिखने छल?”

“देवकान्त बाबा।”

उत्तरमे एक क्षणक संशय नहि।

“कोना बुझल?”

शशिभूषण मृणालिनी दिस देखलनि। “कोना बुझल अर्थ?”

“नाँव कतहुँ नहि अछि।”

“लिखाइ देखू।”

“हम तुलना करब।”

“तुलना करू। मुदा ई हुनके अछि।”

ईशान बीचमे कहल, “काका, किनारमे दोसर लिखाइ सेहो अछि।”

शशिभूषण पाँचम पृष्ठ खोललनि। आँखिक चश्मा जेब सँ निकालि पहिरलनि। महीन अक्षर देखिते हुनकर भौंह कनी सिकुड़ल।

“ई बादक होएत।”

“केकर?” मृणालिनी पूछलक।

“घरमे केओ लिखि देने होएत।”

“कखन?”

“कहब कठिन।”

“देवकान्तक समयमे कि पाछाँ?”

“मृणालिनी,” शशिभूषण चश्मा उतारि कहलनि, “पुरान कागजमे सभ पाँतिक जन्मपत्री नहि भेटैत।”

“ताहि लेल पूछैत छी।”

शशिभूषण हँसलाह नहि। “अहाँक बाबा सेहो एना प्रश्न पर प्रश्न करैत छलाह।”

“तँ उत्तर भेटैत छलनि?”

“कखनो। कखनो नहि। मुदा ओ प्रश्न केँ उत्तर मानि नहि लैत छलाह।”

ई वाक्य मृणालिनी केँ नीक लगल। “हमो नहि लैत छी।”

शशिभूषण फेर पोथी देखय लगलाह। एक पृष्ठपर हुनकर अँगुरी मुख्य लिखाइक एक अक्षर पर ठहरल। “ई ‘क’ देखू। देवकान्त बाबाक ‘क’ एहन छल। ऊपरक डाँड़ी कनी टूटल। आ अंक लिखबाक ढंग—चारि देखू।”

मृणालिनी तुरन्त फोटो लेलक। “हुनकर चिट्ठी कतऽ अछि?”

“हमर घरमे दू-तीन रहत। काल्हि आनब।”

“बहुत नीक।”

शशिभूषणक चेहरा खिलल। “अहाँ केँ बुझल अछि ई की अछि?”

“भानस-पोथी।”

“नहि। ई दुर्लभ पोथी अछि। देवकान्त बाबा केवल घरक लोक नहि छलाह। ओ कलकत्ताक पत्रिकाजे लिखैत छलाह। खेती, भाषा, लोकाचार—सभपर। जँ ई पूरा पोथी अछि तँ छपबाक चाही।”

ईशान मृणालिनी दिस एहन नजरि सँ देखलक जाहिमे ‘हम पहिने कहने रही’ स्पष्ट छल।

शशिभूषण आगाँ कहलनि, “शीर्षक राखि सकैत छी—‘देवकान्तक मिथिला-भानस’। नीचे परिवारक पुरान फोटो। भूमिका हम लिखि देब। ईशानक भोजनालयमे विमोचन—”

“रुकू,” मृणालिनी कहल।

शशिभूषण रुकलाह, मुदा चेहरा पर असन्तोष।

“पहिने बुझी जे पोथी के लिखलक। मुख्य हाथ देवकान्तक हो सकैत अछि। किनारक हाथ केकर अछि? कतेक सामग्री केकर? पृष्ठसभ पूरा अछि कि नहि? बादक जोड़ की अछि? एहि सभक जाँच बिना लेखकक नाँव मुखपृष्ठपर कोना?”

“मुख्य पोथी देवकान्तक अछि।”

“सम्भवतः।”

“सम्भवतः किएक?”

“किएक तँ प्रमाण एखन पूरा नहि।”

शशिभूषणक स्वर कठोर भेल। “एखनक पढ़ल-लिखल लोकसभक एक रोग अछि—अपन घरक बातो पर बाहरक मोहर चाही।”

“बाहरक मोहर नहि। घरक भीतरक सभ हाथ देखबाक अछि।”

ओ महीन तिरहुता पाँति देखलक। “ई हाथ यदि केवल सुधारक नहि, सामग्री देनिहारक हो तँ?”

“तँ?”

“तँ लेखकत्व बदलि सकैत अछि।”

शशिभूषण किछु क्षण मौन रहलाह। बाहर सँ कौआक आवाज आयल। आँगनमे हवा चलल आ सूखल आमक पात सरसरायल।

“अहाँ बहुत आगाँ पहुँचि रहल छी,” अन्ततः ओ कहलनि। “दू पाँति देखिते।”

“हो सकैत अछि। ताहि लेल एखन शीर्षक नहि।”

ईशान वातावरण हलुक करबाक लेल कहल, “काका, विमोचनक मेनू तऽ एखन तय नहि करू।”

शशिभूषण ओकरा घूरलनि। “तौं बीचमे नहि बाज।”

ईशान चुप।

मृणालिनी पोथीक कातमे रखल अपन सूची हुनका देखेलक। “हम सभ सामग्री अलग करब। अहाँ देवकान्तक चिट्ठी दिअ। ककरो लग हुनकर डायरी, हस्ताक्षर, प्रकाशित लेख हो तँ बताउ। तिरहुता पढ़निहारक सहायता सेहो लेब।”

“हम पढ़ैत रही,” शशिभूषण कहलनि।

मृणालिनी चौंकल। “तिरहुता?”

“कनी। आब आँखि आ अभ्यास दुनू कम भेल।”

ओ फेर पाँचम पृष्ठ देखलनि। महीन लिखाइ पर नजरि टिकेलनि। होंठ हिलल, मुदा शब्द नहि निकलल।

“की लिखल अछि?” मृणालिनी तुरन्त पूछलक।

“स्पष्ट नहि।”

“एक अक्षरो?”

“एहन पुरान हाथ बिना समय लगौने नहि पढ़ल जाए।”

ओ पोथी बन्द नहि केलनि। बस हाथ हटेलनि। “काल्हि चिट्ठी आनब।”

मृणालिनी कैँ लागल—हुनका किछु चिन्ह परिचित भेल छल, मुदा ओ एखन कहय नहि चाहैत छथि। मुदा ई केवल अनुमान छल। ओ मनमे तुरन्त शब्द लिखलक—अनुमान। प्रमाण नहि।

शशिभूषण उठि गेलाह। फाटक धरि पहुँचि फेर मुड़लाह। “पोथी रातिमे एतय नहि छोड़ब।”

“हम संग लऽ जाएब।”

“आ प्लास्टिकमे बन्द नहि करब। नमी रहत।”

“नीक।”

“आ पन्ना सीधा करबाक लेल इस्तरी-वस्तरी नहि।”

ईशान हँसि पड़ल। “काका, मृणालिनी पोथी पर इस्तरी नहि करैत।”

शशिभूषण गंभीर रहल। “लोक करैत अछि। यूट्यूब देखिकऽ सभ करैत अछि।”

एहि बेर मृणालिनी सेहो हँसि देलक। “नहि करब।”

शशिभूषण चलि गेलाह। फाटक बन्द भेल। ईशान धीरे कहल, “अहाँ ध्यान देलहुँ? ओ तिरहुता देखिते अलग भऽ गेलाह।”

“हँ।”

“किछु बुझलनि।”

“हो सकैत अछि।”

“अहाँ लिखि लिअ—काका किछु छुपबैत छथि।”

“नहि।”

“किएक?”

“किएक तँ हम देवकान्त नहि बनय चाहैत छी।”

ईशान प्रश्नवाचक नजरि सँ देखलक।

मृणालिनी पोथी दिस इशारा केलक। “जे नहि बुझल, ओहि ठाम अपनासँ भरब नहि।”

साँझ गाढ़ भऽ गेल छल। घरक बिजली चालू छल, मुदा ओसारक बल्ब पीयर आ कमजोर। मृणालिनी पोथी केँ अस्थायी गत्ताक डब्बामे सुरक्षित करबाक पहिने अन्तिम बेर पृष्ठ गिनय चाहलक। ईशान फोनक प्रकाश दैत रहल।

“एक, दू, तीन...”

सतरहम पृष्ठपर ओ रुकल।

मुख्य लिखाइमे एक दालिक विधि छल। ऊपर पकवानक नाँव स्पष्ट नहि—स्याही फैलल। नीचे सामग्रीक मात्रा बेराबेरी लिखल: दालि, पानी, नून, मसाला। दाहिना कातमे मुख्य हाथसँ लिखल छल—“नून — १ तोला।”

बाम कातमे महीन लिखाइ, कदाचित तिरहुता, दू पाँति। ओकरे नीचाँ मुख्य हाथसँ देवनागरीमे बादक सुधार: “नून स्वाद अनुसार।”

मृणालिनी स्क्रीन पर पृष्ठक फोटो खोलि बड़ा केलक। महीन पाँतिक किछु अक्षर ओ पहचानि सकैत छल। पूरा वाक्य नहि। मुदा एक शब्दक रूप परिचित लागल—“नून”। दोसर कदाचित “एक”। तेसर ओ नहि बुझलक।

“देखू,” ओ ईशान केँ कहल।

“एक तोला काटल नहि अछि।”

“नहि। मुदा पाछाँ ‘स्वाद अनुसार’ जोड़ल गेल।”

“तँ?”

“तँ ककरो आपत्ति भेल।”

ईशान हँसल। “नून पर?”

“नून पर बहस सभसँ पुरान बहस हो सकैत अछि।”

ओ पन्ना फेर आँखिसँ पढ़लक। मुख्य लिखाइ दृढ़—मात्रा निश्चित। किनारक हाथ बहैत—ठाम कम, मुदा वाक्य आवश्यक। फेर मुख्य हाथ अपन नियम ढीला करैत—“स्वाद अनुसार।”

दू हाथ केवल एक कागज पर नहि छल। दू प्रकारक ज्ञान आमने-सोझाँ छल—एक जे नापि कऽ स्थिर करय चाहैत अछि, दोसर जे परिस्थिति छोड़ि नियम मानय तैयार नहि।

मृणालिनी केँ अध्याय नहि, विवाद देखायल।

“ईशान, यदि मुख्य हाथ देवकान्तक अछि, तखन दोसर हाथ केवल बादक पाठकक नहि हो सकैत।”

“किएक?”

“कारण मुख्य हाथ ओकर प्रतिक्रिया लैत अछि।”

“ई पाछाँ स्वयं देवकान्त सेहो जोड़ि सकैत छलाह।”

“नीक। सम्भव।”

“वा ककरो कहला पर।”

“नीक।”

“वा—”

“बस। एखन तीन सम्भावना पर्याप्त।”

ईशान मुस्की देलक। “अहाँ कै हमरा सम्भावना पसिन नहि।”

“अहाँ सम्भावना पाँच मिनटमे प्रचार-पंक्ति बना दैत छी।”

ओ पृष्ठक नम्बर, फोटो क्रमांक आ टिप्पणी लैपटॉपमे लिखलक:

पृष्ठ १७ — मुख्य लिखाइ: निश्चित मात्रा।

किनार-लिखाइ: तिरहुता, अपठित; ‘नून’ सम्भावित।

बादक देवनागरी जोड़: “नून स्वाद अनुसार”।

निष्कर्ष: संवाद/सुधारक सम्भावना; लेखकत्व निर्धारित नहि।

लिखि चुकला पर ओ कनी देर स्क्रीन देखैत रहल। “लेखकत्व निर्धारित नहि”—सूखा दफ्तरी वाक्य। मुदा ओकर भीतर आब एक जीबैत दृश्य जन्म लऽ रहल छल: कोनो भानसधर, कोनो पातिल, एक लोक नून नापि रहल, दोसर कहि रहल—एतेक नापसँ स्वाद तय नहि होइत।

“की भेल?” ईशान पूछलक।

“किछु नहि।”

“अहाँ फेर घरक भीतर चलि गेलहुँ।”

“हम घरमे छी।”

“नहि। दोसर घरमे।”

मृणालिनी उत्तर नहि देलक।

ओ अगिला पृष्ठ पलटल। फेर ओहि महीन हाथक टिप्पणी। अगिला पर नहि। फेर दोसर पर। कखनो मुख्य लिखाइ ओकरा अनदेखा करैत, कखनो मात्रा बदलैत, कखनो एक शब्द देवनागरीमे उतारैत। मानो पोथी एकल स्वरमे लिखल ग्रन्थ नहि, धीमा बातचीत हो।

आ बातचीतमे एक पक्षक नाँव नहि छल।

ईशान नमकीनक अन्तिम टुकड़ा खा कऽ थैला मोड़लक। “चलू? राति भऽ रहल अछि।”

“दू मिनट।”

“अहाँक दू मिनट परिवारमे प्रसिद्ध अछि।”

मृणालिनी अन्तिम फोटो लेलक। पोथी बन्द कऽ स्वच्छ सूती कपड़ामे ढीला लपेटलक, गत्ताक डब्बामे राखलक। मूल पेटीमे नहि—ओतय नमी आ धूलि बेसी छल।

फाटक बन्द करबा सँ पहिने ओ एक बेर घर दिस मुड़ि देखलक। अन्हारमे ओसार, भित्ति, सीढ़ी सभ एके रंगक। दिनमे भेटल वस्तुसभ आब फेर घरक भीतर समा गेल जकाँ लगैत छल। केवल गत्ताक डब्बा ओकर हाथमे छल।

ईशान स्कूटरक डिक्की खोलैत कहल, “एतय राखि दिस।”

“नहि। हम हाथमे राखब।”

“बाट खराब अछि।”

“ताहि लेल।”

ओ पाछाँ बैसि डब्बा बाँहमे किसि लेलक। फाटक पर ताला लगल। स्कूटर चलल।

गलीक मोड़ पर पहुँचि मृणालिनी केँ एकाएक याद आयल—शशिभूषण कहने छलाह, देवकान्तक ‘क’ ऊपर सँ कनी टूटल रहैत छल। ओ मनमे तय केलक काल्हि पहिल काज चिट्ठीक लिखाइ मिलान करब।

दोसर काज—तिरहुता पाँति पढ़ब।

तेसर—कोनो नाँव खोजब नहि; पहिने देखब जे नाँव सचमुच कतहुँ अछि कि नहि।

घरक इतिहास ओकरा सिखबैत छल जे नाँव बहुत ठाम लिखल रहैत अछि। जमीन पर, वंशावलीमे, प्रमाणपत्रमे, खर्चा-बहीमे।

भानस-पोथी ओकरा पहिल बेर ई सिखा रहल छल जे कखनो-कखनो सबसँ अधिक बोलनिहार हाथे नामहीन रहि जाइत अछि।

स्कूटर मुख्य सड़क पर निकलल। पाछाँ पुरान घर अन्हारमे ओझरायल।

मृणालिनी डब्बा पर हाथ रखलक।

ओकरा एखन लेखक नहि भेटल छल।

मुदा एकटा संवाद भेटि गेल छल।

अध्याय ३ — पात

दोसर दिन मृणालिनी पोथी घर नहि अनलक। राति भरि ओकर मन कई बेर भेल जे गत्ताक डब्बा फेर खोलि देखय, मुदा ओ अपना कै रोकने रहल। कागजक जिज्ञासा आ कागजक सुरक्षा हमेशा एक दिशामे नहि चलैत अछि—ई बात ओ पहिल दिनहि बुझि चुकल छल।

भोरमे चाय पीबिते ओ अपन फोन खोललक। काल्हिक सभ फोटो अलग फोल्डरमे छल। पहिल पृष्ठ, सिलाइ, दाग, किनार-लिखाइ, पृष्ठ सतरहक नून-विवाद। ओ दू फोटो बड़ा कऽ देखलक, फेर बन्द कऽ देलक। फोटो देखला सँ गन्ध नहि अबैत छल, कागजक खरखराहट नहि सुनाइत छल, धूलिक महीन परत अँगुरीक पास नहि रहैत छल। दस्तावेजक प्रतिलिपि उपयोगी छल, मुदा मूल वस्तुक उपस्थितिसँ अलग।

ओ दस बजिते पुरान घर पहुँचल। ईशान एखन धरि नहि आयल छल। फाटक खोलि भीतर पसरल निस्तब्धता ओकरा काल्हिसँ कम भयावह लगल। घर जे पहिल दिन अपरिचित वस्तुसभक भीड़ छल, आब कनी-कनी ठाम बनि रहल छल—एतय ओसार, एतय चूल्हिक पुरान कोठरी, एतय ऊपरक सीढ़ी, एतय चौकी जाहिपर पोथी खोलल गेल छल।

गत्ताक डब्बा ओ राति शशिभूषणक घर छोड़ने छल, कारण पुरान घरमे नमी बेसी छल। शशिभूषण अपन बात पर अड़ल रहला—“पोथी एतय रातिमे नहि रहत।” भोरमे हुनकर पोता डब्बा पहुँचा देने छल। ऊपर छोट कागज चिपकल छल—“सावधानी।”

मृणालिनी कागज देखिकऽ मुस्की देलक। शशिभूषणक चिन्ता ओकरा परेशान सेहो करैत छल, आश्वस्त सेहो। जकरा पर परिवार अधिकार मानैत अछि, तकरा बचयबाक इच्छा कम-से-कम छल। प्रश्न केवल ई छल जे परिवार बचबैत की अछि—वस्तु, नाँव, प्रतिष्ठा कि सत्य?

ओ चौकी पोछि सूती कपड़ा बिछेलक। हाथ धोलक। खिड़की खोलि सीधा तेज धूप रोकबाक लेल आधा पर्दा खींचि देलक। फेर डब्बा खोललक।

भानस-पोथी ऊपरहि राखल छल। कपड़ा हटेलक। जिल्दक धूलि काल्हिसँ कम लगैत छल—कदाचित आँखि अभ्यस्त भऽ गेल छल।

ओ पहिल पृष्ठसँ नहि, सतरहम पृष्ठसँ शुरू केलक। काल्हि जकरा पर “नून स्वाद अनुसार” भेटल छल, ओहि पृष्ठक अगिला दू पन्ना पढ़लक। किनार-लिखाइ फेर छल, मुदा कम। एक ठाम केवल दू अक्षर। दोसर ठाम लम्बा वाक्य। मुख्य हाथ कतहुँ मात्रा बदलने छल, कतहुँ नहि।

मृणालिनी प्रत्येक पृष्ठक फोटो संख्या नोट करैत धीरे-धीरे आगाँ बढ़ल। पन्ना पलटबाक समय ओ ऊपरक दाहिना कोन पकड़ैत नहि; नीचे सँ हल्का उठबैत, ताकि कमजोर किनार पर जोर नहि पड़य।

एकचालीसम पृष्ठक बाद कागज एकाएक कनी मोट बुझायल।

ओ रुकल।

दू पन्ना एक-दोसरासँ पूर्ण चिपकल नहि छल, मुदा बीचमे किछु दबायल छल जकर कारण सतह समतल नहि। काल्हि हतबड़ीमे ओ ध्यान नहि देने छल। ओ पोथी केँ चौकी पर छोड़ि टॉर्चक प्रकाश कातसँ देलक। पन्नाक बीच सँ बहुत महीन भूर रेखा देखायल।

“कागज नहि,” ओ अपना सँ कहल।

ओ पृष्ठकेँ पूरा नहि खोललक। पहिने मोबाइलसँ स्थिति फोटो लेलक। फेर बहुत धीरे ऊपरक पन्ना उठेलक।

किछु हल्का वस्तु भीतर सँ सरकि कऽ चौकी पर खसल।

मृणालिनी सहजतासँ हाथ बढ़ेलक, मुदा बीचहि मे रोकि लेलक।

एकटा सूखल पात छल।

एतेक वर्षक बाद ओकर मूल हरियरी ककरो अनुमान मात्र रहि गेल छल। रंग भूर-पीयर, किनार किछु ठाम टूटल। नससभ एखनहुँ महीन नक्सा जकाँ देखाइत। पात पूरा समतल नहि, मध्यभाग कनी उठल, मानो सूखल देह एखनहुँ अपन पुरान आकार छोड़य तैयार नहि।

मृणालिनी किछु क्षण ओकरा छूने बिना देखैत रहल। भानस-पोथीमे सुखायल पात भेटब असम्भव बात नहि छल। पकवानक पोथी, पात-साग, मसाला, नमूना—कोनो कारण भऽ सकैत। मुदा पात वस्तु नहि, समयक छोट जाल जकाँ ओकर सोझाँ पड़ल छल।

ओ फोन उठेलक। ईशान केँ फोन करय चाहलक, फेर विचार बदललक। पहिने बसन्ती काकी।

“काकी, अहाँ घरमे छी?”

“हम कतऽ जाएब एतेक भोरमे? की भेल?”

“एकटा पात देखेबाक अछि।”

“पात देखेबाक लेल फोन?”

“पुरान पोथीमे भेटल।”

उधर किछु क्षण चुप्पी। “छूबू नहि बेसी। हम आबि रहल छी।”

मृणालिनी फोन रखलक। काल्हि धरि जे घरमे सभ ओकरा एकसरि छोड़य चाहैत छल, पोथी भेटलासँ लोकक आवाजाही बढ़ि गेल छल।

बसन्ती काकी लगभग पन्द्रह मिनटमे आयलीह। हाथमे अपन पुरान चश्मा, एकटा कपड़ाक झोरा आ पानि भरल छोटी बोटल। फाटक भीतर घुसिते पूछलीह, “कतऽ?”

मृणालिनी चौकी दिस इशारा केलक।

काकी झुकलीह। चश्मा पहिरलीह। पातक आकार देखलीह, फेर पन्ना देखलीह जाहिसँ ओ खसल छल।

“तिलकोर जकाँ अछि,” हुनकर मुँहसँ तुरन्त निकलल।

“पक्का?”

“एतेक पुरान पातमे पक्का की कहब? मुदा आकार, नस, डाँठक ठाम—तिलकोर बुझाइत अछि।”

मृणालिनी केँ अपन साँस कनी तेज सुनायल। “तिलकोर?”

काकी ओकरा देखलीह। “अहाँ एना किएक देखैत छी, मानो पात अपन नाँव लिखि देलक?”

“किछु नहि।”

“काल्हि पोथीमे तिलकोर छल?”

“एखन धरि स्पष्ट नहि पढ़ल।”

बसन्ती काकी चौकीक कात बैसि गेलीह। “हमर माय तिलकोरक पात सुखा कऽ राखैत नहि छलीह। खेबाक पात ताजा चाही। पुरान पात केवल बीज वा पहचान लेल के राखत— हमरा नहि बुझल।”

“नमूना हो सकैत?”

“हो सकैत अछि। प्रेमपत्रो हो सकैत अछि।”

मृणालिनी काकी दिस तकलक। काकी गंभीर चेहरा बना कऽ दू क्षण रुकलीह, फेर हँसि देलीह। “अहाँ सभ नव लोक पुरान वस्तु देखिते रहस्य खोजैत छी। हम तँ केवल कहि रहल छी—कारण किछुओ भऽ सकैत।”

मृणालिनी सेहो हल्का हँसल, मुदा “प्रेमपत्र” शब्द ओकर मनमे फँसि गेल। ओ तुरन्त ओकरा मनसँ हटेलक। काकी मजाक केने छलीह। एखन पात केवल पात छल।

“एकरा कोना राखी?”

“जेना छल, तेना फेर पन्नामे दबा दिअ?”

“नहि। एखन अलग कागजक बीचमे, पृष्ठ संख्या लिखि। मूल ठाम फोटोमे दर्ज अछि।”

“अहाँ अपन काज जानैत छी, हम पात पहचानैत छी। दुनू मिलि कऽ पोथी बचा लिअ।”

मृणालिनी स्वच्छ अम्लरहित कागज एखन नहि नेने छल। अस्थायी रूपसँ ओ बिना लिखाइक पुरान स्वच्छ सूती कागजक दू तह बीच पात रखलक, बाहर पेंसिलसँ लिखलक— “भानस-पोथी, पृष्ठ ४१-४२ बीच भेटल; सम्भावित तिलकोर; पहचान—बसन्ती काकी; निश्चित नहि।”

काकी पढ़ि कहलनि, “हमर नाँवो लिखल?”

“हाँ।”

“तँ पाछाँ लोक कहत जे बसन्ती देवी तिलकोर विशेषज्ञ छलीह।”

“ताहि लेल ‘सम्भावित’ लिखल अछि।”

“नीक। ‘विशेषज्ञ’ सँ बचा लेलहुँ।”

दुनू फेर हँसल।

हँसी थमला पर मृणालिनी पृष्ठक भीतर देखलक। पात हटला सँ कागज पर एक हल्का पीयर-भूर छाप देखाइत छल। मानो वर्षसभ धरि पात अपन आकृति पन्ना पर छोड़ैत रहल हो।

पात अलग भऽ गेल छल।

ओकर छाया एखनहुँ पोथीमे रहि गेल छल।

**

बसन्ती काकी चाय बनय चलि गेलीह। ईशानक संदेश आयल—“आधा घंटा लेट। अहाँ पोथी एकसरि नहि खोलू।” मृणालिनी जवाब देलक—“देर भेल। अपराध भऽ गेल।”

ओ पृष्ठ ४१ फेर कैमरा सोझाँ रखलक। पात जहाँ छल, ओहि ठाम कागजक रंग बाकी पृष्ठसँ अलग। ऊपर मुख्य लिखाइमे किछु पंक्ति। किनारक तिरहुता अक्षर बहुत हल्का। पात कदाचित स्याहीक किछु भाग ढाँकि रखने छल, ताहि कारण नीचे अक्षर बाकी ठामसँ गाढ़ बचि गेल छल।

मृणालिनी फोटो बड़ा कऽ देखलक।

दाहिना कातमे मुख्य लिखाइ समाप्त होइत छल। ओकरे नीचाँ, पातक डाँठ रहल ठाम लग, दू-तीन धुँधला देवनागरी अक्षर। काल्हि ओ देखिने नहि छल। पात हटला पर अब स्पष्टता कनी बढ़ल।

पहिल अक्षर ‘म’ जकाँ। तकर बाद मात्रा? फेर कदाचित ‘ध’ वा ‘द’? स्याही फैलल।

ओ कागज पर पेंसिलसँ लिखलक—“मा...?”

फेर अपन लिखल देखिते काटि देलक।

“मा” कहब सेहो अनुमान छल।

ओ फोनक कैमरा अलग कोणसँ लगेलक। तेज प्रकाश नहि, कातसँ हल्का। एक फोटो, दोसर फोटो, तेसर। कम्प्यूटर पर लैब जकाँ सुविधा नहि छल, मुदा मोबाइलमे उजास-अन्हारक अन्तर कनी बढ़ेलापर किछु रेखा स्पष्ट भेल।

“म” सम्भावित। अगिला कदाचित दीर्घ ‘ा’। फेर एक टूटल वक्र।

ओकर मन स्वतः “माध...” दिस भागल।

ओ तुरन्त स्क्रीन बन्द कऽ देलक।

काल्हि ईशान केँ ओ कहने छल—जे नहि बुझल, अपनासँ भरब नहि। आब पहिल परीक्षा ओकर अपन छल। एक अज्ञात लिखाइ, एक सम्भावित ‘मा’, आ मन तुरन्त एक नाँव बनय चाहैत। मनुष्य रिक्त स्थान सहि नहि पबैत—ओ कथा भरि दैत अछि। कदाचित इतिहासक बहुत भूल एही अधीरतासँ बनैत हो।

बसन्ती काकी चाय नेने लौटलीह। “की भेटल?”

“अक्षर।”

“की?”

“निश्चित नहि।”

“तँ चाय पिउ। निश्चित भेलापर बताउ।”

मृणालिनी कप लेलक। काकी पृष्ठ देखबाक कोशिश केलीह, मुदा पुरान स्याही हुनका लेल लगभग अदृश्य।

“अहाँक आँखि हमरा सँ तेज अछि,” काकी कहलनि।

“फोनक आँखि तेज अछि।”

“फोन सभ देखैत अछि?”

“नहि।”

“ई बात फोन करनिहार सभ बिसरि जाइत अछि।”

मृणालिनी चाय पीबैत पृष्ठ संख्या नोट केलक। ओकरा याद आयल—पहिल योजना केवल घरक सामग्री छाँटबाक छल। आब ओ एक पातक स्थान, अक्षरक कोण, स्याहीक परत, लिखाइक हाथ सभ नोट करैत छल। तीन मासक समयसीमा एकाएक हास्यास्पद लगय लागल।

फाटक खटकल। ईशान आयल, हाथमे लैपटॉपक बैग आ दूटा पारदर्शी फाइल। भीतर घुसिते कहल, “अपराधी कहाँ अछि?”

“पात सुरक्षित अछि।”

“कोन पात?”

बसन्ती काकी गर्वसँ कहलनि, “तिलकोर।”

ईशान चौकी दिस दौड़ल। “सच?”

“दौड़ू नहि,” मृणालिनी कहल।

“हम चलि रहल छी।”

“अहाँक चलब दौड़ जकाँ अछि।”

ओ पातक अस्थायी आवरण देखलक। “तिलकोर! ई तँ—”

“विरासत-थालीक लोगो नहि बनत।”

ईशान मुँह बन्द केलक। बसन्ती काकी हँसि पड़लीह।

“हम एतेक खराब छी?” ईशान पूछलक।

“नहि,” मृणालिनी कहल, “अहाँ एतेक तेज छी।”

“नीक। एखन केवल देखब।”

ओ पृष्ठक फोटो देखलक। “ई अक्षर की?”

“निश्चित नहि।”

“मा?”

मृणालिनी ओकरा तीक्ष्ण आँखिसँ देखलक। “अहाँ सेहो?”

“हम आँखि सँ कहि रहल छी।”

“आगाँ?”

ईशान कनी देर स्क्रीन देखलक। “माध...?”

“बस।”

“माधव? माधुरी? माधो? माध—किछु?”

“एही कारण बस। एक अक्षर देखिते अहाँ पाँच नाँव बना देलहुँ।”

“तँ नाँव हो सकैत अछि।”

“शब्दो हो सकैत अछि। आधा वाक्यो। दोसर भाषा सेहो।”

ईशान कुर्सी पर बैसि गेल। “अहाँ चाहैत की छी?”

“पहिने लिखाइ पढू। तिरहुता जाननिहार सँ देखाउ। देवकान्तक चिट्ठीसँ मुख्य हाथ मिलाउ। पृष्ठक तिथि देखू। फेर नाँवक बात।”

“पृष्ठक तिथि?”

मृणालिनी ऊपर देखलक। सच—पृष्ठ ४१ पर तिथि नहि। किछु पहिल पन्नासभमे तिथि छल, मुदा एतय केवल लेखन। तिथि क्रम बुझबाक लेल पाछाँक पृष्ठ देखय पड़त।

ओ पृष्ठ ३७, ३८, ३९ पलटल। ३९ केर ऊपर छोट लिखाइ: “पौष...” तकर बाद अंक अस्पष्ट। अगिला पृष्ठमे सामग्री-सूची। ४१ पर पात।

“पौष?” ईशान पढ़लक।

“सम्भवतः।”

“जनवरी?”

“हो सकैत। वर्ष देखू।”

ओ पन्ना उलटि पहिल स्पष्ट तिथिक पाछाँ गेल। प्रारम्भिक पृष्ठमे १९३४ लिखल छल। बीचमे दू ठाम १९३३? ओ फेर जाँचलक। स्याहीक घिसावसँ अंक भ्रमित।

“क्रम सीधा नहि,” मृणालिनी कहल। “एहि पोथीमे पन्ना पाछाँ बाँधल गेल हो सकैत अछि।”

ईशानक चेहरा चमकल। “अर्थात् पातक तिथि—”

“एखन नहि।”

“अहाँक प्रिय वाक्य।”

“हँ। कारण ई हमरा बहुत भूलसँ बचबैत अछि।”

बसन्ती काकी चायक खाली कप उठबैत कहलनि, “अहाँ दुनू पातसँ पूरा परिवार बना लेब। हम भानस देखैत छी।”

ओ चलि गेलीह।

ईशान धीमे स्वरमे कहल, “तिलकोर तऽ योजनामे छल नहि।”

मृणालिनी ओकरा देखलक। “कोन योजना?”

“हमर भोजनालयवला। हम सोचने रही मखान, बगिया, दही-चूड़ा। तिलकोर मौसमी अछि, मिलब कठिन।”

“तखन एकरा छोड़ि दिअ।”

“अहाँ बुझैत नहि। जे कठिन मिलैत अछि, ओहि मे कथा बेसी बिकैत अछि।”

मृणालिनी पोथी बन्द नहि केलक, मुदा हाथ पृष्ठक कात पर स्थिर रखलक। “ईशान, एक बात एखनहि तय करू। पोथीमे जे भेटत, ओकर उपयोग व्यापारमे तखन धरि नहि, जखन धरि लेखकत्व, स्रोत, परिवारक अधिकार आ सम्बन्धित लोकक बात स्पष्ट नहि हो।”

ईशान पहिने मजाक करबाक मुद्रा बनौलक, फेर मृणालिनीक चेहरा देख गंभीर भऽ गेल। “नीक।”

“सच?”

“सच। कम-से-कम एखन।”

“‘कम-से-कम एखन’ बहुत भरोसावला वाक्य नहि।”

“व्यवसायी पूर्ण शपथ नहि दैत अछि।”

“तँ हम पूर्ण रोक लिखि रहल छी।”

ईशान हँसल। “नीक। अहाँ नोट कऽ लिअ।”

मृणालिनी सचमुच नोटबुक खोलि लिखलक—“पात वा पोथी-सामग्रीक सार्वजनिक/व्यावसायिक उपयोग—स्थगित।”

ईशान माथ पकड़लक। “अहाँ मजाक केँ सरकारी आदेश बना दैत छी।”

“किछु मजाक लिखि देल जाए तँ भविष्यक झगड़ा बचैत अछि।”

ओ पृष्ठ ४१ केर छवि ‘पृष्ठ४१_पातछाप_अज्ञातअक्षर’ नामसँ अलग सुरक्षित केलक।

फाइलक नाँव जानि-बुझि कऽ नीरस छल।

कारण ओकर मन भीतर जे नाँव बनय चाहैत छल, तकरा फाइलमे घुसय देब उचित नहि।

दुपहर बाद शशिभूषण अपन संग देवकान्तक दू पुरान चिट्ठी पठा देलनि। स्वयं नहि एलाह। छोट लिफाफा पर हुनकर लिखाइ—“मिलान लेल। फेर घुरा दिअ।”

मृणालिनी पहिल चिट्ठी खोललक। कागज पोथीसँ अलग—पतला, कनी चिक्कन। ऊपर तिथि: “२७ दिसम्बर १९३३।” नीचे संबोधन। लिखाइ देखिते ओकरा काल्हिक बात याद आयल—देवकान्तक ‘क’ ऊपर सँ कनी टूटल। चिट्ठीमे सचमुच किछु ‘क’ एना छल। पोथीक मुख्य लिखाइमे सेहो। ‘द’ केर पेट कनी खुला। ‘त’ केर ऊपरी रेखा छोट।

“मुख्य हाथ बहुत सम्भवतः देवकान्तक,” ओ कहल।

ईशान अपन लैपटॉपसँ नजरि उठेलक। “एखन ‘बहुत सम्भवतः’?”

“हँ। पूरा पन्ना मिलान करब। एक-दू अक्षर पर्याप्त नहि।”

दोसरी चिट्ठी जनवरी १९३४ केर छल। तिथि पढ़ि मृणालिनी रुकल।

“देखू।”

ईशान पास आयल।

“१२ जनवरी १९३४।”

चिट्ठीमे देवकान्त घर लौटबाक बात लिखने छलाह—तीन दिन बाद पहुँचबाक सम्भावना। रेल, किछु किताब, कागज, आ “घरक खान-पान सम्बन्धी नोट” पूरा करबाक उल्लेख। भाषा औपचारिक, मुदा एक ठाम लिखल—“माँ सँ पूछबाक बहुत बात अछि; हमरा लग जे लिखल अछि, ओ आधा अनुमान अधिक अछि।”

मृणालिनी ओ पाँति फेर पढ़लक।

“ई महत्त्वपूर्ण अछि,” ओ कहल।

“किएक?”

“ओ स्वयं मानैत छथि जे अनुमान अछि।”

“तँ देवकान्त दुष्ट लेखक नहि।”

मृणालिनी चिट्ठी मोड़ैत रोकलक। “हम कखनो दुष्ट कहलहुँ?”

“अहाँक चेहरा कखनो-कखनो कहैत अछि।”

“चेहरा स्रोत नहि।”

“एहि घरमे सभ वस्तु स्रोत बनि रहल अछि।”

मृणालिनी चिट्ठी पर ध्यान देलक। १२ जनवरी। तीन दिन बाद पहुँचबाक सम्भावना।
अर्थात् १५ जनवरी १९३४ आसपास।

ओ पोथीक शुरुआती पृष्ठ फेर खोललक। एक पन्ना पर स्पष्ट तिथि छल—“१४-१-३४”
जकाँ। तकर बाद दू पन्ना। फेर एक पृष्ठक ऊपर “१५” लिखल, मुदा वर्ष नहि। सामग्रीक
सूची अधूर। लिखाइ एकाएक कटि गेल। तकर बाद अगिला पन्ना पर स्याही बदलल।

मृणालिनी केँ देहमे हल्का सिहरन भेल।

ईशान सेहो तिथि देखलक। “पन्द्रह जनवरी?”

“हो सकैत अछि।”

“१९३४?”

“क्रम अनुसार सम्भव।”

“ओही दिन—”

“हाँ।”

दुनू चुप भऽ गेल।

१५ जनवरी १९३४। बिहार-नेपालक विनाशकारी भूकम्पक तिथि। मृणालिनी विद्यालयसँ
एहि तिथिक परिचित छल; परिवारक कथा मे सेहो “चौँतीसक भूकम्प” बेर-बेर सुनने छल।
मुदा पोथीक पृष्ठपर अंक देखब इतिहासक किताब पढ़ब जकाँ नहि छल। एतय कोनो
मानचित्र नहि, कोनो आँकड़ा नहि। केवल सामग्रीक सूची बीचमे रुकल छल।

ओ पन्ना देखलक:

चाउर — ...

दालि — ...

नून — ...

पात — ...

फेर खाली।

मानो कोनो हाथ लिखैत-लिखैत उठि गेल।

“ई भूकम्पक कारण रुकल—ई हम कहि नहि सकैत,” मृणालिनी धीरे कहल।

ईशान माथ हिलेलक। पहिल बेर बिना विरोध। “मुदा तिथि?”

“तिथि हमरा प्रश्न पूछय दैत अछि। उत्तर नहि।”

ओ पृष्ठक उच्च-गुणवत्ता फोटो लेलक। चिट्ठीक तिथि अलग नोट केलक।

फेर पातक पृष्ठ दिस लौटलक। यदि पन्ना क्रम वएह छल, तिलकोरक पात भूकम्पक पहिले दबायल कि पाछाँ? मुदा ओ पहिलेहि देख चुकल छल—पोथी पाछाँ बाँधल गेल हो सकैत अछि। प्रश्न बढ़ैत गेल।

ओ एक समयरेखा बनौलक:

२७ दिसम्बर १९३३ — चिट्ठी।

१२ जनवरी १९३४ — देवकान्तक चिट्ठी; घर लौटबाक योजना।

१४ जनवरी सम्भावित — पोथी प्रविष्टि।

१५ जनवरी सम्भावित — अधूर प्रविष्टि।

पृष्ठ ४१-४२ — दबायल पात; तिथि अनिश्चित।

ईशान पढ़ि कहल, “एहि मे कथा स्वयं बनि रहल अछि।”

“नहि,” मृणालिनी कहल, “एहि मे समयरेखा बनि रहल अछि। कथा पाछाँ।”

“अन्तर?”

“समयरेखा कहैत अछि की दस्तावेजमे अछि। कथा कहैत अछि ओकर अर्थ की। पहिल बिना दोसर बनाओल तँ हम कल्पना लिखब।”

“एहि कागजसभ पर कखनो किछु लिखबाक विचार नहि?”

“हम एखन अभिलेख बना रहल छी।”

ईशान मुस्की देलक। “नीक। मुदा जे दिन अहाँ कथा लिखब, हमरा कहब।”

मृणालिनी उत्तर नहि देलक। ओकरा नहि बुझल जे ओ कखनो लिखत कि नहि। एखन तऽ पृष्ठसभ ओकरा अपन ढंगसँ पढ़ा रहल छल।

ओ पोथीक अधूर १५ जनवरीवला पृष्ठक बादक पन्ना खोललक। कागज पर महीन धूलिक दाग, नीचे कोनमे किछु माटि जकाँ पुरान भूर धब्बा। लिखाइ फेर शुरू, मुदा हाथ कनी काँपल जकाँ। पहिले दू पाँति मुख्य हाथ, फेर किनारमे दोसर हाथ।

मृणालिनी केँ एकाएक कल्पना नहि, आवाज सुनाइ पड़ल जकाँ भेल—बासन खनकल, ककरो बोलब, बाहर सँ दौड़, धरतीक गड़गड़ाहट।

ओ आँखि बन्द केलक।

फेर तुरन्त खोलि देलक।

“की भेल?” ईशान पूछलक।

“किछु नहि। हम अनुमान बेसी करय लागल रही।”

“कखनो-कखनो अनुमानसँ दृश्य बनैत अछि।”

“दृश्य बनब, मुदा पाछाँ। पहिने जे अछि से पूरा देखू।”

ओ चिट्ठी फेर पढ़लक। अन्तिम पाँति:

“घर पहुँचि पहिने माँक हाथक भोजन खाएब; तकर बाद सभ प्रश्न।”

मृणालिनी एहि पाँतिपर अटकली।

घर पहुँचि पहिने भोजन। तकर बाद प्रश्न।

कागज पर लिखल ई साधारण इच्छा एकाएक मनुष्य केँ नजदीक आनलक। देवकान्त आब केवल मुख्य लिखाइक हाथ नहि रहलाह। ओ यात्रासँ घर लौटय चाहनिहार एक व्यक्ति छलाह, जे किताब, नोट आ प्रश्न नेने आबि रहल छलाह, मुदा माँक हाथक भोजन पहिने चाहैत छलाह।

मृणालिनी चिट्ठी धीरे मोड़लक।

“एहि ठाम सँ शुरू हो सकैत अछि,” ओ अनायास कहल।

“की?”

ओ रुकल। “किछु नहि।”

ईशान हँसल। “कथा।”

मृणालिनी ओकरा झिड़कबाक बदला चुप रहली।

कदाचित ईशान पहिल बेर नीक कहि रहल छल।

❖❖

तीन दिनक यात्रा देवकान्तक पहिरावामे धूलि भरि देने छल। घरक बाहरी भित्ति दूरसँ देखाइते ओकर चाल तेज भऽ गेल। गाड़ीवान पाछाँ सँ आवाज देलक—“बाबू, पेटी तँ गाड़ीमे अछि!”

देवकान्त रुकि हँसलाह। सचमुच ओ खाली हाथ आँगन दिस बढ़ि रहल छलाह, मानो किताब, कपड़ा, कागज सभ बाटमे छोड़ि देबासँ कोनो हानि नहि। फेर लौटि पेटीक एक कात पकड़लनि।

“हम उठा लैत छी,” गाड़ीवान कहल।

“दू दिन सँ अहाँ उठा रहल छी। एखन हमरो हाथ लगय दिअ।”

फाटक पर पहुँचतहि भीतर सँ कुकुर भुकल। आवाज पहचानि तुरन्त पूँछ हिलबय लागल। ओसारमे ककरो चप्पलक खटखट। भीतर सँ स्त्रीक आवाज—“के?”

“हम।”

एक क्षणक मौन, फेर तेज पग।

जानकी बाहर अयलीह। माथ पर आँचर, हाथमे पीठार लागल। देवकान्त प्रणाम करबाक लेल झुकलाह, मुदा ओ पहिने हुनकर माथ छूलीह, फेर गाल देखलीह।

“दुबरा गेल छी।”

“रेलमे लोक मोट नहि होइत अछि।”

“तीन दिनमे मनुष्य दुबरा जाइत अछि?”

“अहाँ कहब तँ एक दिनमे सेहो।”

“बहुत पढ़ि कऽ जबान तेज भऽ गेल।”

“जबान पहिने सेहो—”

“पहिने हाथ-मुँह धोउ।”

देवकान्त हँसलाह। घर पहुँचलाक पहिल पाँच वाक्यमे हुनकर सभ तर्क पराजित भऽ गेल छल।

आँगनमे जनवरीक धूप तिरछा पड़ैत छल। एक कात अनाज सुखायल, दोसर कात मिट्टीक चूल्हिसँ धुआँ ऊपर उठैत। ओसारक खम्भा पर पुरान रस्सी। भित्ति पर गोबर-माटिक ताजा लेपक रंग। देवकान्त केँ कोनो वस्तु असाधारण नहि लगल, मुदा दूर रहला बाद सामान्य वस्तु सभ एकाएक अलग चमक लैत अछि।

ओ हाथ-मुँह धोइ लौटला तखन जानकी पीतलक थारी लगा चुकल छलीह। भातसँ भाप उठैत। दालिक ऊपर घी नहि, सरिसो तेलक हल्का चमक। एक साग, आलूक छोट तरुआ, नून, हरियर मिरचाइ, आ दहीक कटोरी।

देवकान्त बैसतहि अपन झोलासँ छोट नोटबुक निकाललनि।

जानकी थारी रखैत रुकलीह।

“ई की?”

“नोट।”

“एखन?”

“हम बाट भरि सोचैत रही जे अहाँसँ पूछब—जाड़मे कोन दालि—”

जानकी नोटबुक उठा कऽ हुनकर पहुँचसँ दूर रखि देलीह।

“पहिने खाउ।”

“माँ, दू पाँति—”

“भोजन ठंढा होएत। ज्ञान भागि नहि रहल अछि।”

देवकान्त मुस्की देलनि। “कखनो-कखनो भागि जाइत अछि।”

“तँ पकड़ी लेब। पहिने भात।”

ओ पहिल कौर लेलनि। दालि अपेक्षासँ गाढ़ छल। कनी धुँआइल गन्ध। ओ चखिते पूछलनि, “ई कोन दालि?”

जानकी आँखि तरेरलीह।

देवकान्त हँसि पड़लाह। “नीक। खा रहल छी।”

ओसारक दोसर छोर पर एक युवती पात छाँटि रहल छल। देवकान्त पहिने ध्यान नहि देने छलाह। ओकर सोझाँ बाँसक डालामे कई प्रकारक पात, किछु साग, किछु अलग रखल। ओ एक पात उठबैत, नस देखैत, डाँठ तोड़ैत, फेर दू ढेरमे बाँटि दैत।

देवकान्तक नजरि उधर गेल। युवती हुनका एक क्षण देखलक, फेर अपन काजमे लगि गेल।

“के?” देवकान्त धीरे पूछलनि।

जानकी कहलीह, “माधवी।”

देवकान्त नाँव दोहरौलनि नहि। बस थारीक तरुआ चखलनि।

“ई पात कोन?” प्रश्न फेर मुँह धरि आयल, मुदा जानकीक चेहरा देखि रोकि लेलनि।

किछु देर बाद जानकी स्वयं कहलनि, “अहाँक प्रश्न समाप्त नहि होएत, से बुझल अछि। खा लिअ, तकर बाद माधवीसँ पूछब। पात-सागक आधा ज्ञान ओ हमरा सँ बेसी रखैत अछि।”

देवकान्त एहि बेर सचमुच चुप भऽ गेलाह।

ओसारक कातमे माधवी एकटा पात अलग रखलक—बाकी सभसँ कोमल, छोट, गाढ़ हरियर। ओकर अँगुरी डाँठ पर एक क्षण रुकल। फेर ओ पात केँ डालाक भीतर नहि, अपन बगलमे रखल छोट पीतल कटोरीक ऊपर राखि देलक।

देवकान्त थारी दिस देखैत रहलाह, मुदा आँखिक कोनसँ ई क्रिया देखलनि।

बाहर जाड़क धूप आँगन पार करैत धीरे-धीरे भित्ति पर चढ़ि रहल छल।

घरक भीतर कोनो इतिहास शुरू भेल अछि—ई बात तखन ककरो नहि बुझल छल।

देवकान्त केवल एतेक बुझैत छलाह जे भोजनक बाद हुनका बहुत प्रश्न पूछबाक अछि।

माधवी केवल एतेक बुझैत होएत जे पात छाँटबाक अछि।

जानकी कदाचित दुनू सँ अधिक बुझैत छलीह। ओ खाली थारी दिस देखैत कहलीह—

“पहिने खाउ। ज्ञानक पेट पाछाँ भरब।”

देवकान्त हँसलाह।

आ नोटबुक ओहि समय धरि बन्द रहल।

अध्याय ४ — पन्द्रह जनवरी

भोरमे देवकान्तक नींद ओसारक खटखटाहटसँ खुजल। घरमे ककरो जगयबाक आवश्यकता नहि पड़ैत छल; घर अपन समयसँ जागैत छल। कुआँ दिस रस्सीक चरचराहट, आँगन बुहारबाक खरखर, गोठ दिससँ गायक घंटी, चूल्हिक पहिल धुआँ—सभ आवाज एक-दोसराक पाछाँ एना अबैत छल मानो राति भरि कतहुँ चुपचाप ठाढ़ छल आ उजास देखिते अपन-अपन ठाम चलि गेल।

देवकान्त किछु क्षण ओछाइनपर पड़ल रहलाह। काल्हि साँझि ओ जानकीसँ आधा दर्जन प्रश्न पूछने छलाह—जाड़मे कोन दालि, कोन साग, कोन अनाज भिजायल जाए, कोन सुखायल; उत्तरक आधा ओ लिखि पओलनि, आधा जानकी कहि देने छलीह—“एहि बातक उत्तर माधवी देत।” ई वाक्य हुनकर नोटबुकमे तीन ठाम लिखल छल। एके घरमे एतेक ज्ञान विभाजित रहि सकैत अछि, ई बात हुनका रोचक लगलनि।

ओ उठि बाहर अयलाह। जनवरीक धूप एखन कोमल छल। आँगनक एक कोनमे जानकी पीतलक थारीमे धान चुनि रहल छलीह। दोसर कात माधवी पीढ़ीपर बैसि पात छाँटि रहल छल। काल्हि जे पात देवकान्तक दृष्टि खींचने छल, ओ सभ एखनहुँ छल—किछु गाढ़ हरियर, किछु हल्का, किछुक डाँठ मोट, किछु एतेक कोमल जे मोड़िते नस टूटि जाए।

भानसघरक दुआरपर दू कनियाँ चाउर धोइत छलीह। पहिल पानी दूधिया भऽ कऽ पथरा नालीमे बहि गेल, दोसर पानी कम धूसर। भीतर मिट्टीक चूल्हिपर दालि चढ़ल छल। ढक्कनक किनारसँ भाप उठैत, फेर ठंढा हवा लागिते ओझरा जाइत। सरिसो तेलक हल्का गन्ध, धुआँ, भीजल चाउर, काटल हरियर पात—घरक दुपहर एखन बनि रहल छल।

देवकान्त सहजहि नोटबुक लेलनि। जानकी नजरि उठा कऽ देखलीह।

“भोरहि सँ?”

“एखन भोजन ठंढा नहि भऽ रहल अछि।”

“तँ लिखू। मुदा पहिले ई लिखू जे चाउर धोबो भोजनक हिस्सा अछि। खाली थारीमे जे अबैत अछि, ओहि सँ भानस नहि बनैत।”

देवकान्त हँसलाह। “माँ, अहाँ हमरा लेख लिखबा देब कि स्वयं लिखब?”

“हम लिखब तऽ अहाँ की करब?”

“छपायब।”

“ओह, तखन नाँव अपन लिखब?”

जानकीक हँसी सुनि माधवी सेहो माथ उठा कऽ मुस्की देलक। देवकान्त केँ काल्हिक बात स्मरण भेल—ओहि युवतीक नाँव माधवी। ओ लिखबाक बहन्ने ओकर नजदीक गेलाह।

“ई पात सभक नाम कहब?”

माधवी एक पात उठेलक। “नाम लिखि लेब, तकर बाद?”

“तकर बाद कोना बनैत अछि।”

“तकर बाद?”

देवकान्त कनी अचम्भित भेलाह। “तकर बाद स्वाद।”

माधवी पातक डाँठ तोड़ि भीतरक महीन रेशा देखेलक। “तकर बाद ई जानब जे कोन पात एखन तोड़ल जाए, कोन दू सप्ताह बाद। कोन भानस लेल, कोन औषधक कहबमे। कोन पात अतिथि लेल राखल जाए, कोन रोजक भोजनमे। नाम लिखला सँ आधा बातो नहि बचत।”

देवकान्त नोटबुकक पन्ना उलटलनि। “तँ अहाँ धीरे-धीरे कहू। हम सभ लिखब।”

“सभ?”

“जतेक लिखि सकी।”

“तँ पहिने पात नहि, लोक लिखू।”

“लोक?”

“जे पात तोड़ैत अछि, जे बेचैत अछि, जे बनबैत अछि, जे खाइत अछि। एके पात सभक थारीमे एके अर्थ नहि रखैत अछि।”

देवकान्त उत्तर देबासँ पहिने जानकीक आवाज आयल—“माधवी, ओकरा एखनहि पूरा पोथी मत पढ़ाउ। पहिने चाउर देखू, पानी उतरि गेल कि नहि।”

माधवी उठि गेल। देवकान्तक कलम पन्नापर अटकल रहल। ओ लिखलनि—“पात—नामसँ अधिक सम्बन्ध।” फेर किछु सोचि “सम्बन्ध” शब्दक नीचे एक छोट रेखा खींचि देलनि।

दुपहर बढ़ल। घरक गति किछु तेज भेल, मुदा कोनो हड़बड़ी नहि। चाउर निथारल गेल। दालिमे नून पड़ल। कुटल अदरकक गन्ध उठल। एक बालक आँगनमे लकड़ीक छोट पहिया घुमा रहल छल। दुआर बाहर दू पड़ोसी बात करैत गुजरल। दूर कतहुँ हथौड़ाक धीमा ठक-ठक। देवकान्त केँ ई सभ एतेक सामान्य लगल जे सामान्यताक मूल्य ओहि क्षण ओकरा बुझल नहि।

ओ जानकीक लग बैसि पूछलनि, “आइ दुपहरमे की?”

जानकी बिना माथ उठौने मुस्केलीह।

देवकान्त मुस्की देलनि। “नीक—आइ दुपहरमे की?”

“भात, दालि, साग, पातक तरुआ। कनी दही। ई लिखबाक लायक समाचार अछि?”

“हमर लेल अछि।”

“तँ लिखू जे साधारण भोजन सेहो भोजन अछि। लोक पोथीमे खाली पर्व लिखैत अछि, मानो बाँकी दिन पेट उपास रहैत हो।”

देवकान्त एहि वाक्य पर किछु देर चुप रहलाह। फेर लिखलनि—“रोजक थारी बिना इतिहास अधूर।”

माधवी भानसघरक दुआरपर ठाढ़ छल। ओ पन्ना दिस देखलक, मुदा किछु नहि कहल। ओकर हाथमे भीजल चाउरक कटोरा छल, जाहिसँ पानीक दू बूँद अँगुरीक पोरसँ नीचे खसल।

दुपहरक उजास आँगनमे पूरा उतरि आएल छल। देवकान्त ओसारपर बैसि अपन नोट फेर सँ पढ़ि रहल छलाह। भानसघरमे दालिक उबाल कम कएल जा रहल छल। पीतलक एक लोटा ओसारक कात राखल छल। बालकक लकड़ीक पहिया एहि बेर भित्ति सँ टकरा कऽ उलटि पड़ल।

पहिने एक आवाज आयल।

एहन नहि जे ककरो एक दिशा सँ आयल हो। मानो माटिक बहुत भीतर कोनो भारी वस्तु घिसटि रहल हो। देवकान्त माथ उठौलनि। हुनका पहिल क्षण लागल बैलगाड़ीक पहिया कच्चा बाटपर अटकल होएत। फेर पीतलक लोटाक पानी काँपल। लोटा अपन ठामपर छल, मुदा पानीक सतह गोल-गोल काँपि उठल।

जानकी सेहो देखलीह। “ई की—”

वाक्य पूरा नहि भेल।

ओसारक खम्भा देवकान्तक आँखिक सोझाँ दाहिना-बाम हिलल। छप्परमे किछु चरमरायल। भानसघरक भीतर बासन एक संग खनखनायल—पहिने दू, फेर मानो पूरा आलमारी लोढ़ि पड़ल हो। माटिक भुइँ स्थिर नहि रहल। देवकान्त उठय चाहलनि, मुदा पयरक नीचे धरती एना खसकल जे देह अपन भार बिसरि गेल। ओ खम्भा पकड़ि लेलनि।

“बाहर! सभ बाहर!” ककर आवाज छल, बुझाइ नहि पड़ल।

माधवी भानसघरक दुआरसँ निकलि रहल छल। ओकर हाथमे एखनहुँ एक कटोरा छल, जे पहिल झटकाजे खसि गेल। चाउर आ पानी माटिपर फैलि गेल। ओ कटोरा उठय नहि झुकल। सीधे भीतर दिस घुमि चिचियायल—“दुआर छोड़ू! आँगन दिस आउ!”

अगिला क्षण भित्तिक ऊपरक माटिक एक पट्टी टूटि कऽ खसल। धूलि उठल। ककरो चित्कार। चूल्हिपरक पातिल एक कात खिसकल; गरम दालि किनारसँ छलकि आगिपर पड़ल आ तेज सिसकारी उठल। धुआँ आ भाप एक संग।

देवकान्त जानकी दिस दौड़लाह। जानकी पहिलेहि आँगनक बीच पहुँचि गेल छलीह, मुदा हुनकर दृष्टि घरक भीतर अटकल। “छोटकी? छोटकी कतऽ?”

“बाहर अछि!” माधवी उत्तर देलक। “ओ झाड़ीक कात अछि।”

आँगनक दुआर दिस लोक दौड़ि रहल छल। पड़ोसक एक स्त्री नंग पयर आयलीह, आँचर आधा खसल। ककरो हाथमे बच्चा। ककरो माथपर धूलि। बाहर सड़क दिससँ आवाज बढैत गेल—नाँव पुकारल जाइत, भगवानक नाँव, रोदन, गोठक पशुक हड़बड़ी, टूटैत कच्चा ईट-माटिक थमथमाहट।

धरती एक बेर फेर जोर सँ डोलल। देवकान्त केँ लगल मानो आँगन स्वयं नाव अछि। ओ जानकीक बाँह पकड़लनि। जानकी झटकासँ हाथ छुड़बय नहि चाहलीह; केवल कहलनि—“हम नीक छी। माधवी?”

देवकान्त घुमलाह। माधवी आँगनक पाछाँक कात एक नन्हका बौआ केँ उठा रहल छल।
बच्चा गिरि गेल छल; ओकर घुट्टी छिलायल, माथक कात धूलि, आँखि भय सँ फाटल।
माधवी ओकरा उठाकऽ खुला ठाम आनलक।

“एतय बैसू,” ओ कहल। “भित्तिसँ दूर।”

बौआ रोइत पूछलक, “माए?”

“आबि रहल छथि। एतय बैसू।”

माधवी अपन आँचरक कोनसँ ओकर मुख पोंछलक, मुदा घुट्टी नहि छुलक। देवकान्त
सहायता लेल बढ़लाह।

“की करब?”

“पहिने देखू, के भीतर रहि गेल।”

ओ वाक्य आदेश जकाँ नहि, आवश्यकता जकाँ आयल। देवकान्त तुरन्त घरक
कोठरीसभ दिस नजरि दौड़ौलनि। एक वृद्ध नौकर ओसारक कोनसँ बाहर आबि रहल छल;
ओकर हाथ काँपि रहल छल। छोटीकी कहल जाएत युवती पिछला दुआरसँ दौड़ि अयलीह।
जानकी ओकरा देखिते एक बेर आँखि बन्द कऽ फेर खोललीह।

झटका धीरे-धीरे थमल, मुदा ककरो देह स्थिर नहि भेल। जमीन थिर भेला बादो पयर केँ
धरतीपर भरोसा नहि होइत छल। कानमे चरमराहट एखनहुँ गूँजि रहल छल। धूलि धीरे बैठय
लागल। भानसघरक दुआर ऊपर एक लम्बा चीरा देखाइत छल, जे काल्हि नहि छल।

देवकान्त अपन हाथ देखलनि। कलम नहि। नोटबुक ओसारपर खसल छल, पन्ना
खुलल। ओकर ऊपर माटिक महीन धूलि। एक पन्नापर आधा लिखल वाक्य—“रोजक
थारी बिना इतिहास...” तकर बाद खाली।

ओ नोटबुक उठय बढ़लाह, फेर रुकि गेलाह।

माधवी दूरसँ कहल—“एखन कागज छोड़ू।”

देवकान्त ओकरा देखलनि।

पहिल बेर हुनका ई बात बुरा नहि लगल।



कतेक समय बीतल, केकरो निश्चित नहि बुझल। घड़ी देखबाक फुर्सत नहि छल, आ जेकरा लग घड़ी छल सेहो बेर-बेर अपन देह, घर, परिवार आ पड़ोसी गनैत छल। आँगन धीरे-धीरे खुला शरणस्थल बनि गेल। घरक भीतर जे वस्तु उठाओल जा सकैत छल, सावधानीसँ बाहर आनल गेल—दू बोरा चाउर, एक डब्बा दालि, नूनक डिबिया, किछु लकड़ी, पानीक घड़ा, दू पातिल, चटाइ।

भानसघरक ऊपरक भित्ति तिरछा चीरा लेने छल। जानकी दुआरपर ठाढ़ भऽ भीतर देखलीह, मुदा माधवी रोकलक—“एखन भीतर नहि।”

जानकीक मुखपर असहमति आयल। “चूल्हि—”

“चूल्हि फेर बनत।”

“पिसान भीतर अछि।”

“पिसान पाछाँ।”

जानकी किछु क्षण माधवीक आँखिमे देखलीह। फेर बिना बहस लौटि अयलीह। देवकान्त एहि छोट दृश्य केँ ध्यानसँ देखलनि। काल्हि धरि घरक अनुशासनक केन्द्र जानकी छलीह; आइ निर्णय जेकरा लग स्थिति बुझबाक क्षमता छल, ओतय सरकि रहल छल।

आँगनक बीच माटि समतल कऽ तीनटा ईंट राखल गेल। पुरान चूल्हिसँ बचल आगिक अँगार छोट लोढ़ामे आनल गेल। लकड़ीक पतला टुकड़ा, सुखल खर, किछु पुआल। ककरो हाथ काँपैत छल, ककरो आवाज सामान्य बनयबाक प्रयास करैत छल।

पड़ोसक दू परिवार सेहो भीतर अयल। एकर घरक बाहरी भित्ति खसि गेल छल; दोसरक छप्पर टेढ़। जे लोक सामान्य दिन दुआरपर ठाढ़ भऽ बात करैत छल, ओ सभ आइ एके आँगनमे चटाइपर बैसल। मुदा पुरान आदत धरतीक एक झटकासँ पूरा नहि टूटल। पानीक घड़ा पास करैत एक स्त्री एक क्षण हिचकिचेलीह; दोसर वृद्ध अपन लेल अलग लोटा खोजय लगलाह। ककरो नजरि एतय, ककरो ओतय।

जानकी ई सभ देखैत छलीह। हुनकर मुखपर थकानक संग पुरान नियमक स्मृति सेहो छल। ओ एक छोट पीतल कटोरा उठा कऽ कहलनि—“जकरा जे बासन चाही, एतय राखल अछि। मुदा पानी रोकू नहि। बच्चा सभ पहिने पीओत।”

वाक्य छोट छल, मुदा आँगनमे कई आँखि एक-दोसराक दिस उठल। नियम पूरा समाप्त नहि भेल, पर आवश्यकता ओकरा कनी हटेलक।

देवकान्त पातिल उठेबाक लेल बढ़लाह। रमानन्द—जे पोखरि दिसक काजसँ घर अबैत-जाइत छल—दुआरपर धूलि-सनल पहुँचल। ओ दूरहि सँ कहल, “बाबू, ई भारी अछि।”

“दू हाथमे हल्का होएत।”

दुनू पातिल उठा कऽ अस्थायी चूल्हि पर रखलनि। भीतर सँ बचायल दालिक आधा हिस्सा छलक चुकल छल। चाउरक एक भाग माटिमे पड़ि खराब भेल। जानकी बोराक मुँह खोलि मुठ्ठी देखलीह।

“एतेक लोकमे ई भात सहजे घटत,” ओ कहलीह।

ककरो सुझाओल—“खिच्चड़ बना दी।”

जानकी माथ हिलेलनि। “साँझि। एखन जे बचल अछि, ओ बाँटू।”

माधवी एखनहुँ चोट खायल बौआक कात बैसल छल। बच्चाक माए आबि गेल छलीह; रोदन कम भेल, मुदा बौआ घुट्टी छुवाबय नहि दैत छल। माधवी दूरसँ आवाज देलक—“पानि चढ़ाउ।”

जानकी पूछलीह, “भात लेल?”

“नहि। उबालबाक लेल।”

“एखन?”

“हाँ, एखन।”

देवकान्त घड़ा दिस बढ़लाह। आँगनमे किछु लोक भोजनक चर्चा करैत छल—के कतेक खाएत, साँझि धरि की बचत, बजार खुलत कि नहि। एही बीच माधवीक ध्यान पानि पर छल।

“कतेक?” देवकान्त पूछलनि।

“एक पातिल भरि। उबालू। फेर ठंढा होएत।”

“पीबाक लेल?”

“पीबाक लेल सेहो। घाउ धोबाक लेल सेहो। एखन कुआँक पानीमे धूलि पड़ल कि नहि, के जानैत अछि।”

देवकान्त बिना दोसर प्रश्न पातिल भरलनि। चूल्हि पर ठाम कम छल। भोजनक पातिल उतारि कातमे राखल गेल। पानि चढ़ल। ककरो मुखपर असन्तोषक हल्का भाव आयल— गरम भोजन पहिने कि पानि? मुदा कियो खुलि कऽ विरोध नहि केलक।

धुआँक दिशा बदलि-बदलि आँखि जरबैत छल। आँगनमे जेना पूरा घर अपन सीमा बदलि लेने हो। जे भानस भीतरक काज छल, ओ सभक सोझाँ भेल। जे निर्णय स्त्रीसभ चुपचाप लैत छलीह, ओ आब खुला आँगनमे सुनाइत छल। जे भोजन सामान्य दिन थारी धरि पहुँचि चुप भऽ जाइत छल, ओकर पाछाँक श्रम, कमी, जल, आगि, बासन, हाथ—सभ एक-एक कऽ देखाइत छल।

देवकान्तक नोटबुक ओसारक कात पड़ल छल। ओ एक बेर उधर देखलनि, मुदा उठौलनि नहि। हुनका लगल, आइ जे लिखबाक अछि, ओ कागज तुरन्त पकड़ि नहि सकत।

**

पानि जोर सँ उबलल तखन माधवी कहल, “आब उतारू। ढाँकि राखू। कनी ठंढा होअय दिअ।”

देवकान्त पातिल उतारि ईटक कात रखलनि। हुनकर पहिरावापर राखक दाग पड़ि गेल छल। हाथक एक अँगुरी कनी छिलायल, कदाचित भित्ति पकड़ैत समय; हुनका एखन ध्यान गेल।

“अहाँक हाथो कटायल अछि,” माधवी कहलक।

“किछु नहि।”

“सभ एही कहैत अछि, तकर बाद घाउ फूलेल रहैत अछि।”

देवकान्त हँसबाक प्रयास केलनि। “अहाँ सभक घाउ देखब?”

“जे सोझाँ अछि, से देखब।”

ओ बच्चाक घुट्टी दिस इशारा केलक। बौआक माए ओकरा गोदमे लेने छलीह। धूलि पोंछल गेल छल, मुदा खरोंचमे माटि लागल छल। माधवी स्वच्छ कपड़ा मँगेलक। उबलल पानि ठंढा होइत-होइत गुनगुना भेल। ओ बच्चाक माए कै कहलक—“धीरे धोऊ। जोर नहि।”

बौआ रोय लगल। माधवी ओकर ध्यान बँटेबाक लेल जमीनपर खसल लकड़ीक पहिया उठा लेलक। “ई देखू, अहाँक गाड़ी भूकम्पमे हमरा सँ बेसी बहादुर निकलल। एखनहुँ पूरा अछि।”

बौआ रोदनक बीच पहिया पकड़ि लेलक। आँगनमे किछु लोक मुस्की देलक। भय एक क्षण लेल हल्का भेल।

देवकान्त एहि दृश्य केँ चुपचाप देखैत रहलाह। काल्हि धरि हुनका माधवीक ज्ञान पात, साग, मसाला, ऋतु आ पकवानक ज्ञान लगैत छल। आइ ओ देखलनि जे ओकर ज्ञान वस्तुसभक सूची नहि, परिस्थिति पढ़बाक ढंग अछि। कोन बात पहिने, कोन पाछाँ; कोन जोखिम तुरन्त, कोन प्रतीक्षा कऽ सकैत अछि; कोन संसाधन बचत, कोन बाँटत—एहि क्रममे ज्ञानक असली परीक्षा छल।

जानकी कातमे बैसल छलीह। ओ धीरे कहलीह, “भोजन ठंढा भऽ गेल।”

माधवी उत्तर देलक, “फेर गरम भऽ जाएत।”

जानकी ओकरा देखलीह। “नीक कहैत छह।”

ई तीन शब्द माधवी लेल प्रशंसा छल कि केवल स्वीकार, देवकान्त नहि बुझि पओलनि। मुदा हुनका बुझायल जे घरक भीतर अधिकारक भाषा सेहो बदलि रहल अछि।

साँझिक छाया एखन दूर छल, मुदा लोकसभक मुखपर दिन बहुत पैघ भऽ गेल जकाँ थकान उतरि आएल। बाहरसँ खबर अबैत छल—फलाँ घरक भित्ति खसल, अमुक पोखरि क कात माटि फाटल, बाट कतहुँ बन्द, ककरो चोट, ककरो घर खाली। कोनो खबर पूरा निश्चित नहि। नामक संग भय घूमैत छल।

देवकान्त अन्ततः ओसारपर गेलाह आ नोटबुक उठौलनि। धूलि फूँकि हटेबाक मन भेल, फेर रोकि लेलनि; फूँकलासँ धूलि पन्नामे आरो घुसत। ओ आँचर माँगय सोचलनि, फेर अपन रूमालसँ बहुत हल्का पोंछलनि। आधा वाक्य एखनहुँ देखाइत छल—“रोजक थारी बिना इतिहास...”

ओ पन्ना पलटलनि।

कलम उठौलनि।

पहिल बेर हुनका सामग्रीक नाम नहि सूझल। चाउर, दालि, नून, पात—सभ आँखिक सोझाँ छल, मुदा आइ ओ सभ मुख्य बात नहि रहल।

ओ लिखलनि—“१५ जनवरी। धरती हिलल। भानसघर असुरक्षित। सभ बाहर।”

किछु क्षण रुकलाह। फेर लिखलनि—“पानि पहिने उबालल गेल।”

एतय कलम फेर रुकल। वाक्य अधूर लगल। के कहल? किएक? एहि निर्णयक कारण के बुझल?

ओ अगिला पाँतिमे लिखलनि—“माधवी—पानि पहिने।”

नाँव लिखिते हुनका एक विचित्र झटका लगल—धरतीक नहि, अपन सोचक। काल्हि धरि नोटमे पातक नाम छल, व्यंजनक नाम, घरक नियम, ऋतु। आइ पहिल बेर निर्णयक संग एक व्यक्तिक नाँव आयल।

माधवी कातसँ देखलक। “की लिखलहुँ?”

देवकान्त पन्ना छिपौलनि नहि। “अहाँक नाँव।”

माधवीक मुखपर थकान छल। “किएक?”

“कारण पानि पहिने उबालबाक बात अहाँ कहलहुँ।”

“एतेक बात लेल नाँव?”

“जे कहलक, ओकर नाँव।”

माधवी किछु क्षण चुप रहल। फेर बहुत हल्का मुस्की देलक। “ई नियम पोथीक सभ पन्नापर राखब?”

देवकान्त उत्तर देबासँ पहिने पन्ना दिस देखलनि। प्रश्न साधारण नहि छल।

“राखबाक चाही,” ओ अन्ततः कहलनि।

माधवी फेर बच्चा दिस घुमि गेल। “चाही आ राखब—दू बात अछि।”

देवकान्त कलम हाथमे लेने बैसल रहलाह। आँगनक बीच उबलल पानि ढँकल छल। भोजन फेर गरम करबाक तैयारी होइत छल। बाहरी दुनिया टूटल घरक खबरसँ भरि रहल छल।

ओ पन्नापर एक दोसर वाक्य जोड़लनि—“जे निर्णय करय, ओकर नाँव लिखू।”

फेर कनी सोचि ओकर नीचे छोट अक्षरमे लिखलनि—“पाछाँ भूलू नहि।”

वर्षसभ बाद एहि पन्नापर धूलि, दाग, मोड़ आ दोसर हाथक लिखाइ चढ़त। किछु नाँव बचत, किछु मेटत, किछु आधा रहत। मुदा ओहि दुपहर देवकान्त केँ एतेक भरि बुझायल जे भानसक इतिहास केवल स्वादक इतिहास नहि।

ई आगि, पानि, भय, श्रम आ निर्णयक इतिहास सेहो अछि।

आ इतिहासमे नाँव लिखब—भोजन बनयब जकाँ—अपने आप नहि होइत अछि।

अध्याय ५ — खिच्चड़ घर

भूकम्पक दोसर दिन भोर भेल तखन गामक आवाज बदलल छल। मुर्गाक बाङ्ग, गायक घंटी, कुआँक रस्सी—ई सभ पुरान छल; मुदा बीच-बीचमे हथौड़ाक चोट, भित्तिक माटि झाड़बाक खरखर, नाँव पुकारैत आवाज, आ दूर कतहुँ काठ टूटबाक ठकास नव छल। राति अधिकांश लोक खुला आँगन वा ओसारक सुरक्षित कोनमे काटने छल। नींद ककरो पूरा नहि भेल। धरती स्थिर छल, मुदा देह एखनहुँ ओकरा पर भरोसा करबाक सीखि रहल छल।

जानकी भोरोहि अनाजक बोरा खुलबेलनि। चाउरक मात्रा देखल गेल, दालिक डिब्बा देखल गेल, नून, घी, तेल, सुखल लकड़ी—सभक गिनती। सामान्य दिन जे वस्तु भानसघरमे अपन ठामपर रहैत छल, आइ आँगनक बीच राखल छल, मानो घरक पेट खोलि देल गेल हो।

“एतेक चाउरमे दू बेर भात बनत,” जानकी कहलनि, “मुदा एतेक लोकमे एक बेरो पूरा पड़त कि नहि, कहब कठिन।”

पड़ोसक तीन घरक लोक रातिसँ एतय छल। एक वृद्ध दम्पति, दू बच्चासहित एक परिवार, भित्ति खसला सँ कान्ह चोटायल एक युवक, आ दू मजूर जे भोरमे टूटल छप्पर हटेबामे लगल छल। रमानन्द पोखरि दिसक खबर लऽ कऽ फेर पहुँचल छल। लोक बढ़ैत छल; बोरा नहि।

माधवी चाउरक मुठ्ठी हाथमे लऽ कऽ देखलक। फेर दालिक डिब्बा खोललक। “भात अलग बनायब तऽ दालि अलग चाही। पानी सेहो बेसी। खिच्चड़ बनाउ।”

एक स्त्री तुरन्त सहमति देलीह। दोसर कहलीह, “खिच्चड़मे पेट सहजे खाली भऽ जाइत अछि।”

जानकी बोरा दिस देखैत कहलीह, “पेट भरब कि अनाज बचायब—दूनू चाही।”

देवकान्त ओसारक खम्भाक कात बैसल ई चर्चा सुनि रहल छलाह। काल्हि हुनकर नोटबुक धूलिमे पड़ल छल; आइ ओ ओकरा कपड़ाक थैलीमे राखने छलाह। हाथ अनायास ओतय जाइत छल, मुदा ओ तुरन्त निकालि नहि रहल छलाह। काल्हि माधवीक एक वाक्य

हुनका रोकने छल—एखन कागज छोड़ू। आइ हुनका बुझाइत छल जे लिखबाक पहिने देखब आवश्यक अछि।

“कतेक चाउर?” ओ अन्ततः पूछलनि।

माधवी ओकरा देखलक। “खिच्चड़ खायब कि लेख लिखब?”

आँगनमे दू-तीन लोक मुस्की देलक। देवकान्त सेहो हँसलाह। “दूनू।”

“तँ पहिने पातिल देखू। माप पातिलक, लोकक, पानीक—सभक संग होएत। खाली सेर-छटाँकसँ नहि।”

जानकी कहलनि, “दू सेर चाउर निकालू। दालि ओकर आधासँ कनी कम। पानी एखन कम राखू; फेर बढ़ा सकैत छी।”

“कम किएक?” देवकान्त पूछलनि।

“आगि स्थिर रहय तऽ बढ़ायब। पातिल उफनि गेल तऽ अनाजो गेल, आगियो गेल।” माधवी उत्तर देलक।

देवकान्तक मनमे तुरन्त पाँति बनल—आपदामे पानी धीरे बढ़ाउ। मुदा ओ लिखलनि नहि।

चाउर आ दालि एके टोकरीमे डालि चुनल जाए लगल। टूटल कंकड़, भूसी, किछु काला दाना अलग। सामान्य दिन एहि काज लेल समय रहैत; आइ हाथ तेज छल, पर लापरवाह नहि। हेमलता बच्चासभक संग कंकड़ चुनय बैसि गेल। एक छोट बौआ जे काल्हि घुट्टी छिलौने छल, ओ अपन लकड़ीक पहिया बगलमे राखि दाना चुनबाक नकल करैत छल। जे कंकड़ पबैत, विजयक भावसँ ऊपर उठा कऽ देखबैत।

“ई पातिलमे पड़ि जाएत तऽ दाँत तोड़त,” हेमलता ओकरा कहलक।

बौआ गंभीर मुखँ कहल, “धरती घर तोड़लक, हम कंकड़ पकड़ब।”

आँगनमे फेर हल्का हँसी फैलल।

चूल्हि काल्हिक तीन ईट सँ पैघ बनाओल गेल। टूटल भित्तिक साबुत ईट चुनि दू कात जमाओल गेल। बीचमे राख, खर, लकड़ी। रमानन्दक हाथमे चोटक छोट निशान छल, मुदा ओ लकड़ी चीरैत रहल। देवकान्त सहायता लेल आगाँ बढ़लाह।

“ई लकड़ी भीजल अछि,” रमानन्द कहल। “धुआँ देत।”

“सुखल कतऽ?”

“जे छप्परक भीतर बचल, ओ निकालब तऽ पहिने माटि हटत।”

माधवी दूरसँ कहल, “भीजल लकड़ी नीचे नहि। पहिने सुखल टुकड़ा, तकर ऊपर ई। आगि पकड़ला बाद धुआँ सहि लेब।”

आगि पकड़ल। पहिने पातिलमे कनी तेल गरम कएल गेल कि सीधा चाउर-दालि? एहि पर छोट बहस उठल। कियो घी चाहैत छल, कियो कहलक घी बचाउ। जानकी निर्णायक स्वरमे कहलीह, “घी बच्चा आ घायल लेल बचत। आइ खिच्यड़ तेलसँ।”

माधवी एक चुटकी जीरा हाथमे लेल, फेर आधा फेर डिब्बामे राखि देलक। देवकान्त देखि लेलनि।

“एतेक कम?”

“गन्ध लेल पर्याप्त। जीरा पेट नहि भरत।”

“मसाला?”

“अदरक कनी। हरदि। नून। एखन थारी सजायब नहि।”

देवकान्त कै ‘थारी सजायब नहि’ वाक्य नीक लगल। सामान्य भोजनक सौन्दर्य आ आपदाक भोजनक उपयोग—दूनू एके भानसमे रहैत, मुदा क्रम बदलि जाइत।

चाउर-दालि पातिलमे पड़ल तखन पानीक पहिल मात्रा देल गेल। माधवी लकड़ीक करछुलसँ तली छुलक। भाप उठल। कच्चा दालि, भीजल चाउर, जीरा आ धुआँक गन्ध एक संग मिलल। एखन ई भोजन नहि, सम्भावना छल।

“नून एखन?” हेमलता पूछलक।

“कनी,” माधवी कहलक। “अन्तमे चाखब।”

जानकी भौंह उठेलनि। “इतना लोकक खिच्यड़, अन्तमे नून कम भेल तऽ?”

“बढ़त। बेसी भेल तऽ घटत नहि।”

जानकी मानि गेलीह।

देवकान्त पहिल बेर देखलनि जे संकटमे पाक-विधि सेहो नीति बनि जाइत अछि—जे देलाक बाद फेर नहि लेल जा सकय, ओकरा धीरे देब; जे बढ़ि सकय, ओकरा बचा कऽ

राखब। पातिलमे पानी बढ़ैत गेल, आँगनमे लोक बढ़ैत गेल। दुनू गिनती एक-दोसराक संग चलि रहल छल।

**

दुपहरक पहिले खिचड़ पकबाक गन्ध आँगनक बाहर धरि जाए लगल। गन्ध भूखक समाचार होइत अछि; जे लोक भोजनक चर्चा नहि करैत छल, ओकर पेट सेहो ओकरा सुनैत अछि। बच्चासभ चूल्हिक कात बेसी घुमय लगल। वृद्ध दम्पति चटाइपर पीठ टिकौने बैसल छल। चोटायल युवकक कान्ह कपड़ासँ बाँधल। रमानन्द आ दोसर मजूर भित्तिक ढीला माटि हटाकऽ आबि रहल छल; कपड़ा धूलिसँ एक रंग।

जानकी पत्तल गनलनि। पर्याप्त नहि। किछु पीतलक थारी, किछु काँसाक कटोरा, किछु पत्तल। “बेराबेरी खएत,” ओ कहलीह।

एहि बेर प्रश्न उठल—पहिने के?

एक वृद्ध पुरुष सहज स्वरमे कहला, “बच्चा सभ पहिने।”

एक स्त्री कहलीह, “घायल सेहो।”

ककरो आवाज आयल, “घरक बुजुर्ग पहिने बैसथि। ई हुनकर आँगन अछि।”

रमानन्द पाछाँ हटि गेल। “हम सभ पाछाँ।”

देवकान्त ओकरा देखलनि। “अहाँ भोरसँ काज करैत छी।”

रमानन्द कान्ह उचकौलक। “काजे करैत छी।”

एहि ‘काजे करैत छी’मे जे स्वाभाविकता छल, ओ देवकान्त केँ असुविधाजनक लगल। भूख श्रमक संग बढ़ल छल, मुदा पाँतिक क्रममे श्रम आपसँ पछाति जा रहल छल।

माधवी पातिलक ढक्कन उठा कऽ खिचड़ जाँचि रहल छल। ओ चर्चा सुनैत छल, पर तुरन्त किछु नहि कहल। चाउर एखन पूरा गलल नहि छल। ओ कनी गरम पानी मँगेलक। पानी पड़िते खिचड़ ढीला भेल, मात्रा सेहो बढ़ल।

“पहिने छोट बच्चा, घायल, बहुत बूढ़,” ओ ढक्कन राखैत कहलक। “तकर बाद जे भोरसँ भारी काज केलक। फेर बाँकी।”

आँगनमे क्षणभरि चुप्पी।

“घरक लोक?” कियो पूछलक।

“बाँकीमे घरक लोक सेहो।”

जानकी माधवी दिस देखलीह। “अतिथि?”

“जे बाहरसँ शरण लेलनि, ओ अतिथिसँ बेसी थाकल छथि। हुनका प्रतीक्षा किएक?”

एक वृद्धा, जे पड़ोसक घरसँ आयल छलीह, हँसि देलीह। “हमरा बूढ़ कहि पहिने खुएबाक षड्यन्त्र अछि।”

तनाव कनी ढील भेल।

जानकी पत्तल अलग करय लगलीह। “नीक। बच्चा आ घायल पहिने। मुदा मजूर सभ हाथ-मुँह धोएत।”

रमानन्द तुरन्त कुआँ दिस बढ़ल। माधवी रोकलक। “उबलल पानी ठंढा भेल अछि, ओतय राखल। पीबाक लेल ओहि मे सँ लिअ। हाथ लेल कुआँक पानी।”

देवकान्त बुझलनि—काल्हिक निर्णय आइ नियम बनि रहल अछि। संकटमे ज्ञान एना फैलैत अछि: पहिने कियो कहैत अछि, फेर लोक अपन काजमे समेटि लैत अछि।

पहिल पाँतिमे तीन बच्चा, चोटायल युवक, पड़ोसक दू वृद्ध बैसल। पत्तल सभ एकरूप नहि—ककरो पत्तल, ककरो कटोरा, ककरो थारी। मुदा पातिल एके।

माधवी पहिल करछुल भरलक। जानकी रोकलीह—“बहुत बेसी नहि। पहिल चक्रमे सभकेँ पहुँचे।”

माधवी माथ हिलेलक। एक-एक पत्तलमे खिचड़ पड़य लागल। पातिलक भाप लोकक मुखपर लागैत, आँखि कनी बन्द होइत। जे बच्चा काल्हि घुट्टी छिलौने छल, ओ पहिल कौर फूँकि-फूँकि खयबाक प्रयास करैत छल।

देवकान्त पत्तल बाँटि रहल छलाह। एक क्षण हुनका लागल जे ओ अपन घरक भोजमे एहन काज कदाचित कहियो नहि केने छलाह। सामान्य दिन पातिल सँ थारी धरि भोजन कोन-कोन हाथ पार करैत अछि, ई प्रश्न हुनकर सोझाँ कहियो एतेक स्पष्ट नहि आयल छल।

पहिल चक्र समाप्त भेला पर रमानन्द आ दोसर मजूर बैसल। रमानन्द पहिने टारय चाहलक—“बाबू सभ—”

जानकी बीचहि मे कहलनि, “बैस। माटि हटेलहुँ, खाउ।”

रमानन्द बिना बहस बैसि गेल। ओकर पत्तलमे खिच्चड़ पड़ल। देवकान्त देखलनि,
जानकी स्वयं एखन नहि बैसल छलीह। माधवी सेहो नहि।

“अहाँ सभ?” देवकान्त पूछलनि।

जानकी कहलनि, “परोसि लेब, तकर बाद।”

माधवी पातिलक तली फेर छलक। “जे परोसैत अछि, ओकर भूख अन्तमे बुझाइत
अछि।”

“तँ पहिने खा लिअ,” देवकान्त कहलनि।

माधवी ओकरा सीधा देखलक। “तखन परोसत के?”

देवकान्त उत्तर नहि देलनि। ओ करछल लेलनि। “हम।”

माधवी करछल छोड़लक नहि। “एक पातिल परोसि देने सँ भानस सीखल नहि
जाएत।”

“भानस नहि। एखन केवल अहाँकेँ बैसयबाक उपाय।”

माधवीक आँखिमे एक क्षण मुस्की चमकल। ओ करछल देवकान्त केँ देलक। “तँ तली
खुरचू नहि। एखन दोसर चक्र अछि।”

देवकान्त सावधानीसँ परोसय लगलाह। पहिल करछल कनी बेसी भरि गेल। जानकी
दूरसँ टोकलीह—“एतेकमे दू पत्तल भरत!”

आँगनमे फेर हँसी। देवकान्त आधा फेर पातिलमे देलनि।

माधवी कातमे जानकी संग बैसल। पहिल बेर देवकान्त ओकरा भोजन करैत देखलनि,
भोजन बनबैत नहि। ओकर अँगुरीपर हरदिक पीयर दाग छल, नखक कात राख, केशमे
धूलिक महीन परत। ओ थाकल छल, मुदा पहिल कौर मुँहमे दैत आँखि कनी बन्द केलक।
देवकान्त केँ बुझायल—भूखक सोझाँ ज्ञान, श्रम, पद, लाज—सभक अपन सीमा अछि।

दोसर चक्रमे घरक बाँकी लोक बैसल। कोनो व्यवस्थित भोजक पाँति नहि, कोनो
एकरूप थारी नहि, कोनो औपचारिक नेवता नहि। तैओ पातिलक चारू कात एक नबका
व्यवस्था बनि रहल छल—आवश्यकता अनुसार क्रम, उपलब्धता अनुसार मात्रा, आ सभक
नजरि पातिलक तल पर।



भोजनक पहिल दौर समाप्त भेला पर देवकान्त नोटबुक निकाललनि। धूप कनी पश्चिम दिस झुकल छल। ओसारक सुरक्षित कोनमे बैसि पन्ना खोललनि। काल्हिक लिखाइ देखाइत छल—“माधवी—पानि पहिने।” तकर नीचाँ—“जे निर्णय करय, ओकर नाँव लिखू।”

आइ ओ शीर्षक देलनि—“आपदा-भोजन।”

शीर्षक लिखिते हुनका अपन शब्द कनी बाहरी लगल। ‘आपदा’ स्पष्ट, व्यवस्थित, पोथीक शब्द छल; आँगनमे जे घटि रहल छल, ओ स्पष्ट नहि छल। भूख, धूलि, टूटल भित्ति, बच्चाक रोदन, पातिलक भाप, भीजल लकड़ीक धुआँ—ई सभ एक शब्दमे कोना समायत?

तैओ ओ लिखय लगलाह: “चाउर-दालि एक संग। पानी धीरे-धीरे। घी बचाओल गेल। बच्चा, घायल, वृद्ध पहिने...”

माधवी पातिल धोयबाक तैयारी करैत छल। ओ देवकान्तक हाथमे नोटबुक देखलक। “आब लिखब शुरू भेल?”

“हाँ। आइ तऽ बहुत बात अछि।”

“की शीर्षक?”

देवकान्त कनी गर्वसँ पन्ना देखेलनि। “आपदा-भोजन।”

माधवी पढ़लक। “भोजनक नाम लिखलहुँ, माप लिखलहुँ, क्रम लिखलहुँ।”

“हाँ।”

“एहि पातिलमे के सभक हाथ पड़ल, से लिखब?”

देवकान्त कलम रोकलनि। प्रश्न काल्हिक ‘नाँव लिखू’क अगिला रूप छल।

“अर्थात?”

माधवी पातिलक भीतर उँगरी देखेलक—तलीमे चाउरक पतला लेप अटकल छल। “जानकी अनाज निकाललनि। हेमलता कंकड़ चुनलक। रमानन्द लकड़ी चीरलक। पड़ोसक काकी पानी अनलनि। अहाँ पातिल उठेलहुँ, पाछाँ परोसबो केलहुँ। हम चढ़ेलहुँ। बच्चा सभ कंकड़ चुनबाक खेल केलक। ई खिचड़ के बनौलक?”

देवकान्त सहज उत्तर देबाक चाहलनि—“सभ।” मुदा ओ रुकलाह।

“सभ लिखब कठिन अछि,” ओ कहलनि।

“तँ कठिन बात छोड़ि देब?”

“नहि। मुदा पोथीमे स्थान—”

माधवी मुस्की देलक। “पातिलमे स्थान बनि गेल, पोथीमे नहि?”

देवकान्त उत्तर सुनि चुप रहलाह। एहि युवतीक व्यंग्य प्रायः एहन ठाम चोट करैत छल जतय हुनका अपन सुविधा देखाइत नहि छल।

ओ पन्नापर लिखलनि—“सामूहिक श्रम।” फेर कनी सोचि काटि देलनि।

“किएक काटलहुँ?” माधवी पूछलक।

“बहुत सपाट अछि।”

“सपाट बात बेठीक होइत अछि?”

“नहि। मुदा जे भेल, ओकरा सँ छोट लगैत अछि।”

“तँ नाँव लिखू।”

देवकान्त एक-एक कऽ लिखय लगलाह—“जानकी—अनाज, माप। माधवी—मिश्रण, पानी, नून, पकाब। हेमलता—चुनब। रमानन्द—लकड़ी, चूल्हि। देवकान्त—पातिल, परोसब...” ओ ‘देवकान्त’ लिखिते स्वयं हँसलाह।

“अपन नाँव बहुत स्पष्ट अक्षरमे,” माधवी कहलक।

“अहाँक नाँव सेहो स्पष्ट अछि।”

“एखन अछि।”

ई दू शब्द देवकान्त केँ भीतर धरि छलक। ओ माधवी दिस देखलनि, मुदा ओ पातिल उठाकऽ पानी दिस चलि गेल।

देवकान्त फेर पन्ना देखलनि। सूची एखनहुँ अधूर छल। “पड़ोसक काकी”—नाँव हुनका ज्ञात नहि। ओ उठि पुछबाक सोचलनि। काल्हि धरि एहन नाम कदाचित आवश्यक नहि लगैत। आइ खाली ‘काकी’ लिखब हुनका अधूर लगल।

ओ आँगनक दोसर कोनमे गेलाह। स्त्रीक नाँव पुछलनि। ओ पहिने अचम्भित भेलीह—
“किएक?”

“पोथीमे लिखबाक अछि।”

“हम की केलहुँ?”

“पानी अनलहुँ।”

स्त्री हँसलीह। “पानी अनबाक लेल नाँव?”

देवकान्तक कानमे काल्हिक माधवीक प्रश्न फेर गूँजल—एतेक बात लेल नाँव?

ओ कहलनि, “हाँ, एतेक बात लेल।”

नाँव लिखि ओ घुरि अयलाह। नोटबुकक पन्ना आब विधिसँ बेसी लोकक सूची जकाँ लगैत छल। देवकान्त केँ ई रूप सुन्दर सेहो लगल, असुविधाजनक सेहो। सुन्दर एहि लेल जे भोजन एकाएक जीवित भेल; असुविधाजनक एहि लेल जे लेखकक स्थान छोट भेल।

माधवी पातिल धोड़ लौटि रहल छल। देवकान्त पन्ना देखेलनि। “एना?”

ओ नजरि दौड़ेलक। “एखन नीक दिस जा रहल अछि।”

“नीक दिस?”

“नीक पहुँचि गेल कहि देब तऽ फेर प्रश्न पुछब बन्द कऽ देब।”

देवकान्त हँसलाह। पन्नाक ऊपर “आपदा-भोजन” शीर्षक रहल, मुदा ओकर नीचाँ सामग्री, माप आ विधिसँ बेसी हाथक नाँव छल। हुनका पहिल बेर लगल—कदाचित पोथीक असली रूप ओ नहि जे ओ घरसँ लऽ कऽ अयल छलाह; ई पोथी ओकरा लिखैत-लिखैत स्वयं ओकर लिखबाक ढंग बदलत।

✽✽

साँझिसँ कनी पहिने पातिलमे बचल खिचड़ फेर गरम कएल गेल। लोकक संख्या कनी कम भेल छल; किछु पड़ोसी अपन घरक सुरक्षित हिस्सा देखय गेल छल, मुदा वृद्ध दम्पति आ घायल युवक एखनहुँ एतय छल। दिन भरिक भागदौड़ बाद भूख फेर लौटि आएल।

माधवी खिचड़ चाखलक। ओकर भौंह कनी सिकुड़ल।

जानकी तुरन्त बुझि गेलीह। “की भेल?”

“नून कम।”

हेमलता हँसि पड़ल। “भोरमे कहने रही।”

माधवी ओकरा देखलक। “बेसी पड़ितै तऽ निकालिती?”

“नहि।”

“तँ?”

हेमलता चुप।

जानकी करछुलसँ कनी खिच्चड़ निकालि चाखलनि। एक क्षण गंभीर मुख बनौने रहलीह, मानो कोनो पैघ दोष जाँचि रहल होथि। फेर कहलीह—“धरती हिलल, नूनो डरि कऽ भागल।”

पहिने हेमलता हँसलीह। फेर पड़ोसक वृद्धा। रमानन्दक मुखपर चौड़ा मुस्की आयल। चोटायल युवक सेहो हँसैत कान्ह पकड़ि लेलक। देवकान्तक हँसी एना फूटल जे नोटबुक बन्द करय पड़ल। बच्चा सभ कारण पूरा नहि बुझलो पर सभक हँसी देखि हँसय लागल।

जानकी स्वयं हँसैत डिब्बासँ नून निकाललनि। “आब धीरे देब। नहि तऽ फेर डरि कऽ फेर नहि आएत।”

माधवी नूनक कनी हिस्सा हथेलीपर लेल, पातिलमे छिड़कल, घुमेलक, फेर चाखलक। “एखन कनी कमे अछि।”

“रहय,” जानकी कहलीह। “जेकरा चाही, ऊपरसँ लेत। संकटमे सभक जिह्वा एक नहि भऽ जाइत।”

देवकान्त तुरन्त नोटबुक खोलबाक प्रयास केलनि। माधवी देखिते कहल, “ईहो लिखब?”

“जरूर।”

“की?”

“धरती हिलल, नून भागल।”

जानकी हँसैत टोकलीह, “हमर वाक्य चोरायब तऽ नाँव लिखब।”

आँगनमे फेर हँसी उठल। देवकान्त कलम हवा मे रोकि जानकी दिस झुकलाह। “जानकी देवी—नून सम्बन्धी मत।”

“देवी-वेवी छोड़ू। जानकी लिखू।”

“नीक।”

ओ लिखलनि—“जानकी: ‘धरती हिलल, नूनो डरि कऽ भागल।’”

वाक्यक नीचाँ ओ एक रेखा खींचलनि। एहि बेर नूनक मात्रा नहि लिखलनि। कतेक चुटकी पड़ल, कतेक सेर खिचड़ छल—ई सभ पाछाँ पुछल जा सकैत छल। जे क्षण दोहराओल कठिन छल, ओ एहि क्षणक हँसी छल।

परोसाइ शुरू भेल। एहि बेर क्रम पर विवाद नहि भेल। बच्चा स्वयं पत्तल लऽ कऽ बैसि गेल। वृद्ध दम्पति कै कियो कहबाक पहिने ठाम देल गेल। रमानन्द हाथ धोइ चुपचाप पाँतिमे बैसि गेल। जानकी अंतमे बैसबाक चाहैत छलीह, मुदा हेमलता हुनकर पत्तल पहिने राखि देलक।

“ई की?” जानकी पूछलीह।

“आवश्यकता अनुसार क्रम,” हेमलता माधवीक स्वरक नकल करैत कहलक।

माधवी हँसि देलक। “बूढ़ नहि कहब, नहि तऽ पत्तल उठि जाएत।”

जानकी आँखि तरेरबाक अभिनय केलनि। “तोरा दुनू कै खिचड़ नहि, उपदेश बेसी भेटल अछि।”

देवकान्त एहिबेर परोसि रहल छलाह। हाथ आब कनी सधा गेल छल। करछुल कतेक भरब, पत्तलमे कातसँ देब जे छलके नहि, बच्चाक भाग कनी ठंढा करब—छोट-छोट बात सीखि रहल छलाह। ओ ई सीख कै ज्ञान कहथि कि साधारण काज, तय नहि कऽ पबैत छलाह। कदाचित अन्तर करबे बेठीक छल।

साँझिक हवा ठंढा भेल। दूरसँ फेर ककरो भित्ति हटेबाक आवाज आयल। भूकम्पक भय समाप्त नहि भेल छल; रातिमे लोक फेर धरती काँपबाक आशंका लऽ कऽ सूतत। घरसभक चीरा भरल नहि छल, खबरसभ पूरा नहि छल, अनाज सीमित छल। तैओ एक पातिल खिचड़ सभक बीच घूमि चुकल छल, आ एक वाक्यक हँसी आँगनक हवा बदलि देने छल।

देवकान्त अपन पत्तल लऽ कऽ अन्तमे बैसलाह। खिचड़ साधारण छल—चाउर, दालि, हरदि, अदरक, जीराक हल्का गन्ध, नून कनी कमे। काल्हि धरि ओ कदाचित लिखितथि—“स्वाद फीका।” आइ हुनका बुझाइत छल, स्वादक एक भाग जिह्वापर अछि, बाँकी परिस्थिति आ संगतमे।

माधवी कातमे बैसल छल। ओ पूछलक, “आब पोथीमे खिचड़ के बनौलक?”

देवकान्त पत्तलक कौर निगलि उत्तर देलनि, “जतबा नाँव लिखि पओलहुँ, सभ। आ जे नाँव नहि पुछि पओलहुँ, से हमर कमी।”

माधवी कनी चुप रहल। फेर कहलक, “ई वाक्य बचा कऽ राखू।”

“किएक?”

“आगँ काज पड़त।”

देवकान्त ओकर मुख देखलनि। ओ मुस्की दऽ रहल छल कि चेतावनी, स्पष्ट बुझाई नहि पड़ल।

ओसारक कोनमे नोटबुक बन्द पड़ल छल। ओकर भीतर आइक पन्नापर ‘आपदा-भोजन’ शीर्षक छल, पर सामग्रीक सूचीसँ बेसी हाथक नाँव। एक छोट वाक्य जानकीक हँसी बचौने छल। एक ठाम देवकान्त अपन नाँव सेहो लिखने छल—परोसब।

बाहर धरती अन्हारमे चुप छल।

आँगनमे पातिल लगभग खाली भऽ चुकल छल।

तलीमे कनी खिचड़ अटकल रहि गेल—आ धुआँ, नून, हँसी आ लोकक हाथक स्मृति हवा मे रहि गेल।

अध्याय ६ — माधवी

भूकम्पक तेसर भोर धरती शान्त छल, मुदा गाम एखनहुँ अपन पुरान चालमे नहि लौटल छल। ककरो छप्पर आधा खोलल, ककरो भित्ति बाँससँ टेकायल, ककरो आँगनमे अनाज धूप देखैत। रातिक ओस काठ आ माटिपर चमकि रहल छल। देवकान्त उठि बाहर अयलाह तऽ देखलनि—माधवी हाथमे बाँसक छोट डलिया लेने पिछवाड़ा दिस जा रहल छल।

“कतऽ?” देवकान्त पुछलनि।

माधवी बिना रुकने उत्तर देलक, “पात देखय।”

“खायब लेल?”

“देखबाक लेल पहिने। खायब पाछाँ।”

देवकान्त अपन नोटबुक लेलनि आ ओकर पाछाँ चलि पड़लाह। माधवी एक बेर घुमि हुनकर हाथक नोटबुक देखलक। “आब पात सेहो कागजमे बन्द होएत?”

“जँ नाँव नहि लिखब तऽ बिसरि जाएब।”

“नाँव लिखलासँ पात बचैत अछि?”

देवकान्त उत्तर खोजैत रहलाह। माधवी ओहि बीच बारीक मेड़ पार कऽ गेल।

पिछवाड़ाक जमीनमे भूकम्पक चीरा एक ठाम साँपक रेखा जकाँ चलल गेल छल। चीरा बहुत पैघ नहि, मुदा कादो सूखि ओकर किनार फाटल छल। ओहि पार झाड़ी, किछु लत्तर, किछु मौसमी साग। माधवी डलिया जमीनपर राखि घुट्टी मोड़ि बैसल।

“ई देखू” ओ एक लत्तरक पात उठौलक। “तिलकोर।”

देवकान्त झुकलाह। पात चिक्कन हरियर, धार कनी वक्र। “एहि सँ तरुआ?”

“एहि सँ सेहो। मुदा सभ पात नहि।”

“किएक?”

“ई बहुत बूढ़ अछि।” माधवी एक पैघ पात छोड़ि कनी छोट पात देखेलक। “ई कोमल। डंठल देखू, नस देखू। पात तोड़िते बुझाइत अछि।”

देवकान्त लिखलनि—“तिलकोरः कोमल पात चुनल जाए।”

माधवी हँसल। “कोमल लिखि देलहुँ, आब जे पढ़त ओ कोमल कोना चिन्हत?”

देवकान्त कलम रोकलनि। “तँ कोना?”

माधवी पात हुनकर हाथमे देलक। “मोड़ू।”

देवकान्त मोड़लनि। पात बिना टूटने झुकि गेल।

“आ बूढ़ पात?”

माधवी दोसर पात देलक। ओ मोड़िते बीचक नस कठोर प्रतिरोध देलक।

“ई लिखू,” माधवी कहलक, “अँगुरीक नीचे जे अन्तर बुझलहुँ।”

देवकान्त पात फेर छुललनि। “कागजमे अँगुरी कोना लिखब?”

“ओही लेल पूछू जे जानैत अछि।”

ओ आगाँ बढ़ल। एक झाड़ीक कात माधवी रुकल। “ई कोचिला। एकर फल अलग काजक, पात अलग। कच्चा अवस्था, पकबाक अवस्था—सभ देखबाक पड़ैत अछि।”

देवकान्त नाम लिखलनि। “कोचिला।”

“उच्चारण फेर कहू।”

देवकान्त कहल। माधवी सुधारलक। ओ फेर कहलनि। एहि बेर माधवी माथ हिलेलक।

अरिकञ्चनक पातक कात पहुँचि माधवी खास सावधानी देखेलक। “पात देखिते भोजन नहि होइत अछि। कतेक पात-पदार्थ उचित विधि बिना कएल मुँह खुजलाबय, देह खराब करय। नाम लिखि लेने ज्ञान पूरा नहि भेल।”

देवकान्त नोटबुकमे रेखा खींचि लिखलनि—“नाम ≠ पूरा ज्ञान।”

माधवी पढ़ि हँसि देलक। “ई चिन्ह की?”

“बराबर नहि।”

“तँ मैथिलीमे लिखू।”

देवकान्त काटि लिखलनि—“नामे सँ ज्ञान पूरा नहि।”

माधवी डलियामे किछु पात रखलक, किछु छोड़ि देलक। देवकान्त केँ उत्सुकता भेल।
“ई किएक छोड़लहुँ?”

“अगिला सप्ताह लेल।”

“एखन नीक अछि तऽ?”

“नीक अछि, मुदा सभ नीक पात आइये तोड़ि लेब तऽ काल्हि की?”

देवकान्तक नजरि चीरा पड़ल जमीन, नव पात आ माधवीक डलियाक बीच घूमल। भूकम्प घरक भित्ति तोड़ने छल; माधवी भोजन चुनैत समय आगाँक सप्ताह देखैत छल। संकट केवल जे बचल अछि तकर उपयोग नहि, जे बचा कऽ राखल जाए तकर ज्ञान सेहो छल।

“मौसम बदलला पर ई सभ?”

“किछु गुम, किछु नव। भानसक सूची बारहो मास एक नहि रहैत अछि।”

“तँ पोथी ऋतु अनुसार बनयबाक चाही?”

माधवी डलिया उठा लेलक। “अहाँ पोथी बनयबाक सोचैत छी। हम भोजनक बात करैत छी। दुनू एक होएत कि नहि, से देखब।”

ई वाक्य देवकान्त केँ फेर रोकि देलक। ओ बुझि रहल छलाह जे हुनकर योजना— ‘मिथिलाक घर-भानस’—एखन शीर्षक मात्र अछि। वास्तविक विषय एक जीवित वस्तु जकाँ हुनकर हाथसँ फिसलि रहल छल, आ माधवी ओकरा पकड़बाक बदला देखबाक सीख दऽ रहल छल।



घर लौटला पर जानकी आँगनमे धूपक ठाम चुनि किछु अनाज पसारि रहल छलीह। माधवी डलिया राखि पात अलग करय लागल। देवकान्त नोटबुक खोलेने कातमे बैसि गेलाह।

“तिलकोर—कोमल पात। अरिक्ञ्चन—उचित विधि आवश्यक। ऋतु अनुसार सूची बदलत...” ओ धीरे-धीरे पढ़ैत छलाह।

जानकी सुनि कहलीह, “ई सभ लिखबाक अछि?”

“हाँ।”

“तँ ईहो लिखू जे जेठक दुपहरमे तिलकोर खोजय निकलल लोक केँ घरमे गारि पड़ल।”

माधवी मुस्की देलक। “जानकी नीक कहैत छथि। समयो सामग्रीक भाग अछि।”

देवकान्त लिखय लगलाह। फेर एकाएक पुछलनि, “अहाँ ई सभ कतऽ पढ़ल?”

माधवीक हाथ पातक डंठल तोड़ैत-तोड़ैत रुकल। ओ देवकान्त दिस देखलक। “की?”

“एतेक ज्ञान। कोन पात कखन, कोन दालि कतेक दिन, कोन पदार्थ देहपर कोना पड़ैत अछि। कतऽ सीखल?”

“पढ़ल?” माधवी शब्द दोहरेलक, मानो ओहि शब्दक आकार जाँचि रहल हो। “सभ पढ़ल बात पोथीमे होइत अछि?”

“नहि। मुदा सीखल तऽ कतहुँ सँ।”

“खेत सँ। पोखरि सँ। भानस सँ। जानकी सँ। अपन माय सँ। नसीमा सँ। जे भूल भेल तकरा सँ। जे खा कऽ पेट खराब भेल तकरा सँ। जे फसल बरखा नहि भेला पर बचल तकरा सँ। लोकक देह सँ।”

देवकान्त तुरन्त लिखबाक चाहलनि, मुदा माधवी हुनकर कलमक गति देखलक। “पहिने सुनू।”

ओ कलम रोकलनि।

“अहाँ पूछलहुँ ‘कतऽ पढ़ल?’ किएक?”

देवकान्त कनी असहज भेलाह। “एहि लेल जे ज्ञानक स्रोत जानब आवश्यक अछि।”

“तँ जँ हम कहितहुँ—फलाँ पोथीमे पढ़ल—तखन ज्ञान बेसी मानल जाइत?”

“हम एना नहि कहलहुँ।”

“कहल नहि। मुदा प्रश्न ओतय सँ आयल।”

जानकी अनाज उलटैत चुपचाप सुनि रहल छलीह। ओ बीचमे कहलीह, “पोथी पढ़ल लोक पानि देखिकऽ बरखा बता सकैत अछि?”

देवकान्त हँसलाह। “किछु लोक सकैत छथि।”

“आ बिना पोथीक?”

“ओहो।”

“तँ बस।” जानकी अपन काजमे लागि गेलीह।

माधवी तिलकोरक डंठल अलग करैत कहलक, “पोथीक ज्ञान खराब नहि। मुदा जे पोथीमे नहि गेल, से शून्य नहि।”

देवकान्त एहि बेर लिखलनि नहि। ओ पूछलनि, “तँ पोथी बनयबाक आवश्यकता की?”

माधवी थोड़े काल सोचलक। “किछु बात बिसरि जाइत अछि। किछु बात लोक बदलि दैत अछि। किछु बात दूरक लोक नहि जानैत। लिखला सँ बचि सकैत अछि। मुदा लिखनिहार जँ अपन सुविधा अनुसार काटि-छाँटि देत, तखन बचत की?”

देवकान्त केँ काल्हिक ‘जतबा नाँव लिखि पओलहुँ’ वाक्य याद आयल।

“तँ लिखनिहारक जिम्मेदारी अछि।”

“अछि। आ जे बतबैत अछि, ओकरो।”

“कोना?”

“बेठीक बात कहि देलहुँ तऽ? अपन घरक एक ढंग केँ पूरा मिथिलाक ढंग कहि देलहुँ तऽ? जे नहि जानैत छी, ओहो जानैत छी कहि देलहुँ तऽ?”

देवकान्त धीरे माथ हिलेलनि। “ई बात हमर काज सहज नहि करत।”

माधवी हँसल। “ज्ञान एतेक सहजे बन्हाइत अछि?”

एहि बेर देवकान्त खुलि कऽ हँसलाह। “अहाँ हमरा पोथी लिखय देब कि परीक्षा लेब?”

“दूनु।”

“तँ शुल्क?”

माधवी एक कोमल तिलकोर पात उठा कऽ कहलक, “पहिने ई पहचानू। तीन दिन बाद पुछब।”

“ई शुल्क भेल?”

“नहि। परीक्षा।”

जानकी हँसि देलीह। “देवकान्त, पोथी लिखबाक चक्करमे पात-पात पहचानैत फिरब।”

देवकान्तक भीतर किछु हल्का भेल। भूकम्पक बादक तीन दिनमे पहिल बेर ओ अपन काजक उत्साह फेर महसूस केलनि। मुदा उत्साह आब पहिने जकाँ नहि छल। पहिने हुनका

लागैत छल जे ओ सामग्री जुटा कऽ पोथी बनौता। आब बुझाइत छल—सामग्री स्वयं हुनकर प्रश्न बदलि रहल अछि।

ओ नोटबुकक एक नव पन्ना खोललनि। ऊपर लिखलनि—“स्रोत।” कनी सोचि काटि देलनि। फेर लिखलनि—“के कहैत अछि, कतऽ सँ जानैत अछि, की नहि जानैत अछि।”

माधवी दूरसँ पढ़ि नहि सकल, मुदा देवकान्त ओकरा देखेलनि। “एहि मे अहाँक नाँव पहिने।”

माधवी बिना मुस्कुरे कहलक, “नाँव पहिने लिखला सँ अधिकार पहिने नहि भेटैत। काजमे देखब।”

वाक्य कठोर नहि छल, मुदा स्पष्ट छल। देवकान्त केँ विचित्र रूपसँ नीक लागल। हुनका पहिल बेर अनुभव भेल जे माधवी हुनकर प्रशंसा चाहनिहार सहायक नहि; ओ काजक शर्त तय करय सकैत अछि। एहि कारण ओकर संग काज कठिन होएत—आ कदाचित सार्थक सेहो।

**

दुपहर बाद हवा मे कनी गरमी आयल। घरक टूटल भागमे लोक ईट चुनि अलग करैत रहल। ओसारक सुरक्षित कोनमे देवकान्त अपन पन्ना पसारि बैसलाह। माधवी किछु देर बाद एक पुरान कपड़ामे लपेटल पतला कागजक गड्डी लऽ कऽ आयल।

“ई की?” देवकान्त पूछलनि।

“अहाँ लिखाइ देखय चाहैत रही।”

“हम?”

“काल्हि कहने रही जे नाँव लिखबाक अछि। नाँव लिखब तऽ अक्षर सेहो चिन्हू।”

ओ कपड़ा खोललक। भीतर हाथसँ काटल आकारक कागज छल, किछु कागज पुरान हिसाब-बहीसँ बचल, किछु मोट। पहिल पन्नापर देवकान्त केँ देवनागरी नहि देखायल। अक्षर हुनका परिचित सेहो लागल, अपरिचित सेहो—रेखासभ वक्र, किछु आकृति पुरान पाण्डुलिपिक स्मृति जकाँ।

“तिरहुता?”

माधवी माथ हिलेलक।

देवकान्त पन्ना हाथमे लेलनि। “अहाँ लिखैत छी?”

“कनी।”

“ककरा सँ सीखल?”

“नाना सँ। हुनका हिसाब, चिट्ठी, मन्त्र, घरक बात—सभमे अलग-अलग हाथ छल। हम बाल्यकालमे अक्षर नकल करैत रही।”

देवकान्त पन्ना ध्यानसँ देखलनि। “ई की लिखल अछि?”

“सामग्री।”

“ककर?”

“जाड़क एक दिनक। देखू—चाउर, मूँग, अदरक, जीरा...”

“हम पढ़ि नहि पबैत छी।”

“तँ सीखू।”

देवकान्त मुस्कुरेलनि। “एतेक हतबड़ी?”

माधवी जमीनपर अँगुरीसँ धूलि हटेलक। एक छोट सीक लेल, माटिपर पहिल अक्षर खींचलक। “ई ‘च’।”

देवकान्त झुकि देखलनि। ओ स्वयं सीक लऽ कऽ नकल केलनि। आकार टेढ़ा भेल।

माधवी तुरन्त कहलक, “ई ‘च’ नहि, भागल माछ अछि।”

देवकान्त ठहाका लगा देलनि। “अक्षरक अपमान नहि करू।”

“अक्षर हमरा दिस अछि। अपमान अहाँ केलहुँ।”

ओ फेर बनौलनि। एहि बेर आकार कनी नीक। माधवी दोसर अक्षर देखेलक। धीरे-धीरे माटिपर पाँच-सात अक्षरक पंक्ति बनल। देवकान्तक अँगुरीपर माटि लगल, सीक बारम्बार टूटबाक कगारपर।

“देवनागरीमे लिखि लेब तऽ सरल नहि?” देवकान्त पुछलनि।

माधवी सीक रोकलक। “ककरा लेल सरल?”

“छपाइ लेल। पाठक बेसी।”

“तँ जे अक्षर पहिने छल, ओकरा छोड़ि देब?”

“छोड़ब नहि। मुदा पोथी जँ छपय—”

“एखन पोथी बनलो नहि, छपाइ सोचि लेलहुँ।”

देवकान्त चुप भेलाह। ओ बुझलनि—माधवी फेर हुनकर गति रोकि रहल अछि। हुनकर मन सदियन अन्तिम रूप दिस दौड़ैत छल; माधवी वस्तुक जीवनकाल देखैत छल।

“नीक,” ओ कहलनि। “पहिने पढ़ब।”

माधवी एक पन्ना हुनकर सोझाँ राखलक। “ई शब्द चिन्हू।”

देवकान्त अक्षर जोड़बाक प्रयास केलनि। पहिल अक्षर एखन याद छल। दोसर भूलि गेलाह। माधवी तुरन्त नहि बतौलक। ओ प्रतीक्षा करैत रहल।

“तिल...” देवकान्त अटकल।

माधवीक मुखपर मुस्की आयल।

“तिलकोर?”

“हाँ।”

देवकान्त प्रसन्न भेलाह मानो कोनो कठिन परीक्षा उत्तीर्ण केने होथि। “तँ ई तिलकोर लिखल अछि।”

“आ नीचाँ?”

“एखन नहि।”

“तीन दिनक परीक्षा एखनहि शुरू।”

दूनू हँसल।

किछु देर बाद देवकान्त पूछलनि, “अहाँ ई पन्ना पोथीमे दयब?”

माधवी पन्ना अपन दिस खसका लेलक। “किछु। सभ नहि।”

“किएक?”

“सभ लिखल बात सभक नहि होइत अछि।”

“मुदा जँ काजक हो?”

“काजक होएब आ सार्वजनिक होएब एक नहि।”

देवकान्त ओकर बात नोट करबाक चाहलनि, फेर स्वयं रुकि गेलाह। माधवी ई देखि मुस्की देलक।

“की भेल? लिखल नहि?”

“सभ बात सभक नहि होइत अछि,” देवकान्त उत्तर देलनि।

माधवी पहिल बेर बिना व्यंग्यक मुस्की देलक। ओहि मुस्कीमे स्वीकृति कनी छल।

ओ पन्नासभ फेर कपड़ामे लपेटलक, मुदा एक छोट पन्ना अलग रखलक। ओहि पर तिरहुतामे सामग्री-सूची लिखल छल। “ई राखू। पढ़बाक अभ्यास।”

देवकान्त पन्ना एहन सावधानीसँ लेलनि मानो कागज नहि, भरोसाक कनी हिस्सा हो।

“खोएब नहि,” माधवी कहलक।

“नहि।”

“आ अपन अक्षरमे नकल करि मूल फेकि नहि देब।”

देवकान्तक हँसी रुकि गेल। “हम एना किएक करब?”

माधवी कान्ह उचकौलक। “लोक सरल बात बचबैत अछि, कठिन बात छोड़ि दैत अछि।”

देवकान्त पन्ना नोटबुकक बीच नहि, अलग कपड़ाक लिफाफामे राखलनि। ओ चाहैत छलाह जे माधवी देखय—कठिन बातो बचाओल जा सकैत अछि।



साँझिक पहिले आँगनमे एक बेर फेर लोक जुटल। ककरो घरक भित्ति बचाओल जा सकैत छल, ककरो नहि। भूकम्पक बात सभक मुखपर एखनहुँ छल, मुदा जीवन छोट काजक माध्यमे अपन ठाम फेर लऽ रहल छल—गाय दुहल जाएत, पानी भरल जाएत, चूल्हि सुलगत, बच्चा खेलत, अनाज चुनल जाएत।

देवकान्त ओसारक सीढ़ीपर बैसल तिरहुताक पन्ना फेर देखैत छलाह। किछु अक्षर याद, किछु फेर अपरिचित। माधवी पात काटि रहल छल।

“हम एक बात कहब?” देवकान्त शुरू केलनि।

“कहू।”

“हम जे पोथी सोचने रही, ओ एकसरि नहि लिखि सकब।”

माधवीक हाथ नहि रुकल। “आब बुझलहुँ?”

“हाँ। कम-से-कम एहि रूपमे जे आब विषय देखाइत अछि।”

“विषय बदलल कि आँखि?”

देवकान्त कनी सोचलनि। “आँखि।”

माधवी पातक डंठल अलग रखलक। “उचित उत्तर।”

देवकान्त कहला, “अहाँ हमरा संग काज करू।”

माधवी आब हाथ रोकलक। “हम एखन की करैत छी?”

“सहायता करैत छी। मुदा हम कहि रहल छी—नीक जकाँ। व्यवस्थित रूपमे। पात, दालि, अनाज, माछ, मखान, ऋतु, लोकक कहब, विधि, जे किछु उचित हो। अहाँ जे जानैत छी, से। जे नहि जानैत छी, ओहि ठाम हम दोसरासँ पुछब।”

“पोथीपर नाँव?”

प्रश्न सीधा छल। देवकान्त एक क्षण चुप भेलाह। हुनकर पुरान कल्पनामे मुखपृष्ठपर अपन नाँव देखल छलाह। एहि प्रश्नक सामना ओ एतेक हतबड़ीमे करबाक सोचने नहि छलाह।

“जकर जे योगदान, ओकर नाँव,” ओ कहलनि।

माधवी ओकर मुख पढ़बाक प्रयास केलक। “ई वाक्य नीक अछि। निभायब कठिन।”

“कोशिश करब।”

“कोशिश नहि। नियम।”

देवकान्त हँसि देलनि, मुदा माधवी नहि हँसल। ओ गम्भीर छल।

“नीक,” देवकान्त कहला। “नियम।”

माधवी पातक ढेरी एक कात केलक। “आ दोसर नियम।”

“की?”

“जे नहि बुझब, पूछब। अपनासँ बीचक खाली ठाम भरब नहि।”

देवकान्त कै ई वाक्य विशेष लागल। लेखकक स्वभाव खाली ठाम भरबाक होइत अछि—सन्दर्भ, अर्थ, कारण, कथा। माधवी कहि रहल छल जे किछु खाली ठाम खालीये रहय, जँ प्रमाण नहि।

“मानल,” ओ कहलनि।

“तेसर।”

“एखनहुँ?”

माधवीक मुखपर मुस्की आयल। “पोथी लिखब सस्ता नहि।”

“कहू।”

“एक घरक ढंग कै पूरा मिथिलाक ढंग नहि कहब। नसीमा जे कहत, ओ नसीमाक घरक हो सकैत अछि। जानकी जे कहतीह, ओ एहि घरक। रमानन्द जे बतायत, ओ पोखरिक काजक। तुलना कऽ लिखब।”

देवकान्त तुरन्त माथ हिलेलनि। “ई आवश्यक अछि।”

“चारिम।”

“अहाँ नियमक पोथी पहिने बना देब।”

“चारिम—हम जे पन्ना निजी कहब, ओ निजी।”

एहि बेर देवकान्त बिना विलम्ब कहलनि, “नीक।”

“पाँचम—अहाँ हमरा भाषा ‘सुधारि’ कऽ अर्थ नहि बदलब।”

देवकान्त चौकलाह। “हम अर्थ किएक बदलब?”

“अहाँ आइये ‘कोमल’ लिखि कऽ पातक पूरा ज्ञान समेटि देने रही।”

देवकान्त कै बात बुझायल। “नीक। जँ भाषा बदलायब तऽ अहाँकै देखायब।”

माधवी कनी ढीली भेल। “तखन काज हो सकैत अछि।”

“तँ सहमति?”

“सहमति।”

देवकान्त नोटबुक खोललनि। “लिखि लिअ?”

माधवी हँसि देलक। “ई बेर लिखू।”

ओ पन्नाक ऊपर लिखलनि—“काजक नियम।” तकर नीचाँ पाँच बात। पहिल—
“जकर ज्ञान/काज, ओकर नाँव।” दोसर—“नहि बुझल बात अपनासँ नहि भरब।” तेसर—
“एक घर = पूरा मिथिला नहि।” चारिम—“निजी पन्ना निजी।” पाँचम—“भाषा बदलला
सँ पहिने अर्थ पुछब।”

माधवी पन्ना पढ़लक। “बराबर चिन्ह फेर नहि लगेलहुँ?”

देवकान्त हँसलाह। “नहि। मैथिलीमे लिखल अछि।”

“तँ नीक।”

ओ उठि गेल। देवकान्त पन्ना देखैत रहलाह। नियम पाँच छल, मुदा हुनका बुझाइत छल
जे असली नियम एखन शब्दक बाहर अछि—सुनब, धीरज राखब, अपन अधिकारक सीमा
देखब।

किछु देर बाद माधवी फेर आयल। हाथमे ओहि दिनक चुनल एक कोमल तिलकोर पात
छल। ओ देवकान्तक सोझाँ राखलक। “कहू—ई किएक नीक?”

देवकान्त पात हाथमे लेलनि। नस छुललनि, मोड़लनि, डंठल देखलनि। “मोड़ला पर नस
कठोर नहि। डंठल कोमल। रंग एकरूप। बहुत बूढ़ नहि।”

माधवी माथ हिलेलक। “कनी सीखलहुँ।”

“तीन दिनक परीक्षा आइये?”

“भूकम्पमे समयक भरोसा की?”

दूनु हँसल।

देवकान्त पात घुरेबय लगलाह। माधवी नहि लेलक। “राखू नहि। ई खायब।”

“पोथीमे दबा कऽ रखितहुँ तऽ?”

“तखन पातक काज बिसरि जाइतहुँ।”

ओ पात लऽ कऽ भानस दिस चलि गेल। देवकान्त ओकर पाछाँ देखैत रहलाह। हुनकर
नोटबुकमे आब नियम लिखल छल, तिरहुताक एक पन्ना अलग सुरक्षित छल, आ मनमे एक
नबका असुविधा—ओ जे पोथी लिखय चाहैत छथि, ओकर लेखकत्व कदाचित ओतेक
सरल नहि जतेक ओ घरसँ निकलैत समय सोचने छलाह।

अन्हार उतरबाक पहिले माधवी तिलकोरक पात धोइ राखि देलक। आइ तरुआ नहि बनत; तेल बचयबाक छल। पात काल्हि वा परसू काज आएत।

देवकान्त अपन पन्नाक अन्तमे एक वाक्य लिखलनि—“माधवी संग काजक आरम्भ।”

फेर कनी रुकि “संग” शब्दक नीचे एक हल्का रेखा खींचलनि।

बाहर टूटल भित्तिक कात सँ साँझिक हवा भीतर आबि रहल छल। घर एखनहुँ घायल छल, मुदा ओहि घायल घरमे एक पोथीक असली जन्म आइ भेल छल—एक लेखकक इच्छा सँ नहि, दू दृष्टिक असहमति आ सहमतिसँ।

अध्याय ७ — कुर्थीक मास

भूकम्पक बादक दिनसभ धीरे-धीरे एक-दोसरामे घुलि रहल छल। घरक टूटल भागमे बाँसक टेक लागि गेल छल, आँगनक ईंट एक दिस चुनि राखल गेल, भानस लेल अस्थायी छप्पर उठि गेल। मुदा जाड़क साँझि पहिने जकाँ सहजे उतरैत छल। सूर्य ढलिते हवा चुभय लगैत, आ लोक आगि कात खसकि अबैत।

ओहि साँझि भानसक छोट चूल्हिपर माटिक हाँड़ीमे गाढ़ भूर दालि उबलि रहल छल। उबलैत दालिक गन्ध साधारण छल—मसालाक तेज महक नहि, घी-काजूक चमक नहि—मात्र भाप, दालि, अदरकक हलुक ताप, आ धुँआक गन्ध।

देवकान्त ओसारसँ उतरि भानसक कात अयलाह। “आइ की?”

जानकी हाँड़ीक ढक्कन कनी उठा कऽ देखलीह। “कुर्थी।”

देवकान्तक कान ठाढ़ भेल। “कुर्थी दालि?”

“दालि नहि तऽ की, मखानक खीर?” जानकी हँसि देलीह। “ई जाड़मे देह गरम राखैत अछि—हमर माय कहैत छलीह।”

माधवी कातमे बैठल अदरक कूटि रहल छल। ओ बिना ऊपर देखने कहलक, “माय कहैत छलीह—ई भाग लिखू।”

देवकान्त ओकर बात बुझि मुस्कुरा देलनि। “एखन लिखलो नहि।”

“अहाँक आँखि लिखय शुरू कऽ देने अछि।”

जानकी हाँड़ी हिलबैत रहलीह। किछु देर बाद सहज स्वरमे कहलीह, “हमरा घरमे तँ एक बात चलैत आबि रहल अछि—सालमे एक मास कुर्थी दालि खा लिअ, पथरी नै होएत।”

देवकान्त तुरन्त अपन नोटबुक दिस हाथ बढेलनि।

माधवी अदरक कूटब रोकि देलक। “देखलहुँ?”

“की?”

“आँखि लिखय नहि, हाथ लिखय शुरू कऽ देलक।”

जानकी हँसलीह। “लिखू, लिखू। हमर नानी सेहो कहैत छलीह। जाड़क एक मास कुर्थी, तकर बाद देह हलुक।”

देवकान्त लिखलनि—“कुर्थी—सालमे एक मास; पथरी नहि होय।”

माधवी ओहि पन्ना दिस हाथ बढेलक। “देखाउ।”

देवकान्त नोटबुक ओकरा देलनि। माधवी पंक्ति पढ़लक, फेर जानकी दिस देखलक।
“अहाँ कहलीह—घरमे बात चलैत आबि रहल अछि?”

“हाँ।”

“ककरो पथरी भेल छल जे कुर्थीसँ नीक भेल?”

जानकी कनी सोचलीह। “हमर नानाक भाईक बात सुनने रही। मुदा हम देखल नहि।”

“वैद्य कहने छलाह?”

“कहैत छल लोक—कुर्थी खाउ, पानी बेसी पीउ। आब ओतबा पुरान बात के निश्चयपूर्वक मोन रहत?”

माधवी देवकान्तक पंक्तिपर अँगुरी रखलक। “एतय लिखल अछि—‘पथरी नहि होय’। जानकी कहलीह—‘घरमे बात चलैत अछि’। दुनू एक बात नहि।”

देवकान्त पन्ना आपस लेलनि। “अर्थ तऽ लगभग—”

“लगभगक पाछाँ बहुत भूल छिपि सकैत अछि।”

जानकी ढक्कन राखि देलीह। “अरे, हम डाक्टर नहि छी। घरक बात कहलीहुँ। जँ कागजमे लिखब तऽ हमर मुँहमे डाक्टरी मत दऽ देब?”

देवकान्त लज्जित मुस्की देलनि। “नीक। सुधारैत छी।”

ओ पुरान पंक्ति काटि लिखलनि—“घरक कहब: सालमे एक मास कुर्थी दालि खएला सँ पथरी नहि होय—जानकीक सुनल पारिवारिक मान्यता।”

माधवी फेर पढ़लक। “एखन नीक। मुदा ‘नहि होय’ एखनहुँ निश्चित बात जकाँ अछि।”

देवकान्त भौँ सिकोड़लनि। “तँ?”

माधवी उत्तर देबाक पहिने जानकी कहलीह, “लिखू—‘पथरी नै होइत अछि, एना घरमे कहल जाइत अछि।’ बस।”

तीनों किछु क्षण चुप रहल। चूल्हिक आगि दहकि उठल। हाँड़ीक ढक्कनक कात सँ भाप एक सीध रेखा जकाँ ऊपर उठल आ अन्हारमे हराइत गेल।

देवकान्त नब पंक्ति लिखलनि—“सालमे एक मास कुर्थी दालि खएला सँ पथरी नै होइत अछि—एना घरमे कहल जाइत अछि।”

माधवी माथ हिलेलक। “आब वाक्य कहैत अछि जे कहनिहार के?”

देवकान्त मुस्कुरेलनि। “जानकी।”

जानकी खिखिया देलीह। “हम नहि। हमर माय, हुनकर माय, ककर-ककर मुँह सँ घूमि हमरा धरि आयल—ओ सभक नाम लिखब तँ दालि जरि जाएत।”

ई हँसीक बीच देवकान्त पहिल बेर अनुभवलनि जे एक छोट घरेलू वाक्यक पाछाँ कतेक अनाम मुँह हो सकैत अछि। पोथी केवल पकवानक विधि नहि, कहबाक श्रृंखला सेहो लिखत—जँ ओ सचमुच ई काज नीक जकाँ करय चाहैत छथि।

जानकी दालिक पुरान डब्बा देखबैत कहलीह, “ई देखू। कुर्थी चमकदार दालि नहि। दाना छोट, कठोर। सहजे नहि पाकैत। पहिने चुनू, धोऊ, भिजाउ, फेर धीरजसँ चढ़ाउ। जेकरा हतबड़ी हो, ओकरा ई दालि पसिन नहि पड़त।”

माधवी दाना हथेलीपर लऽ कऽ देवकान्त केँ देखेलक। “दाना कठोर अछि, मुदा खराब नहि। लिखाइमे सेहो एहेन होइत अछि। जे बात तुरन्त नरम नहि पड़य, ओकरा फेकि देब आवश्यक नहि।”

देवकान्त हँसि पुछलनि, “आब कुर्थी हमरा लेखन सिखायत?”

“जँ अहाँ सीखय चाहब तऽ दालियो सिखा सकैत अछि।”

जानकी हँसैत हाँड़ी हिलेलीह। “पहिने खाय दियौक। दर्शन पाछाँ करब।”

**

दालि उबलैत रहल। माधवी एक छोट कटोरामे किछु दाना निकालि अँगुरीसँ दबेलक। दाना एखन पूर्ण नरम नहि भेल छल। ओ फेर हाँड़ीमे डालि देलक। देवकान्त ओहि बीच पन्ना सुधारैत रहलाह।

किछु देर बाद ओ अंग्रेजीमे एक छोट पंक्ति लिखि देलनि—“Horse gram prevents stone.”

माधवीक नजरि पड़ि गेल। “ई फेर की?”

“अंग्रेजी नोट। पाछाँ लेख बनयत तऽ काज देत।”

“पढ़ू।”

देवकान्त पढ़ि सुनौलनि।

माधवीक मुख गंभीर भेल। “एतय फेर ओही बात।”

“हम छोट रूपमे लिखल अछि।”

“छोट रूपमे साँच छोट नहि होइत, बदलि जाइत अछि।”

देवकान्त कनी चिढ़लाह। “तँ की प्रत्येक पंक्तिक पाछाँ पूरा कथा लिखब? नोटक काज संक्षेप करब अछि।”

“संक्षेप करब, बदलि देब नहि।”

“‘घरक लोकक मान्यता’ लिखल जाए तऽ?”

“हाँ। आ जँ वैद्य सँ पूछब, तकर बात अलग। जँ पोथीमे किछु भेटत, तकर बात अलग। जँ अहाँ अपन आँखिसँ ककरो अनुभव देखब, तकर बात अलग।”

“अहाँ चाहैत छी जे एक दालि पर मुकदमा चलाउ?”

माधवीक आँखिमे चमक आयल। “अहाँ चाहैत छी जे एक दालि केँ डाक्टर बना दिअ?”

जानकी बीचमे कहलीह, “दूनु झगड़ू, मुदा हाँड़ीक ध्यान हमरा पर छोड़ू।”

देवकान्त हँसबाक चाहलनि, मुदा बात हुनका भीतर चुभि गेल छल। “हम डाक्टर नहि बना रहल छी। लोकक मान्यता लिखि रहल छी।”

“अंग्रेजी पंक्ति लोकक मान्यता नहि कहैत अछि। ओ कहैत अछि—ई दालि एहन असर करैत अछि।”

देवकान्त पन्ना देखलनि। सचमुच वाक्यक स्वर अलग छल। मैथिली पंक्तिमे ‘एना घरमे कहल जाइत अछि’ छल; अंग्रेजीमे ओ भाग गायब।

“नीक,” ओ कहलनि, “लिखैत छी—‘A household belief says...’”

माधवी तुरन्त उत्तर नहि देलक। फेर कहलक, “आ ‘household’ एक घर। जँ दोसर घरमे ई बात नहि चलैत हो?”

देवकान्तक धीरज टूटबाक कगारपर पहुँचल। “अहाँ चाहैत छी जे हम लिखबे नहि?”

“हम चाहैत छी जे अहाँ जे जानैत छी, ओतबे लिखू।”

“आ जे जानबाक अछि?”

“पूछू।”

“ककरा सँ?”

“वैद्य सँ। गामक दोसर घर सँ। जे पथरी झेलने हो तकरा सँ। कुर्थी उपजौनिहार सँ। जँ मिलय तऽ पुरान पोथी सँ। एक वाक्य केँ निश्चित करबाक लेल जतेक दरबज्जा खटखटेबाक पड़य, खटखटाउ।”

देवकान्त चुप भऽ गेलाह। हुनका अपन लिखल “काजक नियम” याद आयल—नहि बुझल बात अपनासँ नहि भरब। नियम लिखबाक समय ओ सहज लगने छल; पालन करैत समय ओकर वजन बुझाईत छल।

“एना करैत-करैत पोथी कब पूर्ण होएत?”

माधवी अदरकक कुट्टी हाँड़ीमे देलक। “पूर्ण होएबाक लालचमे बेठीक हतबड़ी किएक?”

देवकान्त हाँड़ीक भाप दिस देखलनि। भापे जकाँ हुनकर अधीरता ऊपर उठि विलीन भऽ रहल छल। “नीक। अंग्रेजी पंक्ति काटैत छी।”

ओ पंक्तिपर एक सीध रेखा खींचलनि। नीचे लिखलनि—“लोकक कहब—जाँच बाकी।”

माधवी पढ़ि कनी मुस्की देलक। “ई रखू।”

देवकान्त पुछलनि, “बस एतबे?”

“एतबे एखन साँच अछि।”

देवकान्त फेर पुछलनि, “जँ हम ई वाक्य नहि लिखी तऽ की लोकक ज्ञानक अपमान नहि होएत?”

माधवी उत्तर देलक, “किएक नहि लिखब? लिखू। मुदा जे रूपमे भेटल, ओहि रूपमे। अहाँक काज लोकक बात केँ सभसँ चमकदार वाक्य बनाब नहि; ओकर उचित ठाम देखाब अछि।”

“आ जँ पाछाँ वैद्य कहथि जे बातमे किछु आधार अछि?”

“तखन वैद्यक नाँवसँ लिखू। आ जँ ओ कहथि जे नहि, तखन सेहो लिखू। दुनू बात राखला सँ कागज टूटि नहि जाएत।”

देवकान्त ओकर मुख दिस देखैत रहलाह। हुनका आश्चर्य भेल जे माधवी लोकक विश्वास बचबय चाहैत छथि, मुदा ओकरा अन्ध सत्य बनाबय नहि चाहैत। ओहि दू ठामक बीचक संकीर्ण बाटे कदाचित पोथीक उचित बाट छल।

जानकी कटोरीमे दालि निकालि चखलीह। “साँच हो कि झूठ, नून कम अछि।”

देवकान्त आ माधवी दूनू एक संग हँसि पड़ल। बौद्धिक झगड़ा हाँड़ीक नूनक सोझाँ एक क्षण लेल छोट भऽ गेल।

✽✽

भोजन परोसल गेल तऽ कुर्थी दालि देखए मे चमकदार नहि छल। रंग गाढ़ भूर, दाना किछु-किछु टूटल, रस मोट। ऊपर सँ कनी सरिसो तेलक गन्ध, कुटल अदरक, लहसुन नहि—जानकीक घरक ओहि दिनक ढंग। संगमे भात आ अल्प नून-मरिच।

देवकान्त पहिल कौर लेलनि। स्वाद गहीर छल, कनी माटि-जकाँ धरतीक गन्ध, पछिला स्वादमे हलुक कसैलापन। ओ नोटबुक दिस हाथ बढेलनि। माधवी तुरन्त देखलक।

“पहिने खाउ।”

देवकान्त हाथ रोकलनि। “आब भोजन सेहो परीक्षा?”

“जिह्वा काज करैत हो तऽ कागज बीचमे नहि घुसाउ।”

ओ दूनू किछु देर चुपचाप खाइत रहल। जानकी अलग पाँते कात लोकक थारी देखैत छलीह।

किछु देर बाद देवकान्त कहला, “स्वाद भारी अछि।”

माधवी पूछलक, “भारी अर्थ?”

“गाढ़। देहमे गरमी जकाँ लगैत अछि।”

“एहि लेल बहुत घरमे जाइमे खाइत अछि—एना कहल जाइत अछि,” माधवी जानि-बुझि ओहि जोड़सँ कहलक।

देवकान्त मुस्कुरा देलनि। “अहाँ आब हमरा भाषा हमरा पर चलायब?”

“अहाँ सीखि रहल छी।”

जानकी अपन थारी लेने कातमे बैसलीह। “कुर्थी गरीबक दालि सेहो कहल गेल अछि। कम देखभालमे उपजि जाए, सूखल खेतो सहि ले, देह भरि दैत अछि। मुदा ई कहब सुनि कऽ जेना गरीबक भोजन कम दर्जाक हो, से हमरा नीक नहि लगैत।”

देवकान्त उत्सुक भेलाह। “कुर्थी एहि गाममे खूब होइत अछि?”

“जमीन पर निर्भर। किछु खेतमे नीक, किछुमे नहि। पहिने बेसी छल,” जानकी कहलीह। “अकाल पड़ल बरखमे लोकक भरोसा रहैत। पशुओ खाइत, लोक सेहो। जे अन्न कठिन दिनमे साथ दैत, सुखक दिनमे ओकरा नीच किएक मानब?”

माधवी जोड़लक, “आ बाजारमे जे अन्न महग, ओ आवश्यक नहि जे घरक लेल बेसी काजक।”

जानकीक स्मृति खुलि गेल। “एक बरख बरखा बहुत कम भेल छल। धान कमजोर, तरकारी कम। ओहि बेर घरमे कुर्थीक मटकी बचल छल। कहियो दालि, कहियो पिसि पीठारमे, कहियो भिजा कऽ दोसर दालि संग। जे अन्न उत्सवक थारीमे नाम नहि कमबैत, कठिन दिनमे ओही घर सम्हारैत अछि।”

देवकान्त पुछलनि, “कतेक बरख पहिने?”

जानकी माथपर हाथ राखि सोचलीह। “तिथि पुछब तऽ नहि कहि सकब। मुदा हेमलता जन्मल नहि छलीह। तोहर पिता छोट छलाह।”

देवकान्त तुरन्त वर्ष जोड़बाक प्रयास कएलनि। माधवी रोकलक, “अनुमान अलग लिखू। जानकी तिथि नहि कहलनि।”

ओ पन्नामे लिखलनि—“कम बरखा पड़ल एक पुरान बरखक स्मृति; निश्चित वर्ष अज्ञात।” एहि बेर हुनका अपन वाक्य अधूर नहि, अधिक ईमानदार लगल।

देवकान्त नोट करबाक चाहलनि, मुदा एहि बेर भोजन पूरा कऽ हाथ धोएला बाद नोटबुक खोललनि।

ओ लिखलनि—“कुर्थी: जाड़क भोजन; साधारण घरमे उपलब्ध; कम साधनमे उपजि सकैत—स्थानीय जाँच आवश्यक। कठिन समयक भरोसाक अन्न/दालि।”

माधवी पन्ना पढ़लक। “नीक। मुदा ‘गरम’?”

“जानकी कहलीह देह गरम राखैत।”

“तखन लिखू—‘गरम मानल जाइत अछि।’ देह सभक एक नहि।”

जानकी हँसलीह। “माधवी, अहाँ एना करब तऽ देवकान्तक पोथीमे पकवानसँ बेसी ‘कहल जाइत अछि’ भरि जाएत।”

माधवी उत्तर देलक, “तँ पाठक बुझत जे लोक बोलैत अछि, पत्थर नहि।”

देवकान्त एहि वाक्य पर कनी देर मौन रहलाह। “लोक बोलैत अछि, पत्थर नहि”—ई पोथीक मूल बात भऽ सकैत छल। ज्ञान निस्संग वस्तु नहि; ककरो मुँह, देह, खेत, समय, अभाव, अनुभवक भीतर सँ अबैत अछि।

“पथरीक बातमे,” देवकान्त फेर शुरू केलनि, “जँ ककरो अनुभव भेटय जे कुर्थी खएला बाद लाभ भेल?”

माधवी कहलक, “लिखू—फलाँ लोक एना अनुभव केलक। तकरा सँ ई सिद्ध नहि जे सभकेँ एहेन होएत।”

“अहाँ ‘सिद्ध’ शब्द कहाँ सँ सीखल?”

माधवी हलुक व्यंग्यसँ कहलक, “अहाँ जकाँ पढ़ल लोकसँ बात करैत-करैत किछु शब्द चिपकि जाइत अछि।”

देवकान्त हँसलाह। “आ हमर किछु शब्द अहाँ बदलि दैत छी।”

“जे बेठीक ठाम लगैत अछि, ओ बदलैत छी।”

“तँ अहाँ सम्पादक भेलहुँ?”

“सहमतिक पाँचम नियम मोन अछि?”

देवकान्त नोटबुक बन्द करि देलनि। “मोन अछि।”

ओ फेर खोललनि आ पन्नाक एक कोनमे तीन छोट शीर्षक बनौलनि—“सुनल”, “देखल”, “पुछबाक”। जानकीक पथरी सम्बन्धी बात पहिल कोनमे गेल; आइक कुर्थी पकबाक ढंग दोसरमे; वैद्य, दोसर घर आ खेतक बात तेसरमे।

माधवी पन्ना देखलक। “ई उपयोगी अछि।”

“अहाँक परीक्षा पास?”

“एखन एक पन्ना पास भेल अछि।”

“हम नहि?”

“अहाँक परिणाम पोथी पूरा भेला पर।”

देवकान्त हँसि देलनि। मुदा भीतर हुनका एहि छोट तीन खाँचा सँ अजीब राहत भेटल। सभ बात केँ तुरन्त सत्य वा असत्य बनयबाक आवश्यकता नहि छल। किछु बात सुनल रूपमे रहि सकैत अछि, किछु देखल रूपमे, किछु प्रश्न रूपमे।

साँझि गाढ़ भऽ चुकल छल। भानसक बाहर धुँआ नीचाँ झुकि रहल छल। दूर कतहुँ कुकुर भुकलक। घरक टूटल भित्ति ओही ठाम छल, मुदा आँगनमे भोजनक बादक साधारण थकान उतरि रहल छल।

देवकान्त केँ लगा जे कुर्थी दालिक ई साधारण थारी हुनकर पोथीक दिशा फेर बदलि देलक। स्वाद लिखब एक बात; स्वादक पाछाँक देह, खेत, अभाव, लोकक कहब, अनिश्चितता आ विश्वास लिखब दोसर। पोथी जँ केवल ‘कुर्थी खाउ—पथरी नहि’ कहत, तऽ ओ घरक ज्ञान बचायत नहि; ओकर रूप बिगाड़त।

**

राति भोजनक बाद देवकान्त लालटेनक कात बैसलाह। नोटबुक सोझाँ खुलल। ऊपर पहिल लिखल पंक्ति काटल छल; नीचाँ—“लोकक कहब—जाँच बाकी।” ओहि पाँच शब्दक कात ओ आइक पूरा साँझि देखैत छलाह।

माधवी पानीक घड़ा राखि लौटि रहल छल। देवकान्त आवाज देलनि, “कनी सुनू।”

ओ रुकल। “की?”

“हम सोचि रहल छी—काल्हि वैद्य रामेश्वर झा लग जाउ। कुर्थीक बात पूछब।”

माधवी ओसारक खम्भा कात ठाढ़ भऽ गेल। “जाउ।”

“अहाँ चलब?”

“किएक?”

“जेना अहाँ प्रश्न पुछि सकू।”

“अहाँक प्रश्न अहाँ पुछू। हम पाछाँ अपन प्रश्न पुछब।”

देवकान्त बुझलनि—ओ सहयोग करैत छथि, मुदा हुनकर छायाँ बनि नहि। “नीक।”

किछु क्षण मौन रहल। फेर देवकान्त कहला, “आ दोसर घरमे सेहो पुछब। नसीमाक घर, रमानन्दक घर, जे किसान कुर्थी उपजौने छथि, हुनका सँ।”

माधवीक मुखपर हलुक संतोष देखायल। “काजक नियम बेकार नहि गेल।”

“अहाँक कारण कठिन भऽ गेल।”

“कठिन भेला सँ खराब?”

“नहि।” देवकान्त पन्ना दिस देखलनि। “कदाचित पहिने बड्ड सहज बुझि रहल रही।”

माधवी चुप।

देवकान्त धीरे कहला, “हमरा एक बात स्वीकार करबाक अछि। जखन जानकी पथरीक बात कहलीह, हमरा तुरन्त नीक वाक्य देखायल। लेखमे पाठककेँ याद रहत। हम ई नहि सोचलहुँ जे वाक्य साँच कोन प्रकारक अछि।”

माधवीक दृष्टि नरम भेल, मुदा ओ तुरन्त प्रशंसा नहि केलक। “एहि लेल लिखबाक पहिने सुनबाक नियम छल।”

“हाँ।”

“आ एक बात आरो।”

“कहू।”

“लोक-मान्यता केँ छोटो नहि बनाउ। जँ प्रमाण नहि, तँ हँसि उड़ा देब सेहो बेठीक। कतेक बात पीढ़ी-दर-पीढ़ी किछु अनुभव सँ चलैत अछि। कतेक बेठीक सेहो होइत। काज ई जे दुनू केँ अलग चिन्हू।”

देवकान्त कलम उठा लिखलनि—“लोकक कहब केँ न तऽ डाक्टरी हुकुम बनाउ, न तऽ उपहास।”

माधवी पढ़लक। “ई नीक।”

“एहि बेर काटब नहि?”

“एखन नहि।”

देवकान्त मुस्कुरेलनि। “बड़ कृपा।”

“कृपा नहि। वाक्य टिकबाक योग्य अछि।”

लालटेनक लौ कनी डोलल। बाहर जाड़क हवा तेज भेल। माधवी चलय लगल तऽ देवकान्त फेर पुछलनि, “अहाँ अपने कुर्थी खाइत छी?”

“खाइत छी।”

“सालमे एक मास?”

माधवी हँसल। “जे दिन घरमे बनैत अछि, ओहि दिन। दिन गनि-गनि कऽ दालि नहि खाइत छी।”

देवकान्त ठहाका लगा देलनि। माधवी सेहो हँसैत भीतर चलि गेल।

हँसी थमला बाद देवकान्त पन्नाक नीचाँ एक नब पंक्ति जोड़लनि—“अनुभव आ प्रमाण एक नहि; मुदा अनुभव प्रश्नक आरम्भ भऽ सकैत अछि।”

ओ पंक्ति किछु देर देखैत रहलाह। पहिने हुनका लगैत छल जे ज्ञानक काज उत्तर देब अछि। आब बुझाइत छल—कखनो ज्ञानक पहिल ईमानदारी उचित प्रश्न बचा कऽ राखब होइत अछि।

आँगनक ओहि पार चूल्हिक राख एखनहुँ कनी गरम छल। हाँड़ी धोआ जा चुकल छल। कुर्थी दालिक स्वाद मुँहसँ उतरि गेल, मुदा ओकरा लऽ कऽ उठल प्रश्न नोटबुकमे बसि गेल।

देवकान्त “लोकक कहब—जाँच बाकी” वाक्यक नीचे सीध रेखा खींचलनि। एहि बेर रेखा शब्द काटबाक लेल नहि, ओकरा बचा कऽ रखबाक लेल छल।

अध्याय ८ — नूनक माप

कुर्थीक साँझिक बाद देवकान्तक नोटबुकमे तीन छोट खाँचा बनि गेल छल—“सुनल”, “देखल”, “पुछबाक”। दोसरे दिन भोरमे उठिते हुनका एहि व्यवस्थापर एतेक भरोसा भेल जे ओ एकटा चौठ खाँचा जोड़बाक सोचलनि—“माप”। हुनकर विचार छल, जे बात तौलल जा सकय, ओहि पर विवाद कनी घटत।

जानकी भानसक ओसारमे चाउर चुनि रहल छलीह। माधवी सिलौटपर जीर पीसि रहल छल। देवकान्त हाथमे छोट तराजू, बाट आ दूटा पीतल कटोरी लेने पहुँचलाह।

माधवी ऊपर देखलक। “आइ भानस खुलत कि दुकान?”

देवकान्त तराजू रखैत कहलनि, “आइ सँ सामग्री निश्चित मापसँ तौलल जाएत।”

जानकी चाउर चुनब रोकि हुनका देखलीह। “दालि खायब कि हिसाब?”

“दूनु। पोथीमे जँ लिखब जे दालि बनाउ, तऽ पाठक केँ बुझबाक चाही कतेक दालि, कतेक पानी, कतेक नून।”

माधवीक ओठपर हलुक मुस्की आयल। “कतेक लोक लेल?”

“चारि।”

“चारि बच्चा?”

“नहि, चारि लोक।”

“चारि एहन लोक जे खेतसँ भूखल अयलाह, कि चारि एहन जे दुपहरमे पहिने किछु खा चुकल छथि?”

देवकान्त तराजूक काँटा सीधा करैत रहलाह। “औसत चारि लोक।”

“औसत लोक केहन होइत छथि?” माधवी पूछलक।

जानकी हँसलीह। “देवकान्त, अहाँ पहिने ओ लोक केँ पकड़ि आनू, जिनकर भूख औसत हो।”

देवकान्त सेहो हँसि देलनि, मुदा तराजू हटौलनि नहि। “नीक। मानि लिअ चारि वयस्क। दुपहरक भोजन। भात संग।”

माधवी जीरक पीसल भाग कटोरीमे झाड़ैत कहलक, “आ संगमे तरकारी?”

“रहत।”

“अचार?”

“रहत।”

“तरुआ?”

“सम्भव।”

“तखन नून दालिमे ओतबे रहत जेना मात्र दालि-भात खएला पर?”

देवकान्त उत्तर देबाक लेल मुँह खोललनि, फेर बन्द कऽ लेलनि। “एहि लेल तऽ तौल चाही। एक मानक।”

माधवी हाथ धोइ तराजू कात आयल। “मानक बनाउ। मुदा पहिने ई कहू—नून कोन?”

“नून तऽ नून।”

जानकी अपन डिब्बा खोललीह। भीतर मोट दानाक नून छल। कातक दोसर छोट डिब्बामे महीन पिसल नून। “दूनू तौलि देखू,” ओ कहलीह।

देवकान्त बराबर बाट राखि पहिने मोट नून तौललनि, फेर महीन। वजन एके आयल। हुनका विजय जकाँ लगल। “देखलहुँ? वजन छल तऽ फरक समाप्त।”

माधवी दू छोट कटोरीमे बराबर गरम पानि लेल, दूनूमे तौलल नून घोरलक। “चखू।”

देवकान्त पहिल घूँट लेलनि, फेर दोसर। फरक बड्ड पैघ नहि छल, मुदा दोसर कटोरीक नून जिह्वापर एक्के बेर तेज लगल।

“किएक?” ओ पूछलनि।

माधवी कहलक, “एक तुरन्त घुलल, एक धीरे। आ पानि ठंढा होएत तऽ फेर अनुभव बदलत। दालिमे दाना, घनत्व, घी-तेल, खट्टास—सभ संग स्वाद बदलैत अछि।”

देवकान्त लिखबाक लेल कलम उठौलनि। माधवी रोकलक नहि। एहि बेर ओ खुद कहलक, “लिखू—तौल उपयोगी अछि, मुदा जिह्वा केँ छुट्टी नहि देल जा सकैत।”

देवकान्त लिखलनि। “ई वाक्य अहाँक नाँवसँ?”

माधवी क्षणभरि हुनका देखलक। “जँ हमर अछि, तँ हमर नाँवसँ।”

देवकान्त पन्नाक कात लिखलनि—“माधवी।” नाम लिखैत हुनका पिछला दिनक कुर्थी-विवाद मोन पड़ल। एहि बेर हुनका नाम लिखब सामान्य काज नहि, एकटा अनुशासन बुझायल।

जानकी दालिक मटकी खोलि अरहरि निकाललीह। “आइ अरहरि बनत। एहि पर अहाँक तराजू परखू।”

देवकान्त उत्साहित भेलाह। ओ दालि तौललनि, पानी नापलनि, हरदि अलग कएलनि, नूनक लेल बाट राखलनि। प्रत्येक सामग्रीक आगाँ अंक लिखैत गेलाह।

माधवी कातमे बैसल चुपचाप देखैत रहल।

“आब की?” देवकान्त पूछलनि।

“आब दालि चढ़ाउ।”

“नून एखने?”

“अहाँ पोथी लिखैत छी। निर्णय अहाँ करू।”

देवकान्तक चेहरापर असमंजस। “जानकी?”

जानकी तुरन्त कहलनि, “हमरा बीचमे नहि घुसाउ। आइ अहाँक मापसँ बनल दालि।”

देवकान्त नूनक आधा भाग एखन देबाक निर्णय कएलनि, आधा पाछाँ। ओ लिखलनि—“आधा आरम्भमे, आधा अन्तमे स्वाद अनुसार।”

माधवी “स्वाद अनुसार” पढ़ि मुस्की देलक। “अहाँ तराजू लऽ कऽ अन्तमे फेर जिह्वा लग पहुँचलहुँ।”

देवकान्त कलम रोकि देलनि। “ई तऽ छलिये। मुदा जिह्वाक निर्णयक पहिने आधार तऽ रहत।”

“रहत। माप दुश्मन नहि। माप केँ मालिक बनायब समस्या।”

दालि उबलय लागल। झाग ऊपर उठल। देवकान्त घड़ीक सुई देखैत रहलाह, आगिक तीव्रता देखलनि, पानी घटल कि नहि लिखलनि। किछु देर बाद जानकी मात्र हाँड़ीक आवाज सुनि कहलीह, “पानी चाही।”

देवकान्त ढक्कन उठा देखलनि। सचमुच दालि गाढ़ भऽ चुकल छल। “अहाँ देखलहुँ नहि।”

“हाँड़ी बोलैत अछि,” जानकी सहज स्वरमे कहलीह।

“ई पोथीमे कोना लिखी?”

“पहिने सुनब सीखू,” माधवी कहलक।

देवकान्त हँसलाह। “अहाँ दूनू मिलि हमरा पोथीकेँ कठिनतम काज बना देब।”

जानकी हाँड़ीमे गरम पानि देलीह। “कठिन दालि खाइब कि खराब दालि?”

देवकान्तक उत्तर तैयार छल। “कठिन।”

“तँ लिखू।” जानकी फेर चाउर चुनय लगलीह।

दालि तैयार भेला पर देवकान्त तौलल बाँकी नून देलनि। चखलनि। हुनका नीक लगल। माधवी चखलक। किछु नहि कहलक। जानकी चखलीह आ डिब्बासँ एक चुटकी नून आरो देलीह।

देवकान्त विरोध कएलनि, “माप बिगड़ि गेल।”

“दालि नीक भऽ गेल,” जानकी उत्तर देलीह।

देवकान्त फेर चखलनि। सचमुच स्वाद कनी खुलि गेल छल।

ओ पन्नामे लिखलनि—“नून: तौलल मात्रा + अन्तमे एक चुटकी।”

माधवी तुरन्त पूछलक, “चुटकी केकर?”

देवकान्त ओकरा देखैत रहि गेलाह।

माधवी अपन अँगुरी देखौलक। “जानकीक चुटकी, हमर चुटकी, अहाँक चुटकी—तीनू बराबर?”

जानकी देवकान्तक लम्बा अँगुरी दिस देखलीह। “हुनकर चुटकी सँ तऽ आधा घरक नून चलि जाएत।”

तीनों हँसि पड़ल।

देवकान्त पन्नामे “एक चुटकी” काटि लिखलनि—“अन्तमे चखि आवश्यकता अनुसार।” फेर कनी सोचि कऽ कातमे जोड़लनि—“घरक पकौनिहारक जिह्वा अन्तिम माप।”

माधवी पढ़लक। “एहि मे एक दोष अछि।”

“आब की?”

“खौनिहारक जिह्वा?”

देवकान्त माथ पकड़ि लेलनि। “अहाँ हमरा नूनक एक पंक्ति लिखय नहि देब?”

“देब। मुदा पंक्ति जतेक छोट, जिम्मेदारी ओतेक पैघ।”

देवकान्त हँसैत पन्ना बन्द कएलनि। “नीक। आइ नून एतबे। काल्हि हम साबित करब जे एक विधि लिखल जा सकैत अछि।”

माधवीक आँखिमे फेर ओहि परिचित चमक आयल। “काल्हि?”

“हाँ।”

“तँ काल्हि तीन घरक दालि खायब।”

“किएक?”

“एके नाम। एके दालि। देखब अहाँक एक विधि कतऽ रहैत अछि।”

देवकान्त चुनौती स्वीकार करैत कहलनि, “नीक। तीन घर।”

जानकी हँसलीह। “पोथी लिखैत-लिखैत पेटक भाग्य खुलि गेल।”

✽✽

दोसर दिन दुपहर धरि देवकान्तक आगाँ तीन छोट कटोरी राखल छल। दालि तीनूमे अरहरिकँ छल, मुदा रंग, गन्ध, गाढ़ापन, ऊपर तैरैत तेलक बूँद धरि अलग। माधवी जानि-बुझि कऽ कटोरीक नाँव नहि बतौने छल।

“पहिने चखू,” ओ कहलक। “नोट पाछाँ।”

देवकान्त पिछला किछु दिनमे ई नियम सीखि चुकल छलाह। एहि बेर बिना बहस पहिल कटोरी उठौलनि।

पहिल दालि हलुक पीयर छल। रस पतला, जीरक गन्ध बडु कोमल, नून कम। भात संग खएला पर स्वाद धीरे खुलैत छल।

दोसर दालि गाढ़ छल। ऊपर सरिसो तेलक महीन चमक, भुजल मसालाक गन्ध, कनी तेज नून। पहिल घूँटमे जीभ जागि उठल।

तेसर दालि बीचक गाढ़ापनक, मुदा ओकर स्वादमे धूँआक हलुक छाप छल; दालि पूरा घुटल नहि, किछु दाना अपन रूपमे।

देवकान्त तीन बेर चखलनि। फेर पूछलनि, “तीन अलग विधि।”

माधवी कहलक, “नाँव?”

“अरहरिक दालि।”

“तीनूमे?”

“हाँ।”

“तखन एके नामक तीन विधि?”

“नीक।”

माधवी पहिल कटोरी दिस इशारा केलक। “ई जानकीक घरक। दोसर नसीमाक घरक। तेसर रमानन्दक घरक।”

देवकान्त ध्यानसँ फेर चखलनि। “मसाला अलग।”

“किछु। मुदा बस मसाला नहि।”

“तँ?”

“पहिल घरमे दालि भात संग। दोसर घरमे आइ माछ सेहो बनल अछि, तँ दालि अपन स्वाद कनी तेज राखने अछि। तेसर घरमे चाउर कम छल, रोटी संग खाएब, तँ दालि गाढ़।”

देवकान्त लिखय लगलाह। “भोजनक संगक पकवान विधि बदलैत अछि।”

“आ घरक लोकक पसिन।”

“ओ तऽ लिखब कठिन।”

“कठिन अछि, तँ छोड़ि देब?”

देवकान्त पन्नासँ आँखि उठा माधवी दिस देखलनि। “आब ई वाक्य अहाँ बेसी उपयोग करैत छी।”

“कारण अहाँ कठिन बात देखिते कागज छोट करय लगैत छी।”

देवकान्त दोसर कटोरी फेर चखलनि। “नसीमाक घरमे नून अधिक।”

माधवी कहलक, “अहाँक जिह्वा लेल।”

“अहाँक लेल नहि?”

“हमरा लेल नीक।”

“जानकी?”

“हुनका लेल कनी बेसी।”

देवकान्त हँसलाह। “एक दालि, एक कटोरी, तीन निर्णय।”

“एहि लेल काल्हि पुछने रही—नूनक माप केकर?”

ओ सभ पहिल घर—जानकीक भानस—सँ उठि नसीमाक घर दिस गेलाह। भूकम्पक बाद ओतहु भित्तिक एक भागमे नब माटि लगाओल जा रहल छल। आँगनक कात कपड़ा सुखा रहल छल, चूल्हिक धुँआ बाँसक फाँकसँ निकलि रहल छल।

नसीमा हुनका देखिते हँसि पड़लीह। “दालि चखि फैसला करय अयल छी कि मुकदमा?”

माधवी कहलक, “ई पोथी लिखैत छथि। एखन धरि पोथी हुनका लिखि रहल अछि।”

देवकान्त प्रणाम करैत कहलनि, “हमरा कहल गेल जे अहाँक दालिमे नून बेसी अछि।”

नसीमा भौं उठा माधवी दिस देखलीह। “हमरा घरक गुप्त बात खोलि देलहुँ?”

माधवी हँसल। “हुनकर जिह्वा कहलक।”

“तँ हुनकर जिह्वा केँ कनी भात दिअ, एकसरि दालि खा कऽ न्याय नहि होइत।”

देवकान्तक आगाँ भात, दालि आ माछक छोट टुकड़ा राखल गेल। संगमे कच्चा प्याज नहि—ओहि घरक आइक भोजनमे जे छल, ओतबे। दालि आब सचमुच कम तेज बुझायल; माछक स्वादक बीच ओकर नून संतुलित लगल।

देवकान्त कौर रोकि माधवी दिस देखलनि। ओ किछु नहि कहलक; मात्र आँखिसँ
“देखलहुँ?” जकाँ संकेत देलक।

नसीमा पूछलीह, “की लिखल?”

देवकान्त कहला, “एखन लिखल नहि। खा रहल छी।”

माधवीक मुखपर छोट मुस्की पसरल।

भोजन बाद देवकान्त पूछलनि, “अहाँ दालिमे नून कतेक दैत छी?”

नसीमा कहलनि, “कटोरी देखिकऽ।”

“मात्रा?”

“हाथ।”

“हाथक माप?”

“जे दिन माछ नमकीन हो, कम। जे दिन आलू-बैंगन हो, अलग। बच्चा बीमार हो तऽ
हलुक। पाहुन हो तऽ पूछियो लैत छी।”

देवकान्त मुस्कुरेलनि। “अर्थात एक उत्तर नहि।”

“एक उत्तर होइत तऽ भानस करब एतेक दिनमे सभ सीखि गेल रहित।”

माधवी जोड़लक, “आ पोथी एक पन्नामे समाप्त।”

नसीमा देवकान्तक नोटबुक दिस देखलीह। “पोथीमे हमरा घरक नाँव लिखब?”

देवकान्त बिना देर कए कहला, “हाँ। जे बात अहाँक घरक, ओ अहाँक घरक नाँवसँ।”

माधवी एहि उत्तरपर ओकरा एक क्षण अधिक देर देखलक। देवकान्त ध्यान देलनि, मुदा
किछु कहलनि नहि।

तेसर ठाम रमानन्दक घर छल। ओतय दालि मोट हाँड़ीमे धीमी आँचपर चढ़ल छल।
चूल्हिमे जलावन अलग, हाँड़ीक तल मोट, पानीक स्वादो अलग। रमानन्दक पत्नी मालती
कहलीह, “हम दालि पूरा घोटैत नहि छी। घरमे दाना देखाइत रहय, सभकँ नीक लगैत।”

देवकान्त पूछलनि, “आ ई धुँआक स्वाद?”

मालती हँसलीह। “हम बनबैत छी कि धुँआ? लकड़ी पूछू।”

रमानन्द कातसँ कहलनि, “पोखरिक सूखल डाँठो जड़ैत अछि कखनो। जे जलावन भेटल, ओहि पर।”

देवकान्त नोट कएलनि—“ईधन स्वाद बदलि सकैत अछि।” फेर तुरन्त जोड़लनि—
“एहि घरक अनुभव।”

माधवी पन्ना देखलक। “आब सुधार कम करय पड़ैत अछि।”

“विद्यार्थी प्रगति करैत अछि।”

“एखन परीक्षा बाँकी।”

देवकान्त तीन घरक दालिक छोट सार बनौलनि: एके अरहरि, मुदा पानी, संगक भोजन, घरक पसिन, आगि, हाँड़ी, नून देबाक समय, दालि घोटबाक ढंग, परोसबाक घड़ी—सभ मिलि अलग स्वाद।

ओ पुछलनि, “तखन पोथीमे विधि लिखबे नहि?”

माधवी कहलक, “किएक नहि? आधार लिखू। फेर भिन्नता लिखू। पाठक केँ ई भ्रम नहि दिअ जे एक पन्ना मिथिलाक सभ घरक जिह्वा बाँधि देत।”

देवकान्त “सभ घर” शब्दक नीचे रेखा खींचलनि। “ई बात हमरा बुझाइट अछि।”

रमानन्द हँसलाह। “हमरा तऽ एतबे बुझाइट अछि जे तीन घर घूमि दालि खएला पर बाबू साहेबक पोथी मोट होएत, पेटो।”

मालती तुरन्त कहलीह, “आ काल्हि फेर तौल लऽ कऽ नहि आयब। भोजन ठंढा भऽ जाइत अछि जखन ई बात खोजैत छथि।”

सभ हँसि पड़ल। देवकान्त सेहो। हुनका लगल, पोथीक कठिनाई आब अपमान नहि, आनन्दो दैत अछि।

**

साँझि देवकान्त ओसारमे बैसि तीन घरक नोट मिलबैत छलाह। लालटेन एखन जराओल नहि गेल छल; ढलैत उजासमे कागजक अक्षर धुँधला होइत जा रहल छल। माधवी कातमे अदौरीक पुरान डिब्बा जाँचि रहल छल—किछु नमी लगल कि नहि।

देवकान्त एकाएक कहलनि, “एक उपाय भेटल।”

“ककर?”

“नूनक।”

माधवी बिना ऊपर देखने पूछलक, “फेर तराजू?”

“नहि। अंग्रेजीमे लिखब—‘season to taste’।”

माधवी हाथ रोकलक। “की?”

देवकान्त अंग्रेजी शब्द धीरे-धीरे दोहरौलनि। “Season to taste. अर्थ—स्वाद अनुसार नून-मसाला मिलाउ।”

माधवी हुनका दिस देखैत रहल। “केकर स्वाद?”

देवकान्त हँसलाह। “फेर वएह प्रश्न?”

“वएह प्रश्न। शब्द बदलला सँ प्रश्न बदलि नहि गेल।”

“अंग्रेजीमे ई चलैत अछि। पाठक बुझत जे अपन स्वाद अनुसार।”

“‘अपन’ के?”

“जे पकौने छथि।”

“खौनिहार?”

“ओहो।”

“दूनूक स्वाद अलग?”

देवकान्त कलम मेजपर रखलनि। “अहाँ अंग्रेजी वाक्यक सेहो भानस करब?”

माधवी हँसल। “अहाँ मैथिलीक पकवान अंग्रेजीमे राखब, तऽ देखब पड़त जे बाटमे की झड़ि रहल अछि।”

देवकान्त गंभीर भेलाह। “नीक। कहू की झड़ैत अछि?”

माधवी अदौरीक डिब्बा बन्द कऽ हुनकर आगाँ बैसि गेल। “आइ तीन घरमे जे देखलहुँ, ओहि मे नून मात्र जिह्वा नहि छल। एक घरमे माछ संग, एकमे भात संग, एकमे रोटी संग। ककरो बच्चा, ककरो बूढ़। ककरो आगि तेज, ककरो धीम। ‘स्वाद अनुसार’ लिखि देला पर ई सभ कहाँ गेल?”

“मुदा पोथी सभ बात प्रत्येक विधिमे दोहरा नहि सकैत।”

“तँ शुरुआतमे नियम लिखू—विधि आधार अछि, घरक भोजनक संग बदलि सकैत अछि।”

देवकान्त सोचलनि। “ई प्रस्तावना मे जा सकैत अछि।”

“आ पकवानक ठाम जँ कोनो खास बात हो, ओ लिखू।”

“जकाँ नसीमाक घरमे माछक कारण नून?”

“हाँ। मुदा ‘कारण’ शब्द सावधानीसँ। हुनका सँ पूछलहुँ?”

देवकान्त याद कएलनि। नसीमा कहने छलीह—माछ नमकीन हो तऽ कम, भोजन अनुसार बदलैत। “हाँ, पूछल।”

“तखन लिखू।”

देवकान्त कागजपर अंग्रेजी वाक्यक नीचे मैथिलीमे लिखलनि—“स्वाद अनुसार; संगक भोजन, खौनिहार आ घरक चलन ध्यानमे राखि।”

माधवी पढ़लक। “एहि मे ‘घरक चलन’ नीक अछि।”

“अंग्रेजी?”

“हम नहि जानैत छी।”

“तँ हम करब।”

“करू। मुदा छोट करैत-करैत अर्थ नहि काटू।”

देवकान्त अंग्रेजीमे दू-तीन वाक्य बनौलनि, फेर काटलनि। “Household practice... accompanying dishes... preference...” शब्दसभ कागजपर पसरि गेल।

माधवी मुस्की दैत देखैत रहल। “एक चुटकी नूनक बदला आधा पन्ना अंग्रेजी।”

“अहाँक दोष।”

“नूनक दोष।”

“नून चुपचाप डिब्बामे अछि।”

“तखन लेखकक दोष।”

देवकान्त हँसि पड़लाह। “ई निर्णय बहु हतबड़ीमे भेल।”

किछु देर बाद ओ गंभीर स्वरमे कहलनि, “अनुवादमे ई समस्या बारम्बार आएत। ‘तरुआ’ केँ fried vegetable लिखू तऽ किछु बचत, किछु छुटत। ‘बगिया’ केँ dumpling लिखू तऽ आकार बुझत, घरक स्मृति नहि। ‘नून स्वाद अनुसार’ लिखू तऽ क्रिया बुझत, जिह्वाक समाज नहि।”

माधवी धीरे कहलक, “तँ किछु शब्द ओहिना राखू।”

“अंग्रेजी पाठक बुझत नहि।”

“पहिल बेर नहि बुझत। पुछत। पढ़त। सीखत।”

“पुस्तक कठिन भऽ जाएत।”

“अहाँ हमरा भाषा केँ सभ बेर सहज बना-बना कऽ दोसर भाषा बनायब?”

देवकान्त चुप भऽ गेलाह। प्रश्न कठोर नहि छल, मुदा सीधा।

माधवी कहलक, “जे पकवानक नाम हमर घरमे अछि, ओकरा नामसँ बाहर किएक निकालब? अर्थ दिअ, नामो राखू।”

देवकान्त पन्नाक ऊपर लिखलनि—“नाँव बचाउ; अर्थ संग दिअ।”

“ई वाक्य केकर?” ओ पूछलनि।

माधवी कहलक, “एहि बेर अहाँक।”

“निश्चित?”

“हम विचार कहने रही, वाक्य अहाँ बनौलहुँ।”

देवकान्त हँसलाह। “श्रेयक नियम कठिन अछि।”

“आवश्यक सेहो।”

लालटेन जराओल गेल। पीयर उजासमे पन्नाक ऊपर अंग्रेजी आ मैथिली दू पाँति कात-कात चमकि रहल छल। देवकान्त केँ लागल, अनुवाद दू भाषाक बीच पुल मात्र नहि; पुल बनबैत समय ककर जमीन काटल जा रहल अछि, से सेहो देखबाक काज अछि।

ओ फेर “season to taste” दिस देखलनि। “ई वाक्य रखब, मुदा नोट संग।”

माधवी कहलक, “राखू। शब्दक विरोध नहि। शब्द केँ एकसरि राजा नहि बनाउ।”

“राजा?”

“अहाँक पोथीमे सभ बातक राजा बनबाक आदत अछि—कखनो माप, कखनो अंग्रेजी, कखनो लेखक।”

देवकान्त हँसबाक बाद एकाएक चुप भऽ गेलाह। अन्तिम शब्द हलुक मजाकमे कहल गेल छल, मुदा ओ भीतर उतरि गेल। लेखक। हुनका ई उपाधि पसिन छल। मुदा पोथीक पन्नामे जे लोकक हाथ, आवाज आ स्वाद भरल अछि, ओ सभक बीच ‘लेखक’ के?

माधवी कदाचित हुनकर मौन बुझलक। ओ विषय बदलैत कहलक, “भोजन ठंढा होएत। चलू।”

देवकान्त नोटबुक बन्द कएलनि। एहि बेर “season to taste” केर अन्तिम अंग्रेजी रूप तय नहि भेल। खाली छोड़ल ठाम हुनका असफलता नहि, ईमानदारी बुझायल।

**

भोजनक पाँति प्रायः समाप्त भऽ चुकल छल। जानकी पहिने खा चुकलीह; घरक दोसर लोक अपन-अपन काजमे चलि गेल। ओसारक एक कात देवकान्त आ माधवीक लेल दालि-भात राखल छल। दिन भरिक तीन घरक स्वादक बाद भूख फेर साधारण रूपमे लौटि अयल छल।

देवकान्त बैसलाह। नोटबुक स्वभाववश हुनकर कातमे छल। माधवी थारी राखि ओकरा दिस देखलक।

देवकान्त एक क्षण सोचि नोटबुक उठौलनि, मुदा खोलबाक बदला पाछाँ राखि देलनि।

माधवी किछु नहि कहलक। मात्र दालिक कटोरी हुनका दिस सरका देलक।

दालि ओही अरहरि छल जे भोरे माप कऽ बनाओल गेल छल, मुदा राति धरि कनी गाढ़ भऽ चुकल। जानकी गरम करैत कनी पानी देलनि, ऊपर सँ घीक छोट धार। स्वाद दुपहरक दालिसँ फेर अलग।

देवकान्त पहिल कौर लेलनि। “आब एहि दालिक नब विधि लिखब पड़त?”

माधवी मुस्की देलक। “रातिक पुनर्जन्म।”

“दुपहरमे तौलल नून आब कतेक?”

“खाइत रहू।”

दूनु किछु देर चुपचाप खाइत रहल। बाहर हवा चलैत छल; भूकम्पक बाद बाँसक टेक लागल भित्ति कखनो-कखनो चरमराइत। आँगनक दूर कोनमे राखमे लाल बिन्दु जकाँ आगि बचल छल।

देवकान्त केँ दिनक तीन कटोरी मोन पड़ल। ओ पूछलनि, “अहाँक लेल तीनूमे सभसँ नीक कुन छल?”

माधवी भातमे दालि मिलबैत कहलक, “किएक एक केँ जितयबाक अछि?”

“स्वादक तुलना।”

“भोजन प्रतियोगिता नहि।”

“तखन अहाँक पसिन?”

माधवी कनी सोचलक। “जानकीक घरक दालि भात संग नीक। नसीमाक माछ संग ओहि दिनक दालि नीक। मालतीक गाढ़ दालि रोटी संग नीक। अलग कऽ कटोरीमे चखब तऽ हम सेहो बेठीक न्याय करब।”

देवकान्त माथ हिलौलनि। “हम पहिने तीनूमे ‘सर्वश्रेष्ठ’ चुनबाक सोचि रहल रही।”

“आब?”

“आब लगैत अछि प्रश्न बेठीक छल।”

माधवी ओकरा देखलक। एहि बेर आँखिमे व्यंग्य कम, किछु नरम स्वीकृति बेसी छल। “विद्यार्थी कनी आगाँ बढ़ल।”

“परिणाम पोथी पूरा भेला पर?”

“हाँ।”

थारीक कात नूनक छोट डिब्बा राखल छल। देवकान्त आदतन हाथ बढ़ौलनि, फेर दालि चखि हाथ रोकि लेलनि।

माधवी देखलक। “नून नहि?”

“एखन नीक अछि।”

“कतेक नीक?”

देवकान्त मुस्कुरेलनि। “माप नहि बतायब।”

माधवीक हँसी दबि नहि सकल। “एक दिनमे एतेक परिवर्तन?”

“तराजू पाछाँ राखि देने छी।”

“तराजू दोषी नहि छल।”

“मोन अछि। माप दुश्मन नहि, मालिक बनायब समस्या।”

माधवी क्षणभरि स्थिर भेल। “ई हमर वाक्य छल।”

देवकान्त तुरन्त कहलनि, “हाँ। लिखलो अछि—माधवी।”

ओहि एक शब्दक बाद दूनूक बीच किछु बदलल। कोनो घोषणा नहि, कोनो बड़ भावुक वाक्य नहि। मात्र ई जे माधवीक चेहरापर जे सावधानी प्रायः रहैत छल, ओ कनी ढीली पड़ल। देवकान्तक लेल ई प्रशंसासँ बेसी मूल्यवान छल।

किछु देर बाद माधवी पुछलक, “अहाँ सचमे तीन घरक नाँव लिखब?”

“हाँ।”

“छपला पर सेहो?”

“जँ ओ लोक चाहथि, तऽ।”

“नसीमा पूछने छलीह।”

“हुनकर नाँव रहत।”

माधवी थारी दिस देखैत रहल। “कागजमे नाँव रहब छोट बात नहि।”

देवकान्त धीरे कहलनि, “आब बुझि रहल छी।”

“पूरा?”

“नहि। कदाचित सीखि रहल छी।”

माधवी एहि उत्तरपर किछु नहि कहलक। ओ अचारक छोट कटोरी हुनका दिस बढ़ा देलक। देवकान्त आ माधवी दूनू एक्के समय कटोरी पकड़बाक लेल हाथ बढ़ेलक। अँगुरी एक क्षण छुल। माधवी हाथ हटौलनि नहि, मात्र कटोरीक पकड़ ढीली कऽ देलक; देवकान्त सेहो तुरन्त किछु कहलनि नहि।

अचार देवकान्तक थारी कात राखल गेल। ओहि क्षणक कोनो नाँव नहि छल। कदाचित नाँव देला सँ ओ भारी भऽ जाइत।

देवकान्त कौर लेलनि। अचारक खट्टास दालिक नरम स्वादक बीच तेज रेखा खींचलक। हुनका स्वभाववश लिखबाक इच्छा भेल—“खट्टा संग नून कम बुझाइट...”—मुदा ओ नोटबुक दिस देखलनि तक नहि।

माधवी पूछलक, “आइ नोट नहि?”

“भोजन पूरा भेला बाद।”

“नियम मोन रहि गेल?”

“किछु नियम पेट तुरन्त सिखा दैत अछि।”

“आ किछु?”

देवकान्त उत्तर देबाक पहिने ओकरा देखलनि। “किछु नियम संग बैसल लोक।”

माधवीक आँखि एक क्षण लेल नीचाँ झुकल। बाहरक हवा ओसारमे आयल। लालटेनक लौ कनी काँपल, मुदा बुझल नहि।

भोजन समाप्त भेला पर देवकान्त हाथ धोएलनि। नोटबुक फेर खोललनि, मुदा आइक अन्तिम पन्नामे बड्ड कम लिखलनि।

“एके दालि तीन घरमे तीन रूप। माप उपयोगी; स्वाद सम्बन्धमे बनैत अछि। नूनक अन्तिम माप मात्र बाट-बटखरामे नहि।”

ओ “मात्र” शब्दक बाद कलम रोकलनि। कातमे माधवीक नाम लिखबाक इच्छा भेल, फेर सोचलनि—ई वाक्य आइक पूरा दिनक, तीन घरक, जानकी, नसीमा, मालती, माधवी, अपन जिह्वा—सभक संग मिलि बनल अछि।

ओ नीचे लिखलनि—“स्रोत: तीन घरक भोजन आ बातचीत; नाम अलग पन्नामे।”

माधवी पन्ना पढ़ि पूछलक, “हमर नाँव?”

देवकान्त पाछाँक पन्ना खोलि देखलनि। ओतय चारि नाँव लिखल छल—जानकी, नसीमा, मालती, माधवी—आ कातमे रमानन्दक नाम ईधनक बात लेल।

माधवी किछु देर ओ पन्ना देखैत रहल। फेर कहलक, “नीक।”

देवकान्त मजाकमे पुछलनि, “एखन एक पन्ना पास?”

“दू।”

“प्रगति तेज अछि।”

“घमंड नहि करू। काल्हि फेर भूल करब।”

देवकान्त हँसलाह। “अहाँ विश्वास रखैत छी हमरा पर।”

“अहाँक भूल करबाक क्षमता पर पूरा।”

दूनु हँसि पड़ल। ओसारक बाहर जाड़क राति गाढ़ भऽ रहल छल।

किछु देर बाद माधवी उठि भीतर चलि गेल। देवकान्त नोटबुक बन्द कऽ ओहि ठाम बैसल रहलाह। दिनक आरम्भ तराजू, बाट आ छटाँकसँ भेल छल; अन्त एकटा एहन मौन पर भेल जकर कोनो माप नहि छल।

नूनक डिब्बा ओसारमे रहि गेल। देवकान्त ओकरा उठाकऽ भानसक कात राखि अयलाह। लौटैत समय हुनका लागल—किछु पदार्थ उचित मात्रा भेटला पर स्वाद बनैत अछि, आ किछु पदार्थक स्वाद एहि कारण बनैत अछि जे ओकर मात्रा पहिनेसँ तय नहि होइत।

ओ राति हुनका नींद अबैत देर भेल। कारण नून नहि छल।

अध्याय ९ — तिलकोर

जाड़क तीखापन धीरे-धीरे ढीला पड़ि रहल छल। भूकम्पक बादक दिन पहिने घंटा-घंटा गनायल, फेर दिन-दिन; आब लोक फेर मौसमक चाल देखय लागल छल। आँगनक बाँसक टेक एखनहुँ भित्तिक संग लागल छल, मुदा भानसक धुआँ आब भयक चिन्ह नहि, घर फेर चलि पड़बाक चिन्ह बुझाइट छल।

ओहि भोर जानकी कहलीह जे दरभंगा दिससँ परिवारक दू परिचित कलउक बेर पहुँचताह। अतिथि एकाएक नहि छलाह, मुदा खबर एतेक देरमे आयल जे घरमे अलग सँ बाजार पठेबाक समय नहि बचल। जानकी एक बेर भण्डारघर, एक बेर बाड़ी दिस नजरि घुमेलनि।

“भात-दालि तऽ अछि,” ओ कहलीह। “तरकारी सेहो अछि। दही जमल अछि। किछु तरुआ हो जाए तऽ थारी पूरा लागत।”

माधवी ओसारसँ उठि बाड़ी दिस गेल। देवकान्त नोटबुक लेने पाछाँ-पाछाँ चलि पड़लाह।

माधवी घुमि कऽ देखलक। “फेर पोथी?”

“अतिथिक भोजनक वर्णन नहि लिखी?”

“लिखू। मुदा पहिने पात चुनब दिअ।”

बाड़ीक कात तिलकोरक लत्ती पसारल छल। किछु पात उज्जर हरियर, किछु गाढ़; किछु पर रातिक ओस एखनहुँ छोट मोती जकाँ अटकल छल। माधवी एक-एक पात उलटि देखैत छल। ककरो किनारि कीड़ासँ कुतरल, ककरो बीचक डाँठ कड़ा, ककरो देह एतेक कोमल जे उठबैत फाटि जाए।

देवकान्त एकटा खूब छोट पात तोड़बाक लेल हाथ बढौलनि।

“ई नीक?”

माधवी हुनकर हाथ रोकलक। “छोट होएब मात्र नीक होएब नहि।”

“काल्हि तऽ अहाँ कहने रही कोमल पात।”

“कोमल, मुदा एतेक कच्चा नहि जे पीठार धरिते मुड़ि जाए। देखू।”

ओ दू पात हुनकर सोझाँ रखलक। एक पातक बीचक डाँठ अँगुरीसँ मोड़ि देखेलक; दोसरक डाँठ कनी कठोर रहि गेल। “पातक देह देखू। जे बहुत पुरान, ओ तलला पर कड़ा लागत। जे बहुत नव, ओ तेलमे अपन रूप नहि राखत। बीचक अवस्था चाही।”

देवकान्त लिखय लगलाह—“मध्यम आयु—”

माधवी हँसि पड़ल। “पातक आयु के गनलनि?”

देवकान्त कलम रोकलनि। “तखन की लिखी?”

“जे देखलहुँ, से लिखू। डाँठ बड्ड कड़ा नहि, पात बड्ड पातर नहि, फाटल नहि। ई लिखि सकैत छी।”

देवकान्त शब्द बदललनि। “ठीक।”

माधवी आगाँ बढ़ल। ओ पात तोड़बाक बेर लत्ती केँ जोर सँ नहि तानैत छल; एक हाथसँ डाँठ धरैत, दोसर हाथसँ पात अलग करैत। हेमलता टोकरी लेने पाछाँ छल। पात टोकरीमे बेराबेरी सँ राखल जाइत छल, दबाओल नहि।

देवकान्त पूछलनि, “अतिथिक लेल अलग नीक पात, घरक लोक लेल आन?”

माधवीक हाथ रुकल। “नीक-अनीक तऽ पकवानक हिसाबसँ। जे पात तरुआ लेल ठीक, ओ तरुआमे जाएत। अतिथि आयल छथि ताहि लेल सड़ल पात घरक लोक खायत—ई कोन नियम?”

जानकी दूरसँ सुनि लेने छलीह। ओ कहलीह, “अतिथिक थारीमे नीक पकवान पहिने पहुँचे, ई आतिथ्य। मुदा घरक लोकक लेल बेठीक पकवान बचाउ, ई मूर्खता।”

माधवी हुनका दिस देखलक। “सुनलहुँ? एहि बेर हमर बात नहि, जानकीक।”

देवकान्त नोटबुकमे नाँव लिखलनि। “जानकी।”

जानकी हँसैत कहलीह, “हमर नाँव लिखि दियौ, मुदा तरुआ बिगड़ल तऽ दोषो लिखब?”

“दोष जेकर, नाँव ओकर,” देवकान्त कहलनि।

माधवी तुरन्त कहलक, “नियम नीक अछि। अपन लेल सेहो राखब।”

देवकान्त ओकरा देखलनि। पछिला रातिक बात मोन पड़ि गेल—नाँव, स्रोत, श्रेय।
“राखब,” ओ कहलनि।

पात चुनैत-चुनैत टोकरी आधा भरि गेल। माधवी एकाएक एकटा छोट, समतल, कोमल पात देखलक। ओकर किनारि पूरा छल, बीचक रेखा महीन। ओ एक क्षण ओकरा देखलक, फेर टोकरीमे आन पातक नीचाँ नहि, एक कात अलग राखि देलक।

देवकान्त देखलनि, मुदा किछु पुछलनि नहि।

माधवी सेहो किछु कहल नहि।

**

कलउक तैयारी भानसघरमे एक्के बेर अनेक दिशासँ चलि रहल छल। एक कात भातक पातिलमे पानि उफनैत, दोसर कात दालि धीम आँचपर गाढ़ होइत, तेसर कात तरकारीक गन्ध उठैत। तिलकोरक पात ओसारमे धोइ कऽ पसराओल गेल।

हेमलता पातक ऊपरक पानि कपड़ासँ हलुक-हलुक सोखैत छल। जानकी पीठार देखैत छलीह। माधवी नूनक डिब्बा आ पीठारक कटोरीक बीच हाथ चलबैत छल। देवकान्त दरवज्जाक कात बैसि नोट करैत छलाह।

जानकी कहलीह, “देवकान्त, एतय बैसबाक अछि तऽ बाट नहि रोकू।”

ओ तुरन्त कनी कात सरकलाह। “हम केवल देखैत छी।”

हेमलता हँसल। “देखबो मे ठाम घेराइत अछि।”

देवकान्त मुस्कुरेलाह। “ठीक। आब कहू—मुख्य बनौनिहार के?”

तीनू स्त्री एक्के बेर हुनका देखलक।

जानकी पूछलीह, “की?”

“पोथीमे विधि लिखब। के बनबैत छथि—अहाँ, माधवी, कि हेमलता?”

हेमलता अपन हाथक पात उठा कऽ कहलक, “हम एखन पानि पोछैत छी। एकर नामो बनायब अछि?”

माधवी कहलक, “जानकी पीठार देखैत छथि, हम पात आ तेल, हेमलता पात सुखबैत अछि। कनी देरमे ओ थारी सजाओत। जे हाथ खाली होएत, ओ आन काज पकड़त। एकटा नाँव चाही तऽ ‘घर’ लिखू।”

देवकान्त कलम रोकलनि। “घर लिखला सँ फेर लोकक नाँव मेटत।”

माधवीक आँखिमे एक क्षण उजास आयल। “तखन सभक नाँव लिखू।”

देवकान्त पन्नाक ऊपर तीन नाँव लिखलनि—जानकी, माधवी, हेमलता। फेर पूछलनि,
“आ पात के तोड़लक?”

“हम आ हेमलता।”

“पीठार के सानलक?”

“भोरमे जानकी।”

“तेल?”

जानकी कहलीह, “तेल हम चढ़ौने छी। मुदा ताप माधवी देखत।”

देवकान्त मुस्कुरेलाह। “एक पकवानक विधि लिखैत-लिखैत वंशावली बनत।”

माधवी उत्तर देलक, “अहाँ एके लोकक नाँव खोजब, तऽ झूठ छोट रहत; सभक नाँव लिखब, तऽ सत्य कनी पैघ होएत।”

देवकान्त पन्नापर ई वाक्य लिखबाक लेल कलम उठौलनि, फेर पूछलनि, “ई वाक्य अहाँक नाँवसँ?”

“एहि बेर हँ।”

“ठीक।”

पीठारक गाढ़ापन देखबाक लेल जानकी अँगुरीक पाछाँ भागसँ कनी उठा कऽ फेर कटोरीमे झरका देलनि। धार एक्के बेर टूटल नहि, मुदा पातपर भारी तह बनय लायक सेहो नहि छल। माधवी एक पात डुबेलक, उठेलक, अतिरिक्त पीठार कटोरीक किनारिपर हलुक छोड़लक।

तेलमे पात पड़िते सूक्ष्म आवाज उठल। देवकान्त स्वभाववश झुकि कऽ देखय चाहलनि।

माधवी कहलक, “एतेक लग नहि। तेल पोथी नहि जे आँखि लगा कऽ पढ़ब।”

हेमलता फेर हँसि पड़ल।

पहिल पात तेलमे फैलि गेल। पीठारक फीका तह धीरे-धीरे रंग बदलय लागल। किनारि तनल, बीचक भाग कनी फूलल। माधवी ओकरा हतबड़ीमे नहि उलटलक। ओ आवाज सुनैत, सतह देखैत, तेलक चाल बूझैत रहल।

देवकान्त पूछलनि, “समय?”

“घड़ी देखू।”

“अहाँ नहि देखैत?”

“हम पात देखैत छी।”

“पोथी लेल मिनट चाही।”

“मिनट लिखू। संगमे ई सेहो लिखू जे तेलक ताप बदलला पर मिनट बदलत।”

देवकान्त घड़ी देखलनि। पहिल पात निकालल गेल तऽ ओ लिखलनि। फेर दोसर पात पड़ल। एहि बेर तेल पहिलसँ बेसी गरम छल; आवाज तेज भेल। माधवी आँच कनी घटेलक।

“देखलहुँ?” ओ कहलक। “घड़ी एके, तेल एके नहि।”

देवकान्त लिखलनि—“समय अनुमान; तेलक ताप देखब।”

माधवी पन्ना देखलक। “ई ठीक।”

जानकीक हाथ पीठारक कटोरी धरैत छल, हेमलता तऽल पात झँपसँ नहि, एक कात पसराकऽ राखैत छल जाहिसँ भाप अटकि नरम नहि कऽ दे; माधवी पात तेलमे देत, उलटैत, निकालैत। काजक कोनो एक केन्द्र नहि छल। एक हाथक गति दोसर हाथक प्रतीक्षा करैत, फेर दोसर हाथ पहिल हाथक ठाम लेत।

देवकान्त केँ एकाएक लागल, संगीत सुनबाक लेल कोनो एक बाजा चुनि बाकी सभक आवाज बन्द कऽ देब ठीक नहि। भानसघरक ई लय सेहो तेनाही छल।

ओ पन्नाक किनारमे लिखलनि—“विधि केवल सामग्री आ समय नहि; हाथसभक मेल।”

माधवी दूरसँ पढ़ि नहि सकल। “की लिखलहुँ?”

“बादमे देखाउब।”

“गुप्त पोथी?”

“लेखकक निजता।”

माधवी तुरन्त कहलक, “काल्हि हमरा निजी पन्ना देखय चाहब तऽ ई बात मोन राखब।”

देवकान्त ठमकलाह, फेर हँसि देलनि। “ठीक अछि। ई उधार रहल।”

तिलकोरक तरुआ एक-एक कऽ थारीमे बढ़ैत गेल। गन्ध भात-दालिक भापसँ मिलि भानसक भीतर एहन गरम तह बना रहल छल जाहिमे तेलक तीखापन, पातक हरियर गन्ध आ पीठारक सिकाइ एक्के बेर बुझाइत छल।

किछु पात आकारमे एक्के जकाँ छल, मुदा तलला पर रंग अलग। किछु किनारि बेसी कुरकुर, किछु बीचमे नरम। देवकान्त सभक अन्तर लिखबाक प्रयत्न कएलनि, फेर एक बेर पन्ना देख कऽ स्वयं हँसलाह।

“की भेल?” माधवी पूछलक।

“हम तरुआ खएबासँ पहिने ओकर जीवन-चरित लिखि देब।”

जानकी कहलीह, “पहिने अतिथि खा लेथि। पोथी बादमे पेट भरत।”

✽✽

अतिथि कलउक बेर धरि पहुँचि गेलाह। आँगन साफ कएल गेल, हाथ-मुँह धोयबाक पानि राखल गेल। देवकान्त हुनका स्वागत करैत बाहर गेलाह। भीतर भानसक लय अन्तिम चरणमे छल। भात उतारल जा रहल छल, दालिक ऊपर घीक छोट धार पड़ल, दहीक कटोरी सजल, तिलकोरक तरुआ कपड़ापर कनी देर राखि थारी दिस सरकल।

माधवी पातक ढेर देखैत-देखैत ओहि छोट पातक तरुआ अलग कऽ एक कात राखि देलक जे भोरमे टोकरीक कात राखने छल। हेमलता देखलक।

“ई ककर?” हेमलता धीमे पूछलक।

माधवी बिना ओकरा देखनहि कहलक, “थारीक।”

“कोन थारी?”

“जतय ठाम बचत।”

हेमलता मुस्कुरा देलक, मुदा आगाँ किछु नहि पुछलक।

अतिथिसभ बैसलाह। भोजन परोसाइत गेल। भात, दालि, तरकारी, दही, तिलकोरक तरुआ। पहिल कौरक बादे एक अतिथि तरुआ दिस देखैत कहलनि, “ई पातक तरुआ बडु नीक भेल अछि।”

जानकी भीतरसँ सुनि मुस्कुरेलीह। देवकान्त सहज भावै कहय लगलाह, “ई पात चुनबाक—” फेर रुकि गेलाह।

अतिथि पूछलनि, “अहाँक पोथीमे एकर विधि सेहो रहत?”

“रहत,” देवकान्त कहलनि। “माधवी, जानकी आ हेमलतासँ सीखि रहल छी। पात चुनबाक बात माधवी बेसी नीक बुझैत अछि।”

भीतर किछु क्षण मौन रहल। माधवी कदाचित सुनलक; ओ बाहर नहि आयल। जानकी मात्र हेमलता दिस देखलीह। हेमलताक चेहरापर दबी हँसी छल।

अतिथि फेर पूछलनि, “पात छोट हो तऽ नीक?”

देवकान्त उत्तर देबाक बदला भीतर दिस कहलनि, “माधवी, ई प्रश्न अहाँक अछि।”

माधवी देहरी कात आयल, मुदा ओतहि ठाढ़ रहल। “छोट मात्र नहि। पात बडु कड़ा नहि, बडु पातर नहि; फाटल नहि। पातक देह देखबाक पड़ैत अछि।”

“एहि लेल पोथीमे चित्र चाही,” अतिथि कहलनि।

देवकान्त उत्साहित भेलाह। “चित्र हो सकैत अछि।”

माधवी कहलक, “चित्र देखिकऽ पातक कोमलपन बूझब?”

अतिथि हँसलाह। “तखन पोथी संग अहूँ रहू।”

माधवी उत्तर नहि देलक। ओ भीतर घुरि गेल। देवकान्तक चेहरापर एक क्षण एहन भाव आयल जाहि मे हँसी आ असुविधा दूनू छल। पोथी संग माधवी रहत—ई वाक्य सरल सुनाइत छल, मुदा ओकर भीतर समाज, घर, नाँव आ भविष्यक अनेक प्रश्न एक्के बेर जागि उठल।

भोजन चलैत रहल। अतिथिसभ तरुआक दोसर टुकड़ा लेलनि। देवकान्त अपना लेल किछु नहि लेलनि; ओ परोसन, पानि, बातचीतमे लागल रहलाह।

अतिथिसभक भोजन समाप्त भेला पर पान-सुपारी आयल। किछु देर बातचीत भेल—
भूकम्पक बादक मरम्मत, बाट, बाजार, कागज-कलम, पोथी। फेर अतिथिसभ विश्राम लेल
बाहरी कोठरी दिस गेलाह।

घरक लोकक भोजन आब शुरू भेल। जानकी कहलीह, “आब लेखक बाबू बैसू। लेखन
खा कऽ नहि चलत।”

देवकान्त बैसलाह। हुनकर थारीमे भात, दालि, तरकारी राखल गेल। हेमलता तरुआक
थारी लेने आयल। सामान्य आकारक दू तरुआ रखि ओ आगाँ बढ़य चाहैत छल, मुदा माधवी
पाछाँ सँ कहलक, “ओ छोटका सेहो।”

हेमलता बिना किछु कहने ओहि अलग राखल छोट तरुआ देवकान्तक थारीमे रखि
देलक।

देवकान्त पात पहचानि गेलाह। भोरमे टोकरीक कात राखल ओही पात। तलला पर
ओकर आकार कनी सिकुड़ि गेल छल, मुदा किनारिक पूरा वक्रता एखनहुँ पहचानल जा
सकैत छल।

ओ माधवी दिस देखलनि। माधवी जानकीक थारीमे दालि दैत छल। ओकर चेहरापर
कोनो विशेष भाव नहि छल।

देवकान्त तरुआक छोट टुकड़ा तोड़ि खएलनि। किनारि कुरकुर, बीचक पात नरम। स्वाद
आन तरुआसँ एतेक अलग नहि छल जे एकरा चमत्कार कहल जाए। मुदा ओकरा चुनबाक
स्मृति स्वादक संग मिलि गेल। भोरक ओस, माधवीक अँगुरी, “छोट मात्र नीक नहि”—सभ
एक्के बेर मोन पड़ल।

जानकी पूछलीह, “की देखैत छी? खाउ।”

देवकान्त मुस्कुरेलाह। “खाइत छी।”

माधवी आब हुनका देखलक। एक क्षण मात्र। देवकान्त पुछबाक चाहलनि—ई पात
हमर लेल किएक? मुदा प्रश्न जिह्वा धरि आबि रुकि गेल।

किछु बात पुछला पर स्पष्ट भऽ जाइत अछि; किछु बात पुछला पर कदाचित छोट भऽ
जाइत अछि। ओ एहि बेर छोट नहि करय चाहैत छलाह।

ओ चुपचाप तरुआ पूरा खा लेलनि।

दुपहर ढलला पर भानस शांत भेल। बासन धोआ गेल, बचल भोजन ढाकि राखल गेल, आँगनक आवाज धीम पड़ल। देवकान्त ओसारमे नोटबुक खोलि बैसलाह। माधवी तिलकोरक बचल दू-तीन पात छाँटि रहल छल—किछु साँझिक लेल, किछु छोड़ि देबाक।

देवकान्त लिखय लगलाह। पहिल पाँति बनल—“आज अतिथिक कलउमे तिलकोरक तरुआ बनल।”

माधवी दूरसँ पन्ना देखलक। “पहिल शब्द।”

देवकान्त पढ़लनि। “आज?”

माधवी किछु नहि कहलक। बस ओकरा देखैत रहल।

देवकान्त स्वयं हँसि पड़लाह। कलमसँ “आज” पर एक रेखा खींचि ऊपर लिखलनि—
“आइ”।

“आब?”

“आब वाक्य घरमे घुरि आयल।”

“एक शब्दसँ?”

“कखनो एक शब्द पता चलैत अछि जे बोलनिहार कतय ठाढ़ अछि।”

देवकान्त पन्ना देखलनि। “हम ‘आज’ किएक लिखि देलहुँ?”

“जे भाषा बेसी पढ़ैत छी, ओ हाथमे घुसि जाइत अछि।”

“मुदा हम मैथिली लिखि रहल छी।”

“देवनागरीमे मैथिली लिखला मात्रसँ हाथ आपे शुद्ध नहि भऽ जाइत। सुनबाक पड़त।”

देवकान्त कलम घुमौलनि। “तखन अहाँ हमरा भाषा पहरा दैत रहब?”

माधवी पातक डाँठ अलग करैत कहलक, “पहरा नहि। जँ अहाँ पुछब तऽ कहब। नहि पुछब, तऽ पोथी अहाँक।”

“आ जँ पोथी हमर एकसरि नहि?”

माधवीक हाथ एक क्षण रुकल। “ई प्रश्न अहाँ पूछलहुँ। उत्तर सेहो अहाँक खोजबाक अछि।”

देवकान्त पन्नामे अगिला पाँति लिखलनि—“पात चुनब: माधवी, हेमलता। पीठार: जानकी। तलबाक समय: माधवी, जानकी, हेमलता—काज बेराबेरी सँ बदलैत।”

माधवी नजदीक आबि पढ़लक। “बेराबेरी सँ—ई ठीक।”

देवकान्त कहलनि, “मुख्य बनौनिहारक ठाम तीन नाँव।”

“मुख्य बनौनिहार खोजब जरूरी छल?”

“पोथीक आदत छल।”

“आब?”

“आब पोथी केँ कनी सुधारैत छी।”

माधवी पन्ना उलटलक नहि; ओहि पाँतिपर नजरि टिकौने रहल। “एक बात छुटल।”

“की?”

“हेमलता पात सुखेलक। जँ पात भीजल रहत, पीठार ठीकसँ टिकत नहि।”

देवकान्त जोड़लनि—“पात धोएब-पोछब: हेमलता।”

“आ जानकी तेल चढ़ेलीह।”

ओ सेहो जोड़लनि।

“आ अहाँ?” माधवी पूछलक।

“हम?”

“अहाँ बाट रोकि बैसल रही।”

देवकान्त हँसि पड़लाह। “ई योगदान लिखी?”

“इतिहास पूरा रहत।”

देवकान्त किनारमे छोट अक्षरमे लिखलनि—“लेखक: बाट रोकबाक अतिरिक्त कोनो पाक-काज नहि।”

माधवीक हँसी एतेक खुलि गेल जे भीतरसँ हेमलता पूछलक, “की भेल?”

माधवी उत्तर देलक, “इतिहास ठीक भऽ रहल अछि।”

किछु देर बाद हँसी थमल। देवकान्त ओहि पन्नाक नीचाँ अतिथिक प्रतिक्रिया, तेलक ताप, पातक अवस्था, पीठारक गाढ़ापनक नोट लिखलनि। फेर कलम रोकलनि। भोरसँ मोनमे अटकल एक प्रश्न एखनहुँ छल।

“माधवी।”

“हूँ?”

“ओ छोट पात...”

माधवी बिना माथ उठौने कहलक, “की भेल ओकरा?”

“हमर थारीमे किएक?”

ओ बचल पात एकठाम करैत रहल। “हेमलता रखने होएत।”

भीतरसँ हेमलताक आवाज आयल, “हमरा कहल गेल छल।”

माधवी तुरन्त कहल, “अहाँ अपन काज करू।”

देवकान्त हँसी रोकि नहि सकलाह। “तखन?”

माधवी आब माथ उठेलक। “अहाँ सभ पातक अन्तर लिखय चाहैत रही। सभसँ नीक पात नहि खायब तऽ पोथी अधूर रहत।”

“केवल शोध?”

“अहाँ पोथी लिखैत छी। कारणो पोथी जकाँ चाही?”

देवकान्तक हँसी धीमी पड़ल। “नहि।”

“तखन खा लेलहुँ, बात समाप्त।”

माधवी फेर पात दिस झुकि गेल। मुदा देवकान्त केँ लागल ओकर ओठक कोन कनी उठल छल। हुनका निश्चित नहि भेल—आ आब ओ सभ बातक निश्चित माप माँगब छोड़बाक अभ्यास करि रहल छलाह।

ओ नोटबुकमे अन्तिम पाँति लिखलनि—“आइ: तिलकोरक पात चुनब, हाथसभक मेल, आ शब्दक सुधार।”

“आइ” शब्द लिखला पर ओ जानि-बुझि कऽ कलम कनी देर रोकलनि।

माधवी देखलक। “एहि बेर ठीक।”

“भाषा?”

“भाषा सेहो।”

“आ बाकी?”

माधवी उत्तर नहि देलक। ओ बचल पात उठाकऽ भीतर चलि गेल।

देवकान्त पन्ना बन्द नहि कएलनि। हवा चलल तऽ कागजक एक कोना उठल, फेर थिर भऽ गेल। ऊपर लिखल “आइ” शब्दक नीचाँ दिन भरिक भोजन, अनेक हाथक काज, एक छोट तरुआ आ एक अनकहल भाव एक्के पन्नामे ठाढ़ छल।

हुनका पहिल बेर स्पष्ट बुझायल जे भाषा सुधारब केवल बेठीक शब्द काटब नहि; ककर आवाज सुनल गेल आ ककर हाथक नाँव बचल, ई सेहो भाषा केर भीतरक काज अछि।

ओ पन्नाक कात एक छोट खाली ठाम छोड़ि देलनि। किएक, से हुनको नहि बुझायल।

बाहर बाड़ीक तिलकोरक लत्ती हवा मे कनी हिलल। घरक भीतर साँझि उतरय लगल छल।

अध्याय १० — पोखरिک आँखि

तिलकोरक अतिथि-भोजक दू दिन बाद माधवी देवकान्त कैँ भोरहि जगा देलक। आकाश एखन पूरा उज्जर नहि भेल छल। पूब दिस हलुक पीयर पट्टी मात्र फाटि रहल छल, आ आँगनक ईटपर रातिक ओस चिपकल छल।

“पोखरि देखय चलब?” माधवी पूछलक।

देवकान्त आँखि मलैत उठलाह। “एतेक भोरे?”

“पोखरि दिन चढ़ला पर दोसर रूप लैत अछि। पानिक काज भोरमे देखू।”

ओहि वाक्यमे आदेश कम, नियम बेसी छल। देवकान्त नोटबुक उठा लेलनि। माधवी एक बेर ओकरा देखलक, फेर कहल, “एहि बेर पन्ना पहिने नहि, आँखि पहिने।”

घरक पिछला बाट सँ दुनू बाहर निकलल। गाम एखन अधनिदायल छल। कतहु गोहालसँ घंटीक हलुक आवाज, कतहु धुँआक पहिल पतली रेखा, कतहु पनघट दिस जाइत लोकक पयरक खरखराहट। बाटक कात धान काटल खेतक ठूँठ पर ओस चमकि रहल छल। किछु दूर चलला पर रमानन्द भेटलाह। कन्हापर बाँसक एक लम्बा डंडा आ हाथमे बाँसक बनल गोल जाली-जकाँ साधन छल।

“ई रमानन्द छथि,” माधवी कहल। “पोखरि कैँ कागजसँ बेसी जानैत छथि।”

रमानन्द हँसलाह। “कागजमे पोखरि सुखाइत नहि होएत?”

देवकान्त मुस्कुरेलाह। “हमरा तँ एखन धरि कागजें बेसी बुझाइत रहल।”

“तखन आइ पानि सँ पूछू।”

पोखरि गामक सीमानसँ कनी बाहर छल। पुरान, पैघ, चारूकात उँच धरि। रमानन्द धरिक एक भागक ओर इशारा कऽ कहलनि, “एहि भिण्डा पर बरखामे पानि चढ़ि जाए तँ बाटो बुझाइत नहि।” देवकान्त शब्द पकड़लनि—भिण्डा। लिखबाक लेल हाथ नोटबुक दिस गेल, मुदा माधवी हुनकर आँखि देखलक। देवकान्त हाथ रोकि लेलनि।

भिण्डापर चढ़िते पानीक पूरा फैलाव सोझाँ आयल। सतह एतेक थिर छल जे पूबक पीयर आकाश ओकर भीतर दोसर आकाश जकाँ पड़ल देखाइत छल। कतहु पुरैनक पात, कतहु कुमुदिनीक सूखल डाँठ, कतहु काँटदार जलवनस्पतिक कारी पड़ल अवशेष। दूर एक कोनमे पानी कम छल; कादो ऊपर किछु पक्षीक पयरक चिन्ह बनल छल।

देवकान्त धीमे सँ कहलनि, “सुन्नर।”

रमानन्द हुनका दिस नहि देखलनि। “ऊपर सँ।”

दू शब्दें देवकान्तक वाक्यक पाछाँ एक दरार खोलि देलक।

पोखरिक घाट पर पहुँचि रमानन्द बाँसक डंडा धरतीपर राखलनि। “एखन उतारक समय नहि अछि,” ओ कहलनि। “मखानक पुरान बीआ घरमे अछि। ई नब फसलक बढ़बाक बेर। मुदा जखन उतार होएत, तखन ई शान्त पानि एहन नहि लगत।”

देवकान्त पहिल बेर बुझलनि जे ओ मखान केँ थारीमे देखैत रहल छथि—दूधमे, खीरमे, घीमे भुजल, पर्वक कटोरीमे—मुदा ओकर पहिल घर पानी अछि, से कखनो सोचने नहि छलाह।

माधवी पोखरिक सतह देखैत कहलक, “पोथीमे मखानक ठाम एखन धरि की लिखल अछि?”

देवकान्त स्मरण करबाक प्रयास कएलनि। “उत्सवक श्रेष्ठ पदार्थ। व्रतमे उपयोगी। दूध आ गुड़क संग—”

रमानन्द बीचमे हँसि देलनि। “बस? पानिमे जे लोक उतरैत अछि, ओकरा लेल कोनो पाँति नहि?”

देवकान्त चुप भऽ गेलाह। एहि बेर ओ नोटबुक खोललनि, मुदा पहिल पाँति लिखला सँ पहिले रमानन्द दिस देखलनि। “पहिने अहाँ कहू।”

रमानन्दक हँसी कनी कम भेल। “एतेक ठीक।”

रमानन्द बाँसक डंडा उठाकऽ पोखरिक कात गाड़लनि। “जखन बीआ नीचाँ पड़ि जाइत अछि, तखन एहि तरहक कारा चिन्ह बनैत अछि। लोक पानिमे उतरैत अछि, नीचाँ धरि जाइत अछि, कादो हाथसँ समेटैत अछि। बीआ आँखिसँ नहि, हथेलीसँ भेटैत अछि।”

देवकान्त पूछलनि, “एतेक गहिरे?”

“गहिराइ पोखरि-पर-पोखरि बदलैत अछि। कतहु देह भरि, कतहु माथसँ ऊपर। कतहु पयर नीचाँ कादो एतेक नरम जे ठाढ़ रहब कठिन। कतहु पुरान काँट पैर छेदि दैत अछि। साँस रोकबाक समय अपन देह स्वयं घड़ी बनैत अछि।”

ओ बाँसक जाली उठौलनि। “ई गंजा जकाँ साधन सँ कादो छानल जाइत अछि। बीआ भारी, कारी; कादो अलग। मुदा किताबमे जँ केवल ‘बीआ एकत्र कएल जाए’ लिखब, तँ काजक आधा देह गायब भऽ जाएत।”

माधवी पूछलक, “आ दोसर आधा?”

रमानन्द अपन हथेली देखौलनि। पुरान खरोचक फीका रेखा, मोट चमड़ा, नखक कात कादोक दाग। “ई।”

देवकान्त बिना पूछने हथेली देखैत रहलाह। हुनकर मोनमे कलकत्ताक पत्रिकाक एक पुरान वाक्यक अर्थ छल—“मिथिलाक विशिष्ट मखान।” वाक्य एकाएक बहुत हलुक बुझायल। एतेक हलुक जे पानीक तल धरि डूबि नहि सकय।

रमानन्द कहलनि, “कटनीक दिन भोरमे उतरब नीक। पानि थिर रहैत अछि। जखन सतह पर हवा बेसी, भीतर दिशा बूझब कठिन। एक मनुख एकसरि बहुत दूर नहि जाइत। संगक लोक कात रहैत अछि। ऊपरक लोक देखैत रहैत अछि—कतेक बेर डुबकी, कतेक देर, कहाँ सँ उठल।”

“डर नहि लगैत अछि?” देवकान्त पूछलनि।

“पहिल-पहिल लगैत। बादमे डर काजक संग रहय सीखि जाइत अछि। डर गेल तँ मनुख लापरवाह होएत। डर बहुत भेल तँ पानिमे उतरि नहि सकत। बीचक माप चाही।”

माधवी देवकान्त दिस देखलक। “नून जकाँ?”

देवकान्त हँसलाह, मुदा रमानन्द बुझलाह नहि। माधवी कहल, “एहि लेखक बाबू केँ सभ बातक नाप चाही।”

रमानन्दक आँखि चमकल। “साँसक नाप लिखताह?”

देवकान्त उत्तर देलनि, “जँ अहाँ कहब तऽ।”

“लिखू—एक मनुखक साँस दोसर मनुखक साँस नहि होइत अछि।”

देवकान्त तुरन्त लिखलनि।

रमानन्द आगे कहलनि, “काँट सेहो सभ पोखरिमे समान नहि। मखानक पुरान पात-डाँठ सड़ि गेलापर बहुत कुछ नीचाँ रहि जाइत अछि। कादो आँखि, नाक, कान सभमे जा सकैत अछि। ऊपर जे लावा उज्जर देखाइत अछि, ओकर पहिल रंग ई कादो अछि।”

किछु क्षण तीनू चुप रहल। पोखरिक सतहपर एक छोट बुलबुला उठल, गोल घेरा बनौलक, फेर समाप्त।

देवकान्त लिखलनि—“मखान—उत्सवक श्रेष्ठ पदार्थ।” ओहि पुरान वाक्यक पाछाँ कनी ठाम छोड़ि फेर लिखलनि—“एहि वाक्यसँ पहिले पानि, कादो, काँट, साँस आ मजूरी लिखब जरूरी।”

माधवी पन्ना पढ़लक। “मजूरी लिखब?”

“हँ।”

रमानन्द पहिल बेर पूरा गम्भीर स्वरमे कहलनि, “तखन मालिकक हिस्सा सेहो लिखू।”

✽

पोखरिक दोसर घाट दिस चलैत रमानन्द बतौलनि जे ई पोखरि हुनकर नहि। ओहि बातमे कोनो शिकायतक अभिनय नहि छल; जकाँ कोनो भूगोलक सीधा तथ्य कहैत होथि। “हमरा जलक चाल बुझाइत अछि, मुदा पानि हमर नहि। बीआ कखन उतारब, कतेक लोक उतरब, कतेक मजूरी भेटत—एहि सभक अन्तिम बात मालिकक।”

देवकान्त पूछलनि, “बीआ बेचला पर भावक हिस्सा?”

रमानन्द हँसलाह, मुदा एहि बेर हँसीमे रस नहि छल। “मजूरी अलग, माल अलग। हमरा हाथसँ जे निकलल से पहिने पोखरिक माल। बाजार पहुँचलापर ओकर दाम दोसर बात।”

माधवी धरिक कात ठाढ़ भऽ गेल। “पोथीमे जखन लिखब जे मखान मिथिलाक गौरव अछि, तखन गौरवक हिस्सा केकर?”

देवकान्तक कलम हवा मे रुकल। “सभक?”

“सभक कहला सँ ककरो नाँव नहि बचैत,” माधवी कहलक।

ई वाक्य देवकान्त केँ चुभल। हुनका भूकम्पक बादक खिचड़क दिन याद पड़ल—
‘भोजन केकर?’ कहबाक बदला ‘ककर हाथ?’ पूछबाक बात। तिलकोरक दिन ओ

हाथसभक नाँव अलग-अलग लिखने छलाह। मुदा मखानक पन्ना एखन धरि थारीक वर्णन भरि छल।

रमानन्द पोखरिक भिण्डा पर बैसि गेलाह। “मालिकक सेहो काज अछि,” ओ स्वयं जोड़लनि। “पोखरि सम्हारब, पानि रोकब, लोक लगाउ, बाजार धरि माल पठाउ। हम ई नहि कहैत छी जे ओकर किछु नहि। मुदा जे पानिमे उतरैत अछि, ओकर काज थारीमे देखाइत नहि।”

देवकान्तक भीतर किछु सहज भेल। रमानन्द आरोप नहि, अनुपात माँगि रहल छलाह। वएह अनुपात जे नूनमे चाही, वएह जे पाँतिमे नाँव लिखबामे चाही।

“मजूरी कतेक?” देवकान्त पूछलनि।

रमानन्द कनी सोचलनि। “वर्ष, पोखरि, उतारक बेर, बीआक मात्रा—सभ बदलैत अछि। एकटा अंक लिखि देब तँ अहाँक पोथी फेर झूठ होएत। लिखू—पहिल उतार आ पछिला उतारक मेहनत एक नहि; बीआ कम होइत जाए तँ खोज बेसी।”

देवकान्त हँसलाह। “आब अहाँ सेहो हमरा नापसँ बचा रहल छी।”

“नाप राखू, मुदा ओकर सीमा लिखू।”

माधवी कहल, “ई पाँति मोट अक्षरमे लिखू।”

देवकान्त लिखलनि—“अंक बिना परिस्थिति अधूरा।”

पोखरिक कात एक बूढ़ गाछक छाया लम्बा भऽ रहल छल। भोरक पीयर उजास आब सफेद भऽ गेल। पानीक सतह पहिने जकाँ थिर नहि; हलुक हवा उठल छल। पुरैनक पात एक-दोसरासँ टकरा रहल छल।

माधवी नीचे झुकि पोखरिक पानि हथेलीपर लेल, फेर छोड़ि देलक। “जे वस्तु थारीमे पहुँचैत अछि, ओकर बाट लिखब कठिन किएक लगैत अछि?”

देवकान्त कहलनि, “थारी स्थिर अछि। बाट बदलैत रहैत अछि।”

“तखन बदलैत बाटे लिखू।”

रमानन्द उठि ठाढ़ भेलाह। “आ हमरा ‘मखान उतारनिहार’ लिखि कऽ छुट्टी नहि पाइब। माछ पकड़ैत छी, जाल सुधारैत छी, नाव खेबहूँ करैत छी, खेतोमे काज करैत छी। मनुख एक शब्दक पेशा नहि होइत।”

देवकान्त फेर कलम रोकलनि। एहि वाक्यक वजन हुनका तुरन्त बुझायल। पोथी वर्ग बनबैत चलि रहल छल—भोजन, जाति, पेशा, पर्व, ऋतु। मुदा जीवन ओहि खाँचासभक बीच सँ बहैत छल।

ओ लिखलनि—“रमानन्दः जलक काजमे निपुण; केवल एक पेशाक नामसँ पूरा परिचय नहि।”

माधवी पन्ना पढ़ि कहलक, “एखन ठीक।”

देवकान्त पूछलनि, “अहाँ सभ बेर ‘ठीक’ कहैत छी, मुदा ‘पूरा’ कहियो नहि।”

“पूरा लिखब सम्भव होएत तऽ पोथी एक दिनमे बनि जाएत।”

रमानन्द हँसलाह। “आ लेखक बाबू बेरोजगार भऽ जइतथि।”

तीनू हँसि पड़ल। हँसी पोखरिक खुला सतहपर गेल, कनी दूर धरि बहल, फेर हवा मे घुलि गेल।

**

घर घुरलापर जानकी पहिले रमानन्दक पयरक कादो देखलीह। “पोखरि देखय गेल रही कि पोखरि घर आनय?”

रमानन्द हँसैत कहलनि, “पोखरि आधा जूतामे आबि गेल।”

“तखन ओसारपर नहि। बाहर धोड़ लिअ।”

हेमलता दौड़ि पानि आनलक। माधवी देवकान्तक नोटबुक देखि पूछलक, “कागज बचल?”

“कागज बचल। लेखकक भ्रम कनी भीजल।”

जानकी भीतरसँ सुनि लेलनि। “भ्रम सुखेबाक लेल धूप अछि।”

दुपहरक बाद रमानन्द घरसँ एक छोट कपड़ाक थैली अनलनि। भीतर पछिला उतारक कारी मखान-बीआ छल। देवकान्त आश्चर्यसँ एक दाना हथेलीपर लेलनि। ई ओ सफेद, हलुक मखान नहि छल जे ओ थारीमे देखैत छलाह। दाना कठोर, गाढ़ रंगक, छोट पत्थर जकाँ।

“ई?”

रमानन्द कहलनि, “एहि भीतर ओ उज्जर लावा अछि जे अहाँ खाइत छी।”

हेमलता दाना कानक कात हिलौलक। “आवाज नहि करैत।”

“फूटला पर करत।”

जानकी कहलनि, “पुरान बीआ अछि, सभ समान नहि फूटत। देखब मात्र। नब फसलक समय आएत तखन नीक माल भेटत।”

ओसारक बाहर छोट चूल्हि सुलगाओल गेल। लोहेक मोट पातर बासन आगिपर चढ़ल। रमानन्द किछु बीआ गरम करबाक ढंग देखौलनि। ओ बेर-बेर कहैत रहलाह—“आगि बहुत तेज नहि, बहुत मंद नहि। बीआक भीतर धरि ताप पहुँचना चाही।”

देवकान्त लिखबाक लेल झुकलाह। माधवी कहल, “पहिने देखू।”

ओ फेर नोटबुक बन्द कएलनि।

गरम दाना बाहर निकालल गेल। रमानन्द काठक छोट पीटनिहार साधन हाथमे लेलनि। एक बीआ ठेकानपर राखि तेज, नपा चोट देलनि। “टक!” आवाज भेल। कारी खोल फाटल, भीतरसँ उज्जर मखान फूलि उठल। हेमलता अनायास ताली पीटलक।

दोसरो बीआ फूटल—टक! तेसर केवल चिरल, पूरा नहि फूलल। रमानन्द ओकरा अलग रखलनि। “सभ एक नहि।”

देवकान्तक आँखि ओहि रूपान्तरणपर टिकि गेल। कारी, कठोर दाना; एक चोट; भीतर सँ उज्जर, हलुक आकार। एहि बीच जे काज छल—सुखेब, ताप, समय, हाथक अभ्यास, चोटक माप—थारीमे पहुँचला पर किछुओ देखाइत नहि।

माधवी पूछलक, “आब पोथीमे की लिखब?”

देवकान्त कहलनि, “मखान आगिसँ सफेद होइत अछि।”

रमानन्द माथ हिलौलनि। “बेठीक।”

“किएक?”

“आगि एकसरि नहि। आगि बेसी तँ जरा देत, कम तँ फूटत नहि। हाथक चोट, समय, बीआक दशा—सभ।”

माधवी हलुक हँसल। “फेर नूनक पाठ।”

देवकान्त सेहो हँसलाह। “सभ पाठ घुरि कऽ नूनपर किएक अबैत अछि?”

जानकी भीतरसँ कहलनि, “कारण नून बिना सभ फीका।”

हेमलता फेर हाँसि पड़ल।

किछु बेर बाद ओसारमे सफेद मखानक छोट ढेरी बनल। बहुत नहि—दू मुठ्ठी भरि। किछु अधफूटल, किछु पूरा फूलल। रमानन्द एक पूरा फूटल मखान देवकान्तक हथेलीपर रखलनि।

“आब ई हलुक अछि,” ओ कहलनि। “मुदा एकर हलुकपन पाछाँ जे किछु भारी छल, से लिखू।”

देवकान्त मखान मुँहमे राखलनि। कुरकुराहट बहुत हलुक छल; स्वाद साधारण। मुदा भोरक पोखरि, कादो, भिण्डा, कारा, गंजा, साँस रोकैत देह, मालिकक अधिकार, मजूरीक अनिश्चितता, आगिक ताप, हथेलीक चोट—सभ एक क्षणमे ओहि हलुक स्वादक पाछाँ ठाढ़ भऽ गेल।

ओ नोटबुक खोललनि। पहिल पाँति लिखलनि—“मखान—उत्सवक श्रेष्ठ पदार्थ।”

फेर ओहि पाँति पर एक सीधी रेखा खींचि देलनि।

माधवी पूछलक, “काटि देलहुँ?”

“नहि। एकरा एकसरि नहि छोड़ब।”

ओ नीचे लिखलनि—“मखान: पोखरि, जल-श्रम, कादो, काँट, साँस, छँटाइ, ताप, चोट आ अनेक हाथक बाद थारीमे पहुँचैत पदार्थ। उत्सवक प्रतिष्ठा एहि बाट केँ नहि मेटाबय।”

रमानन्द पन्ना पढ़ि नहि सकलाह कि नहि पढ़लनि, देवकान्त केँ निश्चित नहि भेल। ओ केवल पूछलनि, “हमर नाँव?”

देवकान्त पन्नाक नीचे लिखलनि—“रमानन्दक कथन आ देखाओल काज।”

“मालिकक?”

“ओकरो लिखब।”

“मजूरी?”

“अंक नहि, परिस्थिति सहित।”

रमानन्द मुस्कुरेलाह। “तखन कनी पोथी जकाँ बुझाइत अछि।”

माधवी देवकान्त दिस देखलक। “पोथी जकाँ कि जीवन जकाँ?”

रमानन्द उत्तर देलनि, “जीवन पोथीमे पूरा नहि अँटत। मुदा जतेक अँटाओ, ओतेक टेढ़ा नहि करू।”

देवकान्त एहि वाक्यक पाछाँ एक छोट चिन्ह लगौलनि। ओ बुझि गेलाह—ई केवल मखानक पन्नाक नियम नहि।

साँझि पड़ैत-पड़ैत सफेद मखानक ओ छोट ढेरी थारीमे राखल गेल। हेमलता दू दाना चोरि कऽ खा लेलक; जानकी देखियो अनदेखा कएलनि। माधवी एक दाना तोड़ि आधा देवकान्तक सोझाँ रखलक।

“एहि बेर शोध?” देवकान्त पूछलनि।

“नहि। भूख।”

दुनू हँसल।

बाहर अन्हार खसबाक आरम्भ भेल। पोखरि आब घरसँ देखाइत नहि छल, मुदा देवकान्तक पन्नामे ओकर पानी रहि गेल छल। पन्नाक बीच सफेद मखान नहि, कारी बीआक स्मृति छल।

हुनका बुझायल—किछु वस्तु अपन अन्तिम रूपमे सभसँ कम सत्य कहैत अछि। ओकर साँच बाटमे रहैत अछि।

अध्याय ११ — भाप

पोखरिक दिनक तेसर भोरमे जानकी आँगनक एक कात चाउरक पीठारक ढेरी राखि देने छलीह। ओहि पर उजास पड़ैत छल तँ महीन धूरि जकाँ चमकि उठैत छल। कातमे भिजाओल दालि छल, जकरा माधवी बटि भरावन बनयबाक तैयारीमे छल। देवकान्त ओसारपर बैसल पाछिल दिनक मखानक पन्ना फेर पढ़ि रहल छलाह।

जानकी कहलीह, “पोखरि लिखि चुकलहुँ तँ आब भाप लिखू। पानीक ऊपर जे पकैत अछि, ओकरो हिसाब राखू।”

देवकान्त नोटबुक बन्द कएलनि। “की बनत?”

माधवी बिना माथ उठौने कहल, “बगिया।”

“नाम सुनने छी।”

“नाम सुनला सँ बनि जाइत?”

हेमलता हँसि पड़ल। “लेखक बाबू पहिने बनौताह, तकर बाद लिखताह।”

देवकान्त सँ ई प्रस्ताव अपेक्षित नहि छल। ओ माधवी दिस देखलनि। “हम?”

“हँ। नूनक मापपर बहस बहुत भेल। आब हाथक माप देखू।”

पीठारमे पानि एक बेरमे नहि पड़ल। माधवी कनी-कनी पानि दैत गेल, जानकी दू आँगुरसँ पीठार उलटैत रहलीह। देवकान्त नोट करबाक लेल हाथ बढ़ेलनि तँ माधवी रोकलक, “पहिने ई देखू जे पीठार पानि कतेक माँगैत अछि।”

देवकान्त कहलनि, “ई तँ फेर वएह बात भेल—ठीक नाप नहि?”

जानकी उत्तर देलीह, “चाउर केहन छल, पीसल कतेक महीन अछि, पानि कतेक गरम—सभ बुझू। नाप बादमे।”

देवकान्तक चेहरा पर आधा हँसी, आधा हारक भाव आयल। “नून, मखान, आब पीठार। हमरा सभ वस्तु नापसँ भगबैत अछि।”

माधवी कहल, “वस्तु नहि भगबैत अछि। अहाँ पहिने नाप पकड़ैत छी, वस्तु बादमे।”

ओहि वाक्यपर जानकी हँसलीह। “ई पोथी बनत कि अहाँक सुधार-घर?”

भानसघरक वातावरण हलुक भऽ गेल। दालि बटि तैयार भेल। माधवी भरावनमे नून मिलेलक, कनी मसाला, आ हाथसँ फेर उलटि देलक। देवकान्त पूछलनि, “एहि मे की-की?”

माधवी ठाढ़ भऽ गेल। “अहाँ फेर सूची!”

“सूची बिना पाठक की बुझत?”

“पहिने ई बुझत जे बगिया भीतर खाली नहि होइत अछि। सामग्रीक नाम बादमे।”

जानकी देवकान्तक सोझाँ पीठारक छोट लोइया रखलीह। “चलू हाथ धोने छी?”

“हँ।”

“तखन एकरा हथेलीपर पसारू। बीचमे भरावन। फेर मुँह बन्द।”

देवकान्त बहुत सावधानीसँ पीठार पसारलनि। किनार कतहु मोट, कतहु पातर। माधवी एक नजरि देखलक, किछु नहि कहल। देवकान्त भरावन राखलनि, फेर दू कात जोड़बाक प्रयत्न कएलनि। बीचमे पीठार फाटि गेल।

हेमलता तुरन्त कहल, “ई तँ भापमे जाएबासँ पहिने अपना भीतरक बात कहि देलक।”

जानकी ओकरा डाँटबाक अभिनय कएलनि, मुदा हँसी रोकि नहि सकलीह।

देवकान्त फाटल बगिया हाथमे लेने बैसल रहलाह। “एकरा बचाओल जा सकैत अछि?”

माधवी ओकर हाथसँ बगिया लेलक। कनी पीठार तोड़ि फाटल ठाम जोरल, अँगुरीसँ किनार दबेलक, फेर हथेलीपर घुमेलक। “बचि सकैत अछि। मुदा जतेक बेसी भरब, ओतेक नीक सँ बन्द करबाक काज बढ़त।”

“ई नियम पोथीमे लिखी?”

“बगियाक कि मनुखक?”

देवकान्त ओकरा देखैत रहलाह। माधवीक चेहरा पर हलुक हँसी छल, मुदा आँखि सीधी। ओ उत्तर देबाक बदला अपन दोसर लोइया हाथमे लेलनि।

**

दोसर बेर देवकान्त पीठार कनी कम पसारलनि। भरावन सेहो कनी कम राखलनि। ई बेर किनार जोड़ि सकलाह, मुदा आकार टेढ़ छल।

“बाहरसँ देखला पर ई बगिया नहि, घायल चन्द्रमा बुझाईत अछि,” हेमलता कहलक।

देवकान्त कहलनि, “खाइत समय आकारक परीक्षा होइत अछि?”

माधवी उत्तर देलक, “भाप बताओत। जे ठाम जोड़ कमजोर, ओतहि खुलत।”

देवकान्तक हाथ ठमकल। “बाहर चिक्कन देखला सँ भीतर बन्द रहत, ई कोनो नियम नहि—ई बात अहाँ कहबाक छल?”

माधवी कनी चौंकल। “हम एतेक लम्बा वाक्य नहि कहलहुँ।”

“मुदा अर्थ ई अछि।”

“अर्थ अहाँक अछि। बगिया हमर।”

देवकान्त हँसलाह। “ठीक। पोथीमे लिखब—‘माधवी: जोड़ बाहरक रूपसँ नहि, भीतरक दबावसँ परखू।’”

माधवी फेर पीठार सानैत कहल, “हमर नाँव लिखब तँ जे कहलहुँ से लिखू। अपन विचारक बोझ हमर माथ पर नहि राखू।”

ई बात सहज स्वरमे कहल गेल, मुदा देवकान्तक भीतर किछु थिर भऽ गेल। पाछिल कतेको दिनमे ओ एहि नियम केँ अलग-अलग रूपमे सुनने छलाह—कुर्र्थीक लोकविश्वास हो, मखानक श्रम हो, वा तिलकोरक पात। जेकर बात, ओकर नाँव; जतेक कहल, ओतेक; जे नहि कहल, से अपनासँ नहि भरब।

ओ नोटबुक खोलि लिखलनि—“माधवी कहल: जोड़ कमजोर हो तँ भापमे खुलत।” तकर नीचे अलग पाँतिमे लिखलनि—“हमर विचार: बाहरक चिकनाहट भीतरक बन्दपनक प्रमाण नहि।”

माधवी पन्ना पढ़लक। “एखन दू बात दू ठाम अछि।”

“एतबे?”

“एतबे बहुत अछि।”

जानकी ओहि बीच दस बगिया बना चुकल छलीह। हुनकर हाथमे लोइया घूमैत, पसरैत, भरैत, बन्द होइत—सभ काज एतेक सहज देखाइत छल जे देवकान्त केँ अपन पहिल असफलता पर फेर हँसी आयल।

ओ पूछलनि, “अहाँक पहिल बगिया फाटल नहि छल?”

जानकी कहलीह, “हम जन्मे सँ जानैत रही?”

“तखन?”

“फाटल। भरावन बाहर आयल। माँ कहलनि—‘ई खा लिअ, दोसर बनाउ।’ काज सिखबाक पहिल नियम अछि जे बिगड़ल पकवान सभ काल फेकल नहि जाइत।”

माधवी बीचमे कहल, “आ दोसर नियम—बिगड़ल पकवान केँ ‘परम्परा’ कहि बचाउ नहि।”

जानकी एक क्षण ओकरा देखलीह, फेर ठहाका लगौलनि। “तोहर जीह पर भाप नहि बसैत!”

देवकान्त ई वाक्य लिखबाक लेल कलम उठौलनि।

माधवी तुरन्त कहलक, “ई नहि लिखू।”

“किएक?”

“किएक तँ ई घरक हँसी अछि, पोथीक नियम नहि।”

देवकान्त कलम रोकलनि। “घरक हँसी पोथीमे नहि रहत?”

जानकी कहलीह, “रहत, मुदा सभ हँसी छापबाक बात नहि।”

ई सीमा देवकान्त केँ रोचक लगल। भोजनक विधि मात्र नहि, ककर बात सार्वजनिक बनत, ककर निजी रहत—भानसघर स्वयं सम्पादन करैत छल।

माधवी अपन बनाओल बगिया सभ एक कात राखैत गेल। देवकान्तक बनाओल तीनटा अलग चिन्हित भऽ गेल—एकटा फाटल सुधरल, एकटा टेढ़, एकटा आश्चर्यजनक रूपसँ नीक।

हेमलता कहल, “तीनूमे नाँव लिखि दिअ—पहिल, दोसर, तेसर।”

देवकान्त हँसि कहलनि, “एहि बेर लेखकत्व स्पष्ट अछि।”

माधवी धीमे स्वरमे कहल, “लेखकत्व आकारपर नहि, हाथपर चिन्हाइत अछि।”

देवकान्तक हँसी कनी थमल। ओ पन्नाक कातमे ई वाक्य लिखि लेलनि।

**

बगिया भापमे रखबाक बेर आयल। भाप उठैत बासनक ढकनी हटतहि गरम धुँआ जकाँ उज्जर बादर एक क्षण लेल चेहरा छू कऽ निकलल। देवकान्त तुरन्त घड़ीक समय देखलनि।

माधवी पूछलक, “की करैत छी?”

“समय लिखैत छी। कतेक बेरमे पकत?”

“घड़ी पकाओत?”

“पाठक केँ समय चाही।”

“समय लिखू। मुदा समय एकसरि नहि।”

देवकान्तक चेहरापर नूनक दिनक परिचित असन्तोष आयल। “फेर?”

जानकी कहलीह, “भाप केहन अछि, बगिया मोट कि पातर, भरावन कतेक, बासन कतेक भरल—ई सभ बदलत।”

देवकान्त लिखलनि—“समय: निश्चित नहि।”

माधवी हँसल। “एतेक लिखला सँ पाठक कच्चा खा लेत।”

“तखन की लिखी?”

माधवी ढकनी कनी उठेलक, भाप बाहर आयल। ओ नाक लग कऽ गन्ध लेलक, फेर एक बगियाक देहपर अँगुरीक पोरसँ हलुक दबाव देलक। “पहिने गन्ध बदलैत अछि। कच्चा पीठारक गन्ध घटैत अछि। देह कनी थिर होइत अछि। ऊपरक नमी बदलैत अछि। एकटा निकालि काटि देखू तँ भीतर पीठार कच्चा नहि रहबाक चाही।”

देवकान्त तेजी सँ लिखय लगलाह।

माधवी कहल, “सबटा एक साथ नहि। पहिने देखू।”

ओ फेर कलम रोकलनि।

भाप बासनक कात-कातसँ निकलि रहल छल। छतपर पहुँचैत ओकर रूप हराइत, मुदा गन्ध रहि जाइत। चाउरक गरम गन्धमे दालिक भरावनक सुगन्ध मिसल। देवकान्त केँ ई आश्चर्य भेल जे गन्धक परिवर्तन ओ घड़ी देखलासँ पहिने बुझि सकैत छलाह।

“आब?” ओ पूछलनि।

“एखन कनी।”

“कनी कतेक?”

माधवी ओकरा देखलक। “अहाँक पोथी ‘कनी’ सँ डरैत किएक अछि?”

“किएक तँ कनीक अर्थ सभक लेल अलग।”

“तखन लिखू—कनीक अर्थ सीखय पड़ैत अछि।”

जानकी कहलीह, “काज करैत-करैत हाथ सीखैत अछि। किताब हाथक बदला नहि।”

देवकान्त उत्तर देलनि, “मुदा किताब बिना दूरक लोक की सीखत?”

माधवी कहल, “दूरक लोक एतबे सीखत जे ओ सभ किछु किताबसँ नहि सीखत।”

एक क्षण भानसघर शांत भेल। बाहर आँगनमे कौआ काँव-काँव कएलक। हेमलता ढक्कीक कात निकलैत भापमे अँगुरी नहि लगाबय, ताहि लेल जानकी ओकर हाथ पाछाँ कएलनि।

किछु बेर बाद माधवी एक बगिया निकाललक। ई देवकान्तक टेढ़ बनाओल छल। ओ बीचसँ काटलक। पीठारक भीतर कनी चिपचिपाहट छल।

“एखन नहि,” माधवी कहल।

देवकान्त घड़ी देखलनि। समय लिखलनि, फेर ओकरा काटलनि।

“किएक काटलहुँ?”

“किएक तँ ई पकबाक समय नहि; ई कच्चा भेटबाक समय छल।”

माधवीक मुखपर प्रसन्नता आयल। “एखन पोथी सीखि रहल अछि।”

दोसरा बेर निकालल बगिया नीक पकने छल। देवकान्त ओकर सतह छूने बिना केवल देखैत रहलाह। माधवी ओकर हाथ पकड़ि नहि, केवल कहलक, “अँगुरीक पोरसँ। जोर नहि।”

देवकान्त हलुक दबेलनि। सतह नरम छल, मुदा चिपकल नहि। ओ गन्ध लेलनि। कच्चा पीठारक तीखापन नहि रहल।

“आब लिखू,” माधवी कहलक।

देवकान्त लिखलनि—“घड़ी सहायक; निर्णय गन्ध, स्पर्श, भाप आ भीतरक दशासँ।”

जानकी पन्ना पढ़ि सकैत नहि छलीह, मुदा देवकान्त पढ़ि सुनौलनि। ओ माथ हिलेलनि।
“आ एक पाँति जोड़ू—गरम वस्तु हाथ जरा सकैत अछि। अनुभवक नाम पर मूर्खता नहि।”

हेमलता हँसि पड़ल। “ई नियम लेखक बाबू लेल अछि।”

देवकान्त लिखलनि—“सावधानी।”

माधवी कहलक, “ई शब्द ठीक अछि।”

दुपहरक पाँति लगबाक समय एखन दूर छल। बगियाक पहिल खेप उतरल, मुदा जानकी कहलीह जे घरक सभ लोकक भोजन बादमे होएत। काज करैत-करैत हेमलताक भूख लागल छल। ओ एक बगिया दिस एहन नजरिसँ देखलक जे जानकी बुझि गेलीह।

“टूटल पहिने खा लिअ,” जानकी कहलीह। “अतिथिक पकवान नहि, घरक अभ्यास अछि।”

माधवी देवकान्तक पहिल फाटल-सुधरल बगिया उठेलक। “ई लेखक बाबूक अछि।”

देवकान्त कहलनि, “फाटल भाग अहाँ बचेलहुँ। आधा लेखकत्व अहाँक।”

“लेखकत्व फेर?”

“ठीक, श्रम।”

माधवी बगिया बीचसँ तोड़लक। भाप एखनहुँ भीतर सँ उठल। ओ आधा देवकान्तक हाथपर रखलक, आधा स्वयं लेलक।

देवकान्त एक क्षण ठमकलाह। घरक औपचारिक पाँति नहि छल; थारी, क्रम, अतिथि-स्थान किछु नहि। ओसारक कोनमे काजक बीच दू मनुख एके बगियाक दू भाग हाथमे लेने ठाढ़ छल। ई छोट दृश्य छल, मुदा देवकान्त केँ एकर छोटपनहि असामान्य लगल।

माधवी पहिल ग्रास लेलक। “खाउ। ठंढा भेला पर स्वाद बदलत।”

देवकान्त सेहो खएलनि। पीठार नरम, भीतर दालिक स्वाद अधिक गाढ़। फाटल ठामसँ भरावनक कनी हिस्सा बाहर आयल छल, जकर कारण किनार अधिक नमकीन बुझाईत छल।

“खराब?” माधवी पूछलक।

“नहि।”

“सुन्दर?”

देवकान्त सोचलनि। “नहि।”

माधवी हँसल। “तखन?”

“खएबाक योग्य, आ याद रहबाक योग्य।”

“तू अलग गुण?”

“हँ। सभ सुन्दर बात याद नहि रहैत, आ सभ याद रहनिहार बात सुन्दर नहि होइत।”

माधवीक हँसी कनी मन्द भेल। “ई पोथीमे लिखब?”

देवकान्त कहलनि, “ई कदाचित पोथीसँ बाहरक बात अछि।”

“तखन नीक।”

ओहि ‘नीक’ मे देवकान्त केँ किछु एहन सुनायल जे स्पष्ट शब्द नहि छल। तिलकोरक छोट पात जकाँ; आधा मखान जकाँ; आ आब आधा बगिया। भोजनक छोट-छोट बाँटमे किछु एहन बढ़ि रहल छल जकर नाप ओ लिखि नहि सकैत छलाह।

हेमलता दूरसँ चिचियेलक, “हमरो आधा!”

माधवी अपन आधा बगियाक शेष भाग ओकरा देलक। “ले, नहि तँ इतिहासमे लिखत जे तोरा भूखे राखल गेल।”

हेमलता मुँह बनौलक। “हम अपन इतिहास स्वयं लिखब।”

देवकान्तक हाथ अनायास नोटबुक दिस गेल, फेर ओ रोकि लेलनि।

माधवी देखलक। “किएक नहि लिखलहुँ?”

“किएक तँ ई ओकर बात अछि। जँ लिखबाक होएत तँ ओकरासँ पूछब।”

हेमलता गर्वसँ कहल, “पूछू।”

“लिखी?”

“लिखू—हेमलता कहलक: हम अपन इतिहास स्वयं लिखब।”

देवकान्त लिखलनि, आ नाँव पूरा लिखलनि।

माधवी पन्ना देखलक। ओकर मुखपर एहन शान्ति आयल जे देवकान्त पहिले कम देखले छलाह।

दुपहरक पाँति लगलापर बगिया थारीमे नीक रूपसँ सजल छल। देवकान्तक नीक बनल बगिया सेहो ओहि मे छल। जानकी पहचानि गेलीह।

“ई के बनौलक?” एक अतिथि पूछलनि।

जानकी सहज स्वरमे कहलीह, “ई देवकान्तक हाथक अछि; माधवी सिखेलक।”

देवकान्त पहिल बेर अनुभव कएलनि जे एक पकवानक श्रेय दू छोट वाक्यमे कतेक साफ भऽ सकैत अछि। न तऽ हुनकर हाथ मेटायल, न माधवीक शिक्षा।

ओ थारी दिस देखलनि। बगियाक चिक्कन देहक भीतर भरावन लुकायल छल, मुदा ओ अदृश्य होएबासँ अनुपस्थित नहि छल।

राति पोथी खोलि देवकान्त दिनक अन्तिम टिप्पणी लिखलनि—“भाप वस्तु कै पकबैत अछि, मुदा भीतरक भरावन मेटबैत नहि। नीक जोड़ ओकरा थामि राखैत अछि; कमजोर जोड़ खोलि दैत अछि।”

ओ कनी रुकलाह। तकर नीचे लिखलनि—“मनुखक सम्बन्धपर ई रूपक लागू करबाक लोभ अछि। एखन नहि।”

माधवीक नियम याद छल—अपन विचारक बोझ दोसरक माथ पर नहि राखू।

ओ पन्ना बन्द कएलनि। बाहर राति उतरि चुकल छल। भानसघरमे दिनभरि उठल भापक कोनो रूप नहि बचल, मुदा चाउर आ दालिक गन्ध एखनहुँ दीवारमे हलुक अटकल छल।

देवकान्त कै बुझायल—किछु बात भाप जकाँ होइत अछि। आँखि सोझाँ उठैत, फेर ओझराइत; मुदा जकरा छूने जाइत अछि, ओकरा कनी बदलि कऽ जाइत अछि।

अध्याय १२ — माछक काँट

भोरक बाजार ओहि दिन पोखरिक हवा सँ भरल छल। रातिक हलुक बरखा बाद कच्चा बाटक माटि एखनहुँ नरम छल, आ बजारक भीतर जतेक आगाँ बढू, तरकारी, पात, तेल, धान, दही आ माछक गन्ध एक-दोसरासँ मिलैत जाइत छल। माधवीक संग नसीमा छल। देवकान्त पाछाँ नोटबुक लेने चलैत छलाह, मुदा पिछला किछु सप्ताहक अनुभव हुनका ई सिखा देने छल जे कलम पहिने खोलब जरूरी नहि।

नसीमा एक टोकरीक आगाँ रुकल। भीतर छोट-छोट माछ चमकि रहल छल। ओ कहल, “पोठी।”

देवकान्त झुकि देखलनि। “सभ पोठी एके?”

नसीमा हँसल। “एखनहि पोथी खोलब? पहिने आँखि खोलू।”

माधवी ओकर हँसीमे सहभागी भेल। “ई प्रश्न ठीक अछि, मुदा उत्तर देखिकऽ भेटत।”

नसीमा टोकरीक एक कात हाथ रखलक। “छोटका माछक नाम बहुत अछि। पोठी अलग, कबई अलग, गरई अलग। छोट आकार देखि सभकेँ एक नाँव देब तँ बजारवाली सभ अहाँक पोथी पढ़ि कऽ हँसत।”

देवकान्त नोटबुक खोलि केवल तीन नाँव लिखलनि—पोठी, कबई, गरई। तकर बाद कलम रोकि देलनि।

“आ रोहू, नैनी, भाकुर?” ओ पूछलनि।

नसीमा दोसर पाँतिमे राखल पैघ माछ दिस इशारा कएलक। “ओ सभ पैघका माछ। सभ घरक पसिन, जेबाक बेरा, दाम, लोकक संख्या—सभ देखि खरीद होइत अछि। छोटका माछक स्वाद अलग, पैघका अलग। एतबे लिखू जे नाम आकार मात्र नहि, पहचानो अछि।”

माधवी एक टोकरीक कात बैसल माछवालीसँ दाम पूछलक। ओ स्त्री उत्तर देलीह, फेर नसीमा दूटा माछ उठा कऽ अलग-अलग देखलक। एकटा एखनहुँ देह झटका रहल छल, दोसर स्थिर छल। ओ माछवालीसँ किछु पूछलक—कतेक बेर पहिने पकड़ल, कोन

पोखरिसँ, पानि बदलल कि नहि। बातक ढंग लेन-देनक छल, मुदा ओहि मे जल, बेर, दूरी आ दाम सभ जुड़ल छल।

देवकान्त पूछलनि, “ताजा केना चिन्हैत छी?”

नसीमा उत्तर देबाक पहिने माधवी दिस देखलक। “एहि प्रश्नक एकटा किताबिया उत्तर खोजब?”

देवकान्त तुरन्त कहलनि, “नहि। जतेक अहाँ जानैत छी, ओतेक।”

नसीमा माछक देह देखबैत कहलक, “गन्ध, चमक, देहक कड़ापन-नरमी, आँखि, आ बेचनिहार की कहैत अछि—सभ देखैत छी। मुदा सभसँ पैघ बात विश्वास। जे लोकसँ रोज खरीदैत छी, ओकर बातो मोल रखैत अछि।”

माधवी जोड़लक, “आ पोखरि केहन अछि, मौसम की अछि, ओहो।”

देवकान्त लिखलनि—‘माछ खरीदब केवल माछ देखब नहि; जल, बेर, विश्वास, दाम आ घरक आवश्यकता देखब।’

नसीमा पन्ना पढ़ि नहि सकैत छल, मुदा देवकान्त पढ़ि सुनौलनि। ओ कहल, “ठीक। मुदा दामक बात खाली लिखू नहि—आइ घटत-बढ़त अछि। काल्हि ई पन्ना पढ़निहार ई नहि बुझय जे एखनक दाम सदा रहत।”

देवकान्त हँसलाह। “बजारो इतिहास लिखबैत अछि?”

“बजार सभ दिन लिखैत अछि,” नसीमा कहल, “फरक एतबे जे ओकर कागज साँझि धरि फाटि जाइत अछि।”

ओहि वाक्य पर माधवी चुप भऽ गेल। देवकान्त ओकर चेहरा देखलनि। माछक गन्ध, कच्चा माटि, भोरक हल्ला—एहि सभक बीच एकाएक ‘फाटि जाइत कागज’ हुनका पोथीक नश्वरता याद करा देलक।

नसीमा कबई आ किछु पोठी अलग करबैत दाम ठहरौलक। “घरमे की बनत?” देवकान्त पूछलनि।

माधवी कहल, “पहिने घर पहुँचू। माछ बजारमे तय नहि करैत जे ओकरा संग की होएत।”

नसीमा फेर हँसल। “एहि बातकेँ पोथीमे जरूर लिखू। मनुखो घर पहुँचला पर बदलैत अछि।”

देवकान्त कलम उठेलनि। माधवी ओकर हाथ देखिकऽ कहल, “ई नसीमाक बात अछि।”

“नाँव सहित,” देवकान्त उत्तर देलनि। आ नसीमाक नाँव लिखि लेलनि।

✽✽

घर पहुँचतहि माछ भानसघरक साधारण सामग्री नहि रहल। ककरा लेल बनत, कोन बासनमे, कोन कात साफ होएत, कोन दिन के खाइत अछि आ के नहि—छोट-छोट नियम एकसाथ जागि उठल। देवकान्त केँ एहि बेर पहिने सँ सावधानी छल। ओ ‘मिथिलाक माछ-नियम’ लिखबाक बदला अलग पन्ना खोलि ऊपर लिखलनि—‘एहि घरक नियम।’

जानकी पन्ना देखलनि। “एहि बेर ठीक लिखलहुँ।”

देवकान्त मुस्करौलनि। “हम सुधारि रहल छी।”

“एतेक हतबड़ीमे गर्व नहि करू,” माधवी कहल।

कबई अलग राखल गेल। पोठी छोट छल, तकर सफाइमे अधिक धैर्य लागैत छल। हेमलता पहिने उत्साहसँ बैसल, मुदा किछु बेर बाद उठि भाग्य चाहलक। जानकी कहलनि, “खायबमे छोटका माछ नीक, साफ करबमे धैर्य चाही।”

देवकान्त नोट करबाक लेल पूछलनि, “छोट माछक काँट अधिक?”

माधवी कहल, “काँट आ चोइयाँक बात प्रजाति पर निर्भर। सभ छोट माछ केँ एके बात नहि लिखू।”

देवकान्त माथ हिलेलनि। “ठीक।”

जानकीक नजरि हुनका पर पड़ल। “माथ हिलेला सँ याद रहत?”

“पोथीमे लिखि रहल छी।”

“पोथी बिसरि जाइत अछि, जीह याद रखैत अछि,” जानकी कहलीह।

नसीमा एखनहुँ संग छल। ओ माछ धोइत माधवीसँ बाजारक एक घटना कहि रहल छल। दुनूक हँसी बीच-बीचमे उठैत। देवकान्त ध्यान देलनि जे भोजनक ज्ञान प्रश्न-उत्तरक रूपमे मात्र नहि चलैत; कथा, मजाक, दाम, ऋतु, घरक आदत—सभ संग-संग चलैत अछि।

किछु बेर बाद शशिभूषणक पिता तुल्य एक बुजुर्ग पुरुष भानसघरक दुआरि पर आवि पूछलनि, “आइ माछ?”

जानकी उत्तर देलीह, “हँ, मुदा सभ लेल नहि।”

ओ मनुख अपन लेल पूछलनि, “झोर बनत कि भुजिया?”

जानकी कहलनि, “अहाँक थारी पहुँचत तखन देखब।”

देवकान्त धीरे सँ माधवीसँ पूछलनि, “घरमे के माछ नहि खाइत अछि?”

माधवी ओकरा सीधा उत्तर देबाक बदला कहल, “जे नहि खाइत, तकर कारण ओकरा सँ पूछू। हम ओकरा बदला उत्तर देब तँ फेर वएह भूल।”

देवकान्त तुरन्त मानि लेलनि। ओ अलग-अलग लोकसँ बादमे पूछबाक निशान लगौलनि।

जानकी कहलीह, “किछु लोक उपासक दिन नहि खाइत, किछु अपन नेम सँ, किछु देहक कारण, किछु पसिन नहि करैत। सभ नियम एक नहि।”

देवकान्त लिखलनि—‘निषेधक कारण अलग-अलग; व्यक्ति सँ पूछब।’

माधवी पन्ना देखलक। “आब ई उपयोगी अछि।”

भानसघरमे सरिसो तेल गरम भेल। मसालाक गन्ध उठल। माछ पातिलमे पड़तहि आवाज बदलि गेल। देवकान्त कनी नजदीक गेलाह।

जानकी रोकलीह, “एतेक नजदीक नहि। तेल छींटत।”

हेमलता कहल, “इतिहास लिखैत-लिखैत आँखि बचल रहबाक चाही।”

देवकान्त पाछाँ हटि गेलाह। “आइ सभ हमरा बचा रहल अछि।”

देवकान्त हँसलाह। “आइ सभ हमरा बचा रहल अछि।”

नसीमा हँसि कहल, “भानसघरमे सभक आँखि रहैत अछि।”

भानसघर फेर हँसीसँ भरि गेल। मुदा देवकान्तक पन्नापर शीर्षक साफ रहल—‘एहि घरक नियम।’ ओहि छोट बदलावमे हुनका बुझाइत छल जे पोथी धीरे-धीरे मिथिला पर निर्णय सुनौनिहार किताब नहि, मिथिलाक अनेक आवाज सुनयवाली पोथी बनि रहल अछि।

**

दुपहरक पाँति लगल। देवकान्तक थारीमे भातक कात माछक झोर आयल। ओ बाजारक नोट, घरक नियम आ नसीमाक हँसी सभ मनमे दोहरबैत छलाह। कदाचित एहि कारण ओ खएबाक गति सामान्यसँ तेज कऽ देलनि।

माधवी दू पाँति दूर छल। जानकी परोसि रहल छलीह। हेमलता अपन थारीमे पोठी देखिकऽ प्रसन्न छल।

देवकान्त एक ग्रास लेलनि, दोसर, तेसर। एकाएक गला कात किछु अटकबाक अनुभव भेल। ओ खखारलाह।

जानकी तुरन्त मुड़लीह। “की भेल?”

देवकान्त बोलबाक प्रयास कएलनि, “काँ—”

हेमलता चिचिया उठल, “काँट!”

आँगनमे सभक ध्यान एक बेरमे हुनका दिस गेल। देवकान्तक चेहरा लजायल आ असहज दुनू छल। माधवी उठि कऽ नजदीक आयल, मुदा घबरायल नहि।

“जबरदस्ती निगलू नहि,” ओ कहल। “कतेक अटकल अछि?”

देवकान्त पानीक छोट घूँट लेलनि, फेर धीरे खखारलाह। काँट बहुत भीतर नहि गेल छल; किछु बेरक सावधानी बाद बाहर आबि गेल।

हेमलता राहतक साँस लऽ कऽ कहल, “इतिहास बचि गेल।”

नसीमा, जे एखन घर नहि गेल छल, हँसि पड़ल। “पोथीमे लिखू—माछक काँट लेखक केँ रोकि सकैत अछि।”

देवकान्त गला छूइत हँसलाह, यद्यपि आँखिमे पानि छल। “ई अनुभवजन्य सत्य अछि।”

माधवी गंभीर चेहरासँ पूछलक, “लोकक कहब—जाँच बाकी?”

ओहि वाक्य पर पूरा पाँति हँसीसँ भरि गेल। जानकी सेहो मुस्कराइत कहलीह, “आब धीरे खाउ।”

देवकान्त काँट केँ थारीक एक कात राखलनि। कनी बेर ओकरा देखैत रहलाह। छोट, प्रायः अदृश्य काँट; मुदा एक क्षण लेल पूरा भोजन रोकि देने छल।

माधवी अपन ठाम आपस बैसैत कहल, “माछ खायब केवल स्वाद नहि। काँट बुझबो पड़ैत अछि।”

देवकान्त उत्तर देलनि, “ई रूपक बनि सकैत अछि।”

“फेर रूपक?”

“एहि बेर अपन पन्नापर, अहाँक माथ पर नहि।”

माधवीक मुखपर हलुक हँसी आयल।

देवकान्त धीरे-धीरे फेर खय लगलाह। आब प्रत्येक ग्रासमे जीहक संग ध्यान सेहो छल। झोरक स्वाद, सरिसोक तीखापन, माछक नरम देह आ बीच-बीचमे काँट—सभ अलग-अलग अनुभव होइत।

हेमलता पूछलक, “लेखक बाबू, आब माछ नीक लगैत अछि कि डर?”

देवकान्त कहलनि, “दुनू।”

“एक्के स्वाद नीक आ डरावन दुनू?”

माधवी कहलक, “जकर भीतर काँट हो, ओहिमे ई कठिन नहि।”

देवकान्त ओकरा देखलनि। एक क्षण लेल दुनू चुप रहल। तिलकोरक पात, बगियाक भीतर भरावन, आब माछक काँट—भोजन बेराबेरी हुनका एहन बात सिखा रहल छल जकरा सीधा वाक्यमे कहब कदाचित हतबड़ी होइत।

पाँति समाप्त भेला पर देवकान्त काँट उठाकऽ फेकबाक बदला कागजपर ओकर छोट रेखाचित्र बनौलनि। नीचे लिखलनि—‘जे स्वाद मात्र लिखत, ओ काँट छोड़ि देत।’

माधवी पन्ना देखलक। “ई वाक्य राखू।”

“अहाँक स्वीकृति?”

“एहि बेर हँ।”

✱✱

साँझि देवकान्त दिनक नोट साफ करैत छलाह। बजारक पन्ना, घरक नियम, काँटक रेखाचित्र—सभ क्रम सँ राखल छल। लिखैत-लिखैत हुनका एक सुन्दर, छोट अंग्रेजी वाक्य सूझल। ओ लिखलनि—‘Maithils love fish.’

वाक्य हुनका पसिन पड़ल। छोट, स्मरणीय, लेखमे उपयोगी। ओ ओकर नीचे रेखा खींचि देने छलाह कि माधवी भानसघरक हिसाब लेने ओसारपर आयल।

“की लिखलहुँ?”

देवकान्त अनुवाद कऽ सुनौलनि, “मैथिल माछ पसिन करैत अछि।”

माधवी बिना बैसलहि पूछलक, “सभ?”

देवकान्त कनी रुकलाह। “बहुत लोक।”

“तखन ‘सभ मैथिल’ किएक?”

“वाक्य छोट अछि।”

“छोट करबाक लेल लोक घटा देब?”

देवकान्त चुप रहलाह।

माधवी पन्नाक पहिले लिखल ‘एहि घरक नियम’ देखलक। “दुपहरमे लिखने छलहुँ जे सभ घर एक नहि। साँझि धरि बिसरि गेलहुँ?”

देवकान्त कलम हाथमे घुमौलनि। “लेखमे सामान्य बात कहय पड़ैत अछि।”

“सामान्य बात कहू। मुदा जकरा पर लागू नहि, ओकरा बाहर फेकि कऽ सामान्य नहि बनाउ।”

देवकान्त केँ तिलकोरक दिनक वाक्य याद आयल—‘थारीक बाहर जे रहि गेल, ओकरो लिखू।’

माधवी आगाँ कहल, “माछ खेनिहार मैथिल बहुत अछि। मुदा जे नहि खाइत? जे उपासक दिन नहि खाइत? जे खरीद नहि सकैत? जे पोखरि लग रहितो माछक मालिक नहि? जे माछ पकड़ैत अछि मुदा अपन घरमे बेचबाक बाद थोड़ेक बचे? सभकेँ एक वाक्य खा जाएत।”

‘एक वाक्य खा जाएत’—देवकान्त केँ ई प्रयोग चुभल। ओ अंग्रेजी वाक्य काटि देलनि।

“तखन की लिखी?”

माधवी कहल, “जतेक देखलहुँ, ओतेक। लिखू—‘मिथिलाक अनेक घरमे माछ प्रिय भोजन अछि; रूप, नियम आ पहुँच घर-घर बदलैत अछि।’ फेर उदाहरण दिअ।”

देवकान्त लिखलनि। कनी देर बाद पूछलनि, “ई अहाँक वाक्य कि हमर?”

माधवी कहलक, “विचार हम दुनूक बहसक। शब्द अहाँक। एना लिखू।”

देवकान्त पन्नाक कातमे लिखलनि—‘माधवीक आपत्ति बाद संशोधित।’

माधवी देखलक। “एहि टिप्पणीक जरूरत छल?”

“छल। नहि तँ काल्हि हमरा लगत जे हम पहिनेसँ एतबे समझैत रही।”

माधवीक चेहरा नरम भेल। “ई टिप्पणी राखू।”

राति गाढ़ होइत गेल। आँगनमे बासन धुइ कऽ उल्टा राखल जा चुकल छल। माछक गन्ध भानसघरमे हलुक रहि गेल छल। देवकान्त नोटसभ समेटैत एकटा अतिरिक्त पाँति लिखलनि—‘एकरूप वाक्य लिखब आसान; मनुख एकरूप नहि।’

ओ कलम रोकलनि। माधवी एखनहुँ ओसारक दोसर कात हिसाब जोड़ि रहल छल।

देवकान्त पूछलनि, “अहाँक नामक नीचे आइ—कतेक बात लिखल गेल?”

माधवी माथ उठेलक।

माधवी गिनती कएलक। “बजारमे नसीमा। घरक नियममे जानकी। काँटक अनुभव अहाँक। सामान्यीकरण पर बहस हम दुनूक।”

“आ भोजन बनौनिहार?”

“ओहि पन्नापर ककर-ककर हाथ लागल, लिखने छी?”

देवकान्त पन्ना पलटलनि। किछु नाम छल, मुदा सभ नहि। ओ चुप भऽ गेलाह।

माधवी कहल, “काँट खाली माछमे नहि रहैत अछि।”

देवकान्त ओकरा देखलनि। “ई वाक्य अहाँक नामसँ लिखी?”

माधवी कनी हँसल। “एखन नहि। पहिने बूझू।”

देवकान्त लिखलनि नहि। ओ खाली पन्नाक एक कात छोट बिन्दु लगा देलनि—याद रखबाक चिन्ह।

ओहि राति हुनका बुझायल जे पोथीमे सभसँ कठिन काज स्वाद लिखब नहि, सीमा लिखब अछि—ककर अनुभव कतऽ धरि अछि, ककर नाँव कतऽ चाही, आ ‘मिथिला’ कहला पर कतेक भिन्न जीवन एक शब्दक भीतर आबि जाइत अछि।

माछक काँट गला सँ निकलि गेल छल। मुदा ओकर सीख पन्नामे अटकले रहल।

अध्याय १३ — अक्षर

माछक काँटक दिनक दू दिन बाद दुपहरमे भानसघर शांत छल। जानकी अनाजक हिसाब देखय गेल छलीह, हेमलता पड़ोसक बच्चासभ संग आँगनक दोसर कात खेलि रहल छल। ओसारपर देवकान्त पोथीक पन्ना सोझाँ पसारने बैसल छलाह। एक पन्नाक किनारमे माधवीक महीन तिरहुता लिखाइ छल, जकर अर्थ ओ अनुमानसँ बुझबाक चेष्टा कऽ रहल छलाह।

माधवी पानि भरल लोटा राखि हुनकर पाछाँ आबि ठाढ़ भेल। “की पढ़ि रहल छी?” देवकान्त बिना माथ उठौने कहलनि, “पढ़ि नहि रहल छी। बूझबाक चेष्टा करैत छी।” “दूनूमे अन्तर अछि।”

देवकान्त आब माथ उठेलनि। “एही लेल सीखाउ।”

माधवी कनी चुप रहल। “तिरहुता?”

“हँ। कम-से-कम एतेक जे अहाँ किनारमे की लिखैत छी, सभ बेर पूछय नहि पड़य।”

माधवी पन्ना उठा कऽ देखलक। “सभ किनारक बात पोथीक नहि होइत अछि।”

“तखन जे पोथीक अछि, ओ पढ़ब सीखाउ।”

माधवी ओसारक खम्भा लग बैसि गेल। ओ देवकान्तक कलम लेलक, कोरा कागज खींचलक, आ पहिल अक्षर लिखलक। कागजपर रेखा बनल, मुदा देवकान्त ओकरा नकल करबाक पहिने बहुत बेर देखैत रहलाह।

“एतेक डरि कऽ किएक?” माधवी पूछलक।

“किएक तँ बेठीक लिखब तँ अहाँ हँसब।”

“हँसब। मुदा फेर शुद्ध लिखब सेहो सिखाउ।”

देवकान्त हँसलाह। ओ अक्षर उतारलनि। रूप बिगड़ल छल। माधवी ओकर कागज अपन दिस खींचि कऽ बगलमे फेर लिखलक।

“आब फर्क देखू।”

देवकान्त दू अक्षर बेराबेरी देखलनि। “हमर अक्षर एना किएक बुझाइत अछि जे गिरि पड़त?”

“किएक तँ अहाँ हाथ रोकि-रोकि चलबैत छी। लिखाइ साँस जकाँ चलैत अछि; सभ ठाम सोचि कऽ रुकब तँ देह कड़क भऽ जाइत अछि।”

देवकान्त फेर प्रयास कएलनि। एहि बेर माधवी हुनकर अँगुरी नहि पकड़लक; केवल कागजक कात अपन अँगुरी राखि गति देखबैत रहल। दुनूक हाथ नजदीक छल। देवकान्तक ध्यान अक्षरपर छल, मुदा एक क्षण हुनका बुझायल जे माधवीक अँगुरी बस एक अँगुर दूर अछि। ओहि दूरीमे किछु एहन सावधानी छल जे बेठीक अक्षरसँ बेसी कठिन बुझाइत छल।

माधवी कहल, “ध्यान कागजपर।”

देवकान्त चौंकि हँसलाह। “अछि।”

“की अछि?”

“ध्यान।”

“तखन लिखू।”

ओ दोसर अक्षर लिखलक। तकर बाद तेसर। माधवी एक-एक रूप देखैत, जहाँ भूल होइत ओतऽ नया प्रतिलिपि बनबैत। ओ आवाज कहैत, देवकान्त ओकर तिरहुता रूप उतारैत।

किछु बेर बाद माधवी कहल, “आब ‘पात’ लिखबाक चेष्टा करू।”

देवकान्त धीरे-धीरे लिखलनि। शब्द पूरा भेला पर माधवी पन्ना देखलक।

“पढ़ल जा सकैत अछि,” ओ कहलक।

“एतबे प्रशंसा?”

“पहिल दिन ‘सुन्दर’ कहि देब तँ दोसर दिन अहाँ अभ्यास छोड़ि देब।”

“तखन ‘पढ़ल जा सकैत अछि’ बहुत पैघ प्रशंसा भेल।”

माधवी हँसल। “ठीक बुझलहुँ।”

देवकान्त कागजक ऊपर देवनागरीमे छोट अक्षरमे ‘पात’ लिखि लेलनि, तकर नीचाँ तिरहुता अभ्यास। माधवी तुरन्त पेंसिलसँ देवनागरी शब्दक कात एक छोट रेखा खींचलक।

“ई की?”

“एतए देवनागरी सहारा अछि। काल्हि सहारा ढाँकि कऽ पढ़ब।”

“परीक्षा?”

“अहाँ किताब बनाबय चलल छी। दू अक्षरक परीक्षा सँ डर?”

देवकान्त पन्ना मोड़ि रखलनि। “नहि। मुदा शिक्षक कठोर छथि।”

माधवी सहज स्वरमे कहलक, “शिक्षक नहि। जे जानैत अछि, ओ सिखा रहल अछि। नाँव जस अछि तस राखू।”

देवकान्तक हँसी कनी थमल। ओ एहि वाक्यक भीतर पछिला सभ बहस सुनि लेलनि—जानकारक नाँव, श्रमक नाँव, कहबक नाँव।

ओ पन्नाक ऊपर लिखलनि—‘तिरहुता—माधवी सँ पहिल पाठ।’

माधवी पढ़लक। “एखन ठीक।”

**

तिरहुता सीखबाक काज दू-तीन दुपहर धरि चलल। देवकान्त एखनहुँ धीमे छलाह, मुदा किनारक बहुत छोट शब्द पहचानय लगलाह। एक दिन ओ छपाइ लेल तैयार होइत मसौदा सोझाँ राखि कहलनि, “एक कठिन बात अछि।”

माधवी पूछलक, “अक्षरक?”

“अक्षरक नहि, छपाइकर।”

ओ देवनागरीमे उतारल पन्ना देखेलनि। “छापाखानाक लोक देवनागरी सहज पढ़ैत अछि। टाइप सेहो सहज भेटैत अछि। जँ पूरा पोथी तिरहुता मे रहत तँ छपाइ कठिन होएत।”

माधवी बिना तुरन्त उत्तर देने पन्ना देखैत रहल। फेर पूछलक, “सहज केकरा लेल?”

देवकान्त कहलनि, “छापाखानाक लोक लेल। पाठक लेल सेहो—बहुत लोक देवनागरी पढ़ैत अछि।”

“बहुत लोक। मुदा जे तिरहुता पढ़ैत अछि?”

“ओ पढ़ि सकत, मुदा छपल पोथी सब धरि पहुँचबाक चाही।”

माधवी अपन घुटनाक ऊपर हाथ रखि बैसल रहल। “हमर नानीक पुरान हिसाबक पन्ना तिरहुता मे अछि। ओ पन्ना छापाखानाक लोक नहि पढ़ि सकैत तँ दोष पन्नाक अछि?”

“दोष नहि। कठिनाई।”

“कठिनाई केकर?”

“हमर। छपाइकर। पाठकक।”

“तखन कठिनाईक हल निकालू। अक्षर मेटाउ नहि।”

देवकान्त कनी अधीर भेलाह। “मेटा नहि रहल छी। देवनागरीमे उतारि रहल छी।”

“उतारब आ बदलि देब एक नहि?”

“जँ शब्द वएह रहत?”

माधवी एक पन्ना उठेलक, जाहिमे ओ पहिने छोट टिप्पणी लिखने छल। “अहाँ देवनागरीमे उतारब, ठीक। मुदा मूल पन्ना कतऽ रहत?”

“घरमे।”

“तखन छपल किताब पढ़निहार मानत जे मूल देवनागरीमे छल।”

देवकान्त उत्तर नहि देलनि।

माधवी आगाँ कहल, “अहाँ जेना नसीमाक बात नाँव सहित लिखैत छी, तहिना लिपिक नाँव सेहो रहय। लिखू—‘मूल तिरहुता मे।’ पाठक केँ कम-से-कम ई बुझत जे ओ प्रतिलिपि पढ़ि रहल अछि।”

देवकान्त कलम उठेलनि। “ई कएल जा सकैत अछि।”

“आ किछु पन्ना मूल रूपमे?”

“छापाइ कठिन।”

“सभ नहि। किछु।”

“कतेक?”

“जतए अक्षर स्वयं अर्थक हिस्सा अछि।”

देवकान्त मुस्करौलनि। “अक्षर अर्थक हिस्सा केना?”

माधवी कहल, “जतए लिखनिहार अपन हाथ देखबय चाहैत अछि। जतए हस्ताक्षर अछि। जतए किनारक टिप्पणी अछि। जतए देवनागरीमे उतारला पर बस शब्द बचत, हाथ नहि।”

ई तर्क देवकान्त कै रोकलक। हुनका पहिल बेर बुझायल जे लिखाइ केवल भाषा ढोएनिहार गाड़ी नहि; हाथक गति, स्याहीक दबाव, ठामक चुनाव—ई सभ सेहो किछु कहैत अछि।

ओ मसौदाक ऊपर लिखलनि—‘मूल लिपि उल्लेखनीय। चयनित पृष्ठ मूल रूपमे राखबाक विचार।’

माधवी पन्ना देखलक। “विचार?”

देवकान्त हँसलाह। “अहाँ सभ बात एखनहि फैसला चाहैत छी?”

“नहि। मुदा ‘विचार’ लिखि बहुत बात बादमे मरि जाइत अछि।”

देवकान्त कलम फेर चलौलनि। ‘चयनित पृष्ठ मूल रूपमे राखल जाएत।’

माधवीक चेहरा पर हलुक सन्तोष आयल।

देवकान्त कहलनि, “आ बाकी पन्नाक देवनागरी प्रतिलिपि संग ‘मूल तिरहुता’ लिखब।”

“ठीक।”

“ई आधा समझौता अछि।”

“आधा किएक?”

“किएक तँ अहाँ पूरा तिरहुता चाहैत छलहुँ।”

माधवी माथ हिलेलक। “हम अक्षर बचय चाहैत छी। पाठक घटय, ई नहि चाहैत छी। दूनु बचत तँ नीक।”

देवकान्त ओकरा देखैत रहलाह। “अहाँ हमरा सँ बेसी सम्पादक छी।”

माधवी हँसल। “सम्पादक कहि सभ काज अपन नाँव पर नहि लिखि लिअ।”

“एहि चेतावनीक जरूरत सभ दिन अछि?”

“जतेक दिन जरूरत रहत, ततेक दिन।”



ओहि सप्ताहक साँझिमे माधवी पोथीक किछु पन्ना अलग कऽ राखलक। देवकान्त देखलनि जे ओहि सभपर तिरहुता लिखाइ अधिक अछि। ओ स्वभाववश हाथ बढ़ेलनि, मुदा माधवी पन्नासभ अपन कात खींचि लेलक।

“ई सभ कोन खण्डक?” देवकान्त पूछलनि।

“सभ पोथीक नहि।”

“तखन?”

“किछु घरक हिसाब, किछु नानीक बात, किछु हमर अपन नोट।”

“हम देखबो नहि?”

माधवी हुनकर आँखि दिस सीधा देखलक। “नहि।”

देवकान्तक भीतर क्षणभरि असन्तोष उठल। पिछला किछु मासमे ओ माधवीक ज्ञानक एतेक हिस्सा अपन पन्नामे उतरैत देखने छलाह जे अनजाने हुनका लगय लागल छल— जतए ज्ञान अछि, ओतए हुनकर प्रश्न पहुँचि सकैत अछि। माधवीक एकटा ‘नहि’ ओ सीमाकेँ साफ कऽ देलक।

देवकान्त धीरे कहलनि, “जँ एहि मे पोथीक सामग्री हो?”

“जे पोथीक होएत, हम देब।”

“आ हम केना बुझब जे किछु छूटि नहि रहल?”

“नहि बुझब।”

उत्तर कठोर नहि छल; बस सीधा छल।

माधवी आगाँ कहलक, “अहाँ पोथीक लेखक छी, हमर मालिक नहि। जतेक हम साझा करब, ओतबे अहाँक स्रोत। बाकी पन्ना हमरा लग रहत।”

देवकान्तक चेहरा तनिक गरम भेल। ओ विरोध करय चाहलनि—‘लेखक’ शब्द पर, ‘मालिक’ शब्द पर, कदाचित अपन नीयत पर। मुदा पाछिल दिनसभक बहस एक साथ याद आयल। नसीमाक बात, रमानन्दक श्रम, हेमलताक ‘हम अपन इतिहास स्वयं लिखब’, आ माधवीक नियम—अपन विचारक बोझ दोसरक माथ पर नहि राखू।

ओ हाथ आपस खींचि लेलनि। “ठीक।”

माधवी कदाचित एतेक सहज स्वीकृति अपेक्षित नहि कएने छल। “ठीक?”

“हाँ। मुदा एक निवेदन।”

“की?”

“जे पन्ना पोथीक अछि आ जे निजी, दुनू अलग चिन्हित करू। नहि तँ बादमे गड़बड़ होएत।”

माधवी सोचलक। “ई उचित अछि।”

ओ एक छोट कागज लेलक आ पन्नाक कोनमे बनयबाक लेल दू चिन्ह तय कएलक। पोथीक साझा पन्ना लेल साधारण बिन्दु; निजी पन्ना लेल छोट पातक रूप।

देवकान्त मुस्करौलनि। “फेर पात?”

“पात कागज सेहो अछि, पात गाछक सेहो। चिन्ह याद रहत।”

“तिलकोरक पात?”

माधवी हँसल। “एतेक कथा मत जोड़ू। बस पात।”

ओ निजी पन्नाक कोनमे बहुत छोट पात बनौलक। देवकान्त ध्यानसँ देखलनि, मुदा नकल नहि कएलनि।

“ई चिन्ह हमरा प्रतिलिपिमे नहि बनायब?”

“नहि। ई एहि पन्नाक सीमा अछि।”

“जँ पोथी तैयार करैत समय संदर्भ चाही?”

“हमरा पूछब।”

“आ जँ अहाँ एतए नहि रहब?”

प्रश्न मुँहसँ निकलतहि वातावरण बदलि गेल। माधवीक हाथ एक क्षण थमकल।

“किएक नहि रहब?”

देवकान्त तुरन्त कहलनि, “हम सामान्य बात कहलहुँ।”

“सामान्य बात सभ बेर सामान्य नहि होइत।”

दुनू किछु बेर चुप रहल। आँगनमे हेमलताक हँसी दूर सँ आबि रहल छल।

देवकान्त धीरे कहलनि, “ठीक। जँ कखनो आवश्यकता भेल, जे उपलब्ध स्रोत रहत, ओहि धरि लिखब। जे नहि भेटत, ओकरा नहि भरब।”

माधवी पन्नासभ समेटलक। “ई वाक्य याद राखू।”

“पोथीक नियममे जोड़ि दी?”

“हँ। ई पोथी लेल अछि।”

देवकान्त लिखलनि—‘स्रोत नहि भेटला पर खाली ठाम केँ अनुमानसँ नहि भरब।’

माधवी पन्ना देखलक। “एहि नियमक बहुत काज पड़त।”

देवकान्त केँ पता नहि छल जे ओ वाक्य कतेक दूर धरि सत्य होएत। एखन ओ केवल एतबे बुझैत छलाह जे किछु पन्ना हुनकर आँखि सोझाँ रहितो हुनकर नहि।

माधवी निजी पन्नासभ कपड़ाक भीतर राखि देलक। कोनमे बनल छोट पात क्षणभरि देखायल, फेर ओझरा गेल।

*
**

दोसरा दिन देवकान्त भानस-पोथीक पहिल व्यवस्थित नकल बनय लगलाह। तिलकोरक तरुआक पन्ना सोझाँ छल—ओही पन्नापर जकर छोट पात एक दिन माधवी अलग राखने छल। पुरान नोटमे सामग्री, पीठारक गाढ़ापन, पात चुनबाक बात आ तेलक ताप सम्बन्धी बिखरल वाक्य छल।

माधवी पन्ना जाँचैत एक शब्दपर अँगुरी रखलक। “एतए ‘घोल’ नहि। ‘पीठार’ लिखू।”

देवकान्त तुरन्त काटि सुधारलनि। “अर्थ तऽ—”

माधवी बीचमे रोकलक। “अर्थ नजदीक होइतहुँ शब्द बदलल तँ घरक जीह बदलि जाइत अछि। जे शब्द हम कहैत छी, ओही लिखू।”

“ठीक। पीठार।”

“आ एतए ‘पत्ता’ नहि, ‘पात’।”

देवकान्त हँसलाह। “ई तऽ आब हम अपनैँ जानैत छी।”

“जानैत छी तँ लिखल किएक?”

“पुरान मसौदा।”

“तखन पुरान भूल काटू।”

देवकान्त काटि देलनि।

माधवी एक-एक पाँति देखैत गेल। जतेक विधि ओहि घरक अनुभवसँ निश्चित छल, ओतेक राखलक; जतए मात्रा ऋतु, पातक कोमलता वा पीठारक दशापर निर्भर छल, ओतए देवकान्त ‘अनुमान’ लिखब चाहलनि। माधवी फेर रोकलक।

“अनुमान नहि। ‘देखिकऽ’ लिखू।”

“पाठक पूछत—कतेक?”

“तखन अगिला पाँतिमे चिन्ह लिखू—पीठार पातपर टिकय, बहि नहि जाए। ई काजक संकेत अछि।”

देवकान्त लिखलनि। “अहाँक नियम बढ़ैत जा रहल अछि।”

“नियम नहि, भूल घटैत अछि।”

पन्ना पूरा भेला पर देवकान्त नीचे खाली ठाम छोड़लनि। “एतए समाप्त?”

माधवी पन्ना अपनैँ दिस खींचलक। किछु क्षण चुप रहल। फेर देवकान्तक कलम नहि, अपन कलम उठेलक। पन्नाक तलमे बहुत छोट तिरहुता अक्षरमे अपन नाँव लिखलक।

देवकान्तक आँखि ओहि नामपर टिकि गेल। ओ नाम पढ़ि नहि सकैत छलाह—एखनहुँ पूरा सीखल नहि छल—मुदा पहिल अक्षर पहचानि लेलनि।

“माधवी?”

“हँ।”

“एतए हस्ताक्षर किएक?”

माधवी पन्ना सीधा करैत कहलक, “जे विधि हमर मुखसँ, जे सुधार हमर हाथसँ, ओकर तलमे हमर नाँव रहत।”

देवकान्त किछु नहि कहलनि। हुनकर अँगुरी अनायास नामक कात गेल, मुदा अक्षर छूलनि नहि।

“आगाँ सभ विधिपर?” ओ पूछलनि।

“जतए हमर ज्ञान अछि, ओतए। जतए जानकीक, ओतए हुनकर नाँव। जतए नसीमाक,
ओतए ओकर। जतए अहाँ अपनैँ देखलहुँ, ओतए अहाँक।”

“एक पन्नापर चारि नाँव भऽ सकैत अछि।”

“तखन चारि रहत।”

देवकान्त मुस्करौलनि। “छापाखानाक लोक पागल भऽ जाएत।”

“ओकर कठिनाईक कारण नाँव घटाएब?”

देवकान्त हाँसि पड़लाह। “नहि। ई प्रश्नक उत्तर आब हमरा याद अछि।”

माधवीक मुखपर हलुक प्रसन्नता आयल।

देवकान्त पन्नाक ऊपर देवनागरीमे छोट टिप्पणी लिखलनि—‘मूल विधि: माधवीक
मौखिक विवरण; शब्द-संशोधन माधवीक।’

माधवी पढ़लक। “आ नीचे हमर नाँव रहय।”

“रहत।”

“देवनागरीमे सेहो?”

देवकान्त कनी सोचलनि। “छपल प्रतिलिपिमे देवनागरीमे नाम, आ मूल पन्नामे तिरहुता
हस्ताक्षर ज्योक्-त्यो।”

“ठीक।”

ओहि क्षण ओसारपर हवा चलल। पन्नाक ऊपरक कोना उठि गेल। देवकान्त हाथ रखि
ओकरा थामलनि। पन्नाक तलमे माधवीक छोट हस्ताक्षर स्थिर रहल।

हेमलता दौड़ैत आबि पन्ना देखलक। “ई दीदीक नाँव?”

माधवी कहलक, “हँ।”

हेमलता मुस्कराइत कहलक, “आब पोथी जानत जे तिलकोर के सिखेलक।”

देवकान्त उत्तर देलनि, “पोथी नहि बिसरत।”

माधवी हुनकर दिस देखलक। “पोथी अपनैँ नहि बिसरैत। लोक बिसरबैत अछि।”

देवकान्तक हाथ पन्नापर स्थिर रहल। हवा फेर उठल, मुदा एहि बेर ओ पन्ना कसि कऽ
नहि पकड़लनि; केवल एतेक दबाव देलनि जे ओ उड़ि नहि जाए।

नाम छोट छल। पन्ना पैघ नहि छल। मुदा देवकान्त केँ बुझायल जे पहिल बेर पोथीक भीतर ज्ञानक संग ओकर मालिकाना नहि, ओकर स्रोत अपन अक्षरमे ठाढ़ भेल अछि।

ओ दिनक अन्तिम नोटमे बस एक पाँति लिखलनि—‘हाथक लिखाइओ प्रमाण अछि।’

तकर बाद कलम बन्द कएलनि।

अध्याय १४ — जे शब्दक अनुवाद नहि

अक्षरक पाठक बाद देवकान्तक लेखनमे एक नव कठिनाई सोझाँ आयल। अंग्रेजी लेख पठेबाक तिथि नजदीक छल, आ सम्पादक स्पष्ट लिखने छल जे अपरिचित शब्दक अर्थ पाठक लेल देल जाए। देवकान्त ओसारपर दू पन्ना पसारि बैसल छलाह। पहिल पन्नापर मैथिली शब्द, दोसरपर हुनकर सम्भावित अंग्रेजी अर्थ।

ऊपर क्रमसँ लिखल छल—तरुआ, बगिया, अमट, अदौरी, पाग, पाँति।

माधवी आबि पन्ना देखलक। “ई की?”

“शब्द-सूची। लेख पढ़निहार सभ शब्द नहि बुझत।”

“तँ?”

“अर्थ देब।”

माधवी पहिल शब्दपर अँगुरी रखलक। “तरुआक अर्थ?”

देवकान्त कनी आत्मविश्वाससँ कहलनि, “तलल तरकारी।”

“सभ तलल तरकारी तरुआ होइत अछि?”

देवकान्त रुकलाह। “नहि।”

“तखन?”

“पीठारमे डुबा कऽ तलल—”

“सभ तरुआ पीठार एके ढंगक?”

देवकान्त हँसलाह। “अहाँ शब्दक अर्थ नहि, परीक्षा लैत छी।”

माधवी कहल, “अर्थ जँ परीक्षा सहि नहि सकय तँ पाठक लग पहुँचतहि टूटत।”

देवकान्त ‘तरुआ’क सोझाँ लिखल अर्थपर रेखा खींचि देलनि। “ठीक। बगिया?”

“पहिने अहाँ कहू।”

देवकान्त किछु बेर सोचलनि। “चाउरक पीठार सँ बनल, भीतर भरावन, भापमे पकाओल...”

“ई विधि भेल। नामक अर्थ?”

“नामक अर्थ विधिए सँ बुझत।”

“तखन नाम छोड़, विधि बुझाउ।”

देवकान्त कलम रोकि माधवी दिस देखलनि। “नाम छोड़ि दिय?”

“हँ। तरुआ केँ तरुआ, बगिया केँ बगिया। पहिल बेर छोट व्याख्या। तकर बाद नामे चलय दिय।”

देवकान्त पन्नाक ऊपर लिखलनि—‘नाम अनुवाद नहि; पहिल उल्लेखपर व्याख्या।’

माधवी अमट दिस देखलक। “एहि पर की लिखलहुँ?”

देवकान्त उत्तर देने पहिने पन्ना अपन कात खींचलनि। “एखन नहि देखाउ।”

माधवी हँसल। “तँ जरूर बेठीक अछि।”

“आम सुखाओल वस्तु—एहन किछु लिखने छी।”

“वस्तु?”

“अंग्रेजीमे एक शब्द भेटल नहि।”

“नहि भेटल तँ नहि भेटल। शब्दक अभाव वस्तुक अभाव नहि।”

देवकान्त कलम उठेलनि। ई वाक्य लिखय लगलाह, फेर पूछलनि, “अहाँक नाँवसँ?”

“हम सामान्य बात कहलहुँ।”

“सामान्य बातो ककरो मुखसँ अबैत अछि।”

माधवी कनी मुस्करायल। “तँ लिखू—माधवीक कहब: शब्द नहि भेटला सँ वस्तु गायब नहि होइत।”

देवकान्त लिखलनि।

अदौरी पर पहुँचलापर देवकान्त कहला जे दालि पीसि, आकार दऽ, सुखा कऽ राखल वस्तु कहि बुझाएब। माधवी स्वीकारलक, मुदा जोड़लक—“ई केवल बनावट नहि। बरखा, अभाव, धूप, आगाँक दिन—सभ एकरा भीतर अछि।”

“शब्द-सूचीमे एतेक कतेक लिखब?”

“जतेक जरूरी। नहि तँ पाठक नाम जानत, वस्तु नहि।”

पागपर देवकान्तक कलम फेर ठमकल। ओ जानैत छलाह जे एकरा केवल माथक पहिरन कहब संभव अछि, मुदा ओतए अवसर, प्रतिष्ठा, रूप, बाँधन, सामाजिक अर्थ सभ छूटि जाएत। माधवी कहलक, “एहि शब्द लेल कमला काकीक घरक पुरान पहिरन-सूची देखू। अपनासँ बनाउ नहि।”

देवकान्त सहमत भेलाह। “आ पाँति?”

माधवी भानसघर दिस देखलक। “पाँति खाली लोक बेराबेरी बैसल नहि। के कतऽ बैसत, के परोसत, कोन अवसर, कोन नेम—ई सभ परिस्थिति पर बदलैत अछि। एक अंग्रेजी शब्दमे सभ नहि अँटत।”

देवकान्त पन्नाक नीचे लिखलनि—‘शब्द-सूची वस्तु-सूची नहि; प्रसंगो चाही।’

माधवी कहलक, “आ जे प्रसंग अहाँ नहि जानैत छी, ओहि पर खाली ठाम छोड़ू।”

“ई नियम आब पोथीक सभ पन्नापर लागैत अछि।”

“तँ नीक।”

देवकान्त एक बेर छहू शब्द देखलनि। हुनका बुझायल—अनुवाद कठिन एहि लेल नहि जे अंग्रेजी कम अछि; कठिन एहि लेल जे एक शब्दक पाछाँ एक पूरा जीवन ठाढ़ रहैत अछि।

**

दुपहर बाद दुनू शब्द-सूची फेर खोललक। देवकान्त एखन अपन अंग्रेजी अर्थ बचेबाक बदला ओकर सीमा चिन्हित करय लगलाह।

“तरुआ—नाम जेना अछि तेना,” ओ कहलनि। “पहिल बेर व्याख्या।”

माधवी माथ हिलेलक।

“बगिया—नाम जेना अछि तेना। चाउरक पीठार, भरावन, भाप—एतेक संकेत।”

“ठीक।”

“अमट—नाम जेना अछि तेना, आम सुखा कऽ राखल रूप—”

माधवी बीचमे कहल, “आमक सभ सुखाओल रूप अमट नहि। सावधानी।”

देवकान्त तुरन्त 'एक प्रकार' जोड़लनि।

“अदौरी?”

“नाम जेना अछि तेना। दालिक सामग्री सँ बनि धूपमे सुखाओल—”

माधवी फेर रोकलक। “जँ जे दालि, जे आकार, जे घरक ढंग अहाँ नहि जाँचने छी, ओ नहि जोड़ू।”

देवकान्त पन्ना पर 'विधि घर-घर बदलि सकैत अछि' लिखलनि।

माधवी संतुष्ट भेल।

देवकान्त कहलनि, “हमरा लगैत छल अनुवादक काज पाठकक कठिनाई घटेनाइ अछि।”

“अछि।”

“मुदा अहाँ कठिनाई बचा रहल छी।”

“किछु कठिनाई बचायल जरूरी अछि।”

“किएक?”

माधवी कनी देर सोचलक। “जँ सभ अपरिचित वस्तु केँ पाठकक परिचित वस्तु जकाँ बना देब, तँ ओ बुझत जे ओ पहिनेसँ सभ जानैत अछि। कनी अटकत, तखन पूछत।”

देवकान्त कहलनि, “तखन अनुवादमे अटकन सेहो अर्थक भाग?”

“कखनो-कखनो।”

ओ पागक शब्दपर गेलाह। देवकान्त कागजपर लिखने छलाह—‘विशेष मैथिल माथ-पहिरन।’ माधवी पढ़लक।

“ई खराब नहि। मुदा ‘विशेष’ सँ की बुझत?”

“तँ?”

“पहिरबाक अवसर, रूप, के पहिरैत अछि—जतए जाँचल, ओतए नोट। नहि जाँचल तँ एतए नहि।”

देवकान्त पागक कात प्रश्नचिह्न लगा देलनि। “पहिरनक शब्दावली देखब।”

“हँ।”

“पाँति लेल?”

माधवी आँगनक लम्बाई नापैत नजरि फेरलक। “एक दिन भोजनक समय बाहरसँ देखू। जे लोक बैसल अछि, ओकरा गिनब आसान। जे परोसि रहल अछि, ओ पाँतिमे देखायत नहि। फेर बुझब जे शब्दक भीतर अनुपस्थित लोक सेहो अछि।”

देवकान्तक कलम स्थिर भऽ गेल। “ई बात लेखमे खाद्य-वर्णनसँ बाहर चलि जाएत।”

“भोजनक बाहर? परोसनिहार भोजनक बाहर?”

प्रश्न एतेक सीधा छल जे देवकान्त उत्तर नहि देलनि।

माधवी धीरे कहल, “शब्दक अर्थ केवल वस्तु नहि। काज, सम्बन्ध, अवसर, लोक—सभ।”

देवकान्त अपन पन्नाक ऊपर एक नव शीर्षक देलनि—‘जे अर्थ एक शब्दमे नहि आए।’

“ई अंग्रेजी लेखमे रहत?” माधवी पूछलक।

“रहत। कदाचित सम्पादक काटि देत।”

“तखन फेर जोड़बाक लेल अगिला बेर लिखू।”

देवकान्त हँसलाह। “अहाँ पहिनेसँ अगिला संस्करणक लड़ाइ लड़ैत छी।”

माधवी कहलक, “काटल बात जँ जरूरी हो, फेर घुरि अबैत अछि।”

देवकान्त ई पाँति लिखलनि नहि। केवल याद रखलनि।

✱

साँझि तिलकोरक पुरान पन्ना फेर सोझाँ आयल। देवकान्त अंग्रेजी मसौदामे तिलकोरक तरुआ लेल छोट अर्थ लिखने छलाह—भाव एहन जे ‘तलल पात।’

माधवी पन्ना पढ़ि सुनला पर हँसल नहि। ओ गंभीर भऽ गेल। “तलल पात?”

देवकान्त कहलनि, “पाठक सहज बुझत।”

“की बुझत?”

“जे पात केँ पीठारमे—”

“अहाँ लिखने छी केवल तलल पात।”

देवकान्त पन्ना देखलनि। “हँ, छोट करबाक लेल।”

माधवी उठि आँगनक कात गेल। तिलकोरक बेल ओतए दीवार चढ़ि रहल छल। ओ दू पात देखेलक—एक पुरान, मोट; एक नव, कोमल।

“दूनू पात अछि।”

“हँ।”

“दूनू तरुआ लेल बराबर?”

“नहि।”

“किएक?”

देवकान्त उत्तर देबाक पहिने अपन पाछिल नोट याद कएलनि। “कोमलता, आकार, नस—”

“आ घरमे अतिथि आयल दिन जानकी कोन पात चुनैत छलीह?”

देवकान्तक स्मृतिमे ओ दिन उठि आयल—माधवी सभसँ कोमल छोट पात अलग राखने छल।

“नीक पात।”

“तँ ‘तलल पात’ पढ़निहार ई सभ बुझत?”

“नहि।”

माधवी पातक डाँठ छूलनि। “ओ पौधा नहि बुझत। कोन पात चुनल गेल, से नहि बुझत। पीठार, तेल, ताप नहि बुझत। अतिथि लेल कोमल पात बचेनाइ नहि बुझत। ककर हाथ चुनलक, से नहि बुझत। बस एक पात तेलमे पड़ल बुझत।”

देवकान्त मसौदाक ‘तलल पात’ काटि देलनि।

“तखन पूरा अनुच्छेद?”

“पहिल बेर हँ। बादमे ‘तिलकोरक तरुआ’ कहि दिअ। नाम पाठक सीखत।”

देवकान्त लिखय लगलाह। किछु बेर बाद रुकलनि। “ई तँ अनुवाद कम, परिचय बेसी भेल।”

“अपरिचित वस्तुक परिचय अनुवादसँ छोट किएक होय?”

देवकान्त मुस्करौलनि। “अहाँ अनुवादक लेल बहुत काज बढ़बैत छी।”

“बेठीक काज घटबैत छी।”

देवकान्त तिलकोरक पन्नाक कात लिखलनि—‘नाम बचाउ; पहिल बेर संसार खोलू।’

माधवी पढ़ि कऽ कहलक, “संसार बहुत पैघ शब्द अछि।”

“एतए उचित अछि।”

“तँ अपन नाँवसँ लिखू।”

देवकान्त हँसलाह। “ठीक।”

ओ किछु देर बाद पन्ना पलटि कहला, “एतए एक दोसर संकट अछि। जँ अंग्रेजी पाठक तिलकोरक स्वाद नहि चखने अछि, हम कतेक लिखि ओकरा चखा सकैत छी?”

माधवी कहल, “चखा नहि सकैत छी। एतबे स्वीकार करू।”

“लेखक एतए रुकि जाएत?”

“रुकब नहि। सीमा बुझब।”

“फेर पाठक?”

“जँ ओकरा इच्छा होएत, ओ कखनो चखत। नहि तँ कम-से-कम ई नहि मानत जे दू अंग्रेजी शब्दमे पूरा स्वाद समा गेल।”

देवकान्त बहुत देर तक पन्ना देखैत रहलाह। अनुवादक सत्ता हुनका पहिल बेर साफ देखायल—ओ चाहति तँ एक वस्तुक आकार छोट करि पाठक लेल सहज बना सकैत छथि; मुदा सहजता ककर कीमत पर, ई प्रश्न पन्ना पर नहि, हुनकर निर्णयमे छिपल रहैत अछि।

ओ मसौदाक कात लिखलनि—‘सरलता लेल अर्थ नहि काटब।’

माधवी कहलक, “ई नियम राखू।”

“राखब।”

✽

राति असामान्य रूपसँ गाढ़ भऽ गेल छल। घरक अधिकतर लोक सुति गेल। ओसारपर एक दीया जलि रहल छल, जकर रोशनी कागजक एक हिस्सा उज्जर करैत, दोसर हिस्सा धुँधलका मे छोड़ैत छल। देवकान्त आ माधवी शब्द-सूचीक आखिरी पन्ना पर एखनहुँ झुकल छल।

पागक प्रसंग स्थगित छल—पहिरनक पुरान सूची देखबाक बाकी। पाँतिक व्याख्या अधूरी छल—माधवी चाहैत छल जे देवकान्त एक भोजन प्रत्यक्ष देखिकऽ लिखथि। तरुआ, बगिया, अमट, अदौरी, तिलकोर—सभक पाछाँ छोट-छोट टिप्पणी जुड़ि गेल छल।

देवकान्त आँखि मललनि। “एक शब्दक अर्थ खोजैत-खोजैत आधा राति बीति गेल।”

माधवी कहलक, “शब्द छोट होइत अछि, पाछाँक संसार छोट नहि।”

“ई पाँति लिखी?”

“आब नहि। थाकि गेल छी।”

देवकान्त कलम राखि देलनि। ओसारक दोसर कात पानक छोट डिबिया राखल छल। माधवी ओकरा दिस देखलक, फेर एक पान निकाललक।

“खायब?”

देवकान्त हाथ बढेलनि। “ई प्रश्नक अंग्रेजी अर्थ की?”

माधवी थाकल हँसी हँसल। “आब जँ पानक अनुवाद शुरू कएलहुँ तँ भोर भऽ जाएत।”

“तखन नाम छोड़ि दिअ?”

“हँ। नाम छोड़ि दिअ।”

ओ पान तैयार करय लगल। देवकान्त चुपचाप देखैत रहलाह। एहि बेर ओ सामग्री पूछलनि नहि, नाप नहि, अंग्रेजी शब्द नहि। बस हाथक गति देखलनि।

माधवी एकटा पान हुनका देलक, एकटा अपनैँ लेल राखलक। दुनू ओसारक दू कात बैसल छल, मुदा दिनभरक कागजक बाद दूरी कम बुझाईत छल।

देवकान्त पान मुखमे राखि कनी देर बाद कहलनि, “किछु स्वाद लिखब कठिन अछि।”

माधवी कहल, “सभ स्वाद लिखबाक किएक?”

“किएक तँ पोथी बनबैत छी।”

“पोथी जँ सभ किछु लेत तँ जीवनक की बचत?”

देवकान्त ओकरा देखलनि। “अहाँ अपन निजी पन्ना बचा लेने छी।”

“हँ।”

“आ किछु स्वाद?”

“ओहो।”

दीयाक लौ कनी काँपल। बाहर सँ रात्रिचर कीट-पतंगक आवाज आबि रहल छल। दूर कतहु कुकुर भुकल, फेर शान्ति।

देवकान्त कहलनि, “हमरा लगैत अछि अनुवाद करैत लोक बहुत हतबड़ीमे मानि लैत अछि जे दोसरक संसार आब ओकरा बुझा गेल।”

माधवी पान चबैत धीमे कहलक, “बुझब आ अपन बना लेब अलग बात अछि।”

देवकान्त उत्तर नहि देलनि। ई वाक्य हुनका भीतर उतरि गेल।

किछु देर बाद ओ पूछलनि, “अहाँ हमरा कतेक बुझैत छी?”

माधवीक हाथ थमकल। प्रश्न दिनभरक शब्द-सूचीसँ बाहर छल।

ओ देवकान्त दिस देखलक। “जतेक अहाँ देखबैत छी। किछु अनुमान। किछु बेठीक सेहो होएत।”

“आ हम?”

“हमरा?”

“हँ।”

माधवी हँसी नहि। “ओही नियम। जतेक हम देखबैत छी, ओतेक। बाकी भरू नहि।”

देवकान्तक आँखि पन्ना दिस गेल। ‘स्रोत नहि भेटला पर खाली ठाम अनुमानसँ नहि भरब।’

ओ मुस्करौलनि। “पोथीक नियम मनुखपर सेहो?”

“कखनो पोथी मनुखसँ सीखैत अछि।”

दुनू फेर चुप भऽ गेल। पानक स्वाद धीरे-धीरे बदलैत रहल—पहिल तीखापन, फेर मिठासक हलुक परत, फेर पातक अपन गन्ध। देवकान्त एहि क्रमक कोनो नोट नहि बनौलनि।

माधवी ई देखलक। “आइ लिखब नहि?”

“नहि।”

“किएक?”

“किएक तँ सभ बात लिखबाक नहि होइत अछि।”

माधवीक आँखिमे थाकल मुदा साफ प्रसन्नता आयल।

दीया कनी झुकल। देवकान्त ओकर बाती सोझा कएलनि। माधवी शब्द-सूचीक पन्ना समेटलक। दुनूक हाथ एके पन्नाक कोन पकड़बाक समय छू गेल। कोनो हाथ तुरन्त झटकल नहि। बस एक क्षण ठमकल, फेर कागज समेटि देल गेल।

न प्रेमक घोषणा भेल, न कोनो वचन। मुदा देवकान्त केँ बुझायल जे दिनभरि जे शब्दसभ अनुवादसँ बाँचि गेल, हुनका बीच एक एहन मौन बनि गेल अछि जकरा नाम देब कदाचित ओकरा छोट करब होएत।

माधवी उठैत कहलक, “काल्हि पाँति देखब।”

देवकान्त कहलनि, “आ पागक सूची।”

“हँ। पहिने स्रोत।”

“अपनासँ नहि भरब।”

“एखन सीखि रहल छी।”

माधवी चलि गेल। देवकान्त पन्नाक ऊपर नजरि देलनि। छह शब्दसँ शुरू भेल सूची आब टिप्पणी, प्रश्न, नाम आ खाली ठामसँ भरल छल।

ओ अन्तमे केवल एतेक लिखलनि—‘जे शब्दक अनुवाद नहि, ओकरा मेटेबाक नहि; ओकर चारूकात अर्थक ठाम छोड़बाक।’

तकर बाद दीया मिझा देलनि।

अध्याय १५ — तरुआक थारी

गरमी आब खुलि कऽ पड़य लागल छल। दुपहरि धरि आँगनक माटि गरम भऽ जाइत, ताहि लेल भानसक बहुत काज भोरहि सँ शुरू भऽ गेल। जानकी ओहि दिन एक पैघ थारीमे पाँच तरहक तरुआक तैयारी करौने छलीह—कदिमा, आलू, बैंगन, तिलकोर आ काँच केला। देवकान्त ओसारपर पन्ना पसारने छलाह, मुदा आब हुनका पहिने सँ नियम याद छल: पन्ना बादमे, दृश्य पहिने।

माधवी अलग-अलग पदार्थ काटैत गेल। कदिमाक टुकड़ा मोट, आलूक फाँक कनी पातर, बैंगनक आकार दोसर, काँच केलाक कटान फेर अलग। तिलकोरक पात अपन कोमलता अनुसार चुनल गेल। पीठार एके बासनमे तैयार भेल, मुदा माधवी सभ पदार्थ एक्के बेर ओहि मे नहि डुबेलक।

देवकान्त पूछलनि, “एके पीठार, तखन तरुआ सभ एके ढंगक?”

माधवी कहल, “एके पीठार सँ सभ बराबर भऽ जाइत अछि?”

“नहि, पदार्थ अलग अछि।”

“तखन उत्तर भेटि गेल।”

जानकी तेलक ताप देखैत कहलीह, “कदिमा सहजे नरम होइत अछि। आलू आ काँच केला अपन-अपन बेर माँगत। बैंगन तेल अलग ढंगसँ पीबैत अछि। तिलकोरक पात फेर दोसर बात।”

देवकान्त नोटबुक खोललनि, मुदा लिखबा सँ पहिने पूछलनि, “ई सभ एहि घरक ढंग?”

माधवी तुरंत कहल, “हँ। जे देखलहुँ, से एतए लिखू। पूरा मिथिला पर एके नियम नहि।”

देवकान्त शीर्षक देलनि—‘एहि घरक तरुआ: एके पीठार, अलग देह।’

हेमलता पाछोँ सँ पढ़ि कऽ हँसल। “तरुआक देह?”

देवकान्त सेहो हँसलाह। “तखन की लिखी?”

माधवी कहल, “देह बेठीक शब्द नहि। काटलापर पदार्थक देहहि तऽ देखैत छी—कतेक नरम, कतेक पानि, कतेक रेशा।”

जानकी तिलकोरक पहिल पात तेलमे छोड़लीह। आवाज उठल। पीठार तुरन्त जमि कऽ पातक चारूकात पातर परत बना लेलक। देवकान्त देखैत रहलाह। ओहि परतक भीतर पात अपन रूप राखने छल।

दोसरा बासनमे कदिमा गेल। बाहरक पीठार प्रायः वएह, मुदा तेल सँ निकललापर ओकर रंग, गन्ध आ नरमी तिलकोरसँ बिल्कुल अलग।

देवकान्त कहलनि, “एक ढाँचा भीतर अलग-अलग पदार्थ।”

माधवी कनी मुस्करायल। “ढाँचा कहब तँ चलत, मुदा पदार्थक भेद नहि बिसरू।”

“अहाँ बुझि गेलहुँ हम रूपक बनाबय जा रहल छी?”

“अहाँक चेहरा देखि आब बुझि जाइत छी।”

हेमलता बीचमे कहलक, “रूपक खाएब योग्य होएत?”

जानकी उत्तर देलीह, “रूपक छोड़, ई कदिमाक तरुआ उठा। बहुत देर राखब तँ नर्म भऽ जाएत।”

सभ हँसि पड़ल। देवकान्त रूपक रोकि वास्तविक थारी दिस घुरलाह। पाँच तरुआ एके संग रहितो एक-दोसराक प्रतिलिपि नहि छल। ओहि भिन्नता केँ देखब बिना ‘तरुआ’ शब्द अधूर बुझाइत—ई बात हुनका चुपचाप स्पष्ट होइत गेल।

**

ओहि दिन घरमे दू अतिथि अबय छलाह। जानकी भोरहि सँ कहने छलीह जे नीक तिलकोरक पात आ काँच केलाक किछु तरुआ अतिथिक थारी लेल अलग राखल जाए। हेमलता एहि बातपर नाक सिकोड़ने छल।

“घरक लोक लेल खराब?” ओ पूछने छल।

जानकी कहलीह, “बेठीक नहि। अतिथि लेल पहिल छनाइ। घरक लोक बाँकी सभ नीक पकवान खायत।”

माधवी चुपचाप अलग थारीमे तरुआ सजेलक। ओतए तिलकोरक सभसँ कोमल टुकड़ा, कदिमाक सुन्दर फाँक, बैंगनक कम तेल पीने टुकड़ा, आ काँच केलाक बराबर आकारक तरुआ रखल गेल।

देवकान्त ई देखैत पूछलनि, “थारी सजेनाइ सेहो नियम?”

जानकी कहलीह, “नियम कहू कि आदर। अतिथि आयल तँ जे नीक अछि, पहिने ओकरा सोझाँ जाए।”

“आ घरक बच्चा?” हेमलता तुरन्त पूछलक।

“घरक बच्चा पहिने खा लेने अछि आधा,” जानकी कहलीह।

हेमलता अपन चोरी पकड़ा गेल बुझि चुप भऽ गेल।

माधवी देवकान्तसँ कहल, “एतए लिखबाक समय ई नहि लिखू जे अतिथि सभ काल सभसँ बेसी खाइत अछि। बात परोसबाक छनाइ आ आदरक अछि।”

देवकान्त लिखलनि—‘अतिथि-थारीमे पहिल छनाइ: घरक आदरक एक रूप।’

माधवी पढ़ि कऽ कहल, “ठीक।”

अतिथि आबि गेलाह। ओसारपर पानि, पान आ परिचयक बाद भोजनक समय भेल। जानकी परोसनक क्रम देखैत छलीह। पहिने भात, तकर कात दालि; तरकारी; फेर तरुआ एक-एक करि। तिलकोरक तरुआ तुरन्त नहि, कनी बाद देल गेल। देवकान्त ध्यान देलनि जे थारी केवल वस्तु रखबाक ठाम नहि; क्रम सेहो कथा कहैत अछि।

एक अतिथि तिलकोर उठाकऽ प्रसन्न भेला। “ई तऽ बहुत कोमल अछि।”

जानकी केवल मुस्कराइत कहलीह, “भोरक पात।”

देवकान्त कनी दूरी पर बैसल नोट नहि कएलनि; पहिले देखलनि। हुनका याद आयल—एहि प्रकारक कोमल पात एक दिन माधवी हुनकर थारी लेल सेहो बचा कऽ रखने छल।

ओहि स्मृतिसँ वर्तमान दृश्य एकाएक निजी भऽ गेल। हुनका लगल जे अतिथि-सत्कार आ स्नेहक क्रिया कई बेर एके बाहरी रूप धारण करैत अछि; अन्तर केवल नीयत मे रहैत अछि, जे कागजपर देखब कठिन।

भोजनक बाद हेमलता अलग राखल थारीमे देखलक जे दू तिलकोरक तरुआ बचल अछि। ओ एकटा लेलक, दोसर माधवीक सोझाँ राखि देलक।

“अतिथि नहि खएलनि,” ओ कहलक।

माधवी बिना किछु कहल तरुआ आधा तोड़ि हेमलता केँ देलक।

देवकान्त देखलनि। घरक संसाधनक राजनीति एकतरफा नहि छल—पहिल छनाइ अतिथिक, बचल वस्तु घरक, आ बाँट फेर अपन ढंगसँ।

ओ पन्नापर लिखलनि—‘थारीक क्रम केवल स्वादक नहि; आदर, उपलब्धता आ सम्बन्धक क्रम।’

माधवी पढ़ि कऽ कनी देर बाद कहल, “आ कखनो प्रदर्शनक सेहो।”

देवकान्त प्रश्नवाचक नजरि देलनि।

माधवी कहलक, “घर कम हो, अतिथि सोझाँ अधिक देखेबाक दबावो रहैत अछि। ओहि पर बादमे लिखब।”

देवकान्त पन्नाक कात खाली ठाम छोड़ि देलनि। स्रोत बिना भरबाक नहि—ई नियम एतहु लागल।

**

दुपहर उतरला पर अतिथि सभ विश्राम लेल भीतर गेलाह। देवकान्त ओसारपर पाँच तरुआक बाँचल टुकड़ा एक थारीमे राखि देखैत छलाह। कदिमा, आलू, बैंगन, तिलकोर, काँच केला—पीठारक रंग प्रायः एक, भीतरक स्वाद पाँच।

ओ एकाएक कहलनि, “मिथिला एक थारी जकाँ अछि।”

माधवी पानि ढारैत रुकल। “फेर रूपक।”

“ई बेर सुनू। एके थारीमे अनेक स्वाद। एके नामक भीतर अनेक जीवन। बेठीक रूपक नहि।”

माधवी थारी दिस देखलक। “थारीक बाहर जे रहि गेल?”

देवकान्त चुप भऽ गेलाह।

“ई थारीमे माछ नहि,” माधवी कहल। “कुर्थी नहि। बगिया नहि। जे लोक तरुआ नहि खाइत, ओ नहि। जेकरा घरमे तेल एतेक नहि जे पाँच तरह तली, ओकर थारी नहि। जे खेत जोतैत अछि, पात तोड़ैत अछि, तेल पैरैत अछि, ओ सभ एहि सजल थारीमे कहाँ देखाइत अछि?”

देवकान्त थारीक चमक एकाएक दोसर ढंगसँ देखलनि।

“रूपक छोड़ि दी?”

माधवी कहल, “नहि। रूपक राखू, मुदा ओकर सीमा लिखू।”

देवकान्त नोटबुक खोललनि—‘मिथिला एक थारी—ई रूपक अधूर: थारीक बाहरक लोक, पदार्थ, श्रम आ अभाव सेहो मिथिला।’

माधवी पन्ना पढ़लक। “एखन ई काजक अछि।”

“अहाँ सभ रूपक केँ काटैत नहि, कठिन बनबैत छी।”

“सरल रूपक कई बेर लोक केँ काटि दैत अछि।”

देवकान्तक कलम थमकल। “ई वाक्य अहाँक नाँवसँ?”

माधवी कनी सोचलक। “हँ। लिखू।”

ओ लिखलनि—‘माधवी: सरल रूपक कई बेर लोक केँ काटि दैत अछि।’

हेमलता दूरसँ आबि पूछलक, “हमरा थारीमे कहाँ राखब?”

देवकान्त हँसलाह। “अहाँ अपन इतिहास स्वयं लिखब कहने रही। अपन ठाम अपनै चुनू।”

हेमलता बिना देर कएने बैंगनक बचल तरुआ उठा लेलक। “एतए।”

माधवी हँसि पड़ल। “इतिहासक ठाम खा लेलहुँ।”

हेमलता मुँह भरल अवस्थामे किछु कहय चाहलक, जानकी दूरसँ डाँट देलीह—“पहिने निगल!”

ओसार फेर हँसीसँ भरि गेल।

देवकान्त थारीक रूपक पन्नापर राखलनि, मुदा आब ओ विजयपूर्ण वाक्य नहि रहल। ओकर चारूकात प्रश्न छल—आ कदाचित एहि प्रश्नहि कारण ओ अधिक साँच भेल।

✽

साँझि अतिथिसभमे एक युवा स्त्री ओसारपर आयलीह। नाँव शारदा छल। ओ दरभंगा दिस पढ़ने छलीह, आ देवकान्तक एक पहिल लेख पत्रिकाजे पढ़ने छलीह। सादा साड़ी,

व्यवस्थित आँचर आ हाथमे दू-तीन कागज—हुनकर उपस्थिति घरक स्त्रीसभसँ अलग एहि अर्थमे छल जे ओ देवकान्तक लेखनपर सीधा चर्चा करय आयलीह।

“अहाँक पिछला लेख हम पढ़ने रही,” शारदा कहलीह। “विशेषतः घरेलू भोजनक वर्णन नीक लागल। एहन विषयपर लोक प्रायः ध्यान नहि दैत अछि।”

देवकान्त प्रसन्न भेला। “एखन जे काज चलि रहल अछि, ओ ओहिसँ पैघ अछि।”

“देखा सकैत छी?”

देवकान्त एक क्षण माधवी दिस देखलनि। माधवी कनी दूरी पर तरुआक बासन समेटि रहल छल। ओ नजरि उठेलक, फेर अपन काजमे लागि गेल।

देवकान्त केवल ओ पन्ना देलनि जे साझा छल; निजी चिह्नयुक्त पन्ना नहि। शारदा ध्यानसँ पढ़य लगलीह।

“ई बहुत रोचक अछि,” ओ कहलीह। “अहाँ स्थानीय शब्द अनुवाद नहि कऽ पहिल बेर व्याख्या देबाक जे उपाय लेने छी, से उचित अछि।”

देवकान्तक चेहरा उज्जर भेल। “ई विचार बहससँ आयल।”

शारदा पूछलीह, “ककरा संग?”

देवकान्त कहलनि, “माधवीक संग। एहि पोथीक बहुत ज्ञान हुनक आ घरक स्त्रीसभक अछि।”

माधवीक हाथ एक क्षण थमकल। ओ किछु नहि कहलक।

शारदा घुरि ओकरा देखलीह। “तखन अहाँक नाँव पन्नापर रहबाक चाही।”

माधवी सहज स्वरमे उत्तर देलक, “जतए हमर ज्ञान अछि, ओतए नाँव अछि।”

“नीक।” शारदा फेर देवकान्त दिस घुरलीह। “ई पद्धति लेखमे सेहो स्पष्ट करू।”

देवकान्त कहलनि, “करब।”

दुनू किछु बेर अंग्रेजी लेख, पत्रिका आ छपाइपर बात करैत रहलाह। शारदा देवकान्तक भाषा-सजगताक प्रशंसा कएलनि। देवकान्त हुनका पाग सम्बन्धी शब्दक अर्थ एखन रोकि रखने छथि, ई बतौलनि। शारदा कहलनि जे स्रोत देखिकऽ लिखब नीक बात अछि।

माधवी ओहि बीच थारीमे बचल तरुआ अलग करैत रहल। बाहरी रूपसँ ओ पूर्णतः सहज छल। हेमलता ओकर कात बैसल एक टुकड़ा उठा लेलक, माधवी बिना देखले ओकर हाथ सँ टुकड़ा आपस थारीमे रखि देलक।

हेमलता चकित भऽ ओकरा देखलक। “ई किएक?”

माधवी कहल, “ई बासी होय लगल अछि। दोसर लिअ।”

हेमलता दोसर लेलक, मुदा नजरि दीदीक चेहरा पर टिकौने रहल।

शारदा देवकान्तसँ पूछलीह, “अहाँ ई पूरा पोथी अंग्रेजीमे अनुवाद करब?”

देवकान्त कहलनि, “नहि। आब लगैत अछि जे पूरा अनुवादक अर्थ बहुत किछु छोट करब होएत। मैथिली मूल, संग व्याख्या—कदाचित।”

“ई नीक निर्णय अछि।”

माधवी एहि बेर बासन कनी जोर सँ रखलक। आवाज साधारणसँ कनी बेसी भेल। जानकी दूरसँ देखलीह, मुदा किछु नहि कहलीह।

देवकान्तक ध्यान सेहो गेल। ओ माधवी दिस देखलनि। माधवी तुरन्त दोसर बासन उठाकऽ भीतर चलि गेल।

शारदा चर्चा जारी रखलीह। हुनका किछु पता नहि चलल।

किछु बेर बाद ओ विदा भेलीह। देवकान्त कागज समेटि भानसघर दिस गेलाह। माधवी पीतल बासन पोंछि रहल छल।

“शारदा जीक बात नीक छल,” देवकान्त सहज स्वरमे कहलनि।

“हँ।”

“अहाँक नाँवक बात ओ अपनैँ उठेलनि।”

“सुनलहुँ।”

“अहाँ खुश नहि भेलहुँ?”

माधवी कपड़ा फेरि बासनक किनार पोंछलक। “खुश भेने छी। नाँव रहबाक बात के कहलक, ताहिसँ बात बेठीक नहि होइत।”

देवकान्त कैँ उत्तरक भीतर एक सूक्ष्म कड़वाहट सुनायल, मुदा ओ तुरन्त प्रश्न नहि कएलनि। पछिला नियम याद छल—जतेक देखबैत अछि, ओतेक; बाकी भरू नहि।

ओ कहलनि, “आइ पाँच तरुआमे कोन सभसँ नीक बनल?”

माधवी पहिल बेर ओकरा देखलक। “अहाँ विषय बदलैत छी?”

“हो सकैत अछि।”

माधवीक मुखपर बहुत छोट हँसी आयल। “तिलकोर।”

“हमरो।”

“ई उत्तर हमरा देखि कऽ देलहुँ कि स्वाद देखि?”

देवकान्त हँसलाह। “एहि प्रश्नक उत्तर देब कठिन अछि।”

माधवीक हँसी कनी पैघ भेल, मुदा ओ तुरन्त बासन दिस घुरि गेल।

देवकान्त ओसारपर आपस आबि नोटबुक खोललनि। ओ ई लिखय लगलाह—‘ईर्ष्या?’ फेर रुकि गेलाह। शब्द काटि देलनि। ओ की जानैत छलाह? बासन कनी जोर सँ रखल गेल, हेमलताक हाथ सँ बासी तरुआ बदलल गेल, आवाज कनी छोट भेल—एतबे स्रोत छल।

ओ तकर बदला लिखलनि—‘जे नहि कहल गेल, ओकरा भावक नाँव देबामे सावधानी।’

पन्ना बन्द करैत हुनका बुझायल जे पाँच तरुआक थारी जकाँ मनुखक भाव सेहो एके पीठारमे नहि समाइत। बाहरक रूप समान बुझाइत अछि, भीतरक स्वाद अलग रहैत अछि।

राति भोजनमे तिलकोरक एक टुकड़ा माधवी बिना किछु कहने हुनकर थारीक कात राखि देलक। देवकान्त केवल एक बेर ओकरा देखलनि। किछु पूछलनि नहि।

एहि बेर मौनहि पर्याप्त छल।

अध्याय १६ — आमक अमट

गरमी आब घरक देवाल धरि चढ़ि गेल छल। भोरक थोड़ेक ठंढक सूरज ऊपर उठिते ओझरा जाइत, आ दुपहर धरि आँगनक ईट एतेक तपि उठैत जे नाङ्गर पएर बेसी बेर टिकब कठिन होइत। एहि मौसममे भानसघरक काज भीतरसँ बाहर पसारि गेल छल—छत, ओसार, आँगनक धूप पड़ैत कोन, सभ अस्थायी भण्डारघर बनि गेल।

एक भोर माधवी बाँसक डलिया भरि काँच आम आनलक। किछु आमक छाल हरियर, किछु पर हलुक पीयर छाँह चढ़य लागल छल। जानकी दूरसँ देखिते कहलीह, “एहि सभकेँ आइ काटि दिअ। दू दिन बाद धूपक भरोसा नहि।”

देवकान्त ओसारपर पोथी खोलि बैसल छलाह। आम देखिते पूछलनि, “अचार?”

माधवी कहल, “सभ आम अचार नहि बनत।”

“तखन?”

“किछु घरमे अमट बनत। काँच आम काटि धूपमे सुखाएब। वर्षा-पाछाँ जखन ताजा आम नहि रहत, तखन ई खटास काज आएत।”

देवकान्तक कलम चलि गेल। “कतेक मोट काटब?”

माधवी एक आम हाथमे लेने कहल, “पहिने ई देखू जे आम केहन अछि।”

“फेर वएह?”

“वएह। काँच आम सभ एक रंगक देखाइत हो, देह एक नहि। किछु बहुत कड़क, किछु भीतरसँ कनी नरम। बीआक आकारो बदलैत अछि।”

जानकी छूरी सँ एक आम काटि देखेलनि। “ई नीक अछि। गूदा कस अछि। सुखयबा लेल ठीक।”

देवकान्त कटाल टुकड़ाक मोटाइ नापय चाहलनि। माधवी हँसि पड़ल। “छटाँकक बाद आब आँगुर नापब?”

“पाठक केँ बुझय पड़त।”

“बुझाउ। मुदा ई नहि लिखू जे सभ टुकड़ा एके चौड़ाइ। हाथ बेराबेरी काटत, आम बेराबेरी बनत।”

हेमलता छोट पाटी लऽ कऽ आबि बैसल। ओकर काज काटल आमक टुकड़ा सूखयबाक डलियापर पसारब छल। ओ एक टुकड़ा मुँह दिस लऽ गेल तँ जानकी तुरन्त देखलीह।

“एखन नहि।”

“काँच आम अछि, विष नहि।”

“विष नहि, मुदा काजक आम अछि। पहिने डलिया भरो।”

हेमलता मुँह बनौलक, फेर टुकड़ा राखि देलक। देवकान्त हँसलाह।

माधवी एक-एक आम काटैत गेल। गूदा अलग, आँठी अलग। किछु टुकड़ा छोट, किछु लम्बा। ओ टुकड़ासभ एक-दोसरापर नहि चढ़य, ताहि हिसाबसँ पसारैत गेल।

देवकान्त पूछलनि, “नोन?”

जानकी कहलनि, “अमट लेल एहि घरमे एखन नहि। सुखायल टुकड़ा बादमे जे काजमे जाएत, ताहि अनुसार ओकर संग नोन-मसाला भेटत। अचार अलग काज।”

देवकान्त पन्नापर ऊपर लिखलनि—‘एहि घरक ढंग।’

माधवी देखलक। “ठीक। कारण दोसर घर दोसर ढंग करैत होएत।”

“अहाँ बारम्बार ई किएक कहल करैत छी?”

“किएक तँ पोथी बारम्बार बिसरैत अछि।”

“पोथी कि लेखक?”

माधवी छूरी रोकि ओकरा देखलक। “पोथी अपनैँ किछु नहि करैत। जे लिखैत अछि, ओ बिसरैत अछि।”

देवकान्त उत्तर देबाक बदला पन्नापर ‘घर-विशेष’ लिखि लेलनि।

आम कटैत समय भानसघर आँगनमे गन्ध फैलि गेल—तीख, हरियर, जिह्वा खींचि लेनिहार खटासक गन्ध। देवकान्त एक छोट टुकड़ा लेलनि।

माधवी रोकलक नहि। “चखू। मुदा लिखब कि खट्टा?”

देवकान्त टुकड़ा चबेलनि। आँखि अनायास सिकुड़ि गेल। हेमलता ठहाका लगा देलक।

“आब लिखू—लेखकक आँखि बन्द करा देनिहार स्वाद,” ओ कहलक।

देवकान्त पानी पीलनि। “खट्टा शब्द छोट पड़ैत अछि।”

माधवी कहल, “तखन काल्हि रातिक बात मोन करू—जे शब्दक अनुवाद नहि छल।”

देवकान्त हँसलाह। “अहाँ सभ पाठ हमरा आपस सुनबैत छी।”

“नहि सुनाउ तँ फेर अपनासँ भरब।”

डलिया भरि गेल। माधवी ओकरा आँगनक एहन कोनमे राखलक जतए भोरसँ दुपहर धरि धूप पड़ैत छल आ साँझि ओकरा भीतर आनल जा सकैत। जानकी हेमलता केँ स्पष्ट कहलीह जे साँझि ओस पड़य सँ पहिने डलिया उठा लेब।

देवकान्त लिखलनि—‘सुखेनाइ केवल धूपमे छोड़ि देब नहि; दिनभरि देखरेख।’

माधवी पन्ना पढ़लक। “ई वाक्य राखू।”

देवकान्त आमक टुकड़ासभ देखैत रहलाह। एखन ओ सभ रसदार, चमकदार छल। किछु दिन बाद ई सिकुड़त, रंग बदलेत, भार घटत। स्वाद रहत, मुदा रूप बदलत।

“ई अमट बनेबाक समय स्वाद घटैत अछि कि गाढ़ होइत?” ओ पूछलनि।

जानकी कहलीह, “दुनू। जे पानि अछि, ओ घटत। जे खटास अछि, ओ बाँचत। बाकी बादमे खा कऽ बूझब।”

देवकान्त एहि उत्तरक कात एक छोट रेखा खींचि देलनि। हुनका लगल—ई केवल आमक बात नहि।

**

दोसरा दिन धूप अधिक तेज छल। डलियामे पसारल आमक टुकड़ा पहिल दिनक चमक छोड़ि कनी मटमैला भऽ गेल छल। किनार सिकुड़ि रहल छल, बीचक गूदा एखनहुँ लचकदार। माधवी एक टुकड़ा उठाकऽ मोड़ि देखलक, फेर आपस राखि देलक।

देवकान्त ओतए पहुँचलाह तँ पूछलनि, “आब तैयार?”

“नहि।”

“काल्हिसँ आधा आकार भऽ गेल।”

“आकार घटलासँ काज पूरा नहि होइत।”

“तखन चिन्ह?”

“नमी। भीतरक नरमी। गन्ध। हाथमे दबेला पर की होइत अछि। ई सभ।”

देवकान्त चुपचाप देखैत रहलाह। पाछिल सप्ताहसभमे हुनका बारम्बार एहन उत्तर भेटल छल—समय, नाप, आकार, सभ सहायक; अन्तिम निर्णय हाथ, आँखि, गन्ध, अनुभवक।

माधवी एक टुकड़ा हुनकर हथेलीपर रखलक। “काल्हिकँ याद अछि?”

“हरियर, रसदार, बहुत खट्टा।”

“आ ई?”

देवकान्त टुकड़ा सूँघलनि। खटासक गन्ध एखनहुँ छल, मुदा काँच आमक ताजगीक संग धूपक गरमाहट जुड़ि गेल छल।

“एके आम अछि, मुदा एक नहि,” ओ कहलनि।

“बस।”

“बस की?”

“एही बात लेल एतेक प्रश्न।”

देवकान्त पन्ना खोललनि। “लिखी?”

“अपन बात अपनैँ लिखू।”

ओ लिखलनि—‘सुखायल रूप मूल वस्तुक नकल नहि; ओकर दोसर जीवन।’

माधवी पढ़ि कऽ कहलक, “बहुत किताबिया वाक्य अछि।”

“बेठीक?”

“नहि। मुदा आम एतेक गम्भीर नहि देखाइत।”

देवकान्त हँसलाह। “अहाँक लेल गम्भीर बातक सीमा की?”

“जे बात बिना भारी शब्दक बुझि सकय, ओकरा भारी किएक बनाउ?”

देवकान्त वाक्य काटि नहि देलनि, मुदा कातमे छोट लिखलनि—‘सरल करब।’

माधवी डलिया उलटैत कहल, “किछु स्वाद ताजा बेरमे खतम भऽ जाइत। किछु हम सुखा कऽ राखैत छी। जाड़मे ई आम नहि रहत, मुदा खटास रहत। स्वाद ऋतु पार कऽ जाइत अछि।”

देवकान्त कलम थमकल। “ई वाक्य अहाँक नाँवसँ?”

“लिखू। मुदा ‘ऋतु पार’ हमर शब्द नहि। हम कहलहुँ—जाड़मे आम नहि रहत, खटास रहत।”

देवकान्त मुस्करीलनि। “ठीक।”

ओ ठीक वएह लिखलनि—‘माधवी: जाड़मे आम नहि रहत, खटास रहत।’

किछु बेर बाद माधवी एक सूखल टुकड़ा ओसारक छाँहमे राखि कहलक, “देखू, ई स्मृति जकाँ अछि।”

देवकान्त तुरन्त ओकर दिस देखलनि। “अहाँ रूपक देलहुँ?”

“हम रूपक देबाक मनाही कखनो केलहुँ?”

“नहि। केवल हमरा बहुत रूपक देबाक मनाही कएलहुँ।”

“किएक तँ अहाँ सभ वस्तु केँ तुरन्त दोसर वस्तु बना दैत छी।”

“आ अहाँ?”

“हमरा जे बेर उचित बुझाइत अछि, तखने।”

देवकान्त हँसलाह। “तखन ई स्मृति केना?”

माधवी टुकड़ा अँगुरीमे घुमेलक। “ताजा आमक रस नहि अछि। रंगो बदलल। आकारो घटल। मुदा जँ ठीक सँ राखल, बहुत दिन बादो जीह पहचानि लेत जे ई आम छल। स्मृतियो सभ बात जसक तस नहि राखैत। किछु गन्ध, किछु स्वाद, किछु चोट—बस।”

देवकान्त सुनैत रहलाह।

“आ बेठीक सुखायल?”

“फफूँद पकड़ि लेत। फेर जे बचेलहुँ से खायब योग्य नहि।”

देवकान्त धीरे कहलनि, “स्मृतियो?”

माधवी उत्तर नहि देलक। ओ टुकड़ा आपस डलियामे राखि देलक।

दूर आँगनमे हेमलता गीला कपड़ा झाड़ि रहल छल। धूपमे पानि चमकि उठैत आ क्षणभरिमे गुम भऽ जाइत। देवकान्त केँ एकाएक भूकम्पक दिन याद आयल—धूलि, चित्कार, खुला आँगन, साझा पातिल। कतेक बात एखन विवरणसँ नहि, गन्ध आ आवाजसँ आपस आबैत छल।

ओ पोथीक पुरान पन्ना खोललनि। भूकम्पक दिनक नोट बहुत कम छल। ‘पानि उबालू’—माधवीक वाक्य। ‘खिचड़’—जानकीक हिसाब। नून कम पड़बाक हँसी। कागज पर बस एतबे। बाकी पूरा दिन स्मृतिमे अधिक पैघ छल।

माधवी पन्ना देखलक। “की खोजैत छी?”

“जे नहि लिखल गेल।”

“ओ सभ पन्नामे नहि भेटत।”

“तखन?”

“ककरो स्मृतिमे। ककरो देहमे। ककरो डरमे। ककरो हँसीमे। सभ बात पोथीमे नहि अँटत।”

देवकान्त कहलनि, “तखन इतिहास अधूर?”

“मनुख अधूर याद रखैत अछि। इतिहास पूरा कोना होएत?”

ई प्रश्नक उत्तर देवकान्तक लग नहि छल। ओ डलियामे सुखैत आम देखलनि। पहिल दिनक रसदार रूप आब नहि छल; मुदा जे बचि रहल छल, कदाचित ओहि रूपमे दूर धरि जाएत।

ओ पन्नाक कात लिखलनि—‘सुखेनाइ मेटेनाइ नहि।’

माधवी पढ़ि कऽ एहि बेर किछु नहि कहल।

✽✽

तेसर दिन दुपहरमे डाकिया एक पत्र देलक। लिफाफापर कलकत्ताक छाप छल। देवकान्त नाम देखते बुझि गेलाह—ओही पत्रिकाक सम्पादक।

ओ पत्र ओसारपर खोललनि। माधवी डलिया भीतर आनबाक तैयारी करैत छल, कारण पश्चिम दिस बादर उठि रहल छल।

“कलकत्तासँ?” ओ पूछलक।

“हँ।”

देवकान्त पत्र पढ़ैत-पढ़ैत चेहरा बदललनि।

“की भेल?”

“लेख शीघ्र चाही।”

पत्र अंग्रेजीमे छल। देवकान्त ओकर आशय मैथिलीमे सुनौलनि—अगिला अंकक छपाइ तय भऽ रहल अछि; भोजन सम्बन्धी लेख तुरन्त पठाउ; वर्णन रोचक अछि, मुदा बहुत घरेलू विस्तार काटि संक्षिप्त करू; पाठक केँ ‘मुख्य विशेषता’ चाही, घरक छोट-छोट भिन्नता नहि।

माधवी डलिया उठौने ठाढ़ रहल। “मुख्य विशेषता?”

“सम्पादकक शब्द।”

“घरक भिन्नता हटेला पर मुख्य की बचत?”

देवकान्त चुप रहलाह। पत्रक आखिरी पाँतिमे आग्रह छल—तीन दिन भीतर प्रति डाकसँ भेजू।

“तीन दिन,” ओ कहलनि।

“तँ तीन दिनमे जे तैयार अछि, ओ भेजू।”

“तैयार बहुत अछि। मुदा व्यवस्थित नहि।”

माधवी डलिया भीतर रखि देलक। “व्यवस्थित करब आ साफ करब एक नहि।”

देवकान्त ओकरा देखलनि। “ई बात किएक?”

“पत्रमे घरेलू विस्तार काटय कहने अछि। अहाँ ‘साफ’ करैत-करैत भिन्नता काटि देब, तखन हम एतेक दिन जे जोड़ैत रहलहुँ से?”

“हम सभ नहि काटब।”

“सभ नहि। कतेक?”

देवकान्त उत्तर नहि देलनि। ओ पत्र फेर पढ़लनि।

साँझि ओ अपन लेखक मसौदा खोलि बैसलाह। पन्नासभ बढ़ि गेल छल—तिलकोर, नून, बगिया, मखान, माछ, शब्द, लिपि, आम। अंग्रेजी लेख एतेक विस्तार नहि समा सकैत छल। हुनका चयन करय पड़त।

पहिल काज ओ दोहराव काटलनि। फेर एके बातक अलग उदाहरणमे सँ किछु हटौलनि। एहि धरि हुनका कोनो संकोच नहि भेल।

मुदा जखन ‘तिलकोर’क अंश आयल, ओ ठमकलाह। माधवीक आग्रह छल—नाम बचाउ, पहिल बेर संसार खोलू। सम्पादक छोट लेख चाहैत छल।

देवकान्त दू अनुच्छेद एकमे करि देलनि। पात चुनबाक प्रसंग राखल, मुदा अतिथि लेल कोमल पात अलग रखबाक पूरा दृश्य काटि देलनि।

ओ कलम रोकलनि।

माधवी दूरसँ कपड़ा समेटि रहल छल। देवकान्त ओकरा नहि बजौलनि।

मखानक अंशमे रमानन्दक श्रमक वर्णन छल। ओ ओकर आधा काटलनि, मुदा नाम राखलनि। ‘रमानन्द, पोखरि-काज सँ जुड़ल श्रमिक, बतबैत छथि...’—ई पाँति बचा देलनि।

“कम शब्दमे नाम बचि सकैत अछि,” ओ अपनैँ सँ कहलनि।

माछक अंशमे पुरान काटल वाक्य ‘Maithils love fish’ देखायल। ओ एक क्षण सोचलनि—ई छोट अछि, सम्पादक केँ पसिन पड़त। फेर माधवीक आवाज याद आयल—‘सभ?’

ओ वाक्य फेर नहि लिखलनि।

आमक पन्नापर आबि हुनका कनी राहत भेल। काँच आम सुखाएब, ऋतु-पार खटास बचेनाइ—ई सुन्दर, संक्षिप्त उदाहरण बनि सकैत छल। ओ लिखलनि जे काँच आमक टुकड़ा धूपमे सुखा कऽ पछिला ऋतुक भोजनमे उपयोग होइत अछि; एहि घरमे एहि रूप केँ अमट कहल जाइत अछि।

ओ पन्नाक नीचे माधवीक वाक्य देखलनि—‘जाड़मे आम नहि रहत, खटास रहत।’

देवकान्त ओकर अंग्रेजी रूप बनौलनि। वाक्य छोट, स्मरणीय छल।

माधवी नजदीक आबि पूछलक, “कतेक भेल?”

“आधा।”

“हम देखी?”

“अंग्रेजी अछि।”

“अर्थ सुनाउ।”

देवकान्त आम सम्बन्धी अंश पढ़ि मैथिलीमे सुनौलनि। माधवी ध्यानसँ सुनलक।

“ठीक। मुदा ‘एहि घरमे अमट’ लिखने छी?”

“हँ।”

“नीक। सभ मिथिला नहि।”

देवकान्त हलुक हँसलाह। “ई पाठ आब भीतर बैसि गेल अछि।”

माधवी कुर्सीक पाछाँ ठाढ़ भऽ बाकी पन्ना देखलक। “घरेलू विस्तार काटब?”

“किछु।”

“ककर?”

“जे लेखक मुख्य बात नहि बदलत।”

माधवी कहल, “मुख्य बात के तय करत?”

देवकान्त उत्तर देलनि, “एहि बेर हमरा करय पड़त।”

“तँ जे काटब, ओकर जिम्मो अहाँक।”

ई वाक्य देवकान्त केँ असामान्य रूपसँ भारी लगल।

ओ राति देर धरि मसौदा साफ करैत रहलाह। पन्ना छोट होइत गेल, लेख सुगठित बुझाइत गेल। मुदा किछु कटाव एहन छल जकरा बाद खाली ठाम आँखि केँ साफ, मन केँ असुविधाजनक लगैत छल।

**

अगिला भोर लेख प्रायः तैयार छल। देवकान्त अंतिम बेर मूल नोट आ अंग्रेजी मसौदा मिलबैत छलाह। माधवी ओसारक जमीनपर अमटक डलिया राखि टुकड़ासभ फेर उलटि रहल छल।

एक मूल पन्नापर लाल पेंसिलसँ गोल घेरल वाक्य देवकान्तक आँखि पड़ल। ई माधवीक लिखल टिप्पणी छल, जे ओ एक दिन भानसक काज आ लेखकीय श्रेयक बहस बाद जोड़ने छल।

देवकान्त तिरहुता पूरा पढ़ि नहि सकैत छलाह, मुदा देवनागरी प्रतिलिपि कातमे छल। वाक्यक आशय छल—जे हाथ स्वाद केँ ऋतु पार बचबैत अछि, जँ पोथी ओहि हाथक नाँव नहि बचाओत, तँ पोथी स्वाद बचा कऽ लोक केँ मेटा देत।

ओ पन्ना बहुत बेर पढ़लनि।

ई वाक्य अंग्रेजी लेखक निष्कर्ष बनि सकैत छल। छोट नहि, मुदा तीक्ष्ण। भोजनक चर्चा केँ श्रम आ नाँवक प्रश्नसँ जोड़ैत।

देवकान्त अलग कागजपर ओकर अंग्रेजी रूप लिखय लगलाह। आधा लिखला पर रुकलनि।

सम्पादकक पत्र सोझाँ पड़ल छल—‘बहुत घरेलू विस्तार काटि संक्षिप्त करू।’

देवकान्त फेर वाक्य देखलनि। हुनका लगल, ई जोड़ला पर लेख भोजन-वर्णनसँ निकलि सामाजिक तर्क दिस चलि जाएत। सम्पादक कदाचित काटि देत। कदाचित पूरा लेख देर करि देत। तीन दिनक समय छल।

माधवी डलिया उठौने पूछलक, “की अटकल?”

देवकान्त पन्नापर हाथ रखि देलनि। “किछु नहि। निष्कर्ष छोट करैत छी।”

“देखाबी?”

“एखन मसौदा अछि।”

माधवी किछु क्षण हुनकर चेहरा देखलक, फेर कहल, “ठीक। पूरा भेला पर देखब।”

ओ चलि गेल।

देवकान्त हाथ हटौलनि। लाल घेरा देल वाक्य फेर सोझाँ आयल।

ओ अंग्रेजी प्रतिलिपिमे ओकरा नहि राखलनि।

मनमे कहलनि—पाछाँक विस्तृत लेखमे रहत। पोथीमे तऽ रहबे करत। ई केवल छोट पत्रिका-लेख अछि। एखन समय नहि।

ई निर्णय हुनका तुरन्त अपराध जकाँ नहि लगल। उलटे व्यावहारिक लगल। जे बात मूल पोथीमे सुरक्षित अछि, ओकरा एक छोट लेखमे छोड़ला सँ की होएत? बादमे पूरा स्थान देल जा सकैत अछि।

ओ मसौदा आगाँ बढ़ौलनि।

किछु बेर बाद माधवी आपस आयल। “पूरा?”

“प्रायः।”

“अन्तिम पाँति?”

देवकान्त अंग्रेजी निष्कर्षक आशय मैथिलीमे सुनौलनि—मिथिलाक भोजन ऋतु, जल, खेत आ घरक अनुभवसँ बनैत अछि; संरक्षणक विविध ढंग वर्ष भरि स्वाद बचबैत अछि।

माधवी सुनि कऽ चुप रहल।

“की भेल?” देवकान्त पूछलनि।

“किछु नहि।”

“नहि, कहू।”

माधवी पन्ना दिस देखलक। “हम काल्हि जे पाँति लाल घेरने रही, से?”

देवकान्तक भीतर किछु धक् सँ भेल।

“ई लेखमे नहि राखलहुँ।”

“किएक?”

“ठाम कम अछि। आ लेख भोजनपर अछि। श्रेयक बात विस्तृत पोथीमे नीक सँ आएत।”

माधवी डलिया जमीनपर राखि देलक। “भोजन के बनबैत?”

“हम जानैत छी अहाँ की कहय चाहैत छी।”

“तखन भोजनपर लेखमे बनौनिहारक नाँवक बात बाहर केना?”

देवकान्त धीरे कहलनि, “बाहर नहि। एखन स्थगित।”

“स्थगित बात फेर आबि जाएत, एकर भरोसा के?”

“हम।”

माधवीक चेहरा पर न हँसी छल, न क्रोधक खुला चिन्ह। बस ओ एक क्षण बहुत स्थिर भऽ गेल।

“अहाँ लिखि लिअ—‘बादमे’।”

देवकान्त चौंकलाह। “की?”

“जे पाँति काटलहुँ, ओकर कात लिखू—‘बादमे’। तखन कम-से-कम पन्ना जानत जे ई भूलि नहि गेल, टारल गेल।”

देवकान्त मूल पन्नाक कात सचमुच लिखलनि—‘अगिला विस्तृत लेखमे।’

माधवी देखलक। “तिथि सेहो।”

ओ तिथि लिखलनि।

“आ अंग्रेजी मसौदामे कोनो चिन्ह?”

देवकान्त कनी रुकलाह, फेर निष्कर्षक कात छोट बिन्दु लगा देलनि।

माधवी कहल, “बिन्दु सँ पाठक नहि बुझत।”

“ई हमरा याद रखबाक लेल।”

“तँ याद राखू।”

माधवी डलिया उठा लेलक। बाहर धूप तेज भऽ गेल छल। अमटक टुकड़ासभ आब पहिल दिनक तुलनामे बहुत हलुक, सिकुड़ल, गाढ़ रंगक छल। ओ सभ बचि रहल छल—मुदा बदलल रूपमे।

देवकान्त पत्रिका-लेखक पन्ना समेटलनि। लेख आब अधिक साफ, छोट, पठनीय छल। हुनका भीतर हलुक सन्तोष सेहो छल—तीन दिनक भीतर काज पूरा होएत।

मुदा लाल घेरा देल वाक्य मूल पोथीमे खुलल रहि गेल।

साँझि माधवी सुखायल आमक एक टुकड़ा देवकान्तक सोझाँ रखलक। “चखू।”

देवकान्त टुकड़ा मुँहमे रखलनि। रस प्रायः नहि छल; खटास गाढ़ छल, धूपक हलुक गन्ध संग।

“पहिल दिन जकाँ?” माधवी पूछलक।

“नहि।”

“आम नहि रहल?”

देवकान्त धीरे कहलनि, “अछि। मुदा बदलल।”

माधवी उत्तर नहि देलक।

देवकान्त मूल पन्ना दिस देखलनि। हुनका एक क्षण लेल लगल—लेखक छोट करबाक काजो सुखेनाइ जकाँ अछि। बहुत पानि हटैत अछि; किछु स्वाद गाढ़ होइत अछि। मुदा भूल सँ जे काटि देल जाए, ओ फेर सहज नहि लौटैत।

ओ एहि विचारक नोट बनयबाक लेल कलम उठौलनि, फेर रोकि देलनि।

किछु बात एखन लिखब योग्य नहि लगल। कदाचित एहि कारण जे लिखि देला पर ओकर जिम्मेदारी स्पष्ट भऽ जाइत।

राति अन्हार खसबाक समय ओ पत्र लिफाफामे रखलनि। लाल घेरा देल वाक्य पोथीमे रहि गेल; अंग्रेजी लेखमे नहि गेल।

ई छोट छोड़ छल। देवकान्त स्वयं एकरा छोट मानैत छलाह।

देवकान्तक एहि निर्णयक नाम एखन एतबे छल—पहिल छोड़।

अध्याय १७ — अरिकञ्चन

अमटक डलिया भीतर उठि गेलाक बाद घरमे वर्षाक प्रतीक्षा जकाँ एक विराम आयल। हवा गरम छल, मुदा साँझि-दुपहर बाद बादरक टुकड़ी देखाइ पड़य लागल। एहनहि एक भोर माधवी भानसघरक ओसारपर पैघ-पैघ कचूक पात पसारि देने छल। पातक हरियर देहपर नस सभ मोट रेखा जकाँ उभरल छल।

हेमलता पातक कात बैसल छल। ओकर सोझाँ एक बाटीमे मसाला-मिलल लेप छल, जकरा माधवी कनी-कनी उठा पातपर पसारैत छल। देवकान्त पहुँचला पर पहिने दूरसँ देखलनि। पछिला किछु सप्ताहक अनुभव हुनका सिखा देने छल जे नव पकवान देखिते प्रश्न पर प्रश्न करब उचित नहि।

जानकी कहलनि, “आब देखू, पात भीतर की राखैत अछि।”

देवकान्त हँसलाह। “बगिया बाद फेर भीतर-बाहर?”

माधवी बिना माथ उठौने कहलक, “भोजनमे भीतर-बाहर बहुत अछि। लेखककेँ एहि सँ प्रेम भऽ गेल अछि, दोष भोजनक नहि।”

पातक उल्टा भाग ऊपर छल। माधवी नसक उभार देखबैत हेमलता केँ कहलक, “एतए लेप बराबर पसारू। कात खाली छोड़ू नहि।”

हेमलता लेप उठेलक, मुदा एक ठाम बहुत मोट लगा देलक।

माधवी ओकर हाथ रोकलक। “एतेक नहि। तह पर तह पड़त। पहिल तहहि भारी भऽ गेल तँ मोड़ब कठिन।”

देवकान्त कलम खोललनि। “तह पर तह—”

माधवी आँखि उठेलक। “पहिने पात देखू।”

ओ कलम फेर बन्द कएलनि।

एक पातपर लेप पसारला बाद माधवी दोसर पात ओकर ऊपर एहि ढंगसँ राखलक जे नसक दिशा कनी बदलि गेल। फेर लेप। तेसर पात। फेर कात भीतर मोड़ल गेल। पूरा ढेरी धीरे-धीरे एक सघन रूप लेलक।

हेमलता पूछलक, “एहि कै अरिक्ञ्चन किएक कहैत अछि?”

माधवी कनी रुकी। “नामक कथा हम निश्चित नहि जानैत छी। जे नहि जानैत छी से नहि गढ़ब।”

देवकान्त तुरन्त नोटबुक खोलि लिखलनि—‘नामक उत्पत्ति: जाँच बाकी।’

जानकी हँसलीह। “ई पाँति आब तोहर पोथीक आधा भाग खा जाएत।”

“खाली ठाम बचत,” देवकान्त कहलनि। “खाली ठाम बेठीक बातसँ नीक।”

माधवी पात मोड़ैत ओकरा देखलक। “एखन ई बात ठीक बुझैत छी।”

ओ ‘एखन’ देवकान्तक कानमे अटकले रहल। पछिला रातिक अंग्रेजी लेख, लाल घेरा देल पाँति, ‘अगिला विस्तृत लेखमे’—सभ एक क्षण लेल भीतर उठल। ओ किछु नहि कहलनि।

मोड़ल पातक लम्बा गठान जकाँ रूप बनल। जानकी कहलनि, “एखन एकरा जमय देब। बादक काज बादमे।”

देवकान्त पूछलनि, “ई घरमे एक्के ढंगसँ बनैत अछि?”

माधवी तुरन्त कहल, “एहि घरक ढंग लिखू। दोसर घरक ढंग दोसर हो सकैत अछि।”

देवकान्त लिखलनि—‘एहि घरमे कचूक पातपर लेप, तह पर तह, कात मोड़ि कसब।’ तकर बाद कलम रोकलनि।

“आ मसाला?”

“जतेक देखलहुँ ओतेक लिखू। सामग्रीक नाम हम बादमे जाँचि देब। अपनासँ नहि जोड़ू।”

“ठीक।”

हेमलता कहलक, “दीदी, ई पात एतेक तहमे दबि गेल, तखन भीतरक पात चिन्हाइत कोना?”

माधवी मोड़ल अरिक्ञ्चनक देहपर हथेली हलुक रखलक। “काटब तखन देखायत। तह दबैत अछि, मेटैत नहि।”

देवकान्तक कलम फेर चलय चाहलक। ओ माधवी दिस देखलनि।

माधवी मुस्करायल। “ई लिखि सकैत छी। ई हम कहलहुँ।”

ओ लिखलनि—‘माधवी: तह दबैत अछि, मेटैत नहि।’

हेमलता अपन छोट पातपर लेप फेर पसारय लागल। एहि बेर हाथक दबाव सन्तुलित छल।

देवकान्त सोचलनि—पुस्तक, लेख, अनुवाद, परिवार, स्मृति—सभमे तह पर तह पड़ैत अछि। मुदा माधवीक नियम साफ छल: जँ रूपक बनाउ, अपन नाँवपर बनाउ; दोसरक वाक्य केँ अपन अर्थक बोझ नहि बनाउ।

ओ एहि विचारकेँ पन्नापर नहि लिखलनि। केवल देखैत रहलाह जे पात एक-दोसरापर चढ़ैत, मोड़ाइत, कसाइत एक नवा रूप बना रहल अछि।

**

दुपहर बाद अरिक्ञ्चनक पहिल खेपक काज थमल तँ माधवी अपन किछु तिरहुता पन्ना निकालि ओसारक कोनमे बैसल। हेमलता कातमे छल। देवकान्त दूर मेजपर अंग्रेजी लेखक नकल साफ करैत छलाह।

हेमलता धीमे पूछलक, “दीदी, ई पन्ना लेखक बाबू केँ किएक नहि देखबैत छिए?”

माधवी उत्तर देबा सँ पहिने ओकर हाथक पन्ना सीधा कएलक। “सभ पन्ना पोथीक नहि।”

“मुदा एहि मे सेहो खाय-पिअबाक बात अछि।”

“किछु अछि।”

“तखन?”

माधवी हेमलता दिस देखलक। “जँ हम अपन नानीक कथा लिखी, तकर अर्थ ई नहि जे जे लोक भोजनक पोथी लिखैत अछि ओकरा पूरा कथा देब जरूरी अछि।”

हेमलता कनी असन्तुष्ट भेल। “ओ तँ अहाँक नाँव लिखैत छथि आब।”

“नाँव लिखब आ सभ अधिकार भेटि जाएब एक बात नहि।”

हेमलता पन्नाक कोनमे बनल छोट पातक चिन्ह देखलक। “ई निजी पात?”

“हँ।”

“एहि मे की अछि?”

माधवी हँसल। “तोरा कहि देब तँ निजी कहाँ रहल?”

हेमलता मुँह फुला लेलक। “हम तऽ अपन लोक छी।”

“अपन लोकक बीचो निजी ठाम रहैत अछि।”

ई वाक्य देवकान्तक कान धरि पहुँचल कि नहि, माधवी नहि जानैत छल। ओ दूर बैसल छलाह, मुदा ओसारक शान्तिमे आवाज बहुत दूर नहि जाइत।

हेमलता फेर पूछलक, “अहाँ हुनका भरोसा नहि करैत छी?”

माधवीक हाथ रुकल।

“भरोसा आ सीमा दुश्मन नहि,” ओ धीरे कहलक। “जकरा पर भरोसा करैत छी, ओकरा सीमा कहि सकैत छी। सीमा कहिते जँ भरोसा टूटि जाए, तखन ओ भरोसा छलहि नहि।”

हेमलता एतेक गम्भीर उत्तर लेल तैयार नहि छल। ओ किछु बेर पन्ना देखैत रहल।

“आ जँ ओ पूछताह?”

“हम कहब—नहि।”

“रिसायताह?”

“रिसाएब हुनकर अधिकार। पन्ना देब कि नहि, ई हमर।”

हेमलता धीरे-धीरे माथ हिलेलक।

माधवी ओकरा अपन कोरा कागज देलक। “चल, आब तिरहुता लिख। काल्हि जे अक्षर बिगाड़ने रही, फेर लिख।”

हेमलता लिखय लागल। किछु बेर बाद ओ हँसि कहलक, “हमर अक्षर लेखक बाबूक पहिल दिनसँ नीक अछि।”

माधवी सेहो हँसल। “ई बात हुनका सोझाँ कहिह।”

दूर मेजपर देवकान्त एक्कासि माथ उठेलनि। “की बात?”

हेमलता जोर सँ कहल, “हमर तिरहुता अहाँक पहिल दिनसँ नीक!”

देवकान्त उत्तर देलनि, “ई न्याय नहि। हमरा पहिल दिनक पन्ना प्रमाणक रूपमे बचल अछि।”

“हमरो बचत,” हेमलता कहलक।

माधवीक हँसी खुलि गेल।

क्षणभरि पहिले सीमा, निजता, भरोसाक गम्भीर बातचीत छल; अगिला क्षण तीनू हँसि रहल छल। एहि घरक जीवन बारम्बार एना करैत—गंभीर बातक ऊपर हलुक हँसीक परत चढ़ा दैत, बिना बातकें मेटौने।

माधवी निजी पन्नासभ फेर कपड़ामे लपेटलक। छोट पातक चिन्ह अन्तिम बेर देखायल।

देवकान्त मेजसँ ओहि दिस देखलनि। हुनका केवल एतेक बुझायल जे माधवी किछु पन्ना अलग राखैत अछि। कतेक बेर ओ एहि सभक बारेमे पूछने छलाह; कतेक बेर उत्तर ‘नहि’ भेटल छल।

ओ अपन अंग्रेजी नकलपर नजरि आपस लऽ गेलाह। मुदा ‘निजी ठाम’क वाक्य, चाहे पूरा सुनने होथि वा आधा, हुनकर भीतर किछु देर धरि गूँजैत रहल।

साँझि देवकान्त पोथीक पन्ना क्रममे राखैत छलाह। अरिक्ञ्चनक पन्ना, आमक अमट, तिलकोर, माछ—सभकें अलग कागजक पट्टी लगा कऽ राखल जा रहल छल। माधवी कातमे बैसल सामग्री-सूची जाँचि रहल छल।

देवकान्त बहुत देर सँ एक प्रश्न रोकने छलाह। अन्ततः कहला, “एक बात पूछी?”

माधवी बिना देखे कहलक, “पूछू।”

“अहाँक निजी पन्नामे भोजनक जे बात अछि, ओकर किछु हिस्सा पोथी लेल उपयोगी भऽ सकैत अछि?”

माधवी लिखाइ रोकलक। “भऽ सकैत अछि।”

“तखन हम...?”

“नहि।”

देवकान्त पूरा वाक्य कहियो नहि सकलाह।

ओ कनी असहज हँसलाह। “अहाँ उत्तर पहिनहि दऽ देलहुँ।”

“प्रश्न पुरान अछि।”

“हम केवल पोथीक भाग देखय चाहैत छी।”

“जे पोथीक भाग होएत, हम अलग कऽ देब।”

“मुदा चयन अहाँ करब।”

“हँ।”

“जँ अहाँक हिसाबसँ गैरजरूरी, मुदा हमर हिसाबसँ जरूरी?”

माधवी सीधा देखलक। “हमर निजी पन्ना मे की जरूरी, एकर अन्तिम निर्णय हमर।”

देवकान्तक भीतर हलुक विरोध उठल। “पोथी हमर जिम्मेदारी सेहो अछि।”

“पोथी—हँ। हमर निजी कागज—नहि।”

“जँ किछु इतिहासक महत्त्वक हो?”

“तखन इतिहास हमर अनुमति बिना घरमे घुसत?”

वाक्य कठोर छल, मुदा स्वर ऊँच नहि।

देवकान्त चुप भऽ गेलाह। किछु क्षण बाद कहला, “हम एना नहि कहय चाहैत रही।”

“मुदा बात ओतहि जा रहल छल।”

“हो सकैत अछि।”

माधवी कागज समेटलक नहि। ओ बैसल रहल। “अहाँ हमरा सँ बहुत बात पूछैत छी। हम बहुत बात कहैत छी। एहि कारण कदाचित अहाँ केँ लगैत अछि जे जे नहि कहल, ओकरा देखने अधिकारो बनि गेल।”

देवकान्तक चेहरा बदलल। “हम अधिकार शब्द नहि कहने छी।”

“अधिकार सभ बेर शब्दमे नहि अबैत।”

दूर भानसघरमे जानकी बासन रखबाक आवाज करैत छलीह। अन्हार खसबाक पहिल छाँह आँगनक एक कात उतरि रहल छल।

देवकान्त धीरे कहलनि, “तँ सीमा फेर साफ कहू।”

माधवी एक-एक शब्द ठहराकऽ कहलक, “जे पन्ना पर छोट पातक चिन्ह अछि, ओ अहाँ नहि पढ़ब। जे पन्ना हम अपनै देब, ओ पोथी लेल। जँ किछु पूछबाक हो, हमरा पूछब। जँ हम नहि कहब, खाली ठाम खाली रहत।”

देवकान्त माथ हिलेलनि।

“आ एक बात,” माधवी जोड़लक, “प्रेम, मित्रता, काज—किछुओ निजी पन्नाक चाबी नहि।”

‘प्रेम’ शब्द पहिल बेर एतेक खुला रूपमे दुनूक बीच आयल, यद्यपि प्रेमक घोषणा नहि भेल छल। देवकान्तक साँस एक क्षण बदलल।

ओ पूछलनि, “अहाँ एहि शब्दकें एखन किएक आनलहुँ?”

माधवीक आँखि हटली नहि। “किएक तँ सीमा जतेक गाढ़ सम्बन्ध, ओतेक साफ कहब जरूरी।”

देवकान्त उत्तर खोजैत रहलाह। अन्तमे केवल कहला, “ठीक।”

माधवीक चेहरा नरम नहि भेल, मुदा तनाव कनी घटल।

देवकान्त अपन पन्नापर एक नियम लिखलनि—‘निजी स्रोत बिना अनुमति नहि देखब; उपलब्ध नहि सामग्री कें अनुमानसँ नहि भरब।’

माधवी पढ़लक। “ई नियम पोथी लेल?”

“पोथी लेल। हमरा लेल सेहो।”

“दूनूक अन्तर बुझैत छी?”

“एखन एतबे कहि सकैत छी।”

माधवी हलुक हँसल। “एखन।”

फेर दुनू अपन-अपन काजमे लागि गेल। मुदा ओसारक हवा बदलि गेल छल। निकटता घटल नहि; उलटे ओकर चारूकात एक सीमा बनल—दूर करबाक नहि, आकार देबाक।

**

राति मेघ घेरि आयल। तेज हवा चलल आ पहिल मोट बूँद पड़िते घरमे कपड़ा, डलिया, कागज भीतर करबाक दौड़ मचि गेल। माधवी अरिकञ्चनक पातक शेष सामग्री समेटय भानसघर दिस गेल; हेमलता छतसँ अमटक एक छोट डलिया उतारि आनय दौड़ल।

देवकान्त ओसारपर खुलल पोथी बचबैत कागज समेटय लागलाह। हवा एक गठरी खोलि देलक। किछु पन्ना जमीनपर फिसलि गेल।

ओ झुकि एक-एक उठा रहल छलाह कि एक पन्ना उलटि हुनकर सोझाँ आ पड़ल। कोनमे छोट पातक चिन्ह।

माधवीक निजी पन्ना।

देवकान्तक हाथ ठमकल।

पन्ना पूरा खुलल छल। तिरहुता लिखाइ घनी। बीचमे देवनागरीक दू-तीन शब्द, सम्भवतः नाम। हुनका एखन एतेक तिरहुता चिन्हाइत छल जे चाहथि तँ धीरे-धीरे किछु पाँति पढ़ि सकथि।

बाहर वर्षा एक्कासि तेज भेल। छप्परपर पानिक आवाज बढ़ल। भानसघर दिस सँ माधवीक पएरक आहट एखन दूर छल।

देवकान्त एक क्षण पन्ना देखैत रहलाह।

मनक पहिल आवाज कहल—एतए कदाचित पोथीक उपयोगी सामग्री अछि। केवल एक नजरि। बादमे माधवीसँ पूछब। जे किछु सार्वजनिक काजक होएत, ओकरा छोड़ब किएक?

दोसरी आवाज अधिक सरल छल—ओ कहने अछि नहि पढ़ब।

देवकान्तक अँगुरी पन्नाक कात छल। ओ चाहथि तँ पन्ना घुमाकऽ ऊपरसँ पढ़य शुरू करथि।

ओ नहि पढ़लनि।

ओ पन्ना जेना पड़ल छल तेना उठौलनि, लिखाइ दिस आँखि टिकौने बिना। कपड़ाक गठरी खोजि छोट पातक चिन्हयुक्त पन्ना ओकर भीतर राखि देलनि। फेर गठरी मोड़ि ओसारक ऊँच ठाम राखि देलनि।

माधवी दौड़ैत आयल। ओकर केशक कात पानीक दू बूँद चमकि रहल छल। “कागज?”

“बचि गेल।”

ओ चारूकात देखलक। “हमर गठरी?”

देवकान्त ऊँच ठाम दिस इशारा कएलनि। “हवा खोलि देने छल। एक पन्ना खसि गेल छल। उठा कऽ राखि देलहुँ।”

माधवीक चेहरा एकदम स्थिर भऽ गेल। “पातक चिन्हयुक्त?”

“हँ।”

“पढ़लहुँ?”

देवकान्त बिना विलम्ब कहलनि, “नहि।”

माधवी किछु क्षण ओकरा देखैत रहल। बाहर वर्षा एतेक तेज छल जे दूनों केँ आवाज ऊँच नहि करितहुँ कनी नजदीक झुकि सुनय पड़ैत छल।

“खुलल छल?”

“हँ।”

“तिरहुता चिन्हाइत अछि आब।”

“किछु।”

“तखन?”

“अहाँ ‘नहि’ कहने छी।”

एहि बेर माधवीक आँखिक भाव बदलल। ओ धन्यवाद नहि कहलक। कदाचित धन्यवाद कहब सेहो सीमा पालन केँ उपकार बना दैत। बस गठरी हाथमे लेलक, पन्ना जाँचलक, फेर कात रखि देलक।

“एकटा बात?” देवकान्त पूछलनि।

“कहू।”

“अहाँ हमरा विश्वास कएलहुँ?”

माधवी तुरन्त उत्तर नहि देलक। फेर कहलक, “विश्वास जाँचबाक लेल पन्ना फेकल नहि छल।”

देवकान्त हँसलाह। “जानैत छी।”

“मुदा आब जे भेल, से याद रहत।”

“पोथीमे?”

“नहि।”

“किएक?”

“ई हमर-आहाँक बीचक बात अछि। सभ बात पोथीमे नहि।”

देवकान्तक चेहरापर हलुक हँसी आयल। “ओहि रातिक बात।”

“एखन याद अछि।”

वर्षा कनी थमल। छप्परक धार सँ पानि एखन निरन्तर गिरैत छल, मुदा पहिले जकाँ कोलाहल नहि।

जानकी भीतरसँ बजेलनि—“अरिक्ञ्चनक काज पूरा करब कि राति भरि कागज पहरू?”

माधवी हँसि उत्तर देलक, “आब अबैत छी।”

दुनू भानसघर दिस गेल। मोड़ल पातक गठान आब काटबाक योग्य भऽ चुकल छल। माधवी चाकू उठेलक। पहिल टुकड़ा कटिते भीतरक तह सभ गोल-गोल रेखा जकाँ खुलि गेल—बाहरसँ एक देह, भीतर अनेक पात।

हेमलता चकित भऽ कहलक, “दीदी, सचमे सभ तह देखाइत अछि।”

माधवी कहल, “कहने रही—दबैत अछि, मेटैत नहि।”

देवकान्त ओहि कटाल टुकड़ा देखैत रहलाह। ओ चाहथि तँ एहि क्षण केँ सम्बन्धक रूपक बना सकैत छलाह। मुदा ओ किछु नहि लिखलनि।

माधवी ओकरा देखलक। “आइ रूपक नहि?”

“अछि,” देवकान्त कहलनि, “मुदा ई हमर मनमे रहय।”

माधवीक मुखपर हँसी आयल। “सीखि रहल छी।”

“एखन?”

“एखन।”

बाहर वर्षा फेर हलुक पड़य लागल। भानसघरमे कचूक पात, मसालाक गन्ध आ गरम
भापक संग अरिकञ्चनक टुकड़ासभ सजल।

देवकान्तक पोथी ओसारपर बन्द पड़ल छल। निजी पन्ना अपन गठरीमे सुरक्षित छल।

ओहि राति पोथीमे अरिकञ्चनक विधिक काजक संकेत लिखल गेल, बनौनिहारक नाँव
लिखल गेल, घर-विशेषक सीमा लिखल गेल।

माधवीक निजी पन्ना सम्बन्धी किछु नहि लिखल गेल।

कखनो-कखनो जे बात नहि लिखल जाए, ओहि नहि-लिखाइमे सेहो सम्मान रहैत
अछि।

अध्याय १८ — नाम रहित विधि

पहिल बरखाक दू दिन बाद कदिमाक बेलमे फूल बहुत फूटल। भोरक बेर ओ सभ पीयर उजास जकाँ पसरल छल; दुपहर चढ़िते किछु फूल मुरझाय लगैत। माधवी एहि कारण सूरज चढ़बा सँ पहिने फूल चुनि अनलक। सभ फूल नहि—जे ताजा, पूरा खुलल, आ देहपर कीड़ा वा सड़नक चिन्ह नहि।

जानकी भानसघरक दुआरि पर फूल देखिते कहलीह, “आइ ई बनाउ। बरखा बढ़ल तँ फूलक चाल बदलि जाएत।”

देवकान्त पाछिल रातिक पन्ना समेटि रहल छलाह। फूलक ढेरी देखिकऽ पूछलनि, “कदिमाक फूल?”

माधवी कहल, “हाँ। मुदा नाम लिखबा सँ पहिने काज देखू।”

ई वाक्य आब हुनका परिचित छल। ओ कलम खोललनि, मुदा केवल तिथि लिखि रोकि गेलाह।

माधवी फूलक डाँठक कड़ा भाग अलग कएलक। कोमल फूल साफ कऽ एक कपड़ापर पसारल गेल। जानकी चाउरक पीठार मँगेलनि। पीठारमे नून, कनी मसाला आ पानि मिलायल गेल। माधवी कहलक, “गाढ़ एतेक जे फूलपर टिकय; एतेक पातर नहि जे बहि जाए।”

देवकान्त हँसलाह। “ई वाक्य तिलकोरक पन्नापर सेहो अछि।”

“काज मिलि सकैत अछि; वस्तु एक नहि।”

“तँ नवा विधि?”

“नवा अहाँ लेल। हमरा नानीक घरमे ई पुरान छल।”

देवकान्त तुरन्त कलम चलौलनि। “नानीक घर?”

माधवी ओकर हाथ रोकलक। “पहिने फूल।”

फूल पीठारमे हलुक डुबाओल गेल। जानकी तेलक ताप देखलीह। पहिल फूल तेलमे पड़िते हलुक फेन उठल, पंखुड़ी सिकुड़ि कऽ पीठारक भीतर थामि गेल।

हेमलता उत्साहसँ पूछलक, “ई तऽ फूलक तरुआ भेल?”

माधवी कहलक, “एतए लोक एना कहि सकैत अछि। हमर नानीक घरमे एकर दोसर नाँव छल।”

देवकान्त कलम रोकलनि। “की नाँव?”

माधवी कनी सोचलक। “उच्चारण ठीक याद अछि, मुदा लिखित रूप जाँचबाक चाही। हम चाहैत छी नानीक बहिनसँ पूछि लिअ।”

“तखन शीर्षक?”

“एखन खाली छोड़ू।”

देवकान्त पन्नाक ऊपर एक रेखा खींचि खाली ठाम छोड़ि देलनि। तिथि नीचे रहल, नामक ठाम रिक्त।

हेमलता हँसि पड़ल। “नाम बिना पकवान?”

जानकी कहलीह, “नाम बादमे आबत। पहिने जरा नहि।”

पहिल फूल निकालल गेल। पीठारक आवरण हलुक सुनहरायल छल, मुदा पंखुड़ीक रूप एखनहुँ भीतर चिन्हाइत। माधवी एक टुकड़ा तोड़ि देखलक—भीतर फूल नरम, बाहर आवरण कुरकुर।

देवकान्त लिखलनि—‘फूल कोमल हो; पीठार गाढ़ हो; तेलक ताप एतेक जे आवरण तुरन्त थामि जाए, भीतर फूल जरा नहि।’

माधवी पन्ना पढ़लक। “ठीक। मुदा ‘कुरकुर’ शब्द स्वादक हिस्सा अछि, नियम नहि।”

देवकान्त कातमे लिखलनि—‘बनावट: बाहर कुरकुर, भीतर कोमल।’

“एखन नीक।”

दोसरा खेपमे हेमलता स्वयं फूल पीठारमे डुबेलक। एक फूल बहुत बेर पीठारमे घुमौलक, ताहि सँ आवरण मोट भऽ गेल।

माधवी कहलक, “फूल ढाँकू, दबाउ नहि।”

देवकान्त ई वाक्य लिखिते रुकलाह।

“रूपक?” माधवी पूछलक।

“आब हम चुप रहब।”

“सीखि रहल छी।”

फूलक गन्ध तेलक गन्धमे पूरा मेटायल नहि। देवकान्त चखलनि तँ तिलकोर सँ एकदम अलग स्वाद भेटल—पंखुड़ीक हलुक मिठास, पीठारक नून, तेलक गरमाहट।

“एहि केँ अंग्रेजीमे की कहब?” ओ पूछलनि।

माधवी हँसल। “पहिने मैथिली नाँव निश्चित करू, फेर अंग्रेजी बचाउ।”

देवकान्त रिक्त शीर्षक दिस देखलनि। पन्ना विधिसँ भरि रहल छल, मुदा नाँवक ठाम उज्जर खाली ठाम छल।

ओहि उज्जर ठामक अर्थ एखन साधारण छल—जाँच बाकी। मुदा खाली ठाम सभ बेर खाली नहि रहैत; कखनो ओतए ककरो नाँव रहबाक छल।

✽✽

दुपहरमे फूलक तरुआ थारीमे गेलाक बाद देवकान्त पन्ना फेर खोललनि। शीर्षक एखनहुँ रिक्त छल। नीचे विधि, समयक अनुमान, पीठारक दशा, फूल चुनबाक चिन्ह—सभ लिखल। एक पाँति खाली छोड़ि ओ माधवी दिस देखलनि।

“आब नानीक घरक बात?”

माधवी ओसारपर बैसि गेल। “ई हम नानीसँ सीखलहुँ। नानी अपन जेठ बहिनसँ सीखने छलीह। दुनू बहिन बरखाक पहिल फूल निकलला पर बनबैत छलीह।”

देवकान्त पूछलनि, “नानीक नाँव?”

माधवी बिना विलम्ब कहल, “धनेश्वरी।”

देवकान्त पन्नामे ‘स्रोत’ लिखि किछु ठाम छोड़लनि, मुदा तत्क्षण नाँव नहि लिखलनि।

माधवी देखलक। “की भेल?”

“हम सोचैत छी—पहिले पकवानक नाँव निश्चित हो, तखन स्रोतक पाँति पूरा करब।”

“दुनू बात एक-दोसरापर निर्भर किएक?”

“पन्ना साफ रहत।”

माधवीक चेहरा बदलल नहि, मुदा स्वर कनी कड़ा भेल। “पकवानक नाँव जाँचबाक अछि। जकरा सँ सीखल, ओकर नाँव तऽ जाँचबाक नहि।”

देवकान्त किछु क्षण चुप रहलाह। “ठीक बात।”

मुदा ओ नाँव लिखबाक बदला पेंसिलसँ छोट चिन्ह लगा देलनि। “बादमे स्याहीसँ।”

माधवी पूछलक, “बादमे किएक?”

“एखन पन्ना पूरा करैत छी। एके बेर साफ लिखब।”

“अहाँक साफ पन्नामे लोकक नाँव सभ अन्तमे किएक अबैत अछि?”

प्रश्न सीधा छल।

देवकान्त कहला, “सभ नहि।”

“रमानन्दक नाँव अहाँ बादमे जोड़ने छलहुँ। नसीमाक तुरन्त, किएक तँ हम कहने रही। हमर तिलकोरक पन्नापर हस्ताक्षर हम अपनैँ केने रही। आब नानीक नाँव फेर ‘बादमे’।”

देवकान्तक हाथ स्थिर भऽ गेल।

“हम जानि-बुझि कऽ नहि छोड़ैत छी।”

“छोड़नाइ सभ बेर जानि-बुझि कऽ होइत अछि?”

ओ उत्तर नहि देलनि।

माधवी आगाँ कहल, “अहाँ सामग्रीक नाँव तुरन्त लिखैत छी—फूल, पीठार, नून, तेल। बनौनिहारक नाँव पर पन्ना साफ होएबाक प्रतीक्षा किएक?”

देवकान्त पन्ना अपन कात खींचलनि। स्याहीक कलम खोललनि। ‘स्रोत: धनेश्वरी सँ माधवी द्वारा सीखल’ लिखय लगलाह। बीचमे रुकि पूछलनि, “एना?”

माधवी पढ़लक। “हम नानीसँ सीखलहुँ। नानी अपन जेठ बहिनसँ। जँ दोसर नाँव नहि जानैत छी तँ ‘जेठ बहिन’ लिखू; अपनासँ नाँव नहि बनाउ।”

देवकान्त लिखलनि—‘माधवीक नानी धनेश्वरी; हुनका अनुसार हुनकर जेठ बहिनक घरक प्रचलन।’

माधवी कनी देर पन्ना देखैत रहल। “एखन ई पन्ना कम-से-कम जानैत अछि जे विधि आकाशसँ नहि खसल।”

देवकान्त हलुक हँसलाह। “कठोर वाक्य।”

“कठोर नहि। साधारण सत्य।”

ओहि समय जानकी भीतरसँ बजेलनि। माधवी उठि गेल।

देवकान्त एकाकी पन्ना देखैत रहलाह। शीर्षक रिक्त, स्रोत भरल। किछु बेर बाद ओ स्रोतवाली पाँतिक कात छोट पेंसिल चिन्ह लगा देलनि—एहि हेतु जे साफ नकल बनैत समय स्थान बदलय पड़त।

तखन डाकक काज, घरक हिसाब, दोसर पन्ना—दिन आगाँ बढ़ि गेल।

साँझि जखन देवकान्त नकल बनय बैसलाह, रिक्त शीर्षक हुनका खटकल। ओ पेंसिल सँ लिखल स्रोत-पाँति अलग कागजपर उतारय चाहलनि। स्याही कनी फैलि गेल। ओ कपड़ासँ हलुक पोछलनि।

‘माधवी’ शब्दक पहिल भाग धुँधला भऽ गेल।

देवकान्त तुरन्त फेर लिखबाक सोचलनि, मुदा ओहि क्षण बाहरसँ आवाज आयल—
डाकिया आएल छल।

ओ पन्ना खुलले छोड़ि उठि गेलाह।

राति धरि पन्ना आपस नहि खुलल।

अगिला दिन देवकान्तक नजरि धुँधलायल पाँतिपर पड़ल। ओ पेंसिलसँ कातमे लिखलनि—‘साफ नकलमे पूरा करब।’

पकवानक नाँव एखनहुँ रिक्त छल। स्रोत-पाँति एखन आधा धुँधला।

माधवी ओ दिन पन्ना नहि देखलक।

एक छोट स्थगन फेर जन्म लेलक।

२०२६ मे मृणालिनी भानस-पोथीक ओहि पन्ना धरि पहुँचला पर पहिने शीर्षकक खाली ठाम देखलक। पृष्ठक ऊपर तिथि छल, तकर नीचे एहन उज्जर पट्टी जेना ककरो नाँव लिखबाक लेल जानि-बुझि कऽ छोड़ल गेल हो।

पन्नाक बीच भोजन-विधि साफ छल—कदिमाक कोमल फूल, पीठारक गाढ़ापन, तेलक ताप, फूलक बनावट। मृणालिनी एहि अंशकेँ पढ़ि तुरन्त बूझि सकैत छल जे ई कदिमा-फूलक तरुआ जकाँ पकवान अछि। मुदा देवकान्त शीर्षक किएक नहि देने छलाह, ई प्रश्न अलग छल।

पन्नाक नीचाँ स्याहीक रंग बदलैत छल। मूल लेखन गाढ़ कारी-भूर; एक पाँति कनी हलुक; ओकर कात पेंसिलक महीन चिन्ह।

मृणालिनी पन्ना खिड़की लग लऽ गेल। उजास तिरछा पड़ला पर पोंछल स्याहीक एक धब्बा देखायल। धब्बाक भीतर अक्षरक रेखा एखनहुँ पूरा मेटायल नहि छल।

ओ मोबाइल सँ तस्वीर लेलक। फेर एक दोसर तस्वीर तिरछा उजासमे। तेसर तस्वीर बिना चमकक।

शशिभूषण दुआरिपर आबि पूछलनि, “की भेटल?”

मृणालिनी बिना माथ उठौने कहलक, “एक पन्ना।”

“पोथीमे तँ सभ पन्ना अछि।”

“ई पन्ना अपना भीतर दू पन्ना जकाँ अछि।”

शशिभूषण हँसलाह। “तोहर भाषा आब देवकान्त जकाँ भऽ रहल अछि।”

मृणालिनी हुनका बजा कऽ पन्ना देखेलक। “एतए नाँव छल कि नहि?”

शशिभूषण चश्मा ठीक कऽ बहुत नजदीक सँ देखलनि। “धब्बा अछि। पुरान कागजमे होइत अछि।”

“मुदा धब्बाक भीतर अक्षर अछि।”

“अक्षर हो सकैत अछि। एहि सँ की?”

मृणालिनी उत्तर नहि देलक। ओ लैपटॉप खोलि तस्वीर स्थानान्तरित कएलक। तस्वीर बढ़ौला पर कागजक रेशा, स्याहीक फैलाव, पेंसिलक रेखा अलग-अलग देखाय लागल।

ऊपरक रिक्त शीर्षक साधारण खाली ठाम छल; नीचाँक धुँधलायल पाँति अधिक विचित्र।

मृणालिनी केँ पहिने देखल माधवीक तिरहुता हस्ताक्षर याद आयल—ओ अक्षर जकर फोटो ओ सुरक्षित कऽ चुकल छल। ओ पुरान तस्वीर खोलि दुनू केँ कात-कात राखलक।

शशिभूषण पूछलनि, “की तुलना करैत छह?”

“हाथ नहि। नाँव।”

“कोन नाँव?”

मृणालिनी उत्तर देबाक पहिने छविक चमक घटेलक। धब्बाक भीतर देवनागरी अक्षर जकाँ रेखा छल, तिरहुता नहि। पहिल दू-तीन चिन्ह ‘मा...’ दिस संकेत करैत छल, मुदा पूरा पढ़ब सम्भव नहि।

ओ नोट बनौलक—‘निश्चित पाठ नहि। सम्भवतः “माध...”’; मूल पृष्ठक भौतिक जाँच आवश्यक।’

शशिभूषण पन्ना देखैत कहलनि, “तँ तूँ अनुमानहि करैत छह।”

मृणालिनी तुरन्त उत्तर देलक, “एखन अनुमान लिखि रहल छी, तथ्य नहि।”

शशिभूषण किछु नहि कहलनि।

मृणालिनी केँ अपन अभिलेख-पोथीमे लिखल नियम याद छल—जे नहि बुझब, अपनासँ नहि भरब। ई नियम आब दस्तावेज पढ़बाक नहि, इतिहास सम्पादित करबाक आधार बनि रहल छल।

ओ पन्नाक पूरा प्रतिलिपि बनय लगल। शीर्षकक ठाम लिखलक—‘[रिक्त]’।
धुँधलायल स्रोत-पाँतिक ठाम—‘[आंशिक; सम्भवतः नाम]’।

ई पहिल बेर छल जखन ओ देवकान्तक पोथी केँ केवल भोजनक संग्रह नहि, संशोधन आ मेटावक दस्तावेज जकाँ पढ़य लागल।

**

साँझि मृणालिनी पुरान आ नवा सभ तस्वीर एक फोल्डरमे राखलक। ओहि फोल्डरक नाँव देलक—‘पृष्ठ ४३—नाम/स्रोत जाँच’। पृष्ठ-संख्या परिवारक पुरान नकल अनुसार छल; बादक सम्पादनमे बदलि सकैत छल, तँ ओ फाइलमे मूल पृष्ठक फोटो सेहो जोड़लक।

ओ तस्वीर बहुत अधिक बढ़ेलक। धब्बाक आसपास कागजक रंग सामान्य छल, मुदा अक्षरक ऊपर हलुक घसाव देखाइत। ई जानि-बुझि कऽ मेटाओल गेल कि स्याही फैलला पर पोंछल गेल—एखन निष्कर्ष सम्भव नहि।

मृणालिनी एहि अन्तरकें विशेष रूपसँ लिखलक। ‘मेटाओल’ कहब आकर्षक छल, मुदा प्रमाण एखन ‘पोंछल/घसाइल क्षेत्र’ धरि सीमित।

तकर बाद ओ १९३४ केर आस-पासक पन्ना फेर देखलक। किछु ठाम देवकान्त बादमे शब्द सुधारने छलाह; किछु ठाम माधवी किनारमे टिप्पणी जोड़ने छलीह; किछु ठाम पेंसिलक निशान बादक नकल लेल छल। अतः अलग रंगक स्याही अपनैँ अपराधक प्रमाण नहि।

मुदा एहि पन्नामे तीन बात एक संग छल—शीर्षक रिक्त; स्रोत-पाँति धुँधलायल; आ ओकर भीतर सम्भवतः ‘माध...’ अक्षर।

मृणालिनी एक नव सारणी नहि, साधारण नोट बनौलक:

‘१. विधि पूर्ण। २. पकवानक नाँव रिक्त। ३. स्रोत-पाँति पछिला/अलग स्याहीमे। ४. पाँतिक एक भाग पोंछल। ५. पोंछल भागमे “मा...” वा “माध...” जकाँ अक्षर सम्भव। ६. निष्कर्ष स्थगित।’

ईशान ओहि समय भीतर आयल। हाथमे भोजनालयक नमूना-मेनू छल। “तोरा एक बात देखेबाक छल—कदिमा फूलक तरुआ राखी कि नहि?”

मृणालिनी स्क्रीन दिस देखलक, फेर ओकर मेनू दिस। “एखन ई नाँव कतऽ सँ अनलह?”

“घरमे बनैत छल। बसन्ती काकी कहलीह।”

“ठीक। मुदा पोथीमे एहि विधिक शीर्षक रिक्त अछि।”

ईशान हँसल। “तँ लिखि दे—कदिमा फूलक तरुआ। विधि तऽ वएह अछि।”

“नहि।”

“किएक? सोझाँ फूल, पीठार, तेल—आ की चाही?”

मृणालिनी स्क्रीनपर धुँधलायल पाँति देखलक। “किएक तँ कखनो नाम खाली होएबाक कारण केवल भूल नहि होइत। आ स्रोतक नाँव सेहो साफ नहि।”

ईशानक हँसी घटल। “फेर की करब?”

“पहिने जाँचब।”

“भोजनालय तीन मास बाद खुलत। इतिहास जाँचैत-जाँचैत फूलक मौसम बीति जाएत।”

मृणालिनी कहलक, “मौसम फेर आएत। बेठीक श्रेय छपि गेल तँ ओहो फेर-फेर दोहराओल जाएत।”

ईशान किछु बेर चुप रहल। “तू ई पोथी केँ बहुत गम्भीर बना रहल छह।”

“पोथी पहिने सँ गम्भीर अछि। हम आब देखय लगल छी।”

ईशान मेनू मोड़ि देलक। “ठीक। एखन पकवानक नाँव राखब नहि।”

“मेनूमे?”

“नहि। जाँच होएबा धरि।”

मृणालिनी ओकरा देखलक। ई छोट सहमति छल, मुदा महत्त्वपूर्ण। १९३४ मे जे रिक्त ठाम स्थगन छल, २०२६ मे वएह रिक्त ठाम सावधानी बनि सकैत छल।

ईशान चलि गेलाक बाद मृणालिनी फेर छवि खोललक। ‘माध...’ जकाँ रेखा एखनहुँ अस्पष्ट छल। ओ चाहिते ‘माधवी’ लिखि सकैत छल। पाछिल भेटल प्रमाणसभ ओकरा ओहि दिशामे धकेलैत छल; मन सेहो।

मुदा ओ नहि लिखलक।

ओ केवल प्रश्न लिखलक—‘ई माधवीक नाँव छल?’

प्रश्नचिह्न ओकरा एखन उत्तरसँ अधिक आवश्यक लगल।

राति फाइल बन्द करबा सँ पहिने ओ मूल पन्नाक प्रतिलिपि फेर पढ़लक। विधि पूरा छल; बनावट, ताप, फूल चुनबाक ढंग—सभ। जकरा सँ ई ज्ञान आयल, ओकर पाँति धुँधली।

मृणालिनी केँ एकाएक बुझायल जे अदृश्य श्रम सभ बेर अनुपस्थित नहि होइत; कखनो ओकर चिन्ह कागजपर रहैत अछि, मुदा पाठक नजरि नहि दैत।

एहि पन्ना पर पहिल ठोस संशय जन्म लेने छल।

एखन प्रश्न केवल ई नहि रहल जे पोथीमे दू हाथ किएक अछि।

प्रश्न ई भऽ गेल—ककर नाँव लिखल गेल, ककर नाँव टारल गेल, आ ककर नाँव बादमे एतेक हलुक भऽ गेल जे अगिला पीढ़ी ओकरा धब्बा मानि सकैत छल।

अध्याय १९ — जनकपुरक बाट

भोर फूटबा सँ पहिने आँगनमे यात्रा-काज शुरू भऽ गेल। जानकी एक छोट कपड़ाक पोटरिमे चूड़ा, गुड़ आ सत्तू अलग-अलग बाँधि देलीह। एक दोसर झोरामे नून, काँच मिरचाइ, दूटा प्याज आ पानि पीबाक लोटा। माधवी सुखाओल आमक किछु टुकड़ा सेहो रखलक।

देवकान्त पोटरि देखैत पूछलनि, “एतेक भोजन बाटमे लगत?”

जानकी कहलीह, “बाट कतेक लम्बा होएत, ओ केवल कोस नहि गिनैत। गाड़ी रुकत, पानि रोकत, धूप रोकत, लोक रोकत। भूख सभसँ पहिने पहुँचैत अछि।”

माधवी जोड़लक, “चूड़ा-पानि भेटत तँ एक ढंग; सत्तू भेटल पानि सँ दोसर। गुड़ थोड़ेक खा लेलहुँ तँ देह चलैत रहत। ई भोज नहि, बाटक सहारा अछि।”

देवकान्त नोटबुक निकालबाक लेल हाथ बढ़ेलनि, फेर अपनैँ हँसि रोकि लेलनि। “पहिने खायब, तकर बाद लिखब?”

जानकी प्रसन्न भेलि। “एखन किछु सीखलहुँ।”

दल छोट छल—देवकान्त, माधवी, हेमलता, घरक एक बुजुर्ग सेवक गोनू आ दू बैलगाड़ी। एक गाड़ीमे सामान, दोसरमे लोक बेराबेरी बैसैत-उतरैत। बाटक बहुत हिस्सा पैदल चलब आसान छल, विशेषतः जतए गाड़ी कच्चा गड्ढामे फँसैत।

जनवरीक भूकम्पक चिन्ह एखनहुँ बहुत ठाम देखाइत छल। ककरो देवाल आधा बनल, ककरो छप्पर नव; कतहु बाटक कात माटिक ढेरी। गरमी बढ़ि रहल छल, मुदा बरखा एखन पूरा नहि आयल छल।

देवकान्त जयनगर दिसक बाटक नक्शा बनेबाक चेष्टा करैत छलाह। गोनू एक ठाम कहलक, “कागजमे ई बाट सीधा होएत, धरतीपर नहि।”

“किएक?”

“काल्हि जे नाला छोट छल, आइ पानि बढ़ल तँ गाड़ी दोसर कात। ककर खेतमे मेड़ टूटल, तकर हिसाब नक्शा नहि जानैत।”

माधवी देवकान्त दिस देखलक। “रेखा पहिने, धरती बादमे?”

देवकान्त कहला, “आब नहि। एखन धरती पहिने।”

सूरज ऊपर चढ़ला पर एक पीपरक छाँहमे दल रुकल। पोटरी खुलल। चूड़ा हाथे-हाथ बाँटल गेल। ककरो लोटामे पानि, ककरो लग दहीक छोट मटकी जे बाटक एक गामसँ खरीदल गेल छल। गुड़ तोड़ि छोट टुकड़ा बनाओल गेल।

हेमलता चूड़ा-दहीमे गुड़ मिला कऽ खाइत कहलक, “घरक थारीसँ नीक।”

माधवी पूछलक, “किएक?”

“किएक तँ एतए पातिल धोयबाक काज नहि।”

सभ हँसि पड़ल।

देवकान्त चूड़ा हाथमे लेने पूछलनि, “यात्राक भोजनक नाँव अलग होइत अछि?”

माधवी कहलक, “भोजनक नाँव बदलय जरूरी नहि। प्रसंग बदलैत अछि। घरमे चूड़ा-दही एक भोजन; बाटमे वएह चूड़ा सहारा। अर्थ थारीक संग बदलैत अछि।”

देवकान्त एहि बेर नोट कएलनि।

किछु दूर आगाँ बढ़ला पर धूप तेज भेल। गाड़ीवान बैलकें धीरे चलबैत छल। हेमलता पैदल चलैत-चलैत थाकि गाड़ीपर चढ़ि गेल। माधवी एखनहुँ पैदल छल।

देवकान्त पूछलनि, “अहाँ नहि बैसब?”

“बैसब। एखन चलब नीक लगैत अछि।”

“धूप?”

“धूप हमरा देखैत अछि, हम धूपकें। दुनू अपना-अपना काज करैत छी।”

देवकान्त हँसलाह।

किछु बेर बाद माधवी स्वयं गाड़ीपर चढ़ि गेल। देवकान्तक कात खाली ठाम छल, मुदा ओ हेमलताक कात बैसल। देवकान्त एहि छोट चयनकें किछु अर्थ देब चाहलनि, फेर अपन नियम याद कएलनि—जे नहि जानैत छी, ओकरा अपनासँ नहि भरब।

ओ नक्शा पर नजरि आपस लऽ गेलाह।

दुपहर उतरैत दल सीमा दिस बढि रहल छल। कागजक हिसाबसँ राज बदलत; बाट,
धूलि, भाषा आ धूप एखनहुँ वएह छल।

**

सीमाक कात पहुँचला पर देवकान्तक मनमे जे भिन्नता छल, धरतीपर ओतेक साफ
नहि देखायल। कतहु खम्भा, कतहु चौकी, कतहु अधिकारीक आवाज—मुदा ओहि सभक
बीच लोक अपन बोलीमे मोलभाव करैत, बैल हाँकैत, पोटरी उठबैत आगाँ-पाछाँ जा रहल
छल।

गोनू धीमे कहल, “एतए सँ नेपालक इलाका।”

हेमलता चारूकात देखलक। “की बदलल?”

“राज,” देवकान्त उत्तर देलनि।

“आ माटि?”

“माटि नहि।”

माधवी कहलक, “लोकक विवाहो एतए-ओतए अछि। ककरो नैहर एक कात, ककरो
ससुरार दोसर कात। रेखा नातेदारी काटैत नहि।”

ओहि समय सोझाँ सँ दू स्त्री आबि रहल छलीह। एक मैथिलीमे पूछलीह—“जनकपुर
जाए छी?”

माधवी हँ कहलक। स्त्री बाटक हालत, आगेक पानि आ बजारक भीड़ सम्बन्धी सूचना
देलीह। उच्चारणमे किछु ध्वनि अलग छल, मुदा बात सहज बुझाइत छल।

देवकान्त बहुत ध्यानसँ सुनलनि। स्त्रीसभ आगाँ बढि गेलापर ओ पूछलनि, “अहाँक
गामक बोलीसँ कनी भिन्न?”

माधवी कहलक, “हँ। मुदा एतेक नहि जे दोसर भाषा बुझाउ। एक घरमे बहिनसभक
बोलियो एक नहि होइत।”

देवकान्त लिखलनि—‘सीमा पार उच्चारण बदलैत, बोध नहि टूटैत।’

माधवी पन्ना देखलक। “सभ ठाम? ई एक भेटक आधारपर लिखब?”

देवकान्त तुरन्त ‘एहि बाटक एहि भेटमे’ जोड़लनि।

“एखन ठीक।”

आगाँ एक छोट बजार पड़ल। दही, चूड़ा, फल, तेल, कपड़ा, सुपारी, पान—कतेको वस्तु। देवकान्तक कान एक विक्रेताक आवाजपर टिकि गेल। ओ ‘चिउरा’ कहि पुकारि रहल छल।

हेमलता हँसि माधवीसँ कहलक, “चूड़ा चिउरा भऽ गेल।”

विक्रेता सुनि मुस्करायल। “अहाँ सभ चूड़ा कहैत छी? एतए किछु लोक चिउरा कहैत अछि।”

देवकान्त तुरन्त नजदीक गेलाह। “एके वस्तु?”

विक्रेता कहल, “देखू।”

सोझाँ धानक चिपटायल चूड़ा छल। देवकान्त एक मुट्ठी देखलनि।

माधवी कहलक, “नामक भिन्नता नोट करू, मुदा ई नहि लिखू जे नेपालमे सभ ‘चिउरा’ कहैत अछि।”

देवकान्त हँसलाह। “अहाँ हमरा लिखबा सँ पहिने काटि दैत छी।”

“काटबासँ नीक पहिने रोकब।”

बजारमे एक गीतक धुन सुनाइ पड़ल। शब्दक बहुत हिस्सा ओहि पारक गाममे सुनल विवाह-गीतसँ मिलैत छल, किछु पाँति अलग। हेमलता सहजहि धुन पकड़ि लेलक।

माधवी कहलक, “देखू—गीत सीमा पर कागज देखबैत नहि।”

देवकान्त एहि वाक्यकेँ लिखब चाहलनि, फेर पूछलनि, “अहाँक नाँवसँ?”

“लिखू।”

ओ लिखलनि—‘माधवी: गीत सीमा पर कागज देखबैत नहि।’

किछु बेर बाद गोनू सत्तू घोलबाक लेल पानि खोजलक। एक दुकानदार माटिक घड़ासँ पानि देलक। ओहि पानि मे सत्तू, कनी नून आ मिरचाइ मिलाओल गेल। दुकानदार पूछलक, “गुड़ नहि?”

गोनू कहलक, “गुड़ अलग खाइत छी।”

दुकानदार हँसल। “हम तँ कखनो मिला लैत छी।”

देवकान्त ई छोट भिन्नता देखैत रहलाह। एके सामग्री, दोसर ढंग।

माधवी कहलक, “ई लिखू—भोजनक सीमा नक्शा जकाँ सीधा नहि।”

देवकान्त प्रश्न कएलनि, “ई बात कतए समाप्त होएत?”

“जतए अहाँ ‘सभ एना करैत अछि’ लिखब छोड़बा।”

दिन ढलि रहल छल। जनकपुर एखन दूर नहि, मुदा बाटक एहि छोट बजारमे देवकान्त केँ पहिल बेर साफ बुझायल—राजकीय सीमा एक रेखा हो सकैत अछि; सांस्कृतिक सीमा अनेक एक-दोसरामे समायल घेरा जकाँ अछि।

ओ मैथिलीमे लिखलनि—‘रेखा एक; जीवनक घेरा अनेक।’

**

जनकपुर पहुँचला पर देवकान्तक पहिल इच्छा नगरक नक्शा बनयबाक भेल। पोखरि, मंदिर, बजार, धर्मशाला, मुख्य बाट—सभ चिन्हित करथि। दल एक धर्मशालामे ठहरल। सामान रखलाक बाद माधवी कहलक, “पहिने नगर चलि देखू, तकर बाद नक्शा।”

देवकान्त स्वीकार कएलनि।

नगरमे भीड़ छल। तीर्थयात्री, स्थानीय लोक, व्यापारी, साधु, बच्चा, माछ-विक्रेता, पान बेचनिहार, वस्त्रक दुकान—सभ आवाज एक-दोसरापर चढ़ैत। देवकान्तक कान नाम पकड़ैत चलल।

एक ठाम ओ बगिया जकाँ वस्तु देखलनि, मुदा विक्रेता दोसर नाँव कहलक। देवकान्त तुरन्त पूछलनि।

माधवी बीचमे रोकलक। “पहिने देखू जे वस्तु सचमे वएह अछि कि केवल रूप मिलैत अछि।”

विक्रेता हँसि कऽ भीतरक भरावन देखेलक। पीठारक प्रकार, भरावन आ पकयबाक ढंग घरक बगियासँ किछु अलग छल।

देवकान्त लिखलनि—‘रूप मिललासँ नाम/विधि समान नहि मानब।’

माधवी कहलक, “ई नियम केवल भोजन लेल नहि।”

“मनुख लेल सेहो?”

“अहाँ फेर रूपक पर।”

दुनू हँसल।

एक दोसर दुकानपर चूड़ा ‘चिउरा’ कहल जा रहल छल; कतहु वएह लोक ‘चूड़ा’ सेहो कहि दैत। देवकान्त नोट कएलनि—‘एके वक्ता दू रूप उपयोग करैत।’

माधवी कहलक, “भाषा नक्शा पर रंग भरि अलग नहि रहैत। लोक एक-दोसरासँ शब्द लैत-दैत अछि।”

देवकान्त एहि विचार सँ उत्साहित भेलाह। धर्मशाला आपस पहुँचि ओ कागज खोललनि। दक्षिण दिस अपन बाट, उत्तर-पूर्व दिस जनकपुर, बीचमे सीमा-रेखा। तकर ऊपर शब्द लिखय लगलाह—चूड़ा/चिउरा; एक गीतक दू पाँति; पानक समान नाम; किछु उच्चारणक भेद।

माधवी देखैत रहल।

“की?” देवकान्त पूछलनि।

“अहाँ फेर रेखा खींचि रहल छी।”

“एहि बेर सावधानीसँ।”

“रेखा उपयोगी अछि। मुदा रेखा केँ सत्यक पूरा रूप नहि मानू।”

देवकान्त नक्शापर सीमा दिस देखलनि। “तखन की करू?”

माधवी एक कोरा कागज लेलक। सीमा पर सीधी रेखा खींचल, फेर ओकर आर-पार छोट-छोट तीर बना देलक—विवाह, गीत, बाजार, तीर्थ, शब्द, भोजन।

“ई?”

“आवागमन। रेखा रहय, मुदा ओकर आर-पार चलन सेहो देखाउ।”

देवकान्तक चेहरा चमकि उठल। “ई नक्शा पोथीमे रहत।”

माधवी तुरन्त कहलक, “हमर नाँव?”

देवकान्त हँसलाह। “नक्शा—माधवीक सुझावपर।”

“सुझाव नहि। तीर हम बनौने छी।”

देवकान्त कलम उठौलनि—‘सीमा-पार चलनक तीर: माधवी।’

माधवी संतुष्ट भेल।

हेमलता कातमे बैसल नक्शा देखैत कहलक, “हमरो तीर?”

“तोहर की?” देवकान्त पूछलनि।

“गीत। बाजारमे जे धुन पकड़लहुँ, ओ एहि पार सेहो गाबि सकैत छी।”

देवकान्त एक तीरक कात लिखलनि—‘गीत—हेमलता द्वारा सुनी/दोहराओल।’

हेमलता गर्वसँ मुस्करायल।

राति भोजनक समय धर्मशालामे चूड़ा-दही, किछु तरकारी आ पान भेटल। देवकान्त थारी देखैत कहला, “कागज पर देश बदलल, थारी पूरा अपरिचित नहि।”

माधवी कहलक, “परिचित कहि सब समान नहि मानू।”

“अहाँक प्रत्येक वाक्य चेतावनी किएक?”

“किएक तँ अहाँ प्रत्येक परिचित बातसँ सामान्य नियम बनाबय लगैत छी।”

देवकान्त हँसलाह। “आब कम।”

“कम, मुदा समाप्त नहि।”

ओहि राति नक्शा खाटीक कात खुलल रहल। सीमा-रेखा साफ छल; ओकर आर-पार माधवीक तीर सभ अधिक जीवित बुझाईत छल।

**

अगिला दिन जनकपुरक मुख्य मंदिर-परिसर आ बाजारक भीड़ पिछला दिनसँ बेसी छल। दल साथ चलि रहल छल, मुदा प्रवेश-दुआरि लग भीड़ एक्कासि घना भऽ गेल। हेमलता जानकीक परिचित एक वृद्ध तीर्थयात्री स्त्रीक हाथ पकड़ि आगाँ बढ़ि गेल; गोनू सामान सम्हारय पछिला कात रुकल।

देवकान्त एक दुकानक सोझाँ मात्र दू क्षण लेल ठमकलाह—पुरान ताड़पत्रक प्रतिलिपि जकाँ किछु देखाइ पड़ल छल। ओ माथ उठौलनि तँ माधवी नजदीक नहि।

ओ चारूकात देखलनि। पीयर, लाल, उज्जर कपड़ा; फूलक माला; धूपक धुँआ; पानक दुकान; बच्चाक आवाज; घंटी। माधवी कतहु नहि।

पहिल क्षण ओ सोचलनि—ओ हेमलता संग आगाँ गेल होएत।

दोसरा क्षण—कदाचित बाजारक कात।

तेसर क्षणमे विचारक क्रम टूटि गेल।

देवकान्त भीड़ चीरि आगाँ बढ़लाह। हेमलता भेटल, माधवी नहि।

“दीदी?” हेमलता स्वयं पूछलक।

देवकान्तक चेहरा देखिते ओकर हँसी ओझरा गेल।

गोनू पाछाँ सँ आबि कहल, “ओ तँ अहाँ सभ संगहि गेल छलीह।”

देवकान्तक देहमे किछु ठंढा दौड़ि गेल। जनकपुर अपरिचित नगर नहि छल, भाषा बुझाइत छल, लोक सभ अनजान शत्रु नहि छल—तथापि भीड़मे एक मनुख ओझराइतहि पूरा नगर अनिश्चित भऽ गेल।

ओ मंदिरक कात, पोखरिक बाट, बाजारक मोड़—तीन दिशा देखलनि।

“हेमलता, एतहि रह। गोनू, अहाँ ओकरा संग।”

ओ स्वयं बाजार दिस चललाह। पहिने तेज, फेर प्रायः दौड़ैत।

किछु दूर एक पानक दुकानक कात माधवी ठाढ़ छल। ओकर संग एक वृद्धा छलीह, जे बाट पूछैत-पूछैत उलझि गेल छलीह; माधवी हुनका धर्मशाला दिसक बाट बुझा रहल छल।

देवकान्त ओकरा देखते रुकि गेलाह।

माधवी सेहो हुनका देखलक। “की भेल?”

देवकान्त किछु क्षण बोलि नहि सकलाह।

“हेमलता कतए?” माधवी पूछलक।

“सुरक्षित अछि।”

“तखन?”

देवकान्तक साँस एखनहुँ तेज छल। “अहाँ बिना कहने एतए...”

माधवीक भौंह तनिक उठल। “हम एहि वृद्धा केँ बाट देखबय आयल रही। दू पग।”

“दू पग बहुत भेल।”

वाक्य निकलि गेल।

दुनू चुप। वृद्धा धन्यवाद कहि चलि गेलीह।

माधवी धीरे पूछलक, “बहुत भेल—किएक?”

देवकान्त उत्तर खोजलनि। सामान्य उत्तर छल—भीड़, अपरिचित नगर, सुरक्षा। मुदा हुनका बुझाईत छल जे भय केवल व्यवस्था भंग होएबाक नहि छल।

ओ कहला, “एक क्षण हमरा लगल अहाँ भेटब नहि।”

माधवीक चेहरा नरम भेल, मुदा ओ तुरन्त हँसी नहि।

देवकान्त आगाँ कहला, “आ ओ क्षणमे... हमरा बुझायल जे पोथी, नोट, यात्रा—ई सभसँ बाहर अहाँक अनुपस्थिति हमरा कतेक बदलि दैत।”

माधवीक आँखि देवकान्तपर स्थिर रहल।

“ई प्रेमक घोषणा अछि?” ओ बहुत धीमे पूछलक।

देवकान्त चौकलाह। “हम—”

माधवीक मुखपर हलुक हँसी आयल। “उत्तर हतबड़ीमे नहि दिअ। अहाँ हतबड़ीमे लिखैत छी, हतबड़ीमे अर्थो बना लैत छी।”

देवकान्त सेहो हँसलाह, मुदा राहत एखनहुँ देहमे काँपि रहल छल।

“तखन की कही?”

“एखन एतबे जे हम भेटि गेलहुँ।”

“आ जे हम डरि गेल रही?”

“ओ अहाँक अनुभव। ओकरा काटू नहि।”

दुनू साथ आपस चलथ लगल। भीड़ एखनहुँ ओतेकहि छल, मुदा देवकान्त केँ आवाज कम तीक्ष्ण लगैत छल।

माधवी किछु दूर चलि पूछलक, “जँ हम सचमे ओझरा जाइत?”

देवकान्त तुरन्त कहला, “खोजैत रहितहुँ।”

“कतेक बेर?”

“जतेक लगैत।”

माधवी किछु नहि कहलक।

मंदिरक दुआरि लग हेमलता दूरसँ हाथ हिला रहल छल। ओ दुनू केँ साथ देखिते कहलक, “दीदी भेटि गेलीह!”

देवकान्त उत्तर देलनि, “हँ।”

हेमलता हँसि माधवीसँ कहलक, “लेखक बाबूक चेहरा देखबाक छल!”

माधवी देवकान्त दिस देखलक। “हम देखलहुँ।”

ओहि साँझि धर्मशालामे देवकान्त नोटबुक खोललनि। दिनक यात्रा, बाजार, मंदिर, भीड़—सब लिखबाक सामग्री छल। मुदा ओ एक पन्ना खाली छोड़ि देलनि।

माधवी पूछलक, “आइ किछु नहि लिखब?”

“सीमा, शब्द, नक्शा—सभ लिखब। ई एक बात नहि।”

“किएक?”

देवकान्त कहला, “किएक तँ ई पोथीक स्रोत नहि। ई हमर डर अछि।”

माधवी किछु क्षण ओकरा देखलक। “तखन ठीक।”

देवकान्त पन्ना पलटलनि। अगिला पन्नापर सीमा-रेखा आ आर-पार तीर बनल छल।

हुनका लगल—किछु दूरी नक्शापर नापल जा सकैत अछि; किछु दूरी केवल ओ क्षण बतबैत अछि जखन ककरो अनुपस्थिति एक्कासि असह्य भऽ उठैत अछि।

ओ एहि वाक्यकेँ सेहो नहि लिखलनि।

राति बाहर जनकपुरक घंटी आ दूरक गीतक आवाज मिलि रहल छल। राजक सीमा पार भऽ गेल छल; देवकान्तक भीतर एक दोसर सीमा एखन पहिल बेर स्पष्ट देखाइ पड़ल।

अध्याय २० — वर्षा

जनकपुर सँ घुरलाक तेसर दिन भोरहि सँ आकाशक रंग बदलल छल। बादर पहिने पूब दिस घेरल, फेर बिना हतबड़ी कएने पूरा आकाश ढाँकि लेलक। हवा मे ओहि बेरक गन्ध छल जे बरखा पड़बा सँ पहिने माटि अपनैँ साँस रोकि प्रतीक्षा करैत बुझाइट अछि।

जानकी आँगनमे पसारल धानक एक छोट ढेरी देखिते हेमलता कैँ बजेलनि, “जे बाहर अछि सभ भीतर करू। कपड़ा, डलिया, कागज—किछु छोड़ू नहि।”

माधवी छतपर सुखयबाक लेल राखल शेष अमट उठबय दौड़ल। देवकान्त ओसारपर जनकपुरक नक्शा सँ शब्द-सूची अलग कऽ रहल छलाह।

पहिल बूँद पैघ छल। आँगनक धूलि पर गोल दाग बनल। दोसर, तेसर, दसमा—किछु क्षणमे बूँद गिनबाक काज समाप्त। पानी एक्कासि एतेक घना भेल जे सोझाँक आमक गाछ आधा धुँधला पड़ि गेल।

हेमलता दरबज्जा लग ठाढ़ भऽ चिचियेलक, “दीदी! अमटक दोसर डलिया!”

माधवी भीजल आँचर समेटैत फेर बाहर निकलल। देवकान्त उठय लगलाह तँ जानकी रोकलीह, “कागज सम्हारू। ओतए माधवी अछि।”

देवकान्त एक क्षण ठमकलाह। ओसारक मेजपर पोथी, अंग्रेजी लेख, जनकपुरक नक्शा, किछु तिरहुता अभ्यास-पन्ना—सभ खुलल। हवा बूँद भीतर फेकि रहल छल।

ओ पन्नासभ उठा कऽ भीतरक कोठरीमे रखय लगलाह।

माधवी अमटक डलिया लऽ कऽ आपस आयल। माथ सँ पानि टपकि रहल छल। “एकटा बचल।”

“एकटा?” देवकान्त पूछलनि।

“छोट डलियाक किछु टुकड़ा भीजि गेल। अलग राखने छी। फेर धूप भेटत तँ देखब की बचैत अछि।”

जानकी कहलनि, “भीजल सुखायल सामग्री केँ बिना देखे भण्डारमे नहि राखब। नमी भीतर रहि गेल तँ सभ बिगड़त।”

देवकान्त सुनिते पन्ना खोजय लगलाह। माधवी देखलक। “एखन?”

“ई काजक बात अछि।”

“पहिने खिड़की बन्द करू।”

देवकान्त हँसि खिड़कीक काठक पट बन्द कएलनि। बरखाक आवाज एखन कनी मन्द भेल, मुदा छप्परपर पड़ैत पानिक निरन्तर थाप घरक भीतर भरल रहल।

दुपहर धरि बाटपर पानि जमा भऽ गेल। आँगनक निचला कोनमे छोट धार बहय लागल। बाहरी चूल्हि बुझि गेल; भानसघर भीतर खिसकल।

जानकी भण्डार देखलीह। ताजा साग-पात आनब कठिन होएत, बाजारक बाट की दशा अछि से खबर नहि। ओ दालि, चाउर, सुखौना, अचार, पुरान अदौरी आ अमट अलग-अलग देखैत गेलीह।

देवकान्त पूछलनि, “बरखाक पहिल दिन भोजन पहिनेसँ तय होइत अछि?”

जानकी कहलीह, “बरखा तय करैत अछि जे कतेक तय चलत। घरमे जे सुरक्षित अछि, ओही पहिने देखब।”

माधवी एक डिब्बा खोलि अदौरी देखलक। “एखन ई उपयोगी होएत। धूपक दिनमे जे सुखाओल गेल, पानिक दिनमे ओ काज अबैत अछि।”

देवकान्त लिखलनि—‘धूपक श्रम बरखामे भोजन बनैत अछि।’

जानकी पन्ना देखलनि नहि, मुदा सुनि कहलीह, “सुन्दर लिखलहुँ। मुदा ई सेहो लिखू जे जँ धूपक दिन आलस केने रहितहुँ तँ आइ डिब्बा खाली रहित।”

हेमलता हँसल। “आइ आलसक इतिहास लिखू।”

माधवी कहल, “आलस नहि। आगाँक दिन सोचबाक काज।”

भोजन सरल बनल—भात, दालि, अदौरीक तरकारी, अचार। बरखाक कारण नहि, उपलब्धताक कारण।

देवकान्त थारी देखैत कहला, “ताजा वस्तु कम, मुदा भोजन अधूर नहि।”

माधवी उत्तर देलक, “घरक भण्डार ऋतुक संग बात करैत अछि। जाड़मे जे राखल, गरमीमे जे सुखाओल, बरखामे ओ उत्तर दैत अछि।”

बरखा बाहर लगातार पड़ैत रहल। घरक भीतर सुखायल पदार्थसभक गन्ध उठल। देवकान्त केँ बुझायल—भोजनक इतिहास केवल खेतमे जे उगैत अछि ओ नहि; जे बचा कऽ राखल जाइत अछि, ओहो बराबर महत्त्वक अछि।

**

बरखा तेसर दिनो थमल नहि। कखनो महीन, कखनो मोट धारा। आँगनक माटि नरम भऽ गेल, बाटपर बैलगाड़ी कम देखाइत। बाजारसँ ताजा सामग्री आननिहार लोक देर सँ पहुँचैत अथवा लौटि जाइत।

भानसघरमे आब भण्डारक डिब्बा अधिक खुलय लागल। एक दिन अमट, दोसर दिन अचार, कतहु सुखाओल साग, कतहु अदौरी। जानकी सभ सामग्रीक गन्ध पहिले जाँचैत छलीह—नमी, फफूँद, कीड़ा, बासीपन।

हेमलता पूछलक, “सुखायल सामग्री तऽ बिगड़ैत नहि?”

जानकी कहलीह, “सुखायल रहबाक अर्थ अमर होएब नहि। हवा, नमी, डिब्बा, हाथ—सभ देखय पड़त।”

माधवी जोड़लक, “जे बचेल्हुँ, ओकरा फेर-फेर देखभाल चाही।”

देवकान्त ई वाक्य लिखलनि। तकर कात अपनैँ लेल नोट कएलनि—‘संग्रह करब आ संरक्षण करब अलग काज।’

माधवी पन्ना पढ़लक। “ई पोथी लेल उपयोगी अछि।”

“कागज लेल सेहो?”

“सभ वस्तु लेल जे समय पार करय चाहैत अछि।”

देवकान्त ओकरा देखलनि। निजी पन्ना, माधवीक हस्ताक्षर, नाम रहित विधि—सभ एक साथ मनमे आयल।

दुपहरमे एक पड़ोसी युवक भीजल धोती निचोड़ैत आँगनमे आयल। ओ खबर अनलक—कमला-बलान दिस पानि बढ़बाक बात चलि रहल अछि; किछु नीचला खेतमे पानी चढ़ि गेल। खबर निश्चित नहि, मुदा गाममे चिन्ता फैलि रहल छल।

जानकी प्रश्न कएलनि, “के कहलक?”

“बाजारसँ आबि रहल लोक।”

“अपनेँ देखल?”

“नहि।”

माधवी देवकान्त दिस देखलक। दुनूक चेहरापर एके भाव आयल।

देवकान्त पूछलनि, “लिखी—‘पानि बढ़ि रहल अछि’?”

माधवी कहलक, “लिखू—‘खबर अछि’। जे देखल नहि, ओकरा देखल जकाँ नहि लिखू।”

ओ पन्नापर लिखलनि—‘गाममे खबर: कमला-बलान दिस पानी बढ़बाक चर्चा। प्रत्यक्ष जाँच नहि।’

युवक हँसल। “एतेक सावधानी सँ खबर ककरो लग पहुँचत?”

माधवी कहलक, “बेठीक खबर तेज भागैत अछि। सत्य बात धीरे जाए तँ किछु बिगड़त नहि।”

साँझि धरि दोसर खबर आयल—एक नाला उफनल, किछु पथ बंद। घरक पुरुषसभ बैल, धान, कागज, जरूरी वस्तु ऊँच ठाम करबाक बात करय लगल।

जानकी भण्डारक अनाज ऊपरक कोठरीमे खिसकयबाक आदेश देलीह। माधवी डिब्बासभ गिनय लागल। हेमलता सूची लिखलक।

देवकान्त पूछलनि, “भोजनक सूची पहिने किएक?”

जानकी कहलीह, “पानि घरमे आबि गेल तँ भूख पुछि कऽ नहि आएत जे कोन किताब बचेलहुँ।”

वाक्य कठोर छल, मुदा सच।

माधवी तुरन्त कहलक, “कागजो बचत। मुदा पहिने देह जियायब।”

देवकान्त माथ हिलेलनि।

राति भात कम पकायल गेल; चूड़ा, सत्तू, गुड़ अलग बाँधि तैयार राखल गेल जे चूल्हि बुझला पर काज आए। पानि उबालि माटिक घड़ामे भरल गेल।

हेमलता पूछलक, “ई सभ यात्रा जकाँ किएक?”

माधवी कहल, “आपदा घरकें यात्रा बना दैत अछि। नहि जानि अगिला पहर कोन कोनमे बैसि खायब।”

देवकान्त एहि पाँतिक नाँव सहित नोट कएलनि।

राति बरखाक ध्वनि बीच कोनो लोक नीक सँ नहि सुतल। बीच-बीचमे ककरो पएरक आवाज, दरबज्जा खुलब, आँगनक पानि देखब, गोठक बैल जाँचब।

देवकान्त कें बुझायल जे भण्डारित भोजन केवल पाक-कौशल नहि; असुरक्षित ऋतुमे समय खरीदबाक उपाय अछि। अदौरीक एक छोट डिब्बा घरक लोक कें एक दिन बाजारक बाटपर निर्भर रहब सँ बचा सकैत अछि।

ओ एहि विचारक पन्ना बनौलनि, मुदा ऊपर लिखलनि—‘एहि घरक अनुभव।’

माधवी पढ़ि कहलक, “एखन पोथी कनी कम घमंडी भेल।”

**

पाँचम दिन भोरमे बरखा कनी थमल, मुदा आकाश खुलल नहि। ओसारक बाहरी कात भिजल छल। देवकान्त अवसर देखिकऽ कागज हवा लगय लेल बाहर पसारलनि—पूरा धूप नहि, बस नमी घटेबाक आशा।

माधवी देखिते कहलक, “एतेक बाहर नहि। बादर आपस घेरत।”

“ओसारक भीतर हवा कम अछि।”

“तखन बेराबेरी ठाम बदलू।”

देवकान्त पन्नासभ ऊँच चौकीपर पसरौलनि। जनकपुरक नक्शा, तिलकोरक पन्ना, अरिकञ्चन, अमट, नाम रहित विधि—सभ अलग-अलग।

हेमलता हँसि कहलक, “भोजनक बाद आब कागज सुखत।”

देवकान्त कहलनि, “कागजो भण्डारक वस्तु अछि।”

माधवी तुरन्त सुधरल स्वरमे कहलक, “कागज वस्तु मात्र नहि; जकर नाँव अछि, ओकर ठाम सेहो।”

देवकान्त नाम रहित विधिक पन्ना दिस देखलनि। धुँधलायल स्रोत-पाँति एखनहुँ ओकरा खटकैत छल।

माधवी ओहि पन्ना उठेलक। “ई फेर साफ करब?”

“करब। पहिने पूरा स्रोत तोरा सँ फेर सुनि लिखब।”

“तोरा सँ?” माधवी आँखि उठेलक।

देवकान्त रुकि गोलाह। “अहाँ सँ।”

हेमलता मुस्करायल।

देवकान्त कहला, “भूल भेल।”

माधवी कहलक, “भूल मानल गेल, बस।”

ओहि समय बिना चेतावनी हवा जोर सँ चलल। बाहरी बादर एकदम गाढ़ भेल। माधवी पन्नासभ समेटय शुरू कएलक।

पहिल बूँद पड़िते देवकान्त दू गठरी उठा भीतर दौड़लाह। हेमलता शेष पन्ना समेटलक। एक पतला पन्ना हवा सँ ओसारक निचला कात उड़ी गेल, जहाँ छप्परक धार टपकि रहल छल।

माधवी झपटि ओकरा उठा लेलक। पन्नाक एक कोन भीजि चुकल छल। स्याही फैलय लगल।

“ककर?” देवकान्त पूछलनि।

माधवी पन्ना सीधा करैत कहल, “माछक नोट। नसीमाक नाँव एहि कोनमे अछि।”

देवकान्तक चेहरा उतरि गेल। “स्याही?”

“फैलि रहल अछि। कपड़ा नहि रगड़ू।”

माधवी पन्ना समतल सतहपर राखलक। सूखा कपड़ा नीचे देलक, ऊपर दबाव नहि। हवा जे दिशा सँ कम नमी लऽ रहल छल, ओहि दिस खिड़कीक कात ठाम बदलल।

जानकी आबि कहलीह, “दीया दूर। आगि लागि जाएत तँ स्याही बचा कऽ की करब?”

माधवी कहलक, “हाँ।”

किछु पन्ना कातमे खड़ा करल गेल, किछु सपाट। जे सटि गेल छल ओकरा बलपूर्वक अलग नहि कएल गेल।

देवकान्त बेचैन छलाह। “नसीमाक नाँव बचत?”

माधवी फैलल स्याही देखलक। अक्षर धुँधला छल, मुदा चिन्हाइत। “कदाचित। सूखय दिअ।”

“जँ नहि?”

“दोसर नोटमे ओकर नाँव अछि?”

देवकान्त तुरन्त खोजय लगलाह। बजारक पन्ना भेटल—‘नसीमा: माछ खरीदब केवल माछ देखब नहि...’।

“अछि।”

“तखन एक स्रोत दोसर स्रोतकेँ बचा सकैत अछि।”

देवकान्त ठमकलाह।

माधवी कहलक, “एहि लेल नकल, प्रतिलिपि, नाँव—सभ अलग-अलग ठाम रहबाक चाही। एक पन्ना भीजल तँ पूरा मनुख नहि मेटय।”

वाक्य देवकान्तक भीतर उतरि गेल। ओ पोथीक पहिल पन्ना देखलनि, जतए बहुत ज्ञान केवल एक ठाम लिखल छल।

हेमलता अपन अभ्यास-पोथी कसि पकड़ने ठाढ़ छल। देवकान्त ओकरा देखलनि। “तोहर पोथी सुखल अछि?”

“हँ।”

“जतए दीदीक बात उतारने छह, सभ बचा कऽ राखिह।”

हेमलता गर्वसँ कहलक, “हम तँ राखबे करब।”

माधवी ओकरा एक क्षण देखलक, मुदा किछु नहि कहलक।

बरखा फेर जोर पकड़लक। घरक भीतर आब अनाजक डिब्बा आ कागजक पन्ना दुनू ऊँच ठाम पर छल।

देवकान्त केँ पहिल बेर साफ बुझायल—भोजन बचेनाइ आ दस्तावेज बचेनाइ अलग काज होइतहुँ एक बिन्दुपर मिलैत अछि: भविष्यक भूख अलग-अलग हो सकैत अछि। देहक भूख लेल अनाज; स्मृतिक भूख लेल नाँव।

**

राति धरि माछक पन्ना आधा सुखि गेल। नसीमाक नाँव धुँधला, मुदा पढ़ल जा सकैत छल। देवकान्त राहतक साँस लेलनि।

माधवी पन्ना हाथमे लेने कहलक, “एखन एकरा फेर नकल करू। मूल अलग राखू।”

देवकान्त कहला, “एखनहि?”

“हँ। भिजल पन्ना देखला बादो ‘काल्हि’ कहब?”

देवकान्त मुस्करौलनि। “ठीक।”

ओ साफ कागज खोललनि। पहिल पाँति—तिथि। दोसर—बजार। तेसर—नसीमाक नाँव।

माधवी कहलक, “नाँव पहिने लिखलहुँ?”

“आब क्रम बदलल।”

“बरखा सिखेलक?”

“बरखा, अहाँ, नसीमा, धुँधलायल स्याही—सभ।”

माधवीक मुखपर हलुक हँसी आयल।

देवकान्त नकल पूरा कएलनि। मूल पन्नाक नीचे पेंसिलसँ लिखलनि—‘बरखामे भीजल; नकल अमुक तिथि पर बनाओल।’

“ई किएक?” हेमलता पूछलक।

“जाहिसँ बादक लोक ई नहि बुझय जे धुँधलायल अक्षर मूलसँ एहन छल। पन्नाक इतिहासो लिखबाक चाही।”

माधवी माथ हिलेलक। “ई बात राखू।”

किछु देर बाद ओ भानस-पोथीक बाकी पन्ना गिनय लगलीह। एक पन्ना कम।

देवकान्त चौकलाह। “ककर?”

माधवी फेर गिनलक। “जनकपुरक तीर-चिन्हयुक्त नक्शा?”

हेमलता कहलक, “ओ तँ हम भीतर रखि देने रही।”

बहुत खोजला पर नक्शा एक किताबक भीतर भेटल। सभ हँसि पड़ल। तनाव कनी घटल।

जानकी भानसघर सँ बजेलनि, “कागजक लोकसभ, भोजन ठंढा भऽ रहल अछि!”

दुनू भीतर गेल। थारीमे भात कम, दालि गाढ़, अदौरीक तरकारी, अचार। बरखाक पाँचम दिन एके तरहक सामग्री फेर आएल छल, मुदा स्वाद उबाऊ नहि लगल।

हेमलता कहलक, “बरखा हमरा अदौरी सँ मित्रता करा देलक।”

जानकी उत्तर देलीह, “धूपमे बनैत समय तँ तूँ भागैत रही।”

“आब बुझलहुँ।”

माधवी कहलक, “भविष्यक काज वर्तमानमे उबाऊ बुझाइत अछि।”

देवकान्त चुटकी लेलनि, “ई पाँति नाँव सहित लिखी?”

“खाइ लिअ। सभ पाँति पोथीक नहि।”

हँसी फेर उठल।

भोजन बाद देवकान्त पन्नासभ ऊँच सन्दूकमे रखलनि। नीचे सूखा कपड़ा, बीचमे लकड़ीक पातळ पट्टी, जाहिसँ हवा चलि सकय। ओ कागजक ढेरकँ पहिने जकाँ बस एकत्र नहि रखलनि; विषय अनुसार छोट गठरी, प्रत्येक पर नाँव।

माधवी पूछलक, “ई नव व्यवस्था?”

“जँ एक गठरी भीजल तँ सभ नहि।”

“आ जँ एक नाँव एक्के ठाम रहत?”

देवकान्त सोचलनि। “तखन ओकरो दोसर ठाम प्रतिलिपि चाही।”

“बस।”

ओहि राति बरखा थोड़ेक थमल। छप्पर सँ टप-टप पानि गिरैत रहल, मुदा लगातार गर्जना नहि।

देवकान्त ओसारपर बैसि माछक नकल, मूल पन्ना आ हेमलताक अभ्यास-पोथी देखैत रहलाह।

माधवी शेष पन्ना समेटैत कहलक, “कागज बचब, लोकक नाँवो बचू।”

देवकान्त एहि वाक्य पर तुरन्त कलम रखलनि। “ई लिखब?”

“लिखू। एहि बेर पोथीक अछि।”

ओ नाँव सहित लिखलनि—‘माधवी: कागज बचब, लोकक नाँवो बचू।’

किछु क्षण बाद देवकान्त पूछलनि, “जँ कागज बचि जाए, नाँव नहि?”

माधवी उत्तर देलक, “तखन आधा बचल।”

“आ नाँव बचि जाए, कथा नहि?”

“तखन खोजबाक बाट बचल।”

देवकान्त पन्ना बन्द नहि कएलनि। ओ वाक्य फेर पढ़लनि। बाहर अन्हारमे पानि छल; भीतर भण्डारमे अदौरी, अमट, अचार, चूड़ा, दालि—आ सन्दूकमे कागज।

दुनू तरहक संग्रह अगिला दिन लेल छल।

ओहि राति पोथी पहिल बेर भोजनक विधि सँ बेसी किछु बनि रहल छल—एक एहन घर, जतए स्वादक संग स्रोत, नाँव, धब्बा, भीजल कोन, नकल आ सावधानी सभकेँ ठाम देल जा रहल छल।

अध्याय २१ — अदौरी

बरखाक पाँच दिन बाद पहिल बेर भोरक आकाश पूरा खुलल। रातिक अन्तिम बादर पूब दिस सरकि गेल छल, आ सूरज उगिते आँगनक भीजल ईटपर उजास एहन पड़ल जे घरक सभ लोक एक बेर ऊपर देखलक। जानकीक पहिल वाक्य मौसमक प्रशंसा नहि छल—
“आइ धूप व्यर्थ नहि जाए।”

माधवी भानसघरक भण्डार देखलक। दालिक एक भाग काल्हि रातियँ भिजाओल गेल छल। ओ हेमलता केँ बजा कऽ कहलक, “जँ धूप टिकि गेल तँ अदौरी देब। पहिने आँगनक ओ कोन साफ करू जतए दुपहर धरि छाया नहि पड़त।”

देवकान्त “अदौरी” शब्द सुनिते नोटबुक खोलय लगलाह, फेर स्वयं रोकि लेलनि। माधवी मुस्करायल। “प्रगति।”

“एखन पहिने देखब,” देवकान्त कहलनि।

भिजाओल दालि पीसल गेल। माधवी स्पष्ट कहल जे एहि घरक अदौरीक ढंग लिखल जाए; दोसर घरक मात्रा, मसाला वा आकार अलग हो सकैत अछि। देवकान्त पहिल पाँतिमे लिखलनि—‘एहि घरक विधि।’

पीसल दालिक गाढ़पन माधवी अँगुरी सँ देखलक। हेमलता पूछलक, “एतेक गाढ़ किएक?”

“जाहिसँ देलापर अपना ठाम रहय। बहुत पातर भेल तँ पसारि जाएत; बहुत कठोर भेल तँ सुखएबा मे भीतर नमी रहि सकैत।”

देवकान्त पूछलनि, “एहि केँ नापि लिखी?”

माधवी कनी दालि चम्मचपर उठा कऽ देखलक। “नाप लिखू जँ एहि घरक नाप निश्चित हो। मुदा चिन्ह सेहो लिखू—चम्मचसँ छोड़ला पर ढेरी बनि ठाढ़ रहय, पानि जकाँ बहि नहि जाए।”

देवकान्त लिखलनि।

आँगनमे एक साफ कपड़ा पसारल गेल। जानकी कहलीह, “कपड़ा भीजल नहि हो। नीचे जमीनक नमी चढ़ल तँ धूप ऊपर सँ की करतो?”

माधवी छोट-छोट भाग बेराबेरी छोड़ैत गेल। एकटा, दोसर, तेसर—एके आकार करबाक अतिआग्रह नहि, मुदा एतेक भिन्नो नहि जे किछु पहिले सूखि जाए आ किछु भीतर गीला रहय।

हेमलता पहिल बेर हाथ लगेल्क तँ ओकर अदौरी एक कात झुकि गेल।

जानकी हँसलीह। “ई अदौरी अछि कि छोट पहाड़?”

हेमलता मुँह बनौलक। “खाइत समय पहाड़ो छोट भऽ जाएत।”

माधवी ओकर हाथ देखेलक। “चम्मच नीचाँ लाउ, बहुत ऊपर सँ नहि छोड़ू। हाथक दूरी सेहो आकार बदलैत अछि।”

देवकान्त ई वाक्य लिखलनि—‘दूरी सेहो विधिक भाग।’

माधवी ओकरा देखलक। “ई ठीक अछि।”

किछु बेरमे कपड़ापर अदौरीक पाँति बनि गेल। सूरज गरम भेल, मुदा माधवी बेराबेरी आकाश देखैत रहल। पश्चिम दिशाक दू-तीन हलुक बादर ओकर नजरिसँ बचल नहि।

देवकान्त पूछलनि, “धूप एतेक जरूरी?”

जानकी उत्तर देलीह, “अदौरी देनाइ केवल बनौनाइ नहि; ठीक सँ सुखेनाइ आधा काज अछि। बीचमे बरखा पड़ल तँ सभ उठाउ, फेर अवसर देखू।”

माधवी कहलक, “एहि लेल धूपक दिनमे काज शुरू करैत छी। मुदा धूपक भरोसा लिखित कागज नहि दैत।”

देवकान्त हँसलाह। “मौसमक अनुबन्ध नहि होइत।”

“मौसम अनुबन्ध पढ़ैत नहि,” माधवी कहलक।

दुपहर धरि अदौरीक ऊपरक देह कनी थिर भेल। हेमलता छूबय गेल तँ माधवी रोकलक। “एखन नहि। बाहर थिर देखाइत अछि, भीतर एखन गीला हो सकैत।”

देवकान्तक कलम अपनैँ चलल—‘बाहरक सूखल रूप भीतरक दशाक प्रमाण नहि।’

माधवी पन्ना देखलक। “ई अहाँक वाक्य।”

“हँ। अपन नाँवपर।”

जानकी दूरसँ कहलीह, “पोथी लिखैत-लिखैत भोजन जरा नहि दिअ।”

सभ हँसि पड़ल। धूप आँगन भरि रहल छल; अदौरीक छोट-छोट देह सभ भविष्य लेल पानि छोड़ि रहल छल।

**

अदौरी धूपमे रहबाक समय हेमलताक अलग पाठ चलल। माधवी ओसारक छाँहमे कागज राखि ओकरा तिरहुता लिखब सिखबैत छल। बरखाक दिनमे बचाओल अभ्यास-पोथी आब सूखल छल, किनार कनी मुड़ल, मुदा अक्षर सुरक्षित।

“एहि अक्षरक पेट फेर उल्टा,” माधवी कहलक।

हेमलता कहलक, “अक्षरक पेट होइत अछि?”

“तोरा बुझाबय लेल आइ अछि। काल्हि दोसर नाम देब।”

“तखन पोथीमे लिखब—अक्षरक पेट?”

देवकान्त दूरसँ सुनि हँसलाह। “नहि। नहि तँ सौ वर्ष बाद लोक मानत जे तिरहुतामे पेट नामक नियम छल।”

माधवी कहलक, “देखलह? एक बेठीक मजाक सेहो इतिहास बनि सकैत अछि।”

हेमलता गंभीर चेहरा बना कऽ लिखय लागल।

किछु पाँति बाद माधवी ओकर हाथ सँ कलम नहि लेलक; कागजक कात अपन नमूना लिखलक। “देखू। तोहर अक्षर हम नहि सुधारब। बगलमे शुद्ध रूप। दुनू बचल रहय।”

देवकान्त ई बात सुनि नजदीक आयलाह। “बेठीक पन्ना किएक बचाउ?”

“जाहिसँ सीखबाक बाट देखाइत रहय। सभ भूल मेटा देब तँ बादक लोक मानत जे पहिल बेरहि सभ ठीक छल।”

देवकान्त एक क्षण चुप रहलाह। अंग्रेजी लेखक काटल पाँति, धुँधलायल स्रोत, भीजल माछ सम्बन्धी पन्ना—सभ स्मृतिमे एक साथ उठल।

ओ कहला, “तखन सुधारक संग पुरान रूप राखब?”

“जतए सम्भव। खास कऽ जँ फर्क अर्थक हो।”

हेमलता पूछलक, “हमर खराब अक्षर सेहो?”

माधवी हँसल। “तोहर अभ्यास इतिहासक महान दस्तावेज नहि। मुदा तोरा लेल उपयोगी अछि।”

देवकान्त कहला, “ककर दस्तावेज महान, ई निर्णय के करत?”

माधवी हुनका देखलक। “एहि प्रश्नक उत्तर अहाँ तुरन्त नहि दिअ।”

हेमलता फेर लिखय लागल। कागजपर शब्द बनैत गेल। एक पाँतिमे माधवी ओकरा ‘अदौरी’ लिखब सिखेलक—पहिने देवनागरीमे नाम देखेलक, फेर तिरहुता रूप अपन हाथसँ अलग पन्नापर लिखलक।

हेमलता कहलक, “ई हम अपन पोथीमे रखब।”

“राख,” माधवी कहलक। “आ लिख—आइ अदौरी देल गेल।”

“तिथि?”

“हँ। तिथि लिख। बादमे स्मृति दिन बदलि दैत अछि।”

देवकान्त तुरन्त अपना पन्नाक तिथि देखलनि। “हमर अछि।”

“नीक। तिथि, नाँव, स्रोत—तीनू मित्र बनि जाए तँ बादक लोक कम भटके।”

हेमलता अपन अभ्यास-पोथीमे तिथि जोड़लक। तकर बाद आँगन दिस दौड़ि अदौरी देखय गेल।

एक-दू अदौरीक कात सूखि ऊपर उठल छल। माधवी ओकरा घुमा कऽ देखलक, मुदा एखन पलटल नहि। “हतबड़ी करब तँ टूटत।”

हेमलता कहलक, “अक्षरो हतबड़ीमे लिखल तँ टूटैत अछि।”

माधवी मुस्करायल। “आब तँ रूपक बनाबय लगलह।”

देवकान्त कहला, “हमर विद्यालय बढ़ि रहल अछि।”

माधवी तुरन्त कहलक, “विद्यालय हमर अछि, विद्यार्थी अहाँ दुनू।”

हेमलता ठाहाका लगा देलक। देवकान्त माथ हिलेलनि। “श्रेय स्पष्ट।”

**

दोसरा दिन भोरमे धूप फेर निकसल, मुदा हवा मे नमी कम नहि छल। माधवी काल्हिक अदौरी एक-एक कऽ देखलक। जे ऊपर सँ थिर भऽ गेल छल ओकरा सावधानीसँ पलटल गेल, जाहिसँ दोसर कातो धूप भेटय।

जानकी कहलीह, “ई काज घरमे सभसँ छोट बुझाइत अछि—दालि पीसल, छोट-छोट देल, धूपमे छोड़ल। मुदा समय चूकू तँ पूरा परिश्रम बिगड़त।”

देवकान्त पूछलनि, “अदौरी मुख्यतः बरखाक दिन लेल?”

माधवी उत्तर देलक, “बरखा, अभाव, तत्काल जरूरत, ताजा तरकारीक कमी—कतेक परिस्थिति। एकटा कारण बना कऽ नहि लिखू।”

“तखन?”

“लिखू जे धूपक दिनक श्रम आगाँक दिन भोजनक एक सहारा बनैत अछि।”

देवकान्त लिखलनि।

जानकी जोड़लीह, “आ ई सेहो जे दालि जँ एखन खा लिअ तँ एक दिनक भोजन। अदौरी बना सुरक्षित राखू तँ बादक बहुत दिनमे थोड़ेक-थोड़ेक काज देत।”

देवकान्त पूछलनि, “भविष्य सुरक्षित करब?”

माधवी कहलक, “बड़ शब्द अछि। मुदा हँ—भूखक दिन लेल किछु बचा कऽ राखब।”

ओहि वाक्यपर देवकान्तक ध्यान अटकिले। “भूखक डरक उत्तर?”

माधवी कनी सोचलक। “डर मात्र नहि। समझ सेहो। ऋतु जानब, घरमे कतेक लोक, दालि कतेक अछि, अगिला महीना की भेटत—एहि सभक हिसाब।”

“तखन संरक्षण केवल भय नहि, योजना।”

“हँ। मुदा योजना शब्द लिखिते ई नहि भूलू जे काज हाथ करैत अछि। दालि अपनँ अदौरी नहि बनैत।”

देवकान्त पन्नाक ऊपर एक छोट शीर्षक देलनि—‘आगाँक दिन लेल श्रम।’

माधवी पढ़ि कहलक, “ई ठीक अछि।”

दुपहरमे हेमलता एक अदौरी उठाकऽ पूछलक, “ई एखन खा सकैत छी?”

जानकी कहलीह, “कच्चा सुखायल अदौरी खायब नहि। बादमे तरकारीमे जाएत।”

हेमलता निराश भेल। “दू दिन सँ देखैत छी, खाइयो नहि सकैत।”

माधवी हँसल। “सभ भविष्य तत्काल खाएबाक वस्तु नहि होइत।”

देवकान्त कलम उठौलनि।

माधवी आँखि देखबैत कहलक, “नहि। ई हेमलताक मुँह चिढ़ेबाक बात छल।”

देवकान्त कलम आपस रखलनि। “घरक हँसी पोथीमे नहि?”

“सभ नहि। ई नियम पहिनहुँ कहल गेल अछि।”

हेमलता विरोध कएलक, “हम चाहैत छी ई लिखल जाए।”

माधवी ओकरा देखलक। “तँ नाँव सहित लिखाउ।”

देवकान्त हँसैत लिखलनि—‘हेमलता अदौरी दू दिन देखिकऽ पूछलक—एखन खा सकैत छी? जानकी मना कएलनि।’

हेमलता प्रसन्न भेल। “आब इतिहासमे भूख बचि गेल।”

जानकी कहलीह, “तोहर भूखक इतिहास बहुत पैघ होएत।”

आँगन हँसी सँ भरि गेल।

साँझि अदौरी भीतर उठाओल गेल। पूर्ण रूपसँ सूखल टुकड़ा अलग; जाहिमे कनी नमी रहल, ओ अगिला धूप लेल अलग। जानकी एक्के डिब्बामे सभ नहि रखलीह।

देवकान्त पूछलनि, “किएक?”

माधवी कहलक, “एक गीला टुकड़ा पूरा डिब्बा बिगाड़ि सकैत अछि। जाँचि-जाँचि राखू।”

देवकान्तक आँखि अनायास कागजक गठरी दिस गेल। एक बेठीक स्रोत, एक बेठीक सामान्यीकरण, एक मेटायल नाँव—की ओहो पूरा पोथीकेँ बदलि सकैत अछि?

ओ ई रूपक लिखलनि नहि। केवल अदौरीक डिब्बापर तिथि आ ‘एहि घरक’ लिखि देलनि।

*
**

अदौरीक तेसर दिन दुपहरमे देवकान्त एक परिचितक संग बाहर गेल छलाह। जानकी भण्डारमे, माधवी भानसघरक हिसाबमे। हेमलता ओसारक छाँहमे अपन अभ्यास-पोथी लऽ कऽ बैसल।

माधवीक साझा पन्नासभक एक गठरी मेजपर छल—अदौरी, अमट, तिलकोर, बगिया, माछ, किछु स्रोत-पाँति। निजी पात-चिन्हयुक्त पन्ना अलग गठरीमे बन्द छल।

हेमलता पहिने अपन अक्षरक अभ्यास करैत रहल। फेर अदौरीक पन्ना देखलक। माधवीक तिरहुता टिप्पणी कातमे छल, देवकान्तक देवनागरी मूल बीचमे।

ओ माधवीसँ पूछलक, “ई पन्ना नकल करू?”

माधवी काजमे व्यस्त छल। “जतए साझा चिन्ह अछि, करू। निजी पात-चिन्हयुक्त नहि।”

हेमलता गठरी जाँचलक। अदौरीक पन्ना साझा छल। ओ अपन अभ्यास-पोथीमे पहिने शीर्षक उतारलक, तिथि, फेर स्रोत-पाँति। अक्षर बेराबेरी देखैत लिखैत गेल।

किछु बेर बाद ओकरा मजा आबय लागल। अभ्यास मात्र नहि, पूरा पन्ना ओकर हाथमे फेर जन्म लऽ रहल छल।

अदौरीक बाद ओ अमटक पन्ना उतारलक। फेर तिलकोरक एक पन्ना। जहाँ माधवीक छोट तिरहुता हस्ताक्षर छल, ओ ओहि हस्ताक्षरक नकल करबाक बदला कोष्ठकमे देवनागरीमे लिखलक—‘माधवीक हस्ताक्षर’।

माधवी नजदीक आबि देखलक। “हस्ताक्षर नकल नहि कएलह?”

हेमलता कहलक, “हस्ताक्षर दीदीक अछि। हम लिखि देलहुँ जे ओतए अहाँक हस्ताक्षर अछि।”

माधवीक चेहरा पर सन्तोष आयल। “ई नीक बुद्धि।”

“देवकान्त बाबू कहने छलाह—जकर हाथ, ओकर नाँव।”

“कहने छलाह,” माधवी धीमे कहलक।

हेमलता अगिला पन्ना उठेलक। ओहि पर धुँधलायल स्याहीक नाम रहित विधिक अंश छल। स्रोतक पाँति पोंछल चिन्ह सहित।

“ई?”

माधवी किछु क्षण पन्ना देखलक। “एहि कै एखन छोड़।”

“किएक?”

“ओकर साफ रूप बादमे बनत।”

हेमलता पन्ना एक कात राखि देलक।

फेर ओ माछ सम्बन्धी पन्नाक नकल करय लागल—नसीमाक नाँव स्पष्ट लिखलक।
बरखामे भीजल मूल पन्नाक कोन देखिकऽ अपन नकलमे नोट जोड़लक—‘मूल पन्ना
बरखामे भीजल।’

माधवी पूछलक, “ई के कहलक?”

“देवकान्त बाबू मूलपर लिखने छथि।”

“तखन ठीक।”

हेमलता अपन काजमे एतेक मग्न छल जे ओकरा ई नहि बुझायल जे ओ केवल तिरहुता
अभ्यास नहि करैत अछि। एक दस्तावेजक दोसर जीवन बना रहल अछि।

माधवी सेहो एहि क्षण एकरा भविष्यमे निर्णायक प्रमाण जकाँ नहि देखैत छल। ओकरा
लग ई छोट बहिनक अक्षर-पाठ, स्रोत पहचानबाक अभ्यास, आ बरखासँ डरायल कागजक
सुरक्षित नकल छल।

साँझि देवकान्त घुरलाह। हेमलता उत्साहसँ अपन अभ्यास-पोथी देखेलक। “देखू, तीन
पन्ना उतारलहुँ।”

देवकान्त पन्ना पलटलनि। “अदौरी, अमट, तिलकोर... नसीमाक पन्ना सेहो?”

“हँ।”

“बहुत नीक। मुदा मूल जकाँ भूल सेहो नकल नहि करिह।”

माधवी दूरसँ कहलक, “भूल देखू, काटू नहि। कातमे सुधार लिखू।”

देवकान्त कहला, “हँ। ई नियम एखन हमरो मान्य अछि।”

हेमलता अपन अभ्यास-पोथीक पहिल पृष्ठपर लिखलक—‘जतए मूलमे काटल वा
धुँधलायल, ओतए से लिखब; अपनासँ साफ नहि करब।’

देवकान्त ई पाँति पढ़ि मुस्करोलनि। “हमर सम्पादक तयार भऽ रहल अछि।”

हेमलता गर्वसँ कहलक, “हम अपन इतिहास स्वयं लिखब—मोन अछि?”

देवकान्त रुकि गेलाह। “मोन अछि।”

माधवी सेहो ओकरा देखलक। बगियाक दिनक छोट हँसी एक क्षण लेल तीनू बीच आपस आबि गेल।

जानकी भीतरसँ बजेलनि, “इतिहास लिखनिहार सभ, अदौरी उठा लिअ! साँझिक नमी आबि रहल अछि।”

हेमलता पोथी बन्द कऽ दौड़ल।

मेजपर मूल पन्नासभ रहल। ओकर अभ्यास-पोथी ओसारक कोनमे रखल छल—एक साधारण किशोरीक लिखाइ, टेढ़-मेढ़ अक्षर, सुधार, तिथि, नाँव, स्रोत।

केओ एखन नहि जानैत छल जे कखनो एही साधारण नकल मूल पन्नासँ अधिक साफ आवाज बनि सोझाँ आएत।

आँगनमे अदौरीक अन्तिम खेप भीतर उठाओल जा रहल छल। धूप दिनभरि अपन काज कऽ चुकल छल। जे पानि घटल, ओकर बदला समय बढ़ल—भोजनक लेल सेहो, कागजक लेल सेहो।

अध्याय २२ — पिरुकियाक मोड़

बरखाक लम्बा दौर कनी थमल तँ घरमे पर्वक तैयारीक उजास फैलल। आँगन धोआ गेल, ओसारक कोनमे नवा अरिपन बनल, भानसघरक पीतल-पितरक बासन घिसि चमकाओल गेल। जानकी भोरहि कहि देलीह, “आइ पिरुकिया बनत। बच्चासभकेँ पहिने सँ चेतौनी—भरावन चोरि कऽ खायब नहि।”

हेमलता दूरसँ उत्तर देलक, “चोरि नहि, चखब।”

माधवी हँसि कहलक, “नाम बदलला सँ काज नहि बदलैत।”

देवकान्त ओसारपर पन्ना समेटि रहल छलाह। ‘पिरुकिया’ शब्द सुनिते हुनकर चेहरा चमकल। “एहि बेर पहिने स्रोत देखब, फेर लिखब।”

माधवी कहलक, “नीक। भोजनक शब्दावलीमे जे रूप भेटत, से देखू; मुदा एहि घरक भरावन, आकार आ मोड़ एतए जतेक देखब, ओतबे लिखू।”

मैदा-जकाँ महीन पीठारक लोइया तैयार छल। देवकान्त सामग्रीक नाम पूछबाक लेल मुँह खोललनि, फेर रोकि गेलाह।

जानकी कहलीह, “पूछि सकैत छी। प्रश्न करब मनाही नहि; अपनासँ भरब मनाही।” सभ हँसि पड़ल।

माधवी एक छोट लोइया हथेलीपर घुमेलक, बेलनसँ गोल पसारलक। किनार बहुत पातर नहि, बीच बहुत मोट नहि। ओ बीचमे भरावन राखलक। देवकान्त ध्यानसँ देखैत छलाह।

“एतेक?” ओ पूछलनि।

“एहि आकार लेल,” माधवी कहलक। “भरावन बेसी भेल तँ मोड़ बन्द नहि होएत; बहुत कम भेल तँ पिरुकिया खाली-खाली लगत।”

हेमलता बीचमे कहलक, “खाली पिरुकिया लेखक बाबूक नाम रहित पन्ना जकाँ।”

देवकान्त हँसलाह। “एहि घरमे हम सुरक्षित नहि छी।”

माधवी गोल पातक आधा भाग दोसर आधापर मोड़लक। अर्धचन्द्राकार रूप बनल। ओ किनार अँगुरीसँ दबेलक, फेर छोट-छोट मोड़ बनबैत गेल—एक मोड़ दोसर पर कनी चढ़ैत। किनार एहन सजल जेना नन्हका तरंग।

हेमलता मोहित भऽ देखलक। “ई मोड़ हम करब।”

“पहिने एकटा सीख,” माधवी कहलक।

हेमलता अपन पिरुकिया बनौलक। भरावन कनी बेसी पड़ल। मोड़ लगबैत बीचमे एक ठाम फाटि गेल।

जानकी तुरन्त कहलीह, “देखलह? भीतरक मिठास बाहर भागय चाहैत अछि।”

हेमलता अँगुरीसँ भरावन आपस धकेलक। “बाहर निकसल तऽ हम खा लेब।”

माधवी ओकर हाथपर हलुक चपत देलक। “ई उपाय नहि।”

देवकान्तक पन्नापर लिखल गेल—“भरावनक मात्रा आकार अनुसार; मोड़ लगाबय सँ पहिने किनार नीक सँ बन्द; मोड़ सजावट मात्र नहि, जोड़ मजबूत करैत।”

माधवी पन्ना पढ़लक। “ई राखू।”

बच्चासभक असली परीक्षा भरावनक बाटी सोझाँ आबि कऽ शुरू भेल। घरक दू छोट बच्चा ओसारक खम्भा पाछाँ सँ बेराबेरी झाँकैत। एकटा अँगुरी भरावन दिस बढ़ेलक। जानकी बिना देखनहि कहलीह, “हाथ हटाउ।”

बच्चा चौंकि गेल। “अहाँ देखलहुँ कोना?”

“भानसघरक पाछाँ आँखि होइत अछि।”

देवकान्त तुरन्त हँसलाह। “ई पोथीमे लिखी?”

माधवी कहलक, “नहि। नहि तँ सौ वर्ष बाद लोक भानसघरक देवालमे आँखि खोजत।”

हँसीक बीच पिरुकिया एक-एक कऽ तैयार होइत गेल। किछु किनार सुन्दर, किछु टेढ़, किछु हेमलताक हाथक पहिचान लियेने।

जानकी कहलीह, “सभकेँ एक रूप करबाक लोभ नहि करू। हाथ बदलत तँ मोड़ कनी बदलत। नीक बन्द हो, बस।”

देवकान्त एहू बात लिखलनि।

माधवी पूछलक, “अहाँ स्वाद लिखब कि आकार?”

“दुनू। मुदा पहिने ई लिखब जे मोड़ ककर हाथक अछि।”

“मोड़क लेखक?”

“किएक नहि?”

हेमलता गर्वसँ अपन दू पिरुकिया अलग राखलक। “एहि पर हमर नाँव।”

देवकान्त लिखलनि—‘हेमलताक पहिल सफल मोड़।’

भानसघरक वातावरण उजास, हँसी आ गन्धसँ भरि गेल। बरखाक दिनसभक घुटन बाद ई काज केवल भोजन नहि, घरक साँस जकाँ लगैत छल।

पहिल खेप पकएबाक लेल गेलाक बाद माधवी बचल लोइया आ भरावन गिनलक। जानकी दोसर काजमे भीतर गेलीह। हेमलता बच्चासभकेँ भगबैत आँगन दिस गेल।

देवकान्त ओसारक कात बैसल छलाह। ओ बहुत मीठ भोजन कम खाइत छलाह—ई बात घरमे आब सभ जानि गेल छल। पिरुकियाक भरावनक बाटी दिस देखिकऽ ओ मजाकमे कहलनि, “हमरा लेल एकटा खाली बना दिअ।”

माधवी तुरन्त कहलक, “खाली बनत तऽ पिरुकिया किएक?”

“तखन कम भरावन।”

“कम भरावन आ कम मिठास एक नहि।”

देवकान्त चौकलाह। “अहाँ मोन रखने छी?”

माधवी हाथक काज नहि रोकलक। “जे लोक रोज एतेक प्रश्न करैत अछि, ओकर दू-चारि बात मोन रहिए जाइत अछि।”

ओ भरावनक एक छोट भाग अलग कएलक। ताहिमे मिठास कनी कम रखबाक लेल पहिनेसँ तैयार अलग मिश्रण मिलेलक। देवकान्त नाप पूछबाक लेल कलम दिस हाथ बढौलनि, फेर रोकि देलनि; घरक विधिक सभ नाप पोथीमे नहि जाइत छल।

देवकान्त पूछलनि, “ई हमरा लेल?”

“नहि, भूत लेल।”

“एहि घरक भूत भाग्यशाली अछि।”

माधवी हँसि पड़ल।

ओ छोट लोइया पसारलक, भरावन राखलक, अर्धचन्द्र मोड़लक। किनारक मोड़ बाकी सभसँ कनी छोट, अधिक सघन। देवकान्त देखैत रहलाह।

“ई अलग किएक?”

“जाहिसँ चिन्हाइत रहय।”

“कम मिठास चिन्हबाक लेल?”

“हँ। नहि तँ बच्चासभ उठा लेत।”

देवकान्तक स्वर कनी धीमा भेल। “अहाँ हमर लेल अलग चिन्ह बनबैत छी।”

माधवी हाथ थामि ओकरा देखलक। “पिरुकियापर। एतेक दूर मत जाउ।”

“हम कतए गेलहुँ?”

“अहाँ बातकेँ वस्तुसँ मनुख धरि तुरन्त लऽ जाइत छी।”

देवकान्त मुस्करौलनि। “ई दोष मानि चुकल छी।”

माधवी पिरुकिया अलग पातपर राखलक। “तखन एहि बेर दोष केँ खाउ, रूपक नहि बनाउ।”

पकला बाद पिरुकिया बाहर आयल तँ घीक/तेलक गरम गन्ध संग भरावनक मिठास फैलल। जानकी देवकान्त लेल छोट चिन्हित पिरुकिया अलग रखलीह।

हेमलता देखिते पूछलक, “ई ककर?”

माधवी कहलक, “देवकान्त बाबूक।”

“अलग किएक?”

जानकी बिना अवसर गमौने कहलीह, “किएक तँ हुनका बेसी मीठ पसिन नहि।”

हेमलता देवकान्त दिस देखलक, फेर माधवी दिस। “के मोन रखने छल?”

माधवी कहलक, “हम।”

हेमलताक चेहरापर एहन हँसी आयल जे माधवी तुरन्त चेतौनी देलक, “किछु कहिह नहि।”

हेमलता दाँत देखबैत चुप भऽ गेल।

देवकान्त पिरुकिया तोड़लनि। भीतरक भरावन गरम छल। पहिल ग्रासक बाद ओ कुछ बेर चुप रहलाह।

माधवी पूछलक, “मिठास कम भेल?”

“ठीक।”

“बहुत कम?”

“नहि।”

“तखन?”

देवकान्त पिरुकियाक आधा भाग हाथमे लेने कहला, “हमरा जे पसिन, ओ अहाँ मोन रखने छी। एतबे बहुत अछि।”

माधवीक आँखि एक क्षण हुनका पर टिकि रहल, फेर ओ दोसर पिरुकिया मोड़य लगलीह।

हेमलता दूरसँ फुसफुसायल, “भूत भाग्यशाली अछि।”

देवकान्त हँसि पड़लाह। माधवी ओहि दिस नकली क्रोधसँ देखलक।

उजास भरल दिन—ई शब्द केओ नहि कहलक, मुदा दिनक स्वर वएह छल। पकवान बनैत, बच्चा चोरि करैत, जानकी डाँटैत, हेमलता मोड़ बिगाड़ि फेर सुधारैत, आ एक छोट कम-मिठास पिरुकिया अपन अर्थ भोजनसँ कनी अधिक बना रहल छल।

राति भोजन, पूजा आ घरक भीड़ घटलाक बाद आँगन शांत होए लागल। बच्चासभ थाकि सुति गेल। जानकी बासनक अन्तिम काज देखैत भीतर छलीह। हेमलता अपन नवा पिरुकिया-मोड़क गर्व लऽ कऽ ककरो सुनबैत-सुनबैत ओझरा गेल।

ओसारपर दीया जलि रहल छल। बरखा थमल छल, मुदा छप्परक कात सँ कतहु-कतहु पुरान पानि टपकि रहल।

देवकान्त पोथी खोलि बैसल छलाह, मुदा लिखि नहि रहल छलाह। माधवी पातिल ढाँकि आपस आयल तँ पूछलक, “आइ पोथी मौन?”

“पोथी नहि। लेखक।”

“ई नव बात अछि।”

देवकान्त हलुक हँसलाह। किछु क्षण बाद कहला, “जनकपुरक दिन जे बात अधूरी रहि गेल छल, ओ कहय चाहैत छी।”

माधवी बैसल नहि। खम्भा लग ठाढ़ रहल। “कहू।”

देवकान्तक आवाज पहिल बेर एतेक अभ्यासविहीन छल। “अहाँ ओझरा गेलीह बुझि जे भय भेल, ओकरा बाद हम अपनासँ बहुत बहस कएलहुँ। ई केवल साथी हरएबाक भय नहि छल। न पोथीक स्रोत हरएबाक। न घरक एक जानकार मनुखक। अहाँ... अहाँ बिना जे खाली ठाम सोचलहुँ, ओ हमरा असह्य बुझायल।”

माधवी चुप रहल।

देवकान्त आगाँ कहला, “हम अहाँसँ प्रेम करैत छी।”

वाक्य निकलला बाद ओसार अधिक शांत बुझायल। बाहर कुकुरक दूर आवाज आयल, फेर थमि गेल।

माधवीक चेहरा पढ़ब कठिन छल। ओ धीरे बैसि गेल, मुदा देवकान्तक बहुत नजदीक नहि।

“एहि वाक्यपर अहाँ कतेक दिन विचार केने छी?”

“जनकपुरसँ पहिनहुँ कदाचित। जनकपुरमे बूझलहुँ।”

“आ एखन?”

“एखन कहि रहल छी।”

माधवी नीचे दीयाक लौ दिस देखलक। “हमरा लग एक प्रश्न अछि।”

“पूछू।”

माधवी ओकर आँखि दिस सीधा देखैत कहलक, “अहाँ हमरा संग चलब कि हमरा अपन कथा बनायब?”

देवकान्तक चेहरा बदलल। “दूनूमे अन्तर?”

“बहुत।”

“बुझाउ।”

“संग चलबक अर्थ—हमर बात जतेक हम कहब, ओतेक सुनब; हमर नहि कै नहि मानब; हमर नाँव हमर काजक संग रखब; हमर जीवन अहाँक लेखनक सामग्री मात्र नहि होएत। अपन कथा बनायबक अर्थ—अहाँ हमरा देखब, पसिन करब, फेर अपन आवश्यकता अनुसार हमर रूप बनायब; जतए हम चुप, ओतए वाक्य भरब; जतए हम कठिन, ओतए सरल करब; जतए हमर सीमा, ओतए प्रेमक नामपर दरबज्जा खोलय चाहब।”

देवकान्त बहुत देर चुप रहलाह।

“हम एना करय नहि चाहैत छी,” ओ अन्ततः कहला।

माधवी उत्तर देलक, “चाहब आ करब एक नहि।”

“तखन हमरा की करय चाही?”

“संग चलबाक काज रोज करय पड़त। एक रातिक वचनसँ नहि।”

देवकान्त माथ हिलेलनि। “हम प्रयास करब।”

“प्रयास शब्द सुरक्षित अछि।”

“तखन वचन?”

माधवी हलुक मुस्करायल। “वचन बेसी खतरनाक हो सकैत अछि।”

देवकान्त सेहो मुस्करौलनि, मुदा आँखि गंभीर रहल। “तखन ई कहैत छी—जतए हमर अधिकार नहि, ओतए अधिकार नहि माँगब। जकर नाँव, ओकर नाँव राखब। जे अहाँ नहि कहब, ओकरा अपनासँ नहि भरब। आ... अहाँ कै केवल पोथीक भीतर नहि देखब।”

माधवीक चेहरापर पहिल बेर नरमाहट साफ देखायल।

“एहि मे सँ पहिल तीन बात अहाँ पहिनहुँ सीखि रहल छी,” ओ कहलक।

“चारिम?”

“चारिमक परीक्षा एखन शुरू भेल।”

दुनू किछु बेर चुप रहल। देवकान्त हाथ आगाँ बढौलनि, मुदा बीचमे रोकि लेलनि। माधवी एहि रोककै देखलक।

ओ स्वयं अपन हाथ आगाँ कऽ देवकान्तक अँगुरी छूलक। बहुत छोट स्पर्श—न दीर्घ, न नाटकीय।

“ई उत्तर अछि?” देवकान्त फुसफुसौलनि।

“ई अस्वीकार नहि,” माधवी कहलक। “बाकी उत्तर समय देत।”

दीयाक लौ हलुक काँपल। दिनमे पिरुकियाक मोड़ जकाँ एक सम्बन्धक किनार एखन पहिल बेर दबायल छल—बन्द कि मजबूत, ई एखन कहब हतबड़ी होइत।

**

देवकान्तक प्रेमक वाक्यक बाद दुनू उठि नहि गेल। राति एखन बाकी छल, आ माधवीक प्रश्न सेहो।

“एक बात आरो,” माधवी कहलक।

“कहू।”

“संग चलब केवल हमरा-आहाँक बीचक बात नहि। घर अछि। परिवार अछि। समाज अछि। अहाँक कुल-प्रतिष्ठा अछि। हमर घरक अवस्था अछि। एहि सभक सोझाँ अहाँ की करब?”

देवकान्तक उत्तर तुरन्त नहि आयल।

माधवी ई विलम्ब देखलक। “एतए पोथीक नियम काज नहि करत?”

“करत। मुदा...”

“मुदा?”

देवकान्त धीरे कहला, “हम एहि बारेमे घरसँ बात करब। बाट खोजब।”

“कोन बाट?”

“एखन निश्चित नहि।”

माधवीक चेहरा पर न क्रोध छल, न निराशाक खुला चिन्ह। बस ओ सीधा सुनैत रहल।

देवकान्त आगाँ कहला, “हम अहाँ केँ छोड़ि देबाक बात नहि कहि रहल छी।”

“हम पूछलहुँ—करब की?”

“बात करब। विरोध भेल तँ... बुझाएब।”

“नहि मानल तँ?”

देवकान्त चुप।

ओहि चुप्पीमे दिनभरक पिरुकिया-मोड़ जकाँ किछु खुलय लागल। जहाँ भरावन नीक, किनार नीक जकाँ दबायल, ओतए रूप थामल; जहाँ जोड़ अस्पष्ट, ओतए गरम तेलमे फाटबाक डर।

माधवी कहलक, “देखू, हम एखनहि विवाहक तिथि नहि पूछैत छी। हम ई बुझय चाहैत छी जे अहाँक ‘संग’ शब्द कतेक दूर चलैत अछि।”

देवकान्तक स्वर निचाँ गेल। “जतेक आवश्यक।”

“ई फेर सुरक्षित उत्तर।”

“तखन अहाँ चाहैत की छी?”

“साफ बात। जँ परिवारक विरुद्ध नहि जा सकैत छी, कहू। जँ जा सकैत छी, से कहू। जँ एखन नहि जानैत छी, ओहो कहू।”

देवकान्त आँखि नीचाँ कएलनि। “एखन नहि जानैत छी।”

माधवीक साँस कनी ढीला भेल। “ई उत्तर कम-से-कम साँच अछि।”

“मुदा प्रेम साँच अछि।”

“हम ओहि पर संशय नहि कएलहुँ।”

देवकान्त माथ उठेलनि।

माधवी कहलक, “प्रेम साँच होएतहुँ मनुख कमजोर भऽ सकैत अछि। सामाजिक डर प्रेमकें झूठ नहि बनबैत; मुदा प्रेमकें पर्याप्तो नहि बनबैत।”

देवकान्तक लग एहि वाक्यक तत्काल उत्तर नहि छल।

“हम कमजोर नहि रहब,” ओ कहला।

माधवी धीमे मुस्करायल। “ई वचन अछि।”

“हँ।”

“आ अहाँ स्वयं कहने छलहुँ—वचन खतरनाक हो सकैत अछि।”

देवकान्त हँसि पड़लाह, मुदा हँसीमे असहजता छल।

“तखन लिखू नहि,” माधवी कहलक।

“की?”

“ई राति। एखन पोथीमे नहि।”

“हम लिखबो नहि चाहैत रही।”

“नीक।”

किछु देर बाद माधवी उठल। दुआरि धरि गेल, फेर घुरि देवकान्त दिस देखलक।

“दिनमे जे पिरुकिया हमरा अलग चिन्ह लगा कऽ अहाँ लेल बनौने रही, ओ प्रेमक प्रमाण नहि।”

देवकान्त मुस्करौलनि। “हम जानैत छी।”

“मुदा एतबे बुझू—मोन रखनाइ प्रेमक एक भाग भऽ सकैत अछि।”

“आ दोसर भाग?”

“जतए कठिनाई शुरू हो, ओतए मोन रखनाइ।”

ओ भीतर चलि गेल।

देवकान्त अकेले ओसारपर बैसल रहलाह। पोथी बन्द छल। हाथक कात दिनक पिरुकियाक एक टूटल छोट किनार पड़ल छल—ककरो थारीसँ झरि गेल।

ओ उठा कऽ देखलनि। छोट मोड़सभ एक-दोसरापर चढ़ल, किछु ठाम दबाव स्पष्ट, किछु ठाम ढीला।

हुनका लगल—दिनक पकवानक सरल पाठ रातिक प्रश्नमे बदलि गेल अछि। भरावन मीठ होएब पर्याप्त नहि; किनारक जोड़ो थामय पड़ैत अछि।

ओ रूपक पोथीमे नहि लिखलनि।

किछु रूपक मनुखकें पहिले जीबय पड़ैत अछि।

राति गाढ़ भेल। भानसघरमे बासन शांत छल। मिठासक गन्ध एखनहुँ हलुक रहि गेल छल, मुदा देवकान्तक भीतर जे बात जागल, ओ मिठाससँ बेसी कठिन छल।

प्रेम कहल जा चुकल छल। समानता वचनमे आयल छल। परिवारक प्रश्न पर उत्तर एखन खाली छल।

ओ खाली ठाम राति भरि ओतहि रहल।

अध्याय २३ — काटल पाँति

पिरुकियाक रातिक दू दिन बाद डाकिया कलकत्तासँ मोट लिफाफा आनलक।
लिफाफाक कोन घिसायल छल, बीचमे पत्रिकाक नामक नील मुहर। देवकान्त दुआरिए पर
हस्ताक्षर कऽ लिफाफा लेलनि, मुदा खोललनि ओसारपर आबि।

माधवी भानसघरमे काल्हिक बचल सामग्रीक हिसाब लिखि रहल छल। देवकान्तक
चेहरा देखिते पूछलक, “लेख घुरि आयल?”

“हँ। कदाचित संशोधन अछि।”

लिफाफामे हुनकर टंकित अंग्रेजी लेख छल। कात-कात लाल पेंसिल, बीचमे
सम्पादकक चिट्ठी। देवकान्त पहिने चिट्ठी पढ़लनि, फेर लेख पलटलनि।

सम्पादक लिखने छल जे लेख रोचक अछि, विशेषतः ऋतु, भण्डार आ स्थानीय
पकवानक अंश; मुदा वर्तमान रूप पत्रिकाजे उपलब्ध ठाम सँ बहुत पैघ। ‘घरक विवरण’
संक्षिप्त करू, पुनरावृत्ति काटू आ भोजनक मुख्य रूप पर केन्द्रित रहू। समाज-व्यवस्था,
स्त्री-श्रम, नाम आ श्रेयक चर्चा दोसर लेख लेल छोड़ल जा सकैत अछि।

देवकान्त अन्तिम वाक्य फेर पढ़लनि।

माधवी नजदीक आबि ठाढ़ भेल। “की लिखने अछि?”

देवकान्त चिट्ठीक आशय मैथिलीमे सुनौलनि। ‘स्त्री-श्रम’ सम्बन्धी भागपर पहुँचि स्वर
कनी धीमा भऽ गेल।

माधवी पूछलक, “ओ भाग एखन लेखमे अछि?”

देवकान्त उत्तर देलनि, “किछु अछि। पाछिल बेर बहुत काटने रही, मुदा सभ नहि।”

“कतेक?”

“देखब।”

ओ पन्ना पलटय लगलाह। तिलकोर, बगिया, माछ, अमट, अदौरी—सभ अंशपर लाल चिन्ह। किछु ठाम सम्पादक ‘condense’ लिखने छल, किछु ठाम प्रश्नचिह्न। एक पृष्ठक कात मोट लाल रेखा छल।

देवकान्त कहला, “सम्पादक भोजनक वर्णन राखय चाहैत छथि, मुदा ककर हाथक ज्ञान अछि से छोट करय चाहैत छथि।”

माधवीक चेहरा स्थिर रहल। “ई लोग? कि अहाँ?”

देवकान्त चौंकलाह। “हम?”

“अन्तिम प्रति के पठाओत?”

“हम।”

“तखन काटबाक अन्तिम काज के करत?”

देवकान्त चिट्ठी मोड़ि मेजपर राखलनि। “हम। मुदा ठामक सीमा सच अछि।”

“ठामक सीमा नाँव पर पहिने किएक पड़ैत अछि?”

“सभ ठाम नहि।”

“देखू।”

दुनू एक्के संग पन्ना जाँचय लगल। एक अंशमे देवकान्त पूरा विधि राखने छल—कदिमाक फूल चुनब, पीठारक दशा, तेलक ताप—मुदा स्रोतक नाम केवल कोष्ठकमे। दोसर अंशमे रमानन्दक नाम बचल, मुदा ओकर काजक दू पाँति आधा भेल। नसीमाक बाजार सम्बन्धी वाक्य एखन छल। माधवीक किछु टिप्पणी पाद-टिप्पणी जकाँ नीचे खिसकाओल गेल छल।

माधवी कहलक, “देखैत छी—वस्तु मुख्य पाँतिमे, मनुख नीचे।”

देवकान्त तुरन्त कहला, “ई हम जानि-बुझि कऽ नहि केने छी।”

“हम नीयत नहि पूछलहुँ। पन्ना देखैत छी।”

ई वाक्य देवकान्त केँ असहज कऽ देलक।

सम्पादकक पत्रक अन्तमे लिखल छल—‘दुइ दिनमे संशोधित प्रति पठाउ, नहि तँ अगिला अंक लेल ठाम निश्चित नहि रहत।’

देवकान्त समय गिनलनि। डाक पकड़बाक लेल काल्हि साँझि धरि नकल पूरा करय पड़त।

माधवी पूछलक, “तखन की करब?”

“दोहराव काटब। लम्बा वर्णन छोट करब। मुदा स्रोत बचाएब।”

“आ जे बात भोजनक इतिहासक अर्थ बदलैत अछि?”

“ओहो राखब, जतेक संभव।”

माधवी धीरे कहलक, “जतेक सम्भव—ई वाक्य बहुत ठाम बचबैत अछि, बहुत बात डुबबैत सेहो।”

देवकान्त ओकरा देखलनि। पिरुकियाक रातिक प्रेम-वचन एखन बहुत पुरान नहि छल। समानता, नाँव, सीमा—सभ बात फेर कागजक ठोस रूपमे सोझाँ ठाढ़ छल।

ओ कहला, “अहाँ हमरा संग बैसू। हम काटब, अहाँ देखू।”

माधवी उत्तर देलक, “हम सम्पादक नहि। मुदा जहाँ हमर बात अछि, ओतए देखब।”

“एतबे चाहैत छी।”

दुनू बैसि गेल। लाल पेंसिलक रेखा, देवकान्तक कारी स्याही, माधवीक पेंसिल-चिन्ह—एक पन्नापर तीन प्रकारक अधिकार भिड़य लगल।

राति आधा बीति गेलापर लेखक अधिकांश भाग छोट भऽ चुकल छल। देवकान्त किछु वाक्य जोड़ि दू अनुच्छेद एक कएलनि, किछु उदाहरण हटौलनि, किछु नाप-विवरण संक्षिप्त। माधवी बीच-बीचमे केवल ओतए बोलैत जतए ओकर कहब बदलि रहल छल।

एक पृष्ठ पर पहुँचि ओ रुकल। नीचे माधवीक हाथक देवनागरी प्रतिलिपि छल, मूल तिरहुता पन्ना अलग सुरक्षित। वाक्य साफ लिखल छल—“भानसक इतिहास बनौनिहार स्त्रीसभक नाँव बिना अधूर अछि।”

देवकान्त सेहो वाक्य पढ़लनि। ई पाँति ओ पहिने लेखक अन्तिम भागमे जोड़ने छलाह, लाल घेरा पड़ल पुरान पाँतिक विस्तृत रूप जकाँ।

माधवी पूछलक, “ई रहत?”

देवकान्त तुरन्त कहला, “राखय चाहैत छी।”

“चाहैत छी कि राखब?”

देवकान्त मौन भेलाह।

पन्नाक कात सम्पादक लाल पेंसिलसँ लिखने छल—‘Too general; outside food description. Cut or move to separate essay.’

माधवी अंग्रेजी टिप्पणी पढ़ि नहि सकैत छल। “की लिखने अछि?”

देवकान्त अनुवाद कएलनि—“कहैत अछि ई भोजन-वर्णन सँ बाहरक सामान्य बात अछि; काटू वा दोसर लेखमे राखू।”

माधवी कहलक, “भानसक इतिहास भोजन-वर्णन सँ बाहर?”

“सम्पादकक हिसाबसँ।”

“अहाँक?”

देवकान्त वाक्य दिस देखलनि। “हमर हिसाबसँ बाहर नहि।”

“तखन?”

“ठाम...”

माधवी किछु नहि कहल।

देवकान्त अपन तर्क स्वयं बनबैत गेलाह—लेखक मुख्य विषय भोजन अछि; बहुत सामाजिक तर्क जोड़ला पर सम्पादक पूरा अंश काटि सकैत; पाँति बचेलहुँ तँ पूरा लेख विलम्बित भऽ सकैत; पोथीमे विस्तृत बात रहबे करत; अगिला लेखमे नाम-श्रेय पर अलग लिखल जा सकैत अछि।

ओ कहला, “एकरा एखन हटाएब। मुदा अलग लेखमे पहिल पाँति बनत।”

माधवी बहुत देर धरि वाक्य देखैत रहल। “तिथि लिखब?”

देवकान्त केँ पाछिल ‘बादमे’ लिखल प्रसंग मोन पड़ल। ओ तुरन्त एक कोरा कागजपर लिखलनि—‘माधवीक पाँति; अलग लेख लेल राखल; तिथि...’

माधवी कहलक, “ई नोट अहाँक संग रहत। मूल पाँति कतए?”

“मूल पन्ना पोथीमे।”

“आ टंकित लेखमे?”

“काटल रूप देखाइत रहत।”

“काटल चिन्ह मेटाउ नहि।”

“नहि मेटाएब।”

देवकान्त लाल पेंसिल नहि, अपन कारी स्याहीक महीन रेखा सँ वाक्य काटलनि। एक बेर। शब्द एखन पढ़ल जा सकैत छल।

माधवीक आँखि रेखापर टिकि गेल।

देवकान्त कहला, “देखू, मेटौने नहि छी।”

“काटलहुँ।”

“हँ।”

“फरक अछि।”

“अछि।”

माधवी पन्ना अपन कात खींचलक। काटल वाक्यक कात छोट तिरहुता चिन्ह बनौलक। देवकान्त बुझि नहि सकलाह।

“की लिखलहुँ?”

“‘काटल’। जाहिसँ कखनो कोनो नकल बनय तँ लोक जानय जे ई भूलसँ छूटल नहि।”

देवकान्त कहला, “ठीक।”

माधवी पन्ना आपस मेजपर राखलक। “आ हमर नाँव?”

देवकान्त वाक्यक नीचाँ लिखल छोट स्रोत-पाँति देखेलनि—‘Madhavi, marginal note.’

“रहत,” ओ कहला।

“वाक्य नहि रहत, नाँव पाद-टिप्पणीमे रहत।”

देवकान्त असहज भेलाह। “ई अन्तिम प्रति नहि। अलग लेख—”

माधवी हाथ उठा रोकलक। “हम बुझि रहल छी।”

ओ स्वर झगड़ालू नहि छल। एही कारण देवकान्त अधिक अस्थिर भेलाह।

किछु क्षण बाद माधवी कहलक, “अगिला पाँति पढ़ू।”

दुनू फेर काजमे लगि गेल। मुदा काटल पाँति पन्नाक बीचमे एहन देखाइत रहल जेना एक कारी दरार, जकर आर-पार शब्द एखनहुँ पढ़ल जा सकैत छल।

**

भोरक उजास आबिते संशोधित लेख छोट, साफ आ पत्रिकाक मापमे आबि गेल। देवकान्त थाकल छलाह। माधवी राति बीचमे उठि चलि गेल छल, मुदा काटल पाँति सम्बन्धी पन्ना ओसारपर रहि गेल।

दुपहर धरि देवकान्त नवा प्रति तैयार कएलनि। किछु भाग फेर हाथसँ साफ लिखल, किछु टंकित पन्नापर सुधार। काटल वाक्य नवा प्रतिमे नहि आयल।

ओ अपनैँ सँ कहला—अलग लेखमे। वचन देल अछि। मूल सुरक्षित अछि।

माधवी ओहि समय भानसघरमे जानकी संग पाँतिक भोजनक हिसाब बना रहल छल। घरमे अगिला सप्ताह एक परिवारिक समारोहक तैयारी शुरू भेल छल। बाहर लोकक संख्या, भीतर सामग्रीक अनुमान, ककरा बजाओल जाए—सभ सूची बनि रहल छल।

देवकान्त नवा प्रति लऽ कऽ ओतए गेलाह। “एक बेर देखब?”

माधवी हाथ धोइत कहलक, “अंग्रेजी हम पूरा पढ़ि नहि सकैत छी।”

“हम सुनाएब।”

“एखन काज अछि।”

देवकान्त ठमकलाह। पहिले माधवी एहन अवसरपर काज रोकि सुनैत छल। ओ कहला, “साँझि?”

“देखब।”

स्वर सामान्य छल, मुदा ‘देखब’ मे पहिल जकाँ तत्परता नहि छल।

साँझि माधवी ओसारपर आयल। देवकान्त प्रति खोलि मैथिलीमे आशय पढ़य लगलाह। तिलकोर, मखान, माछ, अमट, अदौरी—सभ छोट रूपमे। माधवी बीचमे कोनो टिप्पणी नहि कएलक।

अन्तिम अंशपर देवकान्तक स्वर कनी अटकिगेल। भानसक इतिहास सम्बन्धी पाँति नहि छल। ओकर बदला सामान्य वाक्य छल—‘घरक भोजन ऋतु, संग्रह आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत ज्ञान सँ बनैत अछि।’

माधवी पूछलक, “पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान के चलबैत अछि?”

देवकान्त उत्तर देलनि, “घरक लोक।”

“लेखमे?”

“किछु नाँव अछि।”

“सभ?”

“सभ नाम देब संभव नहि।”

“जतेक स्रोत उपयोग कएलहुँ, ततेक?”

देवकान्त पन्ना पलटलनि। किछु नाँव छल—रमानन्द, नसीमा, माधवी; जानकीक उल्लेख; हेमलताक छोट प्रसंग नहि।

माधवी कहलक, “हम ई नहि कहैत छी जे सभ थारी धोएनिहारक नाँव लिखू। मुदा जकर ज्ञानसँ वाक्य बनल, ओकरा ‘घरक लोक’मे मेटाउ नहि।”

देवकान्त कहला, “मेटा नहि रहल छी। लेख छोट अछि।”

माधवीक चेहरा पर किछु कठोर भेल, फेर तुरन्त शांत। “ठीक।”

“ठीक?”

“अहाँ प्रति पठाउ।”

“अहाँ सहमत छी?”

“हम कहने छी—पठाउ।”

देवकान्त पहिल बेर साफ सुनलनि जे सहमति आ अनुमति अलग बात हो सकैत अछि।

ओ कहला, “माधवी, ई केवल एक लेख अछि। पोथीमे—”

माधवी बीचमे रोकलक। “हम पोथीक बात बादमे करब।”

“एखन किएक नहि?”

“किएक तँ एखन हमरा बुझय पड़त जे पोथीक कतेक हिस्सा हमरा हाथक अछि आ कतेक अहाँक।”

देवकान्तक भीतर भयक हलुक लहर उठल। “ई प्रश्न पहिनहुँ—”

“पहिनहुँ छल। एखन उत्तर बदलि रहल अछि।”

“किएक?”

माधवी ओकर सोझाँ सीधा बैसल। “किएक तँ काल्हि राति अहाँ प्रेमक बातक बाद पहिल अवसरपर हमर स्पष्ट वाक्य काटलहुँ। कारण उचित हो सकैत अछि। पत्रिकाजे ठामक सीमा सच हो सकैत अछि। मुदा निर्णय फेर अहाँक हाथमे रहल।”

देवकान्त कहला, “हम अलग लेख लिखब।”

“हो सकैत अछि।”

“लिखब।”

माधवी केवल माथ हिलेलक। “तिथि लिखि रखने छी। मोन अछि।”

ई वाक्य आरोप नहि छल; अभिलेख छल।

देवकान्तक लग एक्कासि कोनो तर्क नहि रहल।

अगिला भोर देवकान्त लेखक लिफाफा बन्द करबाक तैयारीमे छलाह। माधवी ओसारपर आयल। हाथमे कपड़ाक एक खाली झोरा।

देवकान्त सोचलनि ओ भानसघरक किछु सामग्री लेल आयल होएत।

माधवी कहलक, “हमर किछु पन्ना दिअ।”

देवकान्तक हाथ लिफाफापर थमकल। “कोन?”

“जे पन्ना हम अपनैँ लिखने छी आ एखन धरि अहाँक पोथीक गठरीमे साझा चिन्हसँ अछि। सभ नहि। किछु।”

“किएक?”

“हम अपन लग रखब।”

“प्रतिलिपि बना लेब?”

“अहाँ चाही तँ अपन नकल बना लिअ। मूल हमरा दिअ।”

देवकान्तक स्वर अनायास ऊँच होएबाक छल, मुदा ओ रोकलनि। “माधवी, हम काटल पाँति मेटौने नहि छी। स्रोत लिखने छी। अलग लेख—”

“हम झगड़ा करय नहि आयल छी।”

ओ वाक्य एतेक शान्त छल जे देवकान्तक भीतरक सभ तैयार उत्तर एक्कासि असंगत लगल।

माधवी गठरीक कात बैसल। एक-एक पन्ना देखय लागल—तिलकोरक मूल टिप्पणी नहि; ओ पोथीमे रहय देलक। बगियाक किछु माप-सुधार सेहो रहय देलक। मुदा अपन नानी धनेश्वरीक कथा सम्बन्धी अलग पन्ना, पाँतिक श्रम पर निजी नोट, आ दू-तीन तिरहुता पन्ना ओ अलग कएलक।

देवकान्त पूछलनि, “ई सभ पोथीसँ बाहर?”

“एखन हमर लग।”

“कतेक दिन?”

“नहि जानैत छी।”

“हमरा काज रुकत।”

माधवी पन्ना समेटैत कहलक, “किछु काज रुकबाक चाही, जँ स्रोतक मन बदलल हो।”

देवकान्तक चेहरा तमतमायल, फेर ओ स्वयं रोकलनि। “अहाँ मन बदललहुँ?”

माधवी माथ उठेलक। “पोथी छोड़ल नहि। भरोसा फेर देखैत छी।”

ई वाक्य देवकान्त पर आरोपसँ बेसी भारी पड़ल।

“हमरा विश्वास नहि?”

“विश्वास अछि। मुदा विश्वास सीमा बिना नहि। काल्हि अहाँ देखेलहुँ जे एक सम्पादकीय दबावमे नाँवक पाँति पहिने कमजोर पड़ि सकैत अछि। तखन हमरा अपन मूल पन्ना किछु दिन अपनैँ लग रखबाक अधिकार अछि।”

देवकान्त कहला, “अछि।” शब्द कहब कठिन छल, मुदा कहलनि।

माधवीक हाथ एक क्षण थमकल। कदाचित ओ एहि स्वीकृतिक अपेक्षा नहि कएने छल।

ओ पन्ना झोरामे रखलक।

देवकान्त पूछलनि, “प्रेमक बात?”

माधवीक चेहरा बदलल नहि। “ओहिक उत्तर काल्हि देलहुँ—अस्वीकार नहि। मुदा प्रेमक कारण पन्ना नहि देब।”

“हम ओ नहि पूछलहुँ।”

“तखन?”

“ई घटना ओकरा बदलैत अछि?”

माधवी बहुत देर चुप रहल। “प्रेम केवल अनुभूति नहि। काज सेहो। काज बदलत तँ उत्तर बदलत। एखन हम देखैत छी।”

देवकान्तक हाथ मेजक कात कसि गेल। “हम सुधारि सकैत छी।”

“सुधारू।”

“कोना?”

“पहिने ई नहि पूछू जे हमरा की करबाक चाही ताकि हम फेर पन्ना दिअ। पूछू—अहाँ की उचित मानैत छी।”

ओहि क्षण देवकान्त बुझलनि जे क्षमा माँगब सेहो कखनो स्वार्थक रूप ले सकैत अछि—जँ उद्देश्य केवल खोएल अधिकार आपस पाबय हो।

ओ धीरे कहला, “काटल पाँति नवा प्रतिमे आपस जोड़ि दी?”

माधवी तुरन्त उत्तर नहि देलक।

“जँ केवल हमरा कारण जोड़ब, तखन नहि,” ओ अन्ततः कहलक। “जँ अहाँ मानैत छी जे लेख ओकरा बिना अधूर अछि, तखन जोड़ू। परिणाम अहाँक।”

देवकान्त लिफाफा दिस देखलनि। डाकक समय निकट छल। पाँति जोड़ला पर फेर नकल बदलय पड़त, लेख कनी पैघ होएत, सम्पादक अप्रसन्न भऽ सकैत।

माधवी उठि गेल।

“अहाँ रुकू,” देवकान्त कहला।

माधवी मुड़लक।

देवकान्त काटल पाँति सम्बन्धी पुरान पन्ना खोललनि। कारी रेखाक आर-पार शब्द स्पष्ट पढ़ाईत छल—“भानसक इतिहास बनौनिहार स्त्रीसभक नाँव बिना अधूर अछि।”

ओ नवा प्रति खोललनि। अन्तिम अनुच्छेदक बीच ठाम कम छल। एक पाँति जोड़ला पर दोसर पृष्ठ फेर लिखय पड़त।

देवकान्त कलम उठौलनि।

माधवी किछु नहि कहल।

ओ वाक्य लिखलनि नहि।

कलम कागजक ऊपर किछु क्षण ठमकल, फेर ओ लिफाफा बन्द कऽ देलनि।

माधवी एतबे देखलक। न तर्क, न आरोप।

ओ अपन पन्नाक झोरा उठा चलि गेल।

दुआरि पार करैत समय हेमलता ओकरा भेटल। “दीदी, कतए?”

“अपन कागज रखय।”

“आपस अनब?”

माधवी हेमलताक चेहरा देखलक। “जे साझा रहत, रहत। जे हमर अछि, ओ हमरा लगो रहय।”

हेमलता पूरा बात कदाचित नहि बुझलक, मुदा प्रश्न नहि कएलक।

ओसारपर देवकान्त एकसरि रहि गेलाह। लिफाफा बन्द छल।

काटल पाँति मूल पन्नापर एखनहुँ पढ़ल जा सकैत छल।

मौन पहिल बेर प्रेमक मौन नहि रहल; ओ निर्णयक बादक मौन छल।

देवकान्त केँ लगल जे झगड़ा होइत तँ कदाचित सहज होइत। शब्दक उत्तर देल जा सकैत। माधवीक शान्त पन्ना-आपस-माँगनाइ हुनकर सोझाँ एहन रिक्त ठाम छोड़ि गेल जकरा कोनो तर्क भरि नहि सकैत छल।

डाकिया आएबासँ पहिने देवकान्त लिफाफा फेर हाथमे लेलनि। एक क्षण मोहर
तोड़बाक इच्छा भेल।

ओ नहि तोड़लनि।

लेख चलि गेल।

पाँति रहि गेल।

आ दुनूक बीच पहिल प्रत्यक्ष नैतिक दरार कागजपर एक महीन कारी रेखा जकाँ दर्ज
भऽ गेल।

अध्याय २४ — भोजक बाहर

परिवारक बड़ संस्कारक दिन भोर होएबा सँ बहुत पहिने घर जागि गेल। अन्हार एखन पूरा हटले नहि छल, मुदा भीतरक आँगनमे चूल्हि जलि उठल, कुआँ सँ पानि आनल जाए लागल, पात धोल गेल, दहीक मटकी छाँहमे राखल गेल, चाउर चुनल गेल।

बाहरक दालानमे पाहुनसभ लेल आसन, चौकी आ पाँतिक ठाम बनेबाक काज चलैत छल। भीतर भानसघरक चारूकात स्त्रीसभ, पड़ोस सँ सहायता लेल आएल दू-तीन परिचित स्त्री, गोनू आ घरक अन्य सहायक बेराबेरी काज पकड़ैत गेल।

देवकान्त सेहो भोरहि सँ जागल छलाह। ओ पहिने पानि उठेबामे हाथ लगौलनि, फेर जानकी हुनका रोकलीह। “अहाँक काज एखन ई नहि। बाहर पाहुन आबय लगत। घरक पुरुषसभक संग रहू।”

देवकान्त कहला, “भोज बनत भीतर, हम बाहर की करब?”

जानकी उत्तर देलीह, “एही प्रश्नक उत्तर आइ देखब।”

माधवी ओहि समय पीठारक दशा देखैत छल। देवकान्त ओकरा दिस देखलनि। पिछला दिनक काटल पाँति आ मूल पन्नासभक झोरा एखन दुनूक बीच उपस्थित छल, यद्यपि कोनो कागज सोझाँ नहि छल।

माधवी केवल कहलक, “बाहर जाएब। पाहुनसभकेँ कियो तऽ सम्हारत।”

स्वर सामान्य छल। देवकान्त बुझि नहि सकलाह—ई सहज बात छल कि दूरी। ओ अपन अनुमानकेँ ओतहि रोकि देलनि।

सूरज उगला धरि दालान भरय लागल। दूरक कुटुम्ब, गामक बुजुर्ग, देवकान्तक पिता-पुस्तकक परिचित, संस्कारक निमित्त आएल पण्डित, खेत-घरक सम्बन्धी—सभ अलग-अलग दलमे बैसि गप करय लगल।

कियो भूकम्पक बात उठबैत, कियो फसलक, कियो नेपाल दिसक नातेदारीक। थोड़े बेरमे बात भोजनपर आबि गेल।

एक बुजुर्ग पाहुन कहला, “मिथिलाक भोजक बाते अलग। बाहर कतेको ठाम खा लिअ, ई क्रम, ई दही, ई मिठास, ई पाँति—कतहु नहि।”

दोसर व्यक्ति तुरन्त जोड़लनि, “आ अपन लोकक हाथक स्वाद। शहरक भानस करनिहार की बुझत?”

देवकान्त सुनैत रहलाह। एहि वाक्यसभमे हुनकर लेखनक विषय जकाँ किछु छल—स्थानीय स्वाद, घरक परम्परा, पाँति। मुदा ‘अपन लोकक हाथ’ कहला पर हुनका भीतरक आँगन याद आयल, जतए कतेको हाथ एखन बिना बैसल काज कऽ रहल छल।

बाहर गप चलैत रहल—‘पुरान रीति’, ‘घरक मान’, ‘मिथिलाक महान भोजन’। प्रत्येक वाक्य भोजन केँ गौरव बनबैत छल।

ओहि बीच हेमलता दौड़ैत बाहर आयल। “देवकान्त बाबू, भीतर सँ कहल गेल अछि—दहीक मटकीक संख्या लिखि दिअ। जानकी काकी व्यस्त छलीह।”

देवकान्त भीतर गेलाह।

दालानक शान्त गपक विपरीत भीतर आवाजक घनत्व अलग छल—बासन टकराबय, पानि उबलय, कियो नून पूछय, कियो लकड़ी माँगय, कियो पात गिनय। धुँआ आ भापक बीच स्त्रीसभक चेहरा चमकि रहल छल।

माधवी एक हाथसँ तरकारीक पातिल देखैत, दोसर हाथसँ हेमलता केँ परोसनक कटोरी गिनबैत छल। जानकी दू पातिलक बीच ठाढ़ क्रम तय करैत छलीह।

“दही?” देवकान्त पूछलनि।

जानकी कहलीह, “पाँच पैघ मटकी बाहरक पाँति लेल, दू भीतरक स्त्री-पाँति लेल; एकटा बचत राखू। कतेक लोक बढ़ि जाएत, नहि जानि।”

देवकान्त संख्या लिखलनि।

माधवी कहलक, “आ जे काजमे लागल छथि, हुनका?”

जानकी एक क्षण ठमकि कहलीह, “अन्तिम मटकी ओहि लेल अलग। केओ भूखल नहि रहत।”

देवकान्तक कलम रुकल। ‘अन्तिम मटकी’—शब्द साधारण छल, मुदा क्रमक पूरा अर्थ खोलैत छल।

जानकी ओकरा देखलीह। “एखन दर्शन नहि। बाहर जाउ, पाहुन प्रतीक्षा करैत छथि।”

देवकान्त फेर दालानमे गेलाह। बाहर एक पाहुन हुनका देखिते कहला, “अहाँ तऽ एहि सभपर पोथी लिखैत छी ने? ई भोज लिखू—मिथिला एतहि बसैत अछि।”

देवकान्त हँसि उत्तर देलनि, “मिथिला केवल पाँतिमे बैसल लोक नहि।”

पाहुन कहला, “तखन?”

देवकान्त भीतर दिस देखलनि, मुदा पूरा उत्तर एखन हुनका लग नहि छल। “भोजक बाहर जे काज चलैत अछि, ओहो।”

बुजुर्ग हँसि कहला, “लेखक लोक सभ ठाम गूढ़ बात खोजैत छथि।”

गप फेर चलि गेल। देवकान्तक कान बाहर छल, ध्यान भीतर। भोजक चमक एखन बनि रहल छल; जकरा देखिकऽ साँझि लोक ‘परम्परा’ कहत, ओहि चमकक पाछाँ भोर सँ चलैत श्रमक आवाज छल।

**

पहिल पाँति बैसबाक समय दालानक पूरा स्वर बदलि गेल। गप करैत लोक अपन-अपन ठाम खोजय लगल। घरक एक बुजुर्ग क्रम बतबैत गेलाह—पहिने दूरसँ आएल वृद्ध पाहुन आ संस्कारक मुख्य अतिथि, तकर बाद अन्य कुटुम्ब आ गामक लोक।

देवकान्त जानि-बुझि कऽ ई दृश्य ध्यानसँ देखलनि। ओ एकरा पूरा मिथिलाक शाश्वत नियम जकाँ नहि लिखय चाहैत छलाह; ई एहि घरक, एहि अवसरक व्यवस्था छल।

पात पसरल। पानि छिड़कि पात धोआ गेल। गोनू आ दू युवक लोटा भरि पानि दैत गेल। किछु वृद्ध पाहुन अपन लोटा अलग राखने छलाह; हुनकर नेम अनुसार पानि ओहीमे देल गेल।

एक बूढ़ व्यक्ति पूछलनि, “हमर लोटा कतए?”

गोनू तुरन्त ओहि चिन्हित लोटा पहुँचा देलक।

देवकान्त नोट करय चाहलनि, फेर स्मरण भेल—ई व्यक्तिगत नेम अछि; एकरा सार्वभौम सामाजिक नियम बना देब बेठीक होएत। ओ केवल लिखलनि—‘किछु पाहुन अपन बासन/पानिक नेम संग अनैत छथि; एहि घरमे तदनुसार व्यवस्था।’

पहिल परोस भातक। तकर बाद दालि, तरकारी, अचार, तरुआ। कियो अधिक माँगैत, कियो हाथ रोकैत। परोसनिहार युवकसभक पएर प्रायः दौड़ैत छल।

बाहर पुरुष पाँति चलैत छल; भीतरक आँगनमे स्त्री-पाहुन लेल अलग पाँति तैयार होइत। भानसक काजमे लागल स्त्रीसभ एखन बैसबासँ बहुत दूर छलीह।

देवकान्त भीतर गेलाह तँ माधवी एक पातिल सँ दोसर पातिल धरि घुमैत छल। माथक कात केश पसीनासँ चिपकल।

“अहाँ खएलहुँ?” देवकान्त पूछलनि।

माधवी ओकरा देखिकऽ एहन चेहरा बनौलक जे प्रश्न स्वयं हास्यास्पद हो। “एखन पहिल पाँति अछि।”

“तँ?”

“परोस समाप्त हो, भीतरक पाँति हो, बच्चासभ खा लए, काज करनिहारसभक पाँति हो—तकर बाद।”

देवकान्त कहला, “काज करनिहारसभक पाँति अलग किएक?”

माधवीक हाथ थमकल। “अलग किएक—ई प्रश्न घरक बुजुर्गसँ पूछू। मुदा ई देखू जे पहिल पाँतिमे बैसल कतेको लोकक भोजन ओ लोक परोसि रहल अछि जे स्वयं अन्तमे खायत।”

“अहाँ एहि व्यवस्था सँ सहमत छी?”

माधवी सीधा उत्तर नहि देलक। “हम एखन पातिल सम्हारैत छी। बहस लेल हाथ खाली चाही।”

ओ आगे बढ़ि गेल।

देवकान्त दुआरि लग ठाढ़ रहलाह।

थोड़े बेर बाद पहिल पाँति उठल। पात हटाओल गेल, जमीन धोआ गेल, दोसर पाँति बैसल। परोसन फेर आरम्भ।

दोसर पाँतिमे गामक किछु लोक, खेत-घरक परिचित, दूरक सम्बन्धी। भोजन प्रायः वएह, मुदा परोसनिहार थाकल। पानि भरनिहार युवकक कन्धा झुकि रहल।

गोनू एक क्षण दुआरि लग पीठ सीधा करय ठमकल। देवकान्त कहला, “बैसि कनी पानि पीबू।”

गोनू हँसल। “पहिने सभकेँ पानि पहुँचा दी। हम तऽ एहि घरक लोक छी, हमर बेर बादमे।”

‘घरक लोक’—देवकान्त केँ शब्द खटकल। घरक लोक होएब एहि क्षण पहिने खाएबाक अधिकार नहि, बाद धरि काज करबाक उत्तरदायित्व बनि रहल छल।

भीतर स्त्री-पाँति शुरू भेल। किछु वृद्धा बैसलीह; जवान स्त्रीसभ परोसैत रहलीह। जानकी स्वयं एखनहुँ नहि बैसलीह।

हेमलता देवकान्तक कात आबि फुसफुसायल, “भोजमे जे सभसँ बेसी दौड़ैत अछि, ओ सभसँ बादमे खाइत अछि।”

देवकान्त कहला, “ई तोहर बात अछि?”

“हँ। लिखू।”

ओ नाँव सहित लिखलनि—‘हेमलता: जे सभसँ बेसी दौड़ैत अछि, ओ सभसँ बादमे खाइत अछि।’

हेमलता प्रसन्न होएबाक बदला भीतर दिस देखलक। “दीदी एखन धरि पानि सेहो नीक सँ नहि पीने छथि।”

देवकान्तक नोटबुक बन्द भऽ गेल।

ओ जानकी लग गोलाह। “काज करनिहारसभक भोजन पहिने किएक नहि?”

जानकी थाकल आँखिसँ देखलीह। “एहि अवसरक व्यवस्था एहनहि चलैत आबि रहल अछि। पाहुन पहिने। घर बादमे।”

“मुदा घरक भीतर सेहो सभ एक बेर?”

जानकी उत्तर देलीह, “सभ काज एक संग छोड़ि बैसि जाएत तँ परोसत के? पानि देत के? पात उठाओत के?”

ई तर्क व्यवहारिक छल, मुदा व्यवहारिकताक भीतर श्रेणी छिपल छल—के परोसत, के बैसत; केकर भूख प्रतीक्षा करि सकैत, केकर नहि।

देवकान्त ई निष्कर्ष नोटमे न लिखलनि। केवल दृश्य लिखलनि।

किछु बेर बाद काज करनिहार पुरुषसभक छोट पाँति लगल। स्त्रीसभक भोजन एखन बाकी। बासनक ढेर अलग-अलग ठाम जमा छल—पाहुनक उपयोग भेल धातुक कटोरी, घरक बासन, पात। पानि फेर भरल गेल।

देवकान्त बुझलनि जे सामाजिक क्रम केवल भाषणमे नहि; बैसबाक बेर, पानि देबाक हाथ, खाली बासन उठेबाक क्रम, खाएबाक प्रतीक्षामे सेहो लिखल रहैत अछि।

मुदा ओ सावधान रहलाह—जे देखल, ओ एहि घरक एहि भोजमे देखल। एकरा पूरा क्षेत्रक नियम कहि देब फेर वएह पुरान भूल होएत।

**

दुपहर ढलिते भोजक मुख्य भीड़ कनी छँटल। बाहर दालानमे चुनिंदा पाहुन एखनहुँ बैसल छलाह। भोजनक बाद पान-सुपारी चलल, गप फेर संस्कृति दिस मुड़ल।

एक शिक्षित पाहुन देवकान्तसँ पूछलनि, “अहाँक पोथी कतेक आगाँ बढ़ल?”

देवकान्तक थकान एक क्षण लेल उत्साहमे बदलि गेल। “बहुत सामग्री जमा भेल अछि।”

“की-की?”

“ऋतु अनुसार भोजन, सुखौना, पोखरि-मखान, माछक बाजार, तिलकोर, बगिया, अदौरी, शब्दक भिन्नता, जनकपुर दिसक सीमा-पार चलन...”

पाहुन प्रभावित भेलाह। “एतेक ज्ञान कतए सँ?”

प्रश्न साधारण छल। उत्तर कठिन नहि होएबाक छल।

देवकान्त कहला, “घरक पुरान परम्परा, जानकीक अनुभव, गामक लोक, बाजारक लोक... बहुत स्रोत।”

माधवीक नाँव एखन तक नहि आयल।

किछु क्षण बाद दोसर पाहुन पूछलनि, “तिलकोरक कोमल पात चुनबाक बात लिखने छी? हमर घरमे सेहो बूढ़ स्त्रीसभ कहैत छलीह—पातक उम्र स्वाद बदलैत अछि।”

देवकान्त तुरन्त उत्साहित भेलाह। “हँ, हम लिखने छी जे कोमल पात, नसक दशा, पीठारक गाढ़पन—सभ देखय पड़ैत अछि। मात्रा मात्र पर्याप्त नहि।”

ओ वाक्य प्रायः माधवीक भाषिक ढाँचा छल।

पाहुन कहला, “अहाँ स्वयं भानस करैत छी?”

सभ हँसि पड़ल।

देवकान्त सेहो हँसलाह। “नहि, हम सीखैत छी।”

“के सिखबैत?”

एहि बेर देवकान्त कहला, “माधवी बहुत बात सिखेलक—विशेषतः मात्रा सँ बेसी चिन्ह देखब, ऋतु, पातक दशा, हाथक दबाव।”

माधवीक नाँव कहल गेल। देवकान्त केँ थोड़े राहत भेल।

दोसर पाहुन कहला, “ओ कतए छथि? बजाउ ने, हमहूँ सुनब।”

देवकान्त भीतर दिस देखलनि। ओही क्षण माधवी पानि भरल बाल्टी एक कात रखि, खाली पातिल उठबैत छल। ओकर आँचरक किनार भीजल, हाथमे हल्दी-मसालाक दाग।

देवकान्त कहला, “एखन भीतर काजमे छथि।”

“भोज समाप्त भेल ने?”

“हुनका लेल एखन नहि।”

एक बुजुर्ग हँसि कहला, “घरक स्त्रीक भोज कखन समाप्त होइत?”

गपमे हलुक हँसी उठल।

देवकान्त हँसि नहि सकलाह।

पाहुन फेर पोथीक बात पूछय लगलाह। देवकान्त माधवीक एक वाक्य उद्धृत कएलनि—“ओ कहैत अछि, ‘जाड़मे आम नहि रहत, खटास रहत।’ सुखायल आमक अर्थ एहि सँ बेसी नीक कोना कहब?”

पाहुनसभ प्रशंसा कएलनि। “बहुत सुन्दर!”

माधवी भीतर ओहि समय बासनक ढेर गिनैत छल कि पानि पीबैत छल—देवकान्त नहि जानैत छलाह। ओकर वाक्य बाहर तालिका, लेख, विचार बनि प्रशंसा पाबि रहल छल; ओ स्वयं भोजक काजमे अनुपस्थित जकाँ उपस्थित छल।

देवकान्तक मनमे इच्छा भेल—एखन उठि माधवी केँ बजाउ, ओकरा एहि गपमे बैसाउ।

ओ उठलनि नहि।

कारणसभ तुरन्त तैयार छल—ओ थाकल होएत; भीतर काज अछि; पाहुनक बीच बैसब ओकरा असहज लगि सकैत; घरक बुजुर्ग की सोचत; समारोहक व्यवस्था भंग होएत।

देवकान्त केँ बुझायल, कारण चाहे कतेक सभ्य शब्दमे आबय, परिणाम एके अछि—माधवीक ज्ञान दालानमे अछि, माधवी नहि।

एक पाहुन कहला, “अहाँक पोथी छपल तँ मिथिलाक घर-भानसक इतिहास बदलि देत।”

देवकान्त उत्तर देलनि, “एखन बहुत काज बाकी अछि।”

ओ वाक्य कहिते देवकान्त केँ बुझायल जे काज एखन सचमुच बहुत बाकी अछि।

कियो ध्यान नहि देलक।

माधवीक अनुपस्थिति पर सेहो कियो ध्यान नहि देलक।

देवकान्त देलक। मुदा ध्यान देब आ काज करब एखन फेर दू अलग बात बनि रहल छल।

साँझि उतरैत भोजक घर थकानमे धँसि गेल। बाहरी पाहुन बहुत घटि चुकल, मुदा दालानमे पाँच-छह बुजुर्ग आ दू शिक्षित युवक एखनहुँ बैसल छलाह। गप लेखन, इतिहास आ परम्परा पर आबि गेल।

एक युवक देवकान्तक नोटबुक देखिकऽ पूछलक, “ई सभ अहाँक संग्रहक मूल पन्ना?”

देवकान्त सहजहि कहला, “नहि, मूल सभ अलग अछि। ई हमर संग्रहक काजक नकल अछि।”

वाक्य निकलि गेल।

‘हमर संग्रह।’

देवकान्तक कान अपना वाक्य पर एहन अटकिगेल जे आगाँक गप कुछ क्षण अस्पष्ट भऽ गेल।

सोझाँ खुलल पन्नापर नसीमाक नाम छल। दोसर पन्नामे रमानन्द। तिलकोरक पन्नामे माधवीक हस्ताक्षरक उल्लेख। हेमलताक प्रतिलिपि अलग। जानकीक वाक्यसभ।

ई सभ 'हमर संग्रह' केना?

युवक कहि रहल छल, “बहुत बड़ काज अछि। एहन संग्रह एक मनुख नहि करि सकैत।”

देवकान्तक लग एखन उचित अवसर छल। केवल एक वाक्य कहबाक—‘ई हमर एकल संग्रह नहि।’

ओ मुँह खोललनि।

तखने घरक एक बुजुर्ग गर्वसँ कहला, “देवकान्त बचपने सँ अलग बुद्धिक। शहरमे पढ़ि कऽ अपन माटि नहि बिसरल। आब देखू, मिथिलाक ज्ञान पोथीमे बाँधि रहल अछि।”

दोसर कहला, “परिवारक नाँव होएत।”

देवकान्तक मुँह फेर बन्द भऽ गेल।

ओ चाहति तऽ एहि गर्वक बीच माधवी, जानकी, नसीमा, रमानन्द, हेमलता, गोनू—सभ नाँव कहि सकैत छलाह।

ओ नहि कहलनि।

केवल एतेक कहला, “बहुत लोक सहायता करैत अछि।”

वाक्य बेठीक नहि छल। मुदा पर्याप्त नहि।

युवक पूछलक, “मुख्य लेखक तँ अहाँ?”

देवकान्तक भीतर काटल पाँति जकाँ किछु खिंचि गेल।

“लेखन हम करैत छी,” ओ कहला।

एहि बेर ‘मुख्य’ शब्द केँ न स्वीकारलनि, न अस्वीकारलनि।

बाहरक अन्हार गाढ़ होइत गेल। भीतर भानसघरक अन्तिम पातिल धोल जा रहल छल।

माधवी एखन अन्तिम स्त्री-पाँतिमे बैसलीह कि एखनहुँ काजमे—देवकान्त केँ नहि मालूम। ई अज्ञान हुनका एक्कासि लज्जित कऽ देलक।

ओ उठि भीतर गेलाह।

आँगनक एक कोनमे माधवी, हेमलता, जानकी आ दू सहायक स्त्री आखिरकार खाय लगलीह। भोजन एखनहुँ पर्याप्त छल, मुदा गरमाहट बहुत कम। तरुआ नरम पड़ि गेल, दालि पुनः गरम कएल गेल छल।

हेमलता देवकान्त केँ देखिकऽ कहलक, “आब लेखक बाबू देखू—अन्तिम पाँति।”

जानकी थाकल हँसी हँसलीह। “अन्तिम कहू नहि। घरक पाँति कहू।”

माधवी किछु नहि कहलक।

देवकान्त दुआरि लग ठाढ़ रहलाह।

माधवीक थारीमे ओहि पकवानसभक छोट-छोट भाग छल जकर चर्चा बाहर ‘मिथिलाक महान भोजन’ कहि भेल छल। किन्तु ओहि थारी धरि पहुँचैत स्वादक ताप बदलि चुकल छल।

देवकान्त पूछलनि, “अहाँ एखन खाइत छी?”

माधवी माथ उठौने बिना कहल, “देखैत छी।”

शब्दमे व्यंग्य कम, थकान बेसी छल।

देवकान्त कहला, “बाहर हम... पोथीक बात करैत छलहुँ।”

माधवी केवल “हँ” कहलक।

“हम कहि देलहुँ—‘हमर संग्रह।’”

माधवी एहि बेर माथ उठेलक।

देवकान्त अपेक्षा कएलनि—ओ टोकत, व्यंग्य करैत, काटल पाँतिक बात याद दिलबैत।

माधवी केवल पूछलक, “तखन?”

देवकान्तक लग उत्तर छल—‘हम सुधारि नहि सकलहुँ।’

ओ कहला, “हम बादमे ‘बहुत लोक सहायता करैत अछि’ कहने रही।”

माधवी थारी दिस देखलक। “सहायता?”

एक शब्द।

देवकान्त बुझलनि जे भूल एतहि अछि। सहलेखक, स्रोत, ज्ञानक धारक, काज करनिहार—सभ ‘सहायता’ बनि गेल।

ओ धीरे कहला, “ई शब्दो ठीक नहि छल।”

माधवी उत्तर नहि देलक।

हेमलता वातावरण बुझि चुप भऽ गेल। जानकी खाइत रहलीह।

किछु क्षण बाद माधवी कहलक, “अहाँ सार्वजनिक रूपसँ जे कहलहुँ, ओकरा सार्वजनिक रूपसँ बदलय पड़त।”

देवकान्तक माथ नीचाँ झुकल। “हँ।”

“कखन?”

ओ प्रश्न सरल छल।

देवकान्त कहला, “अगिला अवसर।”

माधवीक चेहरापर बहुत हलुक, प्रायः अदृश्य थकानक हँसी आयल। “फेर बादमे?”

देवकान्त चुप।

पाछिल ‘बादमे’ सभ एक साथ ओकरा घेरि लेने छल—काटल पाँति, अलग लेख, स्रोतक नाँव, आब सार्वजनिक सुधार।

माधवी फेर खाय लागल।

देवकान्त दुआरि लग किछु बेर ठाढ़ रहलाह। बाहर दालानमे एखनहुँ लोक हुनकर संग्रहक प्रशंसा करैत छल। भीतर जकर हाथक ज्ञान सँ संग्रह भरल, ओ ठंढा भेल भोजन खा रहल छल।

भोज समाप्त होएबाक बहुत बाद देवकान्त नोटबुक खोललनि। ओ लिखलनि—
‘भोजक इतिहास थारीमे नहि समाप्त होइत।’

तकर नीचे किछु देर बाद दोसर पाँति जोड़लनि—‘जकरा हम सहायता कहलहुँ, कदाचित ओही सभ मूल काजक धारक छथि।’

ओ पाँति काटलनि नहि।

मुदा सार्वजनिक रूपसँ सुधार एखनहुँ बाकी छल।

खण्डक अन्तमे प्रश्न स्पष्ट भऽ चुकल छल—देवकान्त सत्य देखय लगल छथि; मुदा देखल सत्यक पक्षमे बोलबाक साहस एखन हुनका भीतर पूरा जन्म नहि लेने अछि।

अध्याय २५ — छपल लेख

भोजक तीन दिन बाद दुपहरमे डाकिया फेर कलकत्ताक लिफाफा अनलक, मुदा एहि बेर लिफाफा मोट नहि, चौड़ा छल। भीतर सँ पत्रिकाक ताजा अंक निकलल—स्याही एखन नवा गन्ध दैत, कागजक कोन कठोर, पृष्ठसभ कसिकऽ जुड़ल।

देवकान्त पहिल पन्ना पलटिते अपना लेखक शीर्षक खोजय लगलाह। सामग्री-सूचीमे नाँव देखलनि। ओहि एक पाँतिक नीचे हुनकर नाँव छपल छल—‘Devakanta...’—एकटा नाँव, स्पष्ट, कारी अक्षरमे।

हुनकर चेहरापर अनायास उजास आयल। महीनासँ चलैत नोट, काट, नकल, डाक, संशोधन—सभ एक क्षण लेल ठोस रूपमे हाथमे आबि गेल।

हेमलता पत्रिका देखिते चिचियेलक, “छपि गेल!”

जानकी भीतर सँ आबि पूछलीह, “की?”

“लेख!”

थोड़े बेरमे घरक दू-तीन लोक दालानमे जुटि गेल। कियो अंग्रेजी पूरा नहि पढ़ि सकैत छल, मुदा देवकान्तक नाँव पहचानि रहल छल। एक बुजुर्ग गौरवसँ कहला, “देखू, अपन घरक देवकान्त कलकत्ताक पत्रिकाजे!”

दोसर कहला, “भोजक दिन जे लोक प्रशंसा करैत छल, आब छपल प्रमाणो आबि गेल।”

देवकान्तक हँसी कनी थमल। ‘प्रमाण’ शब्द हुनका भीतर असहज कएलक। लेख प्रमाण छल कि प्रस्तुति? ई प्रश्न ओ एखन कहला नहि।

माधवी ओसारक एक कात ठाढ़ छल। भोजक बाद सँ ओकर व्यवहार कठोर नहि, मुदा नापल छल। ओ पत्रिका लेल हाथ नहि बढेलक।

देवकान्त कहला, “अहाँ देखब?”

“अहाँ पढ़ि सुनाउ।”

“पूरा?”

“जतए हमर बात अछि, ओतए जरूर।”

दालानमे उत्सुकता बढ़ल। हेमलता देवकान्तक कात बैसि गेल। जानकी सूत कातबाक काज हाथमे रखने सुनय लगलीह।

देवकान्त लेख खोललनि। पहिल अनुच्छेद मिथिलाक ऋतु, खेत, पोखरि, घरक भण्डार आ भोजनक बदलैत रूपपर छल। अंग्रेजी वाक्य सँ मैथिली अर्थ सुनबैत हुनका अपनहि लेख नवा जकाँ लगैत छल। सम्पादक किछु वाक्य छोट केने छल, किछु क्रम बदलने।

जानकी बीचमे कहलीह, “ई ठीक अछि—जाड़क भोजन आ बरखाक भोजन एक नहि।”

देवकान्त आगाँ पढ़लनि। तिलकोरक पात, मखान, माछ, अमट, अदौरी, बगिया—सभ आब व्यवस्थित अनुच्छेद बनि गेल छल। घरक बिखरल दिन सभ एक कागजी क्रममे।

हेमलता प्रसन्न भऽ कहलक, “हमर अदौरीक भूख छपल?”

देवकान्त पन्ना खोजलनि। “नहि। ओ छोट प्रसंग काटल गेल।”

“तखन पत्रिका आधा सत्य अछि,” हेमलता कहलक।

दालानमे हँसी उठल।

माधवी नहि हँसल।

देवकान्त तिलकोरक अंश पढ़य लगलाह। छपल लेखमे लिखल छल—कोमल पात चुनब, पीठार एतेक गाढ़ जे पातपर टिकि रहय, ताप एहन जे आवरण तुरन्त थामय। वाक्य देवकान्तक अंग्रेजी छल, मुदा संरचना माधवीक सिखाओल चिन्हसभ सँ बनल।

जानकी कहलीह, “ठीक लिखने छी।”

माधवी पूछलक, “एहि वाक्यक नीचे ककर नाँव अछि?”

देवकान्त पृष्ठक तल देखलनि। कोनो नाम नहि।

“लेखकक नाँव ऊपर अछि,” एक बुजुर्ग सहज भावें कहला। “बीच-बीचमे फेर नाँव किएक?”

माधवी बुजुर्ग दिस नहि, देवकान्त दिस देखलक।

देवकान्त कहला, “मूल प्रति मे स्रोत किछु ठाम छल। सम्पादनमे—”

माधवी बीचमे नहि रोकलक। ओ पूरा वाक्य सुनय देलक।

“—सम्पादनमे बहुत स्रोत-पाँति हटि गेल,” देवकान्त समाप्त कएलनि।

माधवी पूछलक, “अहाँक नाँव हटि गेल?”

प्रश्न एतेक सीधा छल जे दालानक हँसी थमि गेल।

देवकान्त धीरे कहला, “नहि।”

माधवी बस माथ हिलेलक। “आगाँ पढ़ू।”

परिवारक उत्साह एखनहुँ छल। हुनका लेल लेख छपब सफलता छल; माधवी लेल छपल पन्ना एखन परीक्षा बनि रहल छल। देवकान्त दुनू भाव एक्के समय अनुभव करैत छलाह—गर्व आ एहन कँपकँपी जेना कागजक भीतर किछु ओहि रूपमे आबि गेल अछि जकरा फेर आपस खींचब सहज नहि।

लेखक बीच भागमे ‘घरक ज्ञान’ पर एक अनुच्छेद छल। देवकान्त पढ़ि सुनौलनि—भोजनक नाप सभ बेर अड़कसँ नहि, गन्ध, स्पर्श, आटे-पानीक दशा, ऋतु आ हाथक अनुभवसँ तय होइत अछि।

माधवी तुरन्त पूछलक, “ई वाक्य कोन दिन बनल?”

देवकान्त मोन करय लगलाह—नूनक माप, बगियाक भाप, अदौरीक गाढ़पन, तिलकोरक पीठार। “एक दिनक नहि। बहुत दिनक बात जोड़ि लिखल।”

“बहुत दिनमे ककर-ककर बात?”

“अहाँक। जानकीक। हमर अवलोकन।”

“लेखमे?”

देवकान्त पन्ना देखलनि। वाक्यक बाद कोनो स्रोत नहि।

माधवी कहलक, “तखन छपल पन्नापर ई देवकान्तक विचार भेल।”

देवकान्त तुरन्त कहला, “लेखक रूपमे नाँव हमर अछि, मुदा विचार—”

“पाठक ककर नाँव देखत?”

देवकान्त चुप।

जानकी वातावरण हलुक करय चाहैत कहलीह, “हमर नाँव छूटल तँ की भेल? हमरा पोथी छपाबय नहि अछि।”

माधवी जानकी दिस सम्मानसँ देखलक। “अहाँ नहि चाहैत छी, ई अहाँक अधिकार। मुदा जे कहबक उपयोग भेल, ओकर नाँव रहत कि नहि, ई केवल लेखकक सुविधा नहि होएबाक चाही।”

जानकी एहि उत्तरपर चुप भऽ गेलीह।

हेमलता पत्रिकाक पृष्ठक ऊपर देवकान्तक नाँव अँगुरीसँ देखैत कहलक, “दीदीक नाँव कतहु नहि?”

देवकान्त पन्नासभ पलटलनि। एक ठाम ‘a young woman of the household’ जकाँ उल्लेख छल—एक युवा स्त्रीक कथन रूपमे। नाम नहि।

ओ अनुवाद कऽ सुनौलनि।

हेमलता तुरन्त कहलक, “ई दीदी?”

देवकान्तक स्वर निचाँ पड़ल। “हँ, माधवीक बातक आधारपर।”

माधवी पूछलक, “नाम किएक नहि?”

“सम्पादक कदाचित अनाम वर्णन राखने छथि। मूल प्रतिमे—”

“मूल प्रतिमे हमर नाँव छल?”

देवकान्त स्मृति खँगाललनि। बहुत ठाम छल, किछु ठाम ‘Madhavi says’ हटि ‘the women of the household say’ बनल छल; किछु ठाम ओ स्वयं सामान्य वाक्य बना देने छलाह।

“सभ ठाम नहि,” ओ स्वीकार कएलनि।

माधवीक मुखक रंग बदलल नहि। “तखन सम्पादक एकटा दोष केलक, लेखक दोसर।”

देवकान्तक भीतर प्रतिरोध उठल—ओ बहुत ठाम नाँव जोड़ने छलाह, बारम्बार सुधार केने छलाह, श्रेयक नियम सीखने छलाह। मुदा छपल पन्ना सोझाँ छल; आत्मकथा लिखि बचाव करब निरर्थक बुझायल।

ओ कहला, “हँ। जे ठाम हम सामान्य बना देने छी, ओ हमर दोष।”

हेमलता पत्रिका अपन कात खींचि एक वाक्य सुनबाक लेल कहल।

देवकान्त पढ़लनि—सुखायल आम पर छपल वाक्य: गरमीक खटासकँ सुखा कऽ पछिला ऋतु धरि बचाओल जाइत अछि। भाषा सुन्दर, चमकदार।

माधवी धीमे कहलक, “जाड़मे आम नहि रहत, खटास रहत।”

दालानमे सन्नाटा पड़ल।

देवकान्त कँ वएह दिन मोन पड़ल—अमट धूपमे, माधवीक हाथमे सिकुड़ल आमक टुकड़ा, ओकर सादा वाक्य। छपल वाक्य ओहि कहबक परिष्कृत रूप छल।

हेमलता पूछलक, “पत्रिकाजे ई दीदीक वाक्यक नाँव सँ नहि?”

“नहि,” देवकान्त कहला।

माधवी पत्रिका लेल हाथ बढ़ेलक। एहि बेर ओ स्वयं पृष्ठ देखलक—अंग्रेजी अक्षर पूरा सहज नहि, मुदा देवकान्तक नाँव ऊपर स्पष्ट।

ओ पन्ना आपस देलक। “परिष्कार कएलहुँ, तखन मालिक बदलि गेल?”

देवकान्त कहला, “नहि। बदलय नहि चाही।”

“मुदा छपल रूपमे बदलल।”

“हँ।”

माधवी धीरे कहलक, “जे बात हमर मुखसँ निकलल, ओकरा अहाँ सुन्दर बना सकैत छी। मुदा सुन्दर करबक मूल्य नाँव मेटेनाइ किएक?”

देवकान्तक लग उत्तर नहि छल।

एक बुजुर्ग, जे एखन धरि शान्त छलाह, कहला, “लेखक लोक सुनल बात लिखबे करैत छथि। सभक नाँव केना लिखत?”

माधवी हुनका प्रति कठोर नहि भेल। “सभ सुनल बात एक नहि। जँ ककरो वाक्य, विधि, अनुभव, चिन्ह—ओहि सँ लेखकक मुख्य बात बनल, तकरा ‘सभ लोकक बात’ कहि देब आसान अछि। कठिन काज अछि नाँव याद राखब।”

देवकान्तक आँखि पत्रिकाक पृष्ठपर टिकि गेल।

ओहि पृष्ठपर हुनकर नाँव एकटा छल। भीतरक ज्ञान अनेक हाथक।

छपाइ एहि अन्तरकैँ मिटा देलक नहि; उलटे स्थिर कऽ देलक।

**

कुर्थीक अंश बहुत पाछाँ नहि छल। देवकान्त पन्ना पलटिते ओकरा देखलनि आ एक्कासि सावधान भऽ गेलाह। मूल नोट मोन छल—जानकीक लोक-मान्यता: सालमे एक मास कुर्थी दालि खा लिअ, पथरी नहि होएत; माधवीक आग्रह: ‘लोकक कहब—जाँच बाकी।’

छपल लेखक वाक्य अधिक ठोस छल। अंग्रेजी सम्पादन ओकरा प्राय: एहन बना देने छल जे वार्षिक एक मास horse gram खेनाइ पथरी रोकबाक नियम हो। विश्वास, लोकक कहब, जाँच बाकी—ई सावधानीक चिन्ह ओझरा गेल।

देवकान्त पढ़िते रुकि गेलाह।

माधवी पूछलक, “की भेल?”

ओ वाक्यक अर्थ मैथिलीमे सुनौलनि।

जानकी तुरन्त कहलीह, “हम तँ कहने रही जे घरक बूढ़ लोक कहैत छल। हम कब कहने रही जे डाक्टरी नियम अछि?”

देवकान्त पन्ना फेर देखलनि। “मूल प्रतिमे ‘लोकविश्वास’ छल। हमरा मोन अछि।”

माधवी कहलक, “मोन नहि, मूल पन्ना देखू।”

हेमलता दौड़ि ओसारक कागजक गठरी आनलक। कुर्थीक पुरान पन्ना भेटबा मे किछु बेर लागल।

देवकान्त पढ़लनि—‘जानकीक कहब; पारिवारिक लोक-मान्यता। निश्चित चिकित्सकीय तथ्य नहि। जाँच बाकी।’

जानकी कहलीह, “ई तऽ स्पष्ट लिखल अछि।”

माधवी पत्रिका आ मूल पन्ना कात-कात रखलक। एक कागज कहैत छल—लोकक कहब, जाँच बाकी। दोसर, छपल कागज—प्राय: निश्चित स्वास्थ्य-नियम।

ओ देवकान्त दिस देखलक। “देखलहुँ? शब्द बदलल कि अधिकार बदलल।”

देवकान्त चुप।

माधवी अँगुरी मूल पन्नापर रखलक। “एतए जानकी बोलैत छथि। एतए संशय अछि। एतए पाठक केँ कहल जा रहल अछि—ई लोकक मान्यता अछि, प्रमाणित चिकित्सा नहि।”

फेर छपल लेखपर अँगुरी रखलक। “एतए लेखक बोलैत अछि। निश्चित स्वरमे। पाठक मानत—देवकान्त जाँचि कऽ लिखने छथि।”

देवकान्त कहला, “ई सम्पादकीय बदलाव अछि। हम एना नहि पठौने रही।”

माधवी तुरन्त स्वीकारलक। “ठीक। मुदा नाँव ककर छपल अछि?”

“हमर।”

“तखन सार्वजनिक जिम्मेदारी ककर?”

देवकान्तक उत्तर धीरे आयल—“हमर।”

जानकी कहलीह, “जँ ई बेठीक बुझल जाए तँ सुधार भेजू।”

देवकान्त पत्रिकाक चिट्ठीक पता खोजय लगलाह। “हम आइये पत्र लिखब।”

माधवी कहलक, “ई उचित काज अछि।”

देवकान्त एक क्षण राहत अनुभव कएलनि—कम-से-कम एहि बातपर स्पष्ट काज संभव छल।

मुदा माधवी आगाँ कहलक, “मुदा ई केवल कुर्थीक वाक्य नहि। एतए बदलाव देखाइत अछि, कारण तथ्यक स्वर बदलल। जेतए नाँव हटि गेल, ओतए सेहो अधिकार बदलल, बस नुकसान आँखिसँ तुरन्त नहि देखाइत।”

देवकान्त ओकरा देखलनि।

माधवी कहलक, “जँ ‘माधवी कहल’ हटि ‘घरक स्त्रीसभ कहैत अछि’ भऽ गेल, तँ एक मनुखक उत्तरदायित्व, अनुभव, ज्ञान सभ धुँधला भेल। जँ ‘लोकक कहब’ हटि ‘नियम’ बनल, तँ संशय मेटल। दुनू ठाम शब्द छोट बदलल; दुनू ठाम शक्ति बदलल।”

हेमलता एहन गंभीरता सँ सुनैत छल जे ओकर सामान्य प्रश्नोत्तर थमि गेल।

देवकान्त कुर्थीक मूल पन्नापर एक लाल चिन्ह लगौलनि—“तुरन्त सुधार पत्र।”

माधवी रोकलक। “लाल किएक?”

“जाहिसँ भूलि नहि जाए।”

“ठीक। मुदा पत्र लिखला बाद तिथि लिखू। ‘भेजब’ आ ‘भेजल’ अलग।”

देवकान्त माथ हिलेलनि।

ओ तुरन्त कोरा कागज निकालि अंग्रेजीमे सुधार-पत्र लिखय लगलाह—छपल स्वास्थ्य-वाक्य स्रोतक लोक-मान्यतासँ बेसी निश्चित बनि गेल अछि; अगिला अंकमे स्पष्ट सुधार छपबाक अनुरोध।

माधवी पूछलक, “जानकीक नाँव?”

देवकान्त पत्रमे जोड़लनि—ई कथन परिवारक मौखिक लोक-मान्यता रूपमे दर्ज कएल गेल छल, जानकी द्वारा कहल, आ लेखक द्वारा अप्रमाणित मान्यता रूपमे चिन्हित।

जानकी कहलीह, “हमर नाँव लिखि हमरा डाक्टर नहि बनाउ।”

देवकान्त कहला, “नहि। उलटे स्पष्ट करब जे ई चिकित्सकीय दावा नहि।”

माधवी पहिल बेर एहि दुपहर हलुक माथ हिलेलक।

सुधार-पत्र बनि रहल छल। मुदा छपल अंक घरक सोझाँ पड़ल छल—पहुँचि चुकल, पढ़ल जा चुकल, नाँव सहित स्थिर।

कागज पर भूल सुधारल जा सकैत छल; पहिल प्रभाव आपस बोलाओल नहि जा सकैत।

**

साँझि धरि परिवारक उत्साह कनी बैठि गेल। पत्रिका एखन मेजपर छल, मुदा आरम्भक चमक कम भऽ चुकल। देवकान्त सुधार-पत्र पूरा कऽ लिफाफा तैयार कएलनि। कुर्थीक वाक्य लेल स्पष्ट संशोधन लिखल गेल।

ओ माधवीक सोझाँ आबि कहला, “ई पत्र आइ डाकमे जाएत। आ नाँवक बात लेल अलग पत्र लिखब—सम्पादक केँ कहब जे अगिला अंकमे स्रोत-संशोधन देखि।”

माधवी अपन कागजक गठरी खोलि रहल छल।

“सुनलहुँ,” ओ कहलक।

देवकान्त आगाँ कहला, “आ लेख जँ पुस्तकमे फेर छपत, सभ नाँव जोड़ब। अगिला संस्करणमे एको स्रोत अनाम नहि रहत।”

माधवीक हाथ ठमकल।

“अगिला संस्करणमे?”

“हँ। एहि छपाइमे जे भूल भेल—”

“एहि छपाइमे हमर नाँव नहि अछि।”

“जानैत छी।”

“एहि छपाइमे हमर वाक्य अछि।”

“हँ।”

“एहि छपाइमे अहाँक नाँव अछि।”

देवकान्तक स्वर धीमा भेल। “हँ।”

माधवी एक पन्ना उठा अलग रखलक। ओ तिलकोरक मूल टिप्पणी छल।

देवकान्त चौकलाह। “ई किएक?”

“हमर लग रहत।”

“एखन धरि पोथीक साझा पन्ना छल।”

“एखन नहि।”

ओ दोसर पन्ना अलग कएलक—भाप, गन्ध आ पकबाक चिन्ह सम्बन्धी नोट। तेसर—अमट पर अपन वाक्य।

देवकान्त कहला, “माधवी, हम दोष मानैत छी। क्षमा माँगैत छी।”

माधवी उत्तर देलक, “क्षमा शब्दक उपयोग एहन नहि होएबाक चाही जे पन्ना फेर अहाँक गठरीमे घुरि जाए।”

“हम पन्ना लेल क्षमा नहि माँगैत छी। जे भेल—ओहि लेल।”

“तखन दोष मोन राखू।”

“राखब।”

माधवी पन्नासभ झोरामे रखैत गेल। सभ नहि। किछु साझा पन्ना पोथीमे छोड़ि देलक—जानकीक विधि, नसीमाक माछ, रमानन्दक मखान, हेमलताक प्रतिलिपि। मुदा जेतए ओकर अपन अनुभव, अपन वाक्य, अपन परिष्कार मुख्य छल, ओहि मे सँ किछु मूल पन्ना बाहर।

देवकान्त पूछलनि, “एतए सँ पोथी कोना पूरा होएत?”

माधवीक चेहरा पर थकान छल। “ई प्रश्न पहिने पूछबाक छल—पोथी पूरा होएबाक अधिकार ककरा मूल्य पर?”

“हम सुधार करब।”

“करू।”

“अगिला अंकमे नाम जोड़ब।”

“करू।”

“अगिला संस्करणमे—”

माधवी एहि बेर रोकलक। “अगिला संस्करण हमरा लेल उत्तर नहि।”

देवकान्त चुप।

माधवी कहलक, “किएक तँ पहिल संस्करण लोकक हाथमे अछि। पहिल बेर जे नाँव देखल गेल, ओ अहाँक। जे नाँव नहि देखल गेल, ओकर अनुपस्थिति सेहो इतिहास बनैत अछि।”

“तखन हम की करू?”

“ई हम नहि बताउ। अहाँ लेखक छी; सार्वजनिक भूलक सार्वजनिक उपाय अहाँ खोजू।”

देवकान्त कहला, “हम सम्पादक केँ लिखब, पत्रिकाजे सुधार, स्रोत-सूची—”

“ई सभ आवश्यक अछि। मुदा हमरा संग जे भेल, ओकर उपचार सूची नहि।”

ओ पन्ना समेटलक।

देवकान्तक स्वर काँपल नहि, मुदा भारी छल। “हमरा छोड़ि दैत छी?”

माधवी तुरन्त उत्तर नहि देलक।

“हम पोथीसँ किछु पन्ना निकालैत छी,” ओ अन्ततः कहलक। “बाकी बात एखन एक वाक्यमे नहि कहब।”

देवकान्तक आँखि नीचाँ गेल।

माधवी कहलक, “अहाँ बारम्बार कहैत रहलहुँ—जे नहि बुझब, अपनासँ खाली ठाम नहि भरब। एहि बेर अपन जीवनमे ई नियम लगाउ।”

ओ पन्नाक झोरा उठा लेलक।

दुआरि धरि पहुँचि फेर घुललक। “कुर्थीक सुधार आइ पठाउ। ओ बात लोकक देहसँ जुड़ल अछि। ओकरा ‘अगिला संस्करण’ धरि नहि रोकू।”

देवकान्त कहला, “आइये।”

माधवी चलि गेल।

हेमलता दालानक दोसर कात ठाढ़ सभ देखैत छल। ओ धीरे देवकान्त लग आबि पूछलक, “दीदीक नाँव अगिला अंकमे छपत?”

देवकान्त कहला, “छपबाक चाही।”

“चाही कि छपत?”

प्रश्न माधवीक ढंगक छल।

देवकान्त हेमलता दिस देखलनि। “हम एखनहि पत्र लिखब, आ उत्तर आए धरि छोड़ब नहि।”

हेमलता माथ हिलेलक।

राति देवकान्त दू पत्र लिखलनि। पहिल—कुर्थी सम्बन्धी लोक-मान्यता केँ चिकित्सकीय नियम जकाँ छापल गेल वाक्यक तत्काल सुधार। दोसर—लेखक स्रोत-श्रेय सम्बन्धी संशोधन: माधवी, जानकी, नसीमा, रमानन्द आ अन्य प्रत्यक्ष स्रोतक नाँव भविष्यक छपाइमे स्पष्ट रूपसँ देबाक आग्रह।

पत्र लिखि ओ तिथि लगौलनि। लिफाफा बन्द कएलनि, मुदा एहि बेर बन्द करबाक क्रिया हुनका सफलता नहि, प्रमाण जकाँ लगल—कम-से-कम एतबे जे काज ‘करब’ सँ ‘कएल’ दिस बढ़ल।

ओसारपर छपल पत्रिका खुलल पड़ल छल। शीर्षकक नीचे एक नाँव।

देवकान्त ओकरा बहुत देर देखैत रहलाह।

पहिने ओहि नाँवमे अपन उपलब्धि देखाइत छल। आब ओकर चारूकात खाली ठाम देखाइत छल—जेतए नामसभ होएबाक छल, जेतए संशय होएबाक छल, जेतए आवाजसभक भिन्नता बचबाक छल।

निजी प्रेमक दशर आब केवल दूनू मनुखक बीच नहि रहल। ओ छपल कागज पर सार्वजनिक भऽ चुकल छल।

आ छपल कागजक एक कठिन गुण अछि—स्याही सूखला बाद पछतावा ओकरा अपनै हलुक नहि करैत।

अध्याय २६ — जे नहि कहल गेल

छपल लेख आबि गेलाक किछु दिन बाद घरक वातावरण बाहरसँ फेर सामान्य देखाइत छल, मुदा देवकान्त लेल बहुत किछु बदलि चुकल छल। सुधार-पत्र डाकमे जा चुकल छल। माधवी अपन किछु मूल पन्ना अपनैँ लग राखि लेने छल। परिवारक लोक लेख छपबाक बात एखनहुँ गौरवसँ कहैत, मुदा देवकान्तक कानमे ओ गौरवक भीतर अनुपस्थित नाँव सभ सुनाइ पड़ैत।

एहनहि एक साँझ पिता हुनका दालानक भीतरक कोठरीमे बजेलनि। ओतए काका आ परिवारक एक बुजुर्ग सम्बन्धी सेहो बैसल छलाह। मेजपर चिट्ठीक एक लिफाफा, टूटा नाम लिखल कागज आ ककरो घरक वंश-सम्बन्धी छोट विवरण राखल छल।

पिता कहला, “आब तोहर विवाहक बात टारि नहि सकैत छी। पढ़ाइ भऽ गेल, लेख छपय लागल, उम्र सेहो बढ़ैत अछि।”

देवकान्त चुप रहलाह।

काका कागज आगाँ सरकौलनि। “ई घर नीक अछि। जमीन-संपत्ति पर्याप्त, पढ़ल परिवार, नगरसँ सम्बन्ध। कन्याक भाई सेहो पढ़ैत अछि। घरक मान-मर्यादा मिलत।”

देवकान्तक नजरि कागजपर गेल, मुदा नाम पढ़बा सँ पहिने भीतर एक दोसर चेहरा उठि आयल—माधवीक, जे पन्ना समेटि कहने छल, ‘अगिला संस्करण हमरा लेल उत्तर नहि।’

ओ कहला, “हम एखन विवाहक निर्णय नहि करय चाहैत छी।”

पिता पूछलनि, “किएक?”

“किछु बात स्पष्ट करबाक अछि।”

“ककरा संग?”

प्रश्न सामान्य छल, मुदा देवकान्त केँ लगल जे पूरा घर एक क्षण हुनकर मुँह दिस देखय लागल।

ओ कहला, “अपनासँ। आ किछु लोकसँ।”

काका हँसलाह। “विवाह दर्शनक प्रश्न नहि। घर देखल जाइत अछि, परिवार देखल जाइत अछि, जीवन चलय योग्य मेल देखल जाइत अछि।”

देवकान्त कहला, “मनुखो देखल जाइत अछि।”

“निश्चित,” पिता कहला, “मुदा मनुख एकसरि नहि रहैत। परिवारक भीतर रहैत अछि।”

ओ वाक्य बेठीक नहि छल। देवकान्त विरोध करय चाहैत छलाह, मुदा शब्द एखन हुनका आपस प्रश्न करैत छल।

बुजुर्ग सम्बन्धी धीरे पूछलनि, “तोहर मोन कतहु अछि?”

देवकान्तक गला सूखि गेल। उत्तर केवल ‘हँ’ छल।

ओ कहला, “एक मनुख अछि जकरा हम बहुत आदर करैत छी।”

पिता सीधा बैसि गेलाह। “के?”

देवकान्त माधवीक नाँव कहि सकैत छलाह। पिरुकियाक राति ओ प्रेम कहि चुकल छल। पोखरिक पात, कुर्थीक दालि, तिरहुता, भाप, नून, जनकपुरक बाट—सभ हुनका भीतर एक साथ जागल।

तथापि नाँव मुँह धरि आबि रुकि गेल।

काका कहला, “घरक जान-पहिचानक कियो?”

देवकान्त धीरे कहला, “हँ।”

“कुल-घर?”

देवकान्त एतए चिढ़ि उठलाह। “ओकर ज्ञान, ओकर बुद्धि, ओकर स्वभाव—ई सभ पूछब नहि?”

पिता कहला, “पूछब। मुदा विवाह केवल गुणक सूची नहि। आर्थिक अवस्था, घरक उत्तरदायित्व, समाजमे चलन—सभ विचार करय पड़ैत अछि।”

देवकान्त केँ स्पष्ट बुझायल जे ई ओहि असमानता अछि जकरा माधवी पहिने देखैत छल, आ ओ बहुत बेर प्रेमक भरोसामे छोट मानैत रहलाह। हुनकर घर प्रतिष्ठित, पर्याप्त जमीन-संपत्ति आ पढ़ल-लिखल सम्बन्धक जालमे। माधवीक परिवार आर्थिक रूपसँ

साधारण; ओकर ज्ञानक मोल भानस, खेत, पोखरि, ऋतु आ हाथक अनुभवमे, जकरा ई दालान सहजहि 'घरेलू' कहि छोट कऽ सकैत छल।

ओ कहला, “जँ घर साधारण हो, तँ मनुख छोट भऽ जाइत अछि?”

पिता कनी कठोर स्वरमे कहला, “ई बात के कहलक? साधारण घरक मनुख छोट नहि। मुदा विवाहक मेल अलग प्रश्न अछि।”

“फेर वएह।”

“वएह की?”

देवकान्तक उत्तर फेर रुकल। ओ चाहथि तँ एखन माधवीक नाँव कहि पूरा बात सोझाँ राखथि।

ओ नहि कहला।

किछु बेर बाद पिता थाकल स्वरमे कहला, “पहिने तोरा स्वयं स्पष्ट हो। फेर हमरा कहिह। हम बलजोरी नहि करब, मुदा अनिश्चितता वर्ष-वर्ष नहि चलत।”

बैठक समाप्त भऽ गेल।

देवकान्त बाहर निकललाह तँ आँगन अन्हारमे डूबि रहल छल। भानसघरक दुआरि लग माधवी नहि देखायल। हेमलता पानि भरि रहल छल।

ओ पूछलनि, “दीदी कतए?”

हेमलता कहलक, “घर गेलीह। जनकपुर दिस नातेदार लग जाएबाक तैयारी अछि।”

देवकान्त ठमकि गेलाह। “कखन?”

“दू-तीन दिनमे।”

“कतेक दिन लेल?”

हेमलता कान्ह उचकौलक। “दीदी कहलीह—किछु दिन।”

देवकान्त केँ परिवारक कोठरीक सभ वाक्य एक्कासि दूर लगय लागल। जे नाँव ओ भीतर नहि कहि सकलाह, ओ मनुख आब गामसँ बाहर जाएबाक तैयारीमे छल।

राति पोथी खोलि ओ बहुत देर खाली पन्ना देखैत रहलाह।

ओ लिखि सकैत छलाह—‘माधवी।’

ओ नाँव लिखलनि नहि।

नहि लिखबाक कारण एखन भूल नहि छल; भय छल।

दोसरा दिन दुपहर बाद हेमलता एक छोट कागज देवकान्त केँ देलक। कागजपर केवल लिखल छल—‘साँझि पोखरिक पुरान घाट।’ अक्षर माधवीक छल।

देवकान्त निर्धारित समयसँ पहिनहि पहुँचि गेलाह। बरखाक बाद पोखरिक पानि भरल छल। भिण्डापर घास हरियर, कात-कात माटि एखन नरम। दूर एक मल्लाहक डोंगी धीरे सरकि रहल छल; आवाज एतेक दूर जे शब्द बुझाईत नहि, केवल लय।

माधवी साँझि गहराए सँ कनी पहिने आयल। हाथमे कोनो पन्ना नहि, झोरा नहि। साधारण साड़ी, भीजल माटि सँ बचबाक लेल आँचर कनी ऊपर समेटने।

दुनू किछु क्षण बिना अभिवादन पोखरि दिस देखैत रहल।

देवकान्त पहिने कहला, “अहाँ जनकपुर जा रहल छी?”

“हँ।”

“कतेक दिन लेल?”

“नहि जानैत छी।”

उत्तर सुनिते देवकान्तक भीतर अकुलाहट उठल। “नहि जानैत छी—अर्थात्—”

माधवी आँखि उठेलक।

देवकान्त स्वयं सुधारलनि। “अर्थात्, लौटबाक तिथि निश्चित नहि?”

“नहि।”

“किएक जा रहल छी?”

“नातेदार लग काज अछि। किछु दिन दूरी सेहो चाही।”

‘दूरी’ शब्द पानिक सतहपर छोट पत्थर जकाँ गिरल।

देवकान्त कहला, “हमर कारण?”

माधवी उत्तर देलक, “केवल अहाँक कारण नहि। मुदा अहाँसँ अलग सोचबाक जरूरत अछि।”

“हम सुधार-पत्र पठा देने छी।”

“जानैत छी।”

“स्रोत-श्रेयक पत्र सेहो।”

“हेमलता कहलक।”

देवकान्तक स्वर तेज होएबाक छल, मुदा ओ रोकलनि। “तखन?”

माधवी पोखरिक पानि दिस देखैत कहलक, “सुधार-पत्र उचित काज अछि। मुदा पत्र पठेलासँ पहिने जे भेल, ओ नहि मेटैत। आ प्रेमक बात पत्रक उत्तरपर निर्भर नहि होएबाक चाही।”

देवकान्त एक कदम नजदीक गेलाह। “प्रेम बदलि गेल?”

माधवी तुरन्त कहलक, “हम एना नहि कहलहुँ।”

“तखन?”

“हम प्रेम करैत छी—ई बातक कारण हम अपना केँ छोट नहि करब।”

देवकान्तक साँस थमि गेल जकाँ भेल। ई पहिल बेर छल जखन माधवी अपन प्रेम एतेक साफ शब्दमे स्वीकारने छल।

ओ कहला, “तखन हमरा संग चलू।”

माधवीक मुखपर दुःखक हलुक रेखा आयल कि थकान—देवकान्त निश्चित नहि भऽ सकलाह।

“कतए?”

प्रश्न फेर सरल छल।

देवकान्त कहला, “जीवनमे। विवाहमे। पोथीमे। जेतए—”

“घरमे?”

ओ रुकलाह।

माधवी आगाँ पूछलक, “अहाँ घरमे हमर नाँव कहने छी?”

देवकान्तक आँखि नीचाँ गेल।

“काल्हि विवाहक बात उठल,” ओ स्वीकार कएलनि।

“आ?”

“हम कहलहुँ मोन कतहु अछि।”

“नाँव?”

देवकान्त चुप।

पोखरिक सतहपर हवा चलल। लहर छोट-छोट गोल रेखा बनबैत घाट धरि आयल।

माधवी धीरे कहलक, “एतए सेहो नाँव छूटि गेल।”

देवकान्तक चेहरा तमतमायल, लज्जासँ। “हम डरि गेल रही।”

“ककरा सँ?”

“परिवारसँ। विरोधसँ। जे प्रश्न उठत ताहिसँ।”

“आ हमरा की कहने छलहुँ? कमजोर नहि रहब?”

देवकान्त केँ पिरुकियाक रातिक वचन मोन पड़ल।

“हँ।”

“प्रेम झूठ नहि छल,” माधवी कहलक। “मुदा प्रेम पर्याप्त नहि भेल।”

देवकान्त कहला, “हम नाँव कहब। आइये।”

“आइ कहब, किएक तँ हम जा रहल छी?”

“नहि। किएक तँ कहबाक चाही छल।”

“तखन कहू। मुदा हमरा रोकबाक मोल पर नहि।”

देवकान्त ओकरा देखलनि। “अहाँ जाएब जरूरी अछि?”

“हँ।”

“जँ हम एखन घरमे बात साफ कऽ दिअ?”

“तैयो।”

ओ उत्तर देवकान्त अपेक्षा नहि कएने छलाह।

माधवी कहलक, “हमरा निर्णय लेल एखन किछु दूरी चाही। अहाँक घरक उत्तर सुनि तुरन्त अपन जीवन तय नहि करब। हमरा अपन मोन, अपन काज, अपन पन्ना—सभ देखय पड़त।”

देवकान्तक लग प्रतिवाद नहि छल।

दुनू पोखरिक कात किछु बेर चुप बैसल रहल। प्रेम स्वीकारल छल; भविष्य पर सहमति नहि।

साँझिक उजास पानिमे टूटि रहल छल। देवकान्त केँ लगल—किछु सम्बन्ध टूटैत नहि, केवल एके बाटपर चलनाइ रोकि दैत अछि। अगिला मोड़पर फेर भेटत कि नहि, नक्शा नहि कहि सकैत।

माधवी उठबाक छल, तखने देवकान्त कहला, “पोथीक की होएत?”

ओ फेर बैसि गेल। “एहि लेलहि अहाँ केँ बजौने रही।”

देवकान्त चौंकलाह।

माधवी कहलक, “हम अपन किछु पन्ना लऽ जा रहल छी। किछु हेमलताक लग रहत। जे साझा सामग्री अछि, ओकर प्रतिलिपि अहाँक लग अछि।”

“मूल बिना बहुत ठाम अधूर रहत।”

“अधूर रहय।”

देवकान्तक चेहरा कसि गेल।

माधवी तुरन्त जोड़लक, “अधूर कहि अपनासँ भरब नहि। ई नियम अहाँक पोथीक सभसँ नीक नियम बनल अछि।”

देवकान्त धीमे कहला, “अछि।”

माधवी पोखरिक कातक सूखल घास अँगुरीसँ तोड़ि फेर छोड़ि देलक। “एक बात मोन राखू।”

“की?”

ओ देवकान्त दिस सीधा देखलक।

“हमर नाँव बचाउ, चाहे हमरा नहि।”

देवकान्त स्थिर रहि गेलाह।

वाक्य प्रेमक आग्रह नहि छल। न विवाहक। न आपस अबबाक वचन। ओ एक स्त्रीक अपन ज्ञानपर दावा छल—एहन दावा जे निजी सम्बन्ध सफल हो वा विफल, ताहिसँ स्वतंत्र रहय।

देवकान्तक मुँहसँ केवल एतेक निकलल, “बचाएब।”

माधवी पूछलक, “चाही कि बचाएब?”

हेमलताक पुरान प्रश्न जकाँ वाक्य आपस आयल।

देवकान्त कहला, “बचाएब। जहाँ अहाँक वाक्य अछि, नाँव। जहाँ अहाँक विधि, तकर स्रोत। जहाँ हम परिष्कार केने छी, मूल कहब सेहो। जहाँ निश्चित नहि, से निश्चित नहि कहब।”

माधवी सुनैत रहल।

“आ जे पहिने छपि गेल?”

“सुधार माँगल अछि। अगिला छपाइमे स्रोत-सूची। पुस्तक बने तँ आरम्भे सह-ज्ञानक बात।”

माधवी हलुक प्रश्नवाचक दृष्टिसँ देखलक। “सह-ज्ञान?”

देवकान्त स्वयं हँसलाह। “फेर किताबिया शब्द।”

माधवीक मुखपर बहुत कनी मुस्कान आयल।

देवकान्त फेर कहला, “सरल कहैत छी—जे अहाँक अछि, ओकरा हमर नहि कहब।”

“एतबे।”

“आ जँ अहाँ न लौटू?”

माधवीक मुस्कान ओझरा गेल।

“एहि प्रश्नक उत्तर हमरा लगो नहि।”

“तखन पोथीक?”

“पोथी मनुखक जीवनसँ पैघ नहि। जे बचत, ओहि सँ बनाउ। जे नहि बचत, ओकर अनुपस्थिति सेहो लिखू।”

देवकान्त कहला, “अहाँ चाहैत छी पाठक जानय जे पन्ना हटाओल गेल?”

“जतए आवश्यक, हँ। नहि तँ फेर लोक मानत सामग्री पहिनेसँ एतबे छल।”

“आ निजी पन्ना?”

“निजी पन्ना निजी।”

“जँ कखनो बादक लोक—”

माधवी रोकलक। “बादक लोकक जिज्ञासा हमरा अधिकारसँ पैघ नहि।”

देवकान्त माथ हिलेलनि।

किछु बेर बाद माधवी कहलक, “हेमलता जे प्रतिलिपि केने अछि, ओकरा बचा कऽ राखू। ओकर लिखाइ कमजोर कहि फेकू नहि।”

“नहि फेकब।”

“ओ कखनो मूलसँ अलग बात लिखि देत, तखन तुलना करू; एकरा दोष कहि मेटाउ नहि।”

“हँ।”

माधवी उठि ठाढ़ भेल।

देवकान्त सेहो उठलाह।

ओ कहला, “अहाँ हमरा लेल की बचय चाहैत छी?”

माधवीक चेहरापर किछु एहन आयल जे देवकान्त पढ़ि नहि सकलाह।

“सभ बातक नाँव जरूरी नहि,” ओ कहलक।

देवकान्त समझलाह—ई प्रश्न पोथीक नहि छल, आ उत्तर सेहो पोथीक नियमसँ बाहर।

ओ आग्रह नहि कएलनि।

पोखरिक कात साँझि गाढ़ होइत गेल। दुनू आपस मुड़ल, मुदा एके बाट नहि।

देवकान्तक कानमे एक वाक्य रहि गेल—‘हमर नाँव बचाउ, चाहे हमरा नहि।’

प्रेमक भाषा पहिल बेर एतेक स्पष्ट रूपसँ लेखकीय न्यायमे बदलि गेल छल।

**

माधवीक प्रस्थानक भोर घरमे कोनो औपचारिक विदाई नहि छल। ओ अपन घरसँ नातेदारक संग निकलय छल, जनकपुर दिस जाएत दलक संग किछु बाट। बैलगाड़ीमे कपड़ाक छोट गठरी, किछु सूखा भोजन, पानिक लोटा आ कागजक झोरा।

हेमलता राति भरि उत्साह आ उदासी बीच डोलैत रहल छल। भोरमे ओ दीदीक पाछाँ-पाछाँ घूमैत। “कतेक दिन?”

माधवी कहलक, “किछु दिन।”

“दस?”

“गिनती नहि।”

“एक मास?”

माधवी ओकर गाल छूलक। “तूँ तिथि लिखैत रहिह। हम घुरब तँ देखब कतेक दिन भेल।”

हेमलता एहि उत्तरसँ पूर्ण सन्तुष्ट नहि भेल, मुदा अभ्यास-पोथी कातमे दबा लेलक।

देवकान्त दूर दालानपर ठाढ़ छलाह। पिछला राति ओ पिता सँ माधवीक नाँव कहि देने छलाह। बात सहज नहि गेल छल। प्रश्न उठल—घर, आर्थिक अवस्था, भविष्य, परिवारक प्रतिक्रिया। पिता अन्तमे केवल कहने छलाह, “हम एखन उत्तर नहि दैत छी।”

ई ‘नहि’ अस्वीकार छल कि विचारक विराम, देवकान्त नहि जानैत छलाह।

ओ माधवी केँ ई बात कहय चाहैत छलाह।

गाड़ी चलबाक पहिने नजदीक गेलाह।

“हम घरमे नाँव कहि देलहुँ,” ओ कहला।

माधवी हुनका देखलक। “नीक।”

“उत्तर एखन नहि।”

“हम उत्तर लेबाक लेल नहि जा रहल छी।”

“जानैत छी।”

“सच?”

देवकान्त कनी रुकि कहला, “सीखि रहल छी।”

माधवीक मुखपर हलुक हँसी आयल।

देवकान्त पूछलनि, “पत्रिकाक उत्तर आयल तँ?”

“हेमलता कै देखाउ। जँ हमर नाँवक बात हो, एक प्रति बचा कऽ राखू।”

“अहाँक लग पठाएब?”

“ठाम निश्चित भेला पर खबर देब।”

ई वाक्य आशा छल कि केवल व्यवहारिक उत्तर, देवकान्त तय नहि कएलनि।

हेमलता दीदीक हाथ पकड़ि कहलक, “हमर पोथी लऽ जाउ?”

माधवी कहलक, “नहि। तोहर लिखाइ तोहर लग। बचा कऽ रखिह।”

“अहाँक पन्ना?”

“हमर संग।”

“तखन तुलना कोना करब?”

“घुरलापर।”

हेमलता तुरन्त पकड़लक, “तँ घुरब?”

माधवी किछु क्षण चुप रहल। फेर कहलक, “हम एना नहि कहलहुँ। हम कहलहुँ—
घुरलापर।”

हेमलता मुँह फुला लेलक।

देवकान्तक भीतर सेहो वएह प्रश्न उठल, मुदा ओ नहि पूछलनि।

गाड़ीवान बैलकें संकेत देलक। पहिया भीजल माटिमे पहिल गोल निशान बनबैत आगाँ
बढ़ल।

माधवी गाड़ीपर बैसि गेल। हेमलता किछु दूर धरि संग-संग चलैत रहल। देवकान्त ठामे
ठाढ़।

मोड़ लग गाड़ी धीमा भेल। माधवी एक बेर पाछाँ देखलक कि नहि—देवकान्त बादमे
निश्चित नहि भऽ सकलाह। स्मृति एहि ठाम हुनका भरोसायोग्य नहि लगल।

ओ बस एतबे निश्चित जानैत छलाह जे गाड़ी मोड़ पार कऽ ओझरा गेल।

हेमलता आपस आबि देवकान्त लग ठाढ़ भेल। ओकर हाथमे अभ्यास-पोथी छल।

“दीदी घुरतीह,” ओ कहलक।

देवकान्त पूछलनि, “तोरा कहलनि?”

हेमलता चुप।

“नहि,” ओ अन्ततः कहलक। “मुदा घुरतीह।”

देवकान्त सेहो एही बात मानय चाहैत छलाह।

ओ कहला, “हँ।”

मुदा हुनकर ई ‘हँ’ विश्वास छल, प्रमाण नहि।

दुपहर धरि देवकान्त पोथीक पन्नासभ फेर गिनलनि। किछु मूल पन्ना गायब नहि—
माधवी अपनैँ लऽ गेल छल। किछु प्रतिलिपि हेमलताक पोथीमे। किछु वाक्य देवकान्तक
कागजपर। किछु छपल लेखमे बदलल रूपमे।

एके ज्ञान आब अनेक ठाम बाँटल छल।

देवकान्त पहिल पन्नापर नवा नियम लिखलनि—‘जे स्रोत अनुपलब्ध, ओकर
अनुपस्थिति दर्ज करू; जे नाँव ज्ञात, ओकरा नहि मेटाउ।’

तकर नीचे बहुत देर बाद एक दोसर पाँति लिखलनि—‘माधवी—सहभागी ज्ञान-स्रोत;
अनेक विधि आ टिप्पणीक मूल धारक।’

ओ ‘सहायक’ शब्द नहि लिखलनि।

‘सहलेखक’ लिखबाक लेल कलम उठल, मुदा ठमकि गेल—माधवी स्वयं एहि पदकेँ
स्वीकार कएने छलीह कि नहि, ई निश्चित नहि।

देवकान्त खाली ठाम छोड़ि देलनि।

एहि बेर खाली ठाम कायरता सँ नहि, सावधानी सँ छोड़ल गेल छल।

साँझि हेमलता अपन अभ्यास-पोथी खोलि तिथि लिखलक—माधवी जनकपुर दिस
गेलीह।

तकर नीचे ओ अपन हाथसँ एक छोट पात बनौलक।

पातक भीतर कोनो नाँव नहि लिखल।

जे नहि कहल गेल, ओकर खाली ठाम ओहिना रहल।

अध्याय २७ — एखनक भानस

२०२६ केर ओ साँझि “मिथिला अनुभव” एखन आम ग्राहक लेल नहि खुलल छल। ईशान एकरा ‘चखना-साँझ’ कहैत छल—किछु परिवारक लोक, दू मित्र, भोजन-व्यवसाय सँ जुड़ल तीन व्यक्ति, आ मृणालिनी। भोजनालयक अगिला कक्षमे नव पालिश कएल काठक मेज, भित्ति पर पुरान घरक दूटा फोटो, आ एक कात काँचक भीतर मखान, धान, सूखल पात आ पितरक छोट बासन सजाओल छल।

मृणालिनी भीतर घुसिते भित्तिक फोटो देखलक। एक फोटो ओहि पुरान घरक छल जतए भानस-पोथी भेटल। फोटो नीचाँ छोट अक्षरमे लिखल—‘मिथिलाक एक पुरान भानस — प्रायः १९३० दशक।’

ओ ईशान दिस देखलक। “तिथि निश्चित?”

ईशान कुर्सी खिसकबैत हँसल। “पहिल पाँच मिनटमे तिथि-जाँच? ग्राहक एना नहि करत।”

“हम ग्राहक नहि।”

“ई बात हमरा बहुत पहिने बुझा गेल।”

मेजपर पहिल छोट थारी आयल। बीचमे तिलकोरक दू छोट तरुआ, कातमे महीन कटोरामे चटनी, आ पातक आकारक पीतल-पत्रपर एक पाँति—‘तिलकोर — मिथिलाक पुरान आँगनक एक पात।’

मृणालिनी पाँति पढ़लक। “पुरान आँगन?”

ईशान कहलक, “कथा चाही। खाली ‘तिलकोर तरुआ’ लिखब तँ शहरक लोक आधा बात नहि बुझत।”

“कथा चाही, मुदा ई पात केवल आँगनक स्मृति नहि। जे पात चुनैत छल, जे पीठार बनबैत छल, जे तेलक ताप बूझैत छल—ओ सभ?”

ईशान परोसनिहारक हाथ सँ दोसर थारी लेबाक संकेत देलक। “एहि लेल चखना-टिप्पणी अछि। भोजन-सूची छोट रहय पड़त।”

मृणालिनी तरुआ तोड़लक। बाहरक आवरण हलुक कुरकुर, भीतर पातक हरियर स्वाद एखनहुँ चिन्हाइत। ओकरा पुरान पोथीक पन्ना मोन पड़ल—कोमल पात, नस, पीठार, मात्रा नहि, चिन्ह।

“नीक अछि?” ईशान पूछलक।

“स्वाद नीक अछि।”

“आ बाकी?”

“बाकी एखन पढ़ैत छी।”

दोसरा क्रममे मखान आयल—छोट कटोरीमे, ऊपर सजावट अत्यल्प। ईशान गर्वसँ कहलक, “ई खेप अलग पोखरि-स्रोत सँ।”

मृणालिनी तुरन्त पूछलक, “पोखरिक नाँव? उत्पादकक नाँव?”

“आपूर्तिकर्ताक विवरण रसोइघरक अभिलेखमे अछि।”

“भोजन-सूचीमे किएक नहि?”

ईशान कुर्सीपर पाछाँ झुकलक। “मृणालिनी, ग्राहक भोजन खायब आएत कि वंशावली पढ़य?”

“जँ ‘विरासत’ बेचैत छह तँ विरासत ककर, ई प्रश्न अबिते अछि।”

ईशान उत्तर नहि देलक। अगिला छोट थारी आयल—दू छोट बगिया। आकार सुगठित, प्रायः बराबर। कातमे लिखित पट्टी—‘भापमे पकाओल चाउर-पीठारक बगिया — परिवारक भानस-पोथी आधार।’

मृणालिनी ‘परिवारक भानस-पोथी’ पर अटकली। “पोथीक लेखकत्व एखन जाँचमे अछि। एहि पाँतिमे परिवारक पोथी कहू, लेखक तय नहि।”

ईशान माथ पकड़लक। “एहि गति सँ उद्घाटनक पहिले सभ पट्टी फेर छपाओल जाएत।”

“ठीक।”

“तोरा अपराधबोध नहि?”

“बेठीक पाँति छपला सँ बेसी?”

ईशान हँसि पड़ल। “ठीक अछि। परिवारक पोथी।”

मृणालिनी बगियाक एक टुकड़ा चखलक। भापमे पकायल पीठारक कोमल देह आ भीतरक भरावनक स्वाद ओकरा परिचितो, अपरिचितो लगल। बसन्ती काकीक घरमे खाएल रूप सँ ई अधिक नापल, अधिक समरूप, अधिक सजायल छल।

“ई बगिया हाथसँ बनल?”

“हँ। रसोइघरमे दू लोक बनबैत छथि।”

“नाँव?”

ईशान हँसैत कहलक, “तूँ भोजन-सूची नहि, अभिलेख बनाबय चाहैत छह।”

मृणालिनी उत्तर देलक, “भानस-पोथी हमरा एतबे सिखा रहल अछि जे ‘हाथसँ बनल’ कहब पर्याप्त नहि, जँ हाथक नाँव जानल जा सकैत अछि।”

ईशान किछु बेर चुप रहल। फेर मोबाइलमे किछु लिखलक।

“की?”

“रसोइघरक दलक नाँवक छोट कार्ड। खुश?”

“एखन शुरू।”

चौठम क्रममे एक बहुत छोट पीतल कटोरी आयल। भीतर गाढ़ भूरा पेय, ऊपर कोनो भारी सजावट नहि।

ईशान कहलक, “आब एक नवा स्वाद देखू।”

मृणालिनी कटोरी सूँघलक। माटि, दालि आ हलुक मसालाक गन्ध। “कुर्थी?”

“हँ। कुर्थीक छोट गरम पेय। पुरान दालि, नवा रूप।”

मृणालिनी एक घूँट लेलक। स्वाद खराब नहि छल। समस्या स्वादमे नहि छल। समस्या अगिला कार्डमे छल, जे वेटर कटोरीक कात रखि देलक।

**

कार्डपर मोट अक्षरमे लिखल छल—‘पथरी-रोधी कुर्थी पेय — सालमे एक मास, पुरखाक देह-ज्ञान।’

मृणालिनी कार्ड उठौने रहि गेल।

ईशान ओकर चेहरा देखिते पूछलक, “की भेल?”

“ई के लिखलक?”

“विपणन-दल। आधार पोथीमे अछि ने? तूँ अपनै पढ़ने छह—सालमे एक मास कुर्थी दालि...”

“पूरा पाँति कह।”

ईशान कनी रुकल।

मृणालिनी स्पष्ट स्वरमे कहलक, “जानकीक पारिवारिक लोक-मान्यता। निश्चित चिकित्सकीय तथ्य नहि। जाँच बाकी।”

ईशान पर्ची लेलक। “मुदा पारिवारिक लोक-ज्ञान तऽ अछि।”

“लोक-मान्यता अछि। ‘पथरी-रोधी’ चिकित्सकीय दावा अछि।”

“हम दवा नहि बेचैत छी।”

“ग्राहक कार्ड पढ़ि की बुझत? ‘पथरी-रोधी’ शब्द अपनै दावा करैत अछि।”

ईशानक स्वर कनी रक्षात्मक भेल। “स्वास्थ्यक आकर्षण बिना लोक कुर्थीक एहि छोट पेय लेल एतेक दाम किएक देत? स्वाद एक भाग अछि; कथा एक भाग; स्वास्थ्यक स्मृति एक भाग।”

मृणालिनी कार्ड मेजपर रखलक। “स्वास्थ्यक स्मृति कहू। रोग रोकबाक निश्चित वचन नहि।”

ईशान कहलक, “शब्द बदलि दैत छी—‘परम्परागत रूपसँ पथरी लेल उपयोगी मानल जाइत’?”

“स्रोत ककर? कोन घर? कोन परम्परा? ‘मानल जाइत’ लिखला सँ झूठ अपनै सच नहि बनैत।”

“तँ की लिखी?”

मृणालिनी कुछ क्षण सोचलक। “जँ एहि कथा केँ राखबे करबाक अछि तँ लिख—‘हमर परिवारमे जानकीक कहब रूपमे दर्ज लोक-मान्यता: सालमे एक मास कुर्थी दालि खएला सँ पथरी नहि होइत। चिकित्सकीय दावा नहि; पोथीमे स्वयं “जाँच बाकी” लिखल अछि।”

ईशान आँखि पैघ कएलक। “एतेक लम्बा कार्ड भोजन ठंढा कऽ देत।”

“तँ स्वास्थ्य-दाबी हटाउ। खाली कुर्थी पेय कहू।”

ईशान हँसल नहि।

मृणालिनी ओकर चेहरा देखलक। “तूँ ईशान छह, १९३४ केर सम्पादक नहि। पाँति छोट करबाक कारण सावधानी नहि काटू।”

ईशानक हाथ कार्डपर स्थिर भऽ गेल। ओहि वाक्यक चोट ओकरा बुझायल।

“तूँ हमरा देवकान्त बना रहल छह?”

“नहि। एतबे कहैत छी जे भूलक ढाँचा आपस आबि सकैत अछि—जँ चमकदार कथा बनबैत समय संशय काटि देल जाए।”

ईशान धीरे कार्ड पलटल। पाछाँ छपाईघरक नाम आ नमूना-संख्या।

“ई केवल चखना-नमूना अछि,” ओ कहलक।

“तँ एखन बदलनाइ आसान अछि।”

किछु बेर दूनू चुप रहल। रसोइघर सँ बासनक मंद आवाज आबैत छल। बाहरी कक्षमे दू अतिथि मखानक फोटो लऽ रहल छल।

ईशान मोबाइल उठेलक। ककरो संदेश लिखलक—‘कुर्थीक पर्ची रोकू। चिकित्सकीय दावा हटाउ। समीक्षा बाद नवा पाठा।’

ओ स्क्रीन मृणालिनी दिस घुमेलक।

मृणालिनी पढ़लक। “नीक।”

“आब मुस्की?”

“एखन नहि।”

ईशान निराश अभिनय कएलक। “हमर पूरा व्यवसाय प्रमाणपत्रक परीक्षा बनि गेल।”

मृणालिनी कहलक, “नहि। स्वाद बेच। भोजन बेच। काज बेच। झूठी निश्चितता नहि।”

“‘काज बेच’?”

“जकर श्रम अछि, ओकर मूल्य दाममे अछि। ओकर नाँवो कथा मे रहय।”

ईशान धीमे कहलक, “ग्राहक एतेक पढ़त?”

“किछु नहि पढ़त। किछु पढ़त। प्रश्न ई नहि जे कतेक पढ़त; प्रश्न ई जे हम की लिखैत छी।”

मृणालिनी कुर्थीक पेय फेर चखलक। एखन स्वादमे ओकरा जानकीक वाक्य नहि, छपल लेखक विकृति मोन पड़ि रहल छल—लोकक कहब जखन निश्चित नियम बनि गेल छल।

ओ कार्डक फोटो लेलक। फाइलक नाम देलक—‘कुर्थी-विपणन—सुधारपूर्व नमूना।’

ईशान पूछलक, “एहि केँ सेहो अभिलेखमे रखब?”

“हँ। भूल मेटा कऽ ई नहि देखाएब जे पहिल बेरहि सभ ठीक छल।”

ईशान माथ हिलेलक। “ई वाक्य कतहुँ सुनने छी।”

“हेमलताक अभ्यास-पोथी।”

“तूँ सौ बरख पुरान घरक सम्पादन-नीति भोजनालयपर लागू कऽ रहल छह।”

“कदाचित एहि भोजनालयक सभसँ नीक विरासत वएह हो।”

**

चखना-साँझि समाप्त भेला बाद अतिथि सभ चलि गेल। कर्मचारी मेज समेटय लागल। मृणालिनी बाहर जाएब चाहैत छल, मुदा ईशान दरबज्जा लग ठाढ़ भऽ कहलक, “दस मिनट। बहस पूरा करू।”

“कोन बहस?”

“प्रामाणिकता।”

मृणालिनी कुर्सी आपस खींचि बैसि गेल।

ईशान कहलक, “तूँ जे चाहैत छह, ओ अभिलेख लेल उचित अछि। मुदा भोजनालय अलग संसार अछि। ग्राहक कथा खरीदैत अछि। ओ अपन साँझि सुन्दर बनाबय अबैत अछि। ओकरा बीस पन्नाक स्रोत-सूची नहि चाही।”

“हम बीस पन्ना भोजन-सूचीमे नहि माँगने छी।”

“मुदा तोहर प्रश्नक अन्त नहि—तिलकोर ककर पात, मखान कोन पोखरि, बगिया ककर हाथ, कुर्थी ककर कहब। व्यवसाय एना नहि चलत।”

मृणालिनी धीरे पूछलक, “कथा केकर?”

ईशान चुप।

“तू कहैत छह ग्राहक कथा खरीदैत अछि। ठीक। कथा केकर? श्रेय केकर? जँ बसन्ती काकीक वाक्य लेब, हुनकर नाँव? जँ पोथीक माधवीक वाक्य लेब, ओकर नाँव? जँ रसोइघरक लोक विधि सुधारत, ओकर काज? जँ मखान उत्पादकक खेत-पोखरि फोटोमे देखाएब, ओकर परिचय?”

ईशान मेजक खाली कार्ड सभ गिनैत रहल।

मृणालिनी आगाँ कहलक, “प्रामाणिकता पुरान बासन, मिथिला चित्र आ देहाती शब्दक सजावट नहि। ककर अनुभव केँ उपयोग करैत छी, ओ स्पष्ट करबो प्रामाणिकता अछि।”

ईशान कहलक, “तँ की सभ पकवानक संग जीवनी छापी?”

“नहि। स्तर बनाउ। भोजन-सूची छोट। मेजपर चाही तँ एक पाँति। वेबसाइट वा पुस्तिकाजे विस्तृत स्रोत। रसोइघरक दलक नाँव। परिवारक पोथी सम्बन्धी वस्तु पर साफ लिख—लेखकत्व जाँचाधीन। स्वास्थ्य-दाबी अलग जाँच बिना नहि।”

ईशानक व्यवसायी मन जागल। “क्यूआर संकेत?”

मृणालिनी हँसल। “तू अन्ततः उपयोगी दिशा मे सोचलह।”

“भोजन-सूचीमे छोट पाँति, क्यूआर संकेतपर पूरा कथा, स्रोत, छवि, मौसमी टिप्पणी?”

“आ बदलैत संस्करणक तिथि। जाहिसँ काल्हि नवा प्रमाण भेटल तँ पुरान दावा चुपचाप मेटाओल नहि जाए।”

ईशान मोबाइलमे सूची बनय लगल।

मृणालिनी कहलक, “आ ‘प्रामाणिक मिथिला’ जकाँ एकरूप दावा कम कर।”

“किएक?”

“किएक तँ पोथी स्वयं कहैत अछि—घर-घर ढंग बदलैत अछि। एक घरक विधि पूरा मिथिला नहि। जनकपुरक एक बजार पूरा नेपाल-मिथिला नहि। एक पाँति पूरे लोकक जीवन नहि।”

ईशान कहल, “मुदा व्यवसायिक पहचान केँ स्पष्टता चाही।”

“स्पष्टता आ झूठी एकरूपता अलग।”

“नाम ‘मिथिला अनुभव’ बदलू?”

“नहि। अनुभव कहैत छह, निर्णय नहि। ई नाम बचि सकैत अछि।”

ईशान हँसल। “धन्यवाद। कम-से-कम नाम बाँचल।”

दूनु किछु बेर मौन रहल। रसोइघरक एक युवती बाहर आबि पूछलक, “काल्हि तिलकोर फेर जाँच?”

ईशान कहलक, “हँ, मुदा भोजन-सूचीक पर्ची बदलत।”

मृणालिनी युवतीक नाँव पूछलक।

“रीना।”

“बगिया के बनौने छल?”

“हम आ सरिता।”

मृणालिनी ईशान दिस देखलक।

ईशान मोबाइलमे लिखलक—‘रसोइघरक दल: रीना, सरिता...’

रीना हँसि पूछलक, “हमर नाँव भोजन-सूचीमे आएत?”

ईशान कहलक, “कदाचित पूरा सूचीमे नहि, मुदा दलक कार्ड आ अंकीय पृष्ठपर जरूर।”

मृणालिनी बीचमे कहलक, “अहाँक अनुमति सँ।”

रीना आश्चर्यसँ ओकरा देखलक, फेर हँसि कहलक, “हँ, नाम लिखू।”

ओ चलि गेल।

ईशान कहलक, “तूँ व्यवसाय कठिन बना देलह।”

“कठिन नहि। जवाबदेह।”

“दूनूमे खर्चक अन्तर अछि।”

“तँ दाममे जोड़ू। विरासत मुफ्त श्रमपर नहि बनय।”

ईशान एतए खुलि हँसल। “ई पाँति विपणन-दल केँ दिअ?”

“नहि। पहिने अर्थ बुझू।”

ईशान हाथ जोड़ि मजाक कएलक। “जी, सम्पादक महोदया।”

मृणालिनी उठल। “सम्पादक नहि। जे नहि बुझैत, पूछैत अछि।”

ईशान दरबज्जा खोललक। “आ जे बुझि जाए?”

मृणालिनी बाहर निकलैत कहलक, “तखन नाम नहि मेटबैत।”

**

राति मृणालिनी पुरान घर पहुँचल तँ बसन्ती काकी भानसघरक किवाड़ आधा खोलने बैसल छलीह। गैस-चूल्हिपर छोट पातिलमे दालि उबलि रहल छल।

काकी ओकर चेहरा देखिते पूछलीह, “भोजनालयमे पेट भरल कि फोटो खींचल?”

मृणालिनी हँसि पड़ल। “दूनू कनी-कनी।”

“तखन फेर भूख लागल होएत।”

“अछि।”

बसन्ती काकी ढकनी उठेलनि। “कुर्थी दालि अछि। भात बचल अछि। खायब?”

मृणालिनी एक क्षण चुप रहल। साँझि ओ कुर्थीक गाढ़ छोट पेय पीने छल—पीतल कटोरी, छपल कार्ड, स्वास्थ्य-दाबी, बहस। एतए ओही नामक दालि पातिलमे सहज उबलि रहल छल।

“खायब।”

काकी थारी निकालि भात देलीह, ऊपर किछु नहि सजेलनि। कातमे कुर्थी दालि, नून, हरियर मिरचाइ।

मृणालिनी पूछलक, “अहाँक घरमे कुर्थी कखन बनैत छल?”

बसन्ती काकी कहलीह, “जखन मन, जखन दालि घरमे। ठंडक दिनमे बेसी। कखनो देहक बात कहि बूढ़ लोक खुअबैत छल, मुदा हम डाक्टर नहि।”

मृणालिनी मुस्करायल। “ई वाक्य आइ बहुत महत्त्वक अछि।”

“किएक?”

ओ भोजनालयक कार्डक कथा सुनौलक—‘पथरी-रोधी’, ‘सालमे एक मास’, विपणन, पन्नाक ‘जाँच बाकी’।

बसन्ती काकी बहुत देर सुनैत रहल। फेर कहलीह, “हमर मायो कहैत छलीह कुर्थी देह लेल नीक। मुदा ‘नीक’ शब्दक भीतर कतेक बात रहैत अछि, ई डाक्टर पूछत। हम स्वाद जानैत छी, घरक कहब जानैत छी। बीमारीक निर्णय हम किएक करब?”

मृणालिनी दालिक पहिल ग्रास लेलक। स्वाद धीमा छल। कोनो चमकदार प्रस्तुति नहि, कोनो कार्ड नहि। दालि भातमे मिलिते गन्ध खुलल। ओकरा एक्कासि बचपनक जाड़क एक राति मोन पड़ल—कियो कथरी ओढ़ौने छल, बाहर कुहरा, भीतर गरम दालि। दृश्य पूरा निश्चित नहि; स्मृति केवल गन्ध आ तापमे आबि गेल।

ओ कहलक, “ईशानक कुर्थी खराब नहि छल।”

“तखन?”

“एतए स्वाद गहिरा किएक लगैत अछि?”

बसन्ती काकी हँसलीह। “किएक तँ मुफ्त अछि?”

मृणालिनी सेहो हँसल।

काकी फेर कहलीह, “कदाचित एतए तोरा हतबड़ी नहि। कियो तोरा बुझाबय नहि रहल जे की अनुभव करू। भूख अछि, थारी अछि, जे बनल अछि से खा रहल छह।”

मृणालिनी थारी दिस देखलक। ‘प्रामाणिक’ शब्द एतए कोनो ठाम लिखल नहि छल। तइयो भोजन केँ अपन प्रमाण देबाक जरूरत नहि बुझाईत छल।

बसन्ती काकी पूछलीह, “पोथीमे कुर्थी अछि?”

“अछि। जानकीक कहब, देवकान्तक नोट, फेर छपल लेखमे बिगड़ल रूप। आब कदाचित हेमलताक प्रतिलिपिमे सेहो भेटत।”

“तँ सभ रूप राखू।”

“बिगड़ल छपल रूपो?”

“किएक नहि? भूल सेहो तऽ भेल छल। ओकरा मेटा देब तँ अगिला लोक फेर ओही भूल करत।”

मृणालिनी कैँ हेमलताक नियम मोन पड़ल—जतए मूलमे काटल वा धुँधलायल, ओतए से लिखब; अपनासँ साफ नहि करब।

ओ कहलक, “भोजनालयक पहिल बेठीक कार्डो फोटोमे राखने छी।”

बसन्ती काकी कहलीह, “नीक। मुदा भूलक संग्रह करैत-करैत भोजन ठंढा नहि करू।”

मृणालिनी हँसि थारी लग खिसकल।

किछु बेर बाद काकी पूछलीह, “स्वाद की अछि?”

मृणालिनी तुरन्त उत्तर नहि देलक। दालि, भात, नून, मिरचाइ—सूची बहुत छोटी छल। मुदा स्वाद केवल सामग्रीक जोड़ नहि लगैत छल। एहि भानसघरक कालिख, पुरान सिलौट, काकीक हँसी, बाल्यकालक अनिश्चित स्मृति, पोथीक पन्ना, जानकीक लोक-कहब, माधवीक ‘जाँच बाकी’, ईशानक कार्ड—सभ एक अदृश्य परत जकाँ थारीक चारूकात छल।

ओ धीरे कहलक, “स्वाद कदाचित जीह सँ पहिले सम्बन्धमे बसैत अछि।”

बसन्ती काकी माथ हिलेलनि। “बहुत पैघ वाक्य भेल। पहिने दालि खाउ।”

मृणालिनी हँसि पड़ल।

ओ दोसर ग्रास लेलक। एहि बेर कोनो नोट नहि बनौलक।

राति गाढ़ होइत गेल। बाहर पुरान आँगनमे वर्षाक बादक नमी छल। भीतर साधारण कुर्ची दालिक भाप उठैत रहल।

मृणालिनी कैँ बुझायल—विरासत कैँ सजाओल जा सकैत अछि, बेचल जा सकैत अछि, नव रूप देल जा सकैत अछि; ई सभ अपनैँ अपराध नहि। अपराध तखन शुरू होइत अछि जखन सजावट मूल आवाज कैँ ढाँकि दैत अछि, बाजार संशय कैँ दावा बना दैत अछि, आ कथा अपन स्रोतक नाँव खा जाइत अछि।

घरक स्वाद आधुनिक भोजनालयक शत्रु नहि छल। ओ केवल एक स्मरण छल—स्वादक गहिराई प्रस्तुति सँ नहि, सम्बन्ध, श्रम, समय आ मोन रखनाइ सँ बनैत अछि।

अध्याय २८ — स्वादक मालिक

तीन सप्ताह बाद मृणालिनी केँ एक प्रकाशन-गृह सँ संदेश आयल। संदेश छोट छल, मुदा संगमे जे प्रस्ताव-पत्र जुड़ल छल, ओ दस पृष्ठक। शीर्षक देखिते ओकर भौंह तनिक उठल—“देवकान्तक मिथिला भानस : एक विस्मृत पाक-पोथीक पुनर्प्रकाशन।”

प्रस्तावमे रंगीन छवि, पुरान पन्नाक छाया-प्रतिलिपि, आधुनिक देवनागरी पाठ, अंग्रेजी अनुवाद, पकवानक नवा छायाचित्र, आ “विरासत-संस्करण” बनयबाक बात छल। प्रकाशक लिखने छल जे पुस्तक केवल पाक-पोथी नहि, “एक महान मैथिल विद्वानक घरेलू सांस्कृतिक अभिलेख” रूपमे प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि।

मृणालिनी पहिल पृष्ठ फेर पढ़लक। “महान मैथिल विद्वान।”

ओ कागज मेजपर राखि पुरान पोथी दिस देखलक। सन्दूक सँ निकालल ओ पोथी आब कपड़ाक आवरण भीतर सुरक्षित रहैत छल। धुँधलायल पाँति, तिरहुता किनार-लिखाइ, काटल वाक्य, हेमलताक प्रतिलिपि—सभ एक-दोसराक विरोधो करैत, पूरको।

फोन बजल। ईशान छल।

“मेल देखलह?”

“देखलहुँ।”

“की कहैत छह?”

“शीर्षक बेठीक।”

ईशान हँसल। “तीन लाखक अग्रिम प्रस्तावमे तोरा पहिल समस्या शीर्षक?”

“शीर्षकहि भीतर समस्या अछि।”

“देवकान्तक पोथी नहि?”

“एखन सिद्ध नहि।”

“घरक सन्दूकमे छल। अधिकतर मुख्य लेखन हुनकर हाथक बुझाइत अछि। छपल लेख हुनकर नाँवसँ। परिवारक स्मृति हुनका संग जोड़ैत अछि।”

मृणालिनी कहलक, “आ किनारक बहुत बात माधवीक। किछु विधिक मूल स्रोत ओ। नसीमा, रमानन्द, जानकीक नाम। हेमलताक प्रतिलिपि। धुँधलायल पाँति। काटल श्रेय। ई सभ सेहो परिवारक पोथीक हिस्सा।”

ईशान कुछ बेर चुप रहल। “तँ शीर्षक बदलि ‘मिथिला भानस-पोथी’?”

“लेखकत्व स्पष्ट भेने बिना एतबे उचित हो सकैत अछि। मुदा केवल नाम बदलला सँ समस्या समाप्त नहि।”

“प्रकाशक अगले सप्ताह बैठक चाहैत अछि।”

“बैठक हो। प्रकाशनक सहमति एखन नहि।”

“तू परिवारक सभ लोकसँ पूछने छह?”

“पहिने पन्ना पूछैत अछि।”

ईशान हँसल नहि। “कखनो-कखनो तोहर वाक्य बहुत असुविधाजनक होइत अछि।”

“पोथी सेहो।”

साँझि मृणालिनी प्रस्ताव-पत्र फेर खोललक। प्रकाशक पुस्तकक सम्भावित अध्याय-सूची बना देने छल—‘मिथिलाक ऋतु-भोजन’, ‘देवकान्तक माछ-विवेक’, ‘देवकान्तक तिलकोर’, ‘देवकान्तक स्वास्थ्य-दालि’, ‘देवकान्तक संरक्षण-पद्धति’।

मृणालिनीक भीतर रोष धीरे-धीरे उठल। ई केवल शीर्षकक त्रुटि नहि छल। सम्पूर्ण पोथी केँ एक पुरुषक स्वामित्वक अन्तर्गत व्यवस्थित करबाक प्रारम्भिक ढाँचा छल।

ओ लाल पेंसिल उठेलक। पहिल चारि शीर्षकपर एक-एक रेखा खींचलक। कातमे लिखलक—“स्रोत-आधारित पुनर्निर्माण आवश्यक। लेखकत्व अनिश्चित।”

‘स्वास्थ्य-दालि’क कात लिखलक—“लोक-मान्यता; चिकित्सकीय दावा नहि।”

तकर बाद प्रकाशक केँ उत्तर लिखलक—“बैठक लेल सहमत। प्रकाशन लेल नहि। मूल पाण्डुलिपिक लेखकत्व, स्रोत-श्रेय आ सम्पादकीय इतिहास पहिने स्पष्ट करब आवश्यक।”

मेल पठा कऽ ओ कुर्सीपर पाछाँ झुकली।

भोजनालयमे ईशानक बेठीक कुर्ची-पर्ची रोकब सहज छल—ओ नमूना छल। ई प्रस्ताव बहुत पैघ छल। एक बेर पोथी छपि गेल तँ ‘देवकान्तक’ शब्द फेर इतिहास बनि सकैत छल।

मृणालिनी केँ बुझायल—कखनो पुस्तक बचेनाइ ओकरा छपेबासँ नहि, छपाइ रोकबासँ शुरू होइत अछि।

✽✽

बैठक पुरान घरमे राखल गेल। प्रकाशन-गृह सँ अनिरुद्ध सेन आएल—मध्यम आयु, सुव्यवस्थित कागज, नमूना आवरण, बिक्रीक अनुमान, आ विनम्र उत्साह संग।

शशिभूषण पहिल बेर प्रस्तावक पूरा आर्थिक भाग देखलनि। हुनकर आँखि चमकि उठल। “एतेक अग्रिम?”

अनिरुद्ध कहला, “ई केवल आरम्भिक राशि अछि। बिक्रीक अलग हिस्सा रहत। पुरान पाक-विरासत पर पाठकक रुचि बहुत बढ़ल अछि। जँ परिवार सहयोग करए, तऽ छायाचित्र, दस्तावेज, यात्रा, जनसंचार—सभ सम्भव।”

ईशान तुरन्त भोजनालय दिस सोचय लगल। “पुस्तक आ भोजनालयक संयुक्त कार्यक्रम सेहो भऽ सकैत अछि। पोथीक विधि, आधुनिक प्रस्तुति, पुस्तक-विमोचन...”

शशिभूषण कहला, “देवकान्तक नाँव फेर लोक धरि पहुँचत। एतेक वर्ष सन्दूकमे पड़ल छल।”

मृणालिनी सुनैत रहल।

अनिरुद्ध नमूना आवरण खोललनि। गाढ़ मटमैला पृष्ठभूमि पर तिलकोरक पात, पुरान पन्नाक हलुक छवि, बीचमे सुनहरा अक्षर—“देवकान्तक मिथिला भानस।” नीचे—“एक परिवार, एक भूगोल, एक स्वाद-संसार।”

मृणालिनी पूछलक, “एक परिवार?”

अनिरुद्ध मुस्करौलनि। “विपणनक भाषा अछि। पाठक केँ स्पष्ट कथात्मक प्रवेश चाही।”

“एक भूगोल?”

“मिथिला।”

“एक स्वाद-संसार?”

अनिरुद्ध ओकर स्वर बूझि गेलाह। “अहाँ केँ ‘एक’ शब्दसँ समस्या अछि?”

“समस्या ओतए अछि जतए अनेक आवाज केँ एक मालिकक नीचाँ राखल जा रहल अछि।”

शशिभूषण कनी असहज भेलाह। “मृणालिनी, पहिने पूरा सुनि लिअ।”

“सुनि रहल छी।”

अनिरुद्ध कहला, “देखू, पाठकीय स्तरपर मुख्य नाम जरूरी होइत अछि। देवकान्त ऐतिहासिक व्यक्तित्व छथि, हुनकर छपल लेख भेटैत अछि, पोथी परिवारक संग्रह सँ भेटल। भीतर आभार-विभागमे सभ स्रोत देल जा सकैत अछि।”

मृणालिनी तुरन्त कहलक, “मुखपृष्ठपर एक नाँव, भीतर धन्यवादमे बाकी सभ? एही ढाँचा तऽ पोथीक विवादक केन्द्र अछि।”

ईशान कहलक, “व्यावहारिक पक्षो अछि। पोथी बिना स्पष्ट नामक बाजारमे ओझरा सकैत अछि।”

“तँ बाजारक सुविधा लेल लेखक बना देब?”

“बना नहि रहल छी। सम्भावित लेखक।”

“मुखपृष्ठ ‘सम्भावित’ नहि कहैत।”

शशिभूषण मेजपर हाथ रखि कहला, “हमरा एक बात बुझाउ। देवकान्त पोथी संकलित केने छथि कि नहि?”

मृणालिनी कहलक, “बहुत हिस्सा हुनकर हाथक अछि। संकलन, सम्पादन, लेखन—हँ। मुदा एहि सँ सभ ज्ञान हुनकर एकल स्वामित्व नहि भऽ जाइत।”

अनिरुद्ध सावधानीसँ पूछलनि, “अहाँ चाहैत की छी?”

“पहिने अभिलेख-जाँच। ककर हाथक पन्ना, ककर वाक्य, ककर विधि। जाहि ठाम अनिश्चितता अछि, से स्पष्ट। माधवीक योगदान कतेक, हेमलताक प्रतिलिपि कतेक, ई जाँचल जाए। तकर बाद शीर्षक आ श्रेय।”

ईशान कहलक, “कतेक समय?”

“नहि जानैत छी।”

शशिभूषण तुरन्त कहला, “एहि बीच प्रस्ताव घुरि जाएत।”

मृणालिनी हुनका देखलक। “तँ घुरि जाए।”

कमरा शान्त भऽ गेल।

शशिभूषणक स्वर कठोर भेल। “तोरा बुझाइट अछि परिवारक कतेक लाभ हो सकैत अछि? केवल पैसा नहि—नाम, अभिलेख, संरक्षण। प्रकाशक मूल पन्नाक उत्तम अंकीय प्रति बनाओत, मरम्मत कराओत, पुस्तकालय धरि पहुँचाओत।”

मृणालिनी कहलक, “संरक्षणक मोल बेठीक लेखकत्व नहि होएत।”

“बेठीक सिद्ध केने छह?”

“सत्य सेहो प्रमाणित नहि।”

दूनू वाक्य एक-दोसराक सोझाँ ठाढ़ रहल।

ईशान बीचमे कहलक, “समझौता हो सकैत अछि—‘देवकान्तक भानस-पोथी, माधवी आ अन्य स्रोतक योगदान सहित’?”

मृणालिनी माथ हिलेलक। “माधवी ‘योगदान सहित’ लिखबाक वस्तु नहि, जँ मूल ढाँचा ओकर ज्ञानसँ बनल हो। पहिने जाँच।”

अनिरुद्ध नमूना आवरण बन्द कएलनि। “हम प्रस्ताव रोकि सकैत छी। मुदा प्रकाशन-गृह अनिश्चित काल प्रतीक्षा नहि करए।”

मृणालिनी कहलक, “पोथी प्रायः नब्बे वर्ष प्रतीक्षा केलक। किछु मास सत्य लेल आरो सहि।”

शशिभूषण कुर्सी छोड़ि उठि गेलाह।

बैठक समाप्त नहि भेल छल, मुदा परिवारक उत्साहक ऊपर पहिल ठोस दरार पड़ि चुकल छल।

**

अनिरुद्ध चलि गेलाक बाद दालानमे केवल परिवारक लोक रहि गेल। शशिभूषण खिड़की लग ठाढ़ बाहर देखैत रहलाह। ईशान नमूना आवरण मेजपर घुमा-घुमा देखैत। मृणालिनी पोथीक छवि-संचिका बन्द कऽ रहल छल।

अन्ततः शशिभूषण घुरि कहला, “हमरा बुझाइट नहि, तूँ पोथी बचा रहल छह कि रोकि रहल छह।”

“दूनू कखनो एके काज होइत अछि।”

“बाबूजी ई पोथी बचा कऽ रखने छलाह। हम सभ सन्दूक बचेलहुँ। घरक कागज अछि। आब अवसर भेटल तऽ तूँ कहैत छह छपाउ नहि।”

मृणालिनी कहलक, “हम कहैत छी—एखन नहि।”

“फरक?”

“बहुत।”

शशिभूषणक स्वर ऊँच भेल। “परिवारक कागज पर परिवार निर्णय नहि लेत तँ के लेत?”

मृणालिनी किछु क्षण चुप रहल। ओ प्रश्नक भीतर जे बल छल, ओकरा टारि नहि सकैत छल।

“कागज ककर घरमे अछि, ई एक प्रश्न,” ओ कहलक। “कागजपर जे अनुभव अछि, ओकर मालिक के—ई दोसर।”

शशिभूषण तुरन्त कहला, “अनुभवक मालिक? मृत लोकक?”

“मृत लोकक नाँव मेटि जाइत अछि तँ इतिहास बदलैत अछि।”

“तखन कखनो कोनो पुरान पोथी छपबे नहि करत। सभ स्रोत मरि गेल, सभ अनुमति कोना भेटत?”

“हम सभ अनुमति असम्भव कहि नहि रहल छी। हम एतबे कहैत छी—जे ज्ञात अछि, ओकरा ज्ञात रूपमे राखू; जे अनिश्चित, ओकरा निश्चित नहि बनाउ; जे दोसरक नाँवक, ओकरा एकक नाममे नहि समेटू।”

ईशान बीचमे कहलक, “मृणालिनी, व्यावहारिक बात—कानूनक हिसाबसँ कागजक मालिक परिवार हो सकैत अछि ने?”

मृणालिनी ओकरा रोकलक। “हम कानूनक निष्कर्ष नहि दैत छी। एहि लेल विशेषज्ञ चाही। मुदा मानि लिअ कागजक भौतिक मालिकाना परिवारक हो—तैयो प्रश्न बचैत अछि। भौतिक कागजक मालिकाना आ ककरो जीवन-अनुभवक नैतिक अधिकार एक नहि।”

ईशान कहलक, “नैतिक अधिकारक सीमा के तय करत?”

“एही कारण अभिलेख-जाँच। एही कारण सार्वजनिक टिप्पणी। एही कारण एकल दावा नहि।”

शशिभूषण कहला, “तोरा देवकान्त पर भरोसा नहि।”

“ई देवकान्तक चरित्रक मुकदमा नहि। पन्नाक पाठक प्रश्न अछि।”

“मुदा तूँ सभ ठाम हुनका दोषी बना दैत छह।”

“नहि। हुनकर सुधरबाक प्रमाणो अछि—स्रोत लिखब, पन्ना बचेनाइ, सुधार-पत्र, नाँव दर्ज करबाक प्रयास। मुदा काटल पाँति सेहो अछि। छपल लेख सेहो। हम केवल एक रूप चुनि दोसर मेटा नहि सकैत छी।”

दालानमे फेर शान्ति।

मृणालिनी धीरे नमूना आवरण उठेलक। “देखू। एहि पर देवकान्तक नाँव अछि। पाठक एहि नाँवसँ पूरा पोथी पढ़त। जँ पाँच वर्ष बाद प्रमाण भेटल जे माधवी मूल सह-रचनाकार छलीह, तखन पहिल संस्करण की कहल जाएत?”

ईशान कहलक, “सुधारल संस्करण।”

मृणालिनी ओकरा देखलक। “माधवी अपन जीवनमे एही ‘अगिला संस्करण’क उत्तर सुनने छलीह।”

ईशान चुप भऽ गेल।

शशिभूषणक चेहरा कनी नरम भेल, मुदा विरोध समाप्त नहि। “तँ तोहर समाधान?”

“प्रस्ताव स्थगित। प्रकाशक केँ लेखकत्व जाँचाधीन कहब। मूलक अंकीय संरक्षण अलग कराओल जा सकैत अछि, बिना प्रकाशन-अधिकार दिए। परिवारक भीतर जे लोक पुरान कथा जानैत छथि, हुनका खोजब। नेपाल दिसक शाखाक लोकसँ बात। हेमलताक प्रतिलिपिक स्रोत खोजब। तकर बाद निर्णय।”

ईशान पूछलक, “नेपाल किएक?”

मृणालिनी उत्तर देलक, “जनकपुरक पन्ना, माधवीक प्रस्थान, परिवारक पुरान उल्लेख—कड़ी ओतए जा रहल अछि। आ एक नाँव बारम्बार परिवारक मौखिक सूचीमे सुनलहुँ—रेणुका।”

शशिभूषण माथ उठेलनि। “रेणुका दी?”

मृणालिनी तुरन्त पूछलक, “अहाँ जानैत छी?”

“जानैत नहि। नाम सुनने छी। बाबूजी कहैत छलाह नेपाल दिसक सम्बन्धमे एक रेणुका छलीह जे पुरान गीत बहुत जानैत छलीह।”

मृणालिनी कुर्सीपर फेर बैसि गेल। “कहाँ?”

“एतबे मोन अछि—जनकपुरक पाछाँक सम्बन्ध। पूरा पता नहि।”

ईशान मुस्करायल। “अर्थात् प्रकाशक रोकल, आब नेपाल यात्रा?”

मृणालिनी कहलक, “पहिने स्रोत।”

शशिभूषण एहि बेर विरोध नहि कएलनि।

कमरा मेजपर नमूना आवरण एखनहुँ चमकि रहल छल। मुदा ओकर सुनहरा शीर्षक पहिल बेर अस्थायी बुझायल।

अगिला दिन अनिरुद्ध फेर फोन कएलनि। स्वर विनम्र छल, मुदा व्यावसायिक स्पष्टता संग। “परिवार निर्णय पर पहुँचल?”

मृणालिनी कहलक, “प्रकाशन स्थगित। अंकीय संरक्षण पर अलग बात कऽ सकैत छी, मुदा पुस्तकक शीर्षक, लेखक-श्रेय आ अधिकार सम्बन्धी सहमति एखन नहि।”

“हमरा कानूनी विभागक प्रश्न होएत—पाण्डुलिपि ककर स्वामित्वमे?”

“भौतिक पाण्डुलिपि परिवारक पास अछि। एहि सँ अधिक कानूनी निष्कर्ष हम नहि देब। लेखकत्व जाँचाधीन अछि।”

अनिरुद्ध किछु बेर चुप रहलाह। “अहाँ बुझैत छी, प्रकाशन-जगतमे एतेक सावधानी दुर्लभ अछि।”

“दुर्लभ होएब कारण नहि जे छोड़ि दी।”

“ठीक। हम प्रस्ताव दू मास लेल खुलल राखैत छी। तकर बाद फेर देखब।”

“धन्यवाद।”

फोन रखलाक बाद मृणालिनी सन्दूकक कोठरीमे गेल। पोथी बाहर निकालि सफेद कपड़ापर राखलक।

ओ पहिल पन्ना नहि, बीचक अनेक पन्ना एक साथ देखलक—देवकान्तक साफ हाथ, किनारक तिरहुता, हेमलताक प्रतिलिपि, पेंसिलक चिन्ह, धुँधलायल स्याही, काटल पाँति।

‘स्वादक मालिक’—ई प्रश्न ओकर मनमे उठल। स्वादक मालिक के? जे पहिने बनौलक? जे सीखलक? जे लिखलक? जे छपौलक? जे खरीदलक? जे खएलक? जे मोन रखलक?

एक उत्तर पर्याप्त नहि छल।

मृणालिनी अपन अभिलेख-पोथी खोललक। ऊपर लिखलक—“मालिकाना — चारि अलग प्रश्न।”

नीचाँ चारि पाँति:

“१. भौतिक कागज ककर पास?”

“२. लिखित पाठ ककर हाथक?”

“३. ज्ञान/अनुभव ककर?”

“४. प्रकाशनक निर्णयमे ककर आवाज?”

ओ पाँचम पाँति लिखबाक लेल कलम रोकलक।

फेर लिखलक—“५. जे अनुपस्थित, ओकर अनुपस्थिति केना दर्ज हो?”

एहि पाँचम प्रश्नपर ओकर हाथ बहुत देर ठमकल। माधवी मृत छलीह कि नहि, ओकर जीवन कतए गेल, ओ एखन निश्चित नहि। हेमलताक पूर्ण पोथी कतए अछि, ई सेहो नहि।

कागज परिवारक हो सकैत छल। मुदा कागज अपन भीतर जे मनुखसभक श्रम, भूख, प्रेम, भय, नाँव आ मौन राखने छल, हुनका खरीद-बिक्रीक एक पाँतिमे समेटब सम्भव नहि बुझाइत छल।

ओ सन्दूकक कातमे राखल पुरान लिफाफासभ फेर देखने लागल। एक लिफाफाक पाछाँ फीका स्याहीमे नेपालक पुरान ठामक अधूर पता छल। नाम पूरा नहि, मुदा ‘रेणु...’ जकाँ अक्षर चिन्हाइत।

मृणालिनी तुरन्त निष्कर्ष नहि कएलक। छवि लेलक। नोट बनौलक—“सम्भवतः रेणुका? पुष्टि बाकी।”

फेर शशिभूषण केँ बजेलक।

“नेपालक पुरान सम्बन्धक कागजसभ अलग करू। जे पुरान पता, विवाह-पत्र, गीतक पोथी, चिट्ठी—सभ।”

शशिभूषण दुआरि पर ठाढ़ पूछलनि, “प्रकाशक?”

“प्रतीक्षा करत।”

“आ जँ प्रस्ताव घुरि गेल?”

मृणालिनी पोथी दिस देखलक। “तखन दोसर प्रकाशक खोजब। बेठीक नाँवसँ छपल पोथी आपस बोलाएब कठिन होएत।”

शशिभूषणक चेहरापर विरोधक अंतिम रेखा एखनहुँ छल, मुदा ओ भीतर आबि पुरान लिफाफा उठाबय लगलाह।

“रेणुका नाम हम सचमे सुनने छी,” ओ धीरे कहला। “ककर मुँहसँ, मोन नहि।”

“मोन नहि तँ मोन नहि। अपनासँ भरब नहि।”

शशिभूषण मृणालिनी दिस देखलनि, फेर हँसलाह। “ई नियम परिवारक सभ लोक पर लागू भऽ गेल?”

“होएबाक चाही।”

दूनु लिफाफा अलग करय लगल।

बाहर ईशानक भोजनालयमे नवा पर्ची छपि रहल छल—स्वास्थ्य-दाबी हटाओल, स्रोतक उल्लेख जोड़ल। भीतर पुरान घरमे एक दोसर प्रकाशन रोकल गेल छल।

दुनू काज विरोधी नहि छल। एक ठाम कथा अधिक यथार्थ रूपमे बाहर जा रहल छल; दोसर ठाम कथा बेठीक रूपमे बाहर जाए सँ रोकल जा रहल छल।

मृणालिनी अभिलेख-पोथीक अन्तिम पाँतिमे लिखलक—“स्वामित्वक पहिल परीक्षा छपाइ नहि; श्रेयक न्याय अछि।”

तकर बाद नेपालक अधूर पता अलग लिफाफामे राखलक।

अगिला बाट एखन स्पष्ट नहि छल। दिशा स्पष्ट भऽ गेल छल।

अध्याय २९ — रेणुकाक स्मृति

नेपाल दिस जाएबाक दिन मृणालिनी सन्दूकक मूल पोथी संग नहि लेने गेल। ओ केवल उच्च-गुणवत्ताक छविसभ, हेमलताक भेटल प्रतिलिपिक अंकीय प्रति, जनकपुर-यात्राक पन्नासभ, आ पुरान अधूर पता अलग संचिकाजे रखलक। मूल कागज सीमा पार अनावश्यक जोखिममे लऽ जाएबाक कोनो कारण नहि छल।

शशिभूषण बिहानहि पूछलनि, “एकसरि जाएब?”

मृणालिनी कहलक, “जनकपुर धरि बाट सहज अछि। ओतए सँ सम्बन्धीक लोक भेटत। फोन पर बात भऽ गेल अछि।”

“रेणुका दी केँ कहल गेल जे तूँ किएक अबैत छह?”

“एतबे—पुरान घरक कागज सम्बन्धी बात अछि। माधवीक नाँव फोन पर नहि कहलहुँ।”

शशिभूषण चौकलाह। “किएक?”

“पहिने ओ जे मोन रखैत छथि, से सुनब। प्रश्नमे उत्तर नहि भरब।”

शशिभूषण किछु क्षण हुनका देखैत रहलाह, फेर हलुक मुस्करौलनि। “तोहर ई नियम आब हमरा डरबैत अछि।”

“हमरो।”

जयनगर दिस पहुँचि मृणालिनी केँ पहिल बेर १९३४ केर यात्रा-पन्ना खोलबाक इच्छा भेल। वर्तमानक यात्रा तेज छल; मोबाइलमे स्थानक नाम बदलैत, रेल-पटरीक आर-पार घर, खेत, पोखरि, बाजार छिटकैत जाइत। काँचक खिड़की पाछाँ भूगोल सरकैत छल, जकरा देवकान्त कखनो बैलगाड़ी आ पएर सँ नापने छलाह।

ओ पन्नामे देवकान्तक पाँति पढ़लक—‘कागजमे ई बाट सीधा होएत, धरतीपर नहि।’

मृणालिनी खिड़की बाहर देखलक। एखन बाट सीधा बुझाईत छल, मुदा फोनक नक्शामे सेहो रेखा जतेक साफ, परिवारक सम्बन्ध ओतेक साफ नहि।

आगाँ पन्नापर माधवीक वाक्य—‘रेखा नातेदारी काटैत नहि।’

मृणालिनी अँगुरी रोकलक। १९३४ मे ई वाक्य विवाह, नैहर, ससुरार, बाजार आ बोलीक आर-पार चलनक बारेमे छल। २०२६ मे वएह रेखा ओकरा एक वृद्ध स्त्री दिस लऽ जा रहल छल, जकर परिवारक स्मृति भारत-नेपालक नक्शासँ पुरान हो सकैत छल।

जनकपुर स्टेशनक भीड़मे उतरला पर ओ किछु क्षण ठाढ़ रहल। पन्नामे लिखल पुरान नगर—धर्मशाला, बाजार, गीत, पानक दुकान, भीड़मे ओझराइत माधवी—ओकर मनमे एक साथ उठल।

एखन नगरक आवाज अलग छल—मोटरसाइकिल, मोबाइलक घंटी, घोषणा, छापल संकेत-पट्ट, होटल। मुदा मैथिली आवाज कानमे पड़िते ओकरा देवकान्तक दोसर पाँति मोन पड़ल—‘सीमा पार उच्चारण बदलैत, बोध नहि टूटैत।’

ओ तुरन्त अपनासँ जोड़लक—‘एहि एक यात्रामे जे सुनैत छी, ओतबे।’

पुरान परिवारक सम्बन्धी, विजयकान्त, स्टेशन बाहर भेटलाह। उम्र प्रायः साठि। ओ मृणालिनी केँ देखिते कहला, “अहाँ भारतक घरसँ? रेणुका फूआ बिहानसँ पूछैत छलीह—ककर बेटी अबैत अछि?”

मृणालिनी हँसि कहलक, “पहिने ई तय करू—हम ककर बेटी नहि, अपन नाँवसँ आयल छी।”

विजयकान्त ठहाका लगा देलनि। “तखन फूआ संग नीक पटत।”

जनकपुर सँ बाहरक बाटमे नगर धीरे-धीरे विरल भेल। पक्का घरक बीच पुरान आँगन, पोखरि, खेत, नव दुकान, विद्यालय, दूरक मन्दिरक शिखर—सभ बेराबेरी देखाइत। विजयकान्त फोन पर ककरोसँ बाट पूछैत कहला, “एहि क्षेत्रक ठामक नाम एक पीढ़ीमे दू बेर बदलि जाइत; पुरान चिट्ठीक पता लऽ कऽ एखन घर खोजू तँ आधा दिन लगत।”

मृणालिनी पुरान लिफाफाक छवि देखेलक। “एहि कारण ‘रेणु...’ सँ हम रेणुका निश्चित नहि मानने छी।”

“ठीक केलहुँ,” विजयकान्त कहला। “फूआक नाँव रेणुका अछि, मुदा एहि घरक पुरान सम्बन्धमे दोसर रेणुका सेहो भऽ सकैत छलीह।”

ई उत्तर मृणालिनी केँ नीक लगल। बाट खुलबाक पहिने एक नवा संशय जुड़ल—आ संशय ओकरा बाधा नहि, सुरक्षा बुझाइत छल।

रेणुकाक घर एक नीच देवालक भीतर छल। आँगनमे तुलसीक चौरा, कातमे दू गाछ, ओसारपर बाँसक पुरान मचिया। दुआरि लग एक वृद्धा बिना सहाराक ठाढ़ छलीह। उज्जर केश पाछाँ बान्हल, आँखि तेज।

विजयकान्त कहला, “फूआ, भारतक घरक मृणालिनी।”

रेणुका पहिल वाक्य कहलीह, “भारतक घरक कि अपन?”

मृणालिनी मुस्करायल। “अपन। घरक कागजक प्रश्न लऽ कऽ आयल छी।”

रेणुका कनी कात सरकि दुआरि खोललीह। “तखन भीतर आउ। जँ नाँव खोजय आयल छी तँ समय लगत। जँ अपन घर केँ निर्दोष सिद्ध करय आयल छी तँ चाय पी कऽ घुरि जाउ।”

मृणालिनी दुआरि पार करैत बुझि गेल—कागजपर बनाओल अनुमान नहि, जीवित मनुखक स्मृति आब सोझाँ छल।

**

ओसारपर चाय आएल, संगमे दू छोट पिरुकिया। रेणुका कहलीह, “खाइत-खाइत पूछू। भूखल लोक प्रमाणो हतबड़ीमे मानि लैत अछि।”

मृणालिनी हँसल। “अहाँ हमरा पहिनेसँ जानैत छी?”

“नहि। लोक केँ कनी-कनी जानैत छी।”

विजयकान्त किछु देर बाद बाहर चलि गेलाह। ओसारपर रेणुका, मृणालिनी आ बीचमे छोट मेज। मृणालिनी लैपटॉप नहि खोललक; पहिने छपल छविसभ रखलक।

रेणुका पहिल छवि उठेलनि। देवकान्तक मुख्य लिखाइ। दोसर—तिरहुता किनार-टिप्पणी। तेसर—हेमलताक अभ्यास-पन्ना।

मृणालिनी कहलक, “हमरा संशय अछि जे ई किनारक लिखाइ माधवीक भऽ सकैत अछि।”

रेणुका छवि कनी दूर कऽ आँखि संकुचित कएलनि। “किएक?”

“किछु पन्नामे देवनागरी टिप्पणी संग माधवीक नाँव। एक तिरहुता हस्ताक्षरक उल्लेख। देवकान्तक नोटमे माधवीक कहब। हेमलताक प्रतिलिपि—”

रेणुका हाथ उठेलनि। “ठमकू। ई सभ एहि लिखाइ केँ माधवीक सिद्ध करैत अछि?”

मृणालिनी चुप भेल। “नहि। केवल सम्भावना मजबूत करैत अछि।”

“तखन पहिल वाक्य फेर कहू।”

मृणालिनी कहलक, “ई लिखाइ माधवीक हो सकैत अछि। पुष्टि चाही।”

रेणुका छवि मेजपर राखलीह। “एखन बात करू।”

मृणालिनी ओकरा ध्यानसँ देखलक। “अहाँ माधवी केँ देखने छलहुँ?”

रेणुका हँसलीह। “हम १९४०क दशकक अन्तमे जनमलहुँ। १९३४ केर माधवी केँ देखबाक प्रश्न नहि। जँ देखल कहब तँ पहिल झूठ ओतहि सँ शुरू।”

“तखन सम्बन्ध?”

“मोर माय, मौसी, नानीक बात। आ हेमलता दी केँ हम छोट रहिते देखने रही। बहुत वृद्ध नहि छलीह तखन, मुदा हमरा सँ पैघ पीढ़ीक। गीत सिखबैत छलीह। कागज सँ प्रेम छल।”

मृणालिनीक देह तनिक आगाँ झुकल। “हेमलता?”

“हँ। मुदा फेर हतबड़ी नहि।”

रेणुका पिरुकिया तोड़ि आधा मृणालिनी दिस सरकौलनि। “पहिने ई कहू—तोरा की चाही? माधवीक नाँव भेटि जाए, तखन तोहर घरक दोष समाप्त?”

मृणालिनी तुरन्त कहलक, “नहि।”

“देवकान्त दोषी सिद्ध भऽ जाए, तखन?”

“नहि।”

“तखन?”

मृणालिनी किछु क्षण सोचलक। “पन्ना जे कहैत अछि, ओतबे। जँ माधवी सह-ज्ञानक मूल स्रोत छलीह, से दर्ज हो। जँ देवकान्त श्रेय काटलनि, से दर्ज हो। जँ बादमे सुधार कएलनि, से सेहो। जँ किछु निश्चित नहि, से अनिश्चित रहय।”

रेणुका ध्यानसँ सुनलीह। “ई उत्तर अभ्यास कऽ कऽ आयल छह?”

“कदाचित।”

रेणुका मुस्कराइत कहलीह, “नीक। प्रश्न ठीक अछि।”

मृणालिनी हँसि पड़ल। वातावरण कनी हलुक भेल।

रेणुका फेर तिरहुता छवि उठेलनि। “हम ई लिखाइ देखिकऽ ‘माधवी’ नहि कहब। हमरा लग माधवीक प्रमाणित चिट्ठी नहि। हेमलताक किछु कागज अछि; ओकर लिखाइ चिन्हैत छी, कारण अपनैँ देखने छी। माधवीक नाम परिवारक कथामे अछि, लिखाइ नहि।”

मृणालिनी कहलक, “ई हमरा अपेक्षित उत्तरसँ बेसी उपयोगी अछि।”

“किएक?”

“किएक तँ अहाँ झूठी पहचान नहि देलहुँ।”

रेणुका हँसलीह। “बूढ़ लोकक स्मृति कैँ बहुत लोक देववाणी मानि लैत अछि। बूढ़ लोक सेहो बेठीक मोन राखैत अछि। कखनो दोसरक कथा अपन देखल जकाँ लगय लगैत अछि।”

मृणालिनी कैँ देवकान्तक १९३४ पन्ना मोन पड़ल—भीड़मे माधवी पाछाँ देखलीह कि नहि, बादमे निश्चित नहि।

रेणुका पूछलीह, “तोहर लग गीतक किनार-लिखाइ अछि?”

“किछु शब्द जकाँ देखाइत अछि, मुदा पूरा पाठ हम नहि पढ़ि सकलहुँ।”

“देखाउ।”

मृणालिनी अगिला छवि खोललक। तिरहुता किनारक दू छोट पाँति, एक भाग धुँधला। ओकर देवनागरी अस्थायी पाठ नीचे अलग कागजपर—प्रश्नचिह्न सहित।

रेणुका छवि बहुत देर देखलीह। “अक्षरक पढ़ाइ पर हम एखन किछु नहि कहब। मुदा ई शब्द—जँ तोहर पाठ ठीक अछि—हमरा एक गीत मोन पाड़ैत अछि।”

मृणालिनी कलम उठा लेलक।

रेणुका तुरन्त कहलीह, “पहिने सुनू। लिखब बादमे।”

मृणालिनी कलम मेजपर रखि देलक।

✽✽

रेणुका आँखि बन्द नहि कएलनि। ओ आँगन दिस देखैत बहुत धीमे एक धुन गुनगुनाबय लगलीह। शब्द पहिने अस्पष्ट, फेर एक पाँति साफ भेल—“जतए जइह, नैहरक नाँव मोन राखिह।”

मृणालिनी साँस रोकि सुनलक।

रेणुका अगिला पाँति गाबय गेलीह, फेर रुकलीह। “एतए हमरा दू रूप मोन पड़ैत अछि। एकमे ‘नैहरक नाँव’, दोसरमे ‘अंगनाक छाँह’। कोन पुरान, नहि कहि सकैत।”

“पहिल पाँति फेर?”

रेणुका दोहरौलनि—“जतए जइह, नैहरक नाँव मोन राखिह।”

मृणालिनी छवि पर अपन अस्थायी पाठ देखलक। धुँधलायल तिरहुता भागक नीचे ओ जे देवनागरी अनुमान लिखने छल, ताहिमे ‘...नाँव...मोन...’ स्पष्ट बुझाइट छल; बाकी अनिश्चित।

ओ कहलक, “एतए ‘नाँव’ आ ‘मोन’ हम पढ़ि सकल छी। ‘नैहर’ पर विश्वास नहि।”

रेणुका कहलीह, “तखन ‘नैहर’ मत लिखू।”

“गीत ककर घरमे गायल जाइत छल?”

“हमर नानीक घरमे सेहो। मुदा एक खास धुन हेमलता दीक घरसँ जुड़ल कहैत छलीह माय। माधवी आ हेमलता—दुनू बहिन नहि छलीह, ई बात मोन राखिह; परिवारक निकटता अलग छल। लोक बादमे सभकेँ बहिन बना दैत अछि।”

मृणालिनी तुरन्त लिखलनि—‘रेणुका: माधवी-हेमलता केँ जैविक बहिन नहि मानब; पारिवारिक निकट सम्बोधन सम्भव।’

रेणुका पन्ना देखलीह। “नीक। एतए भूल बहुत भेल अछि।”

“अहाँ हेमलता दी सँ गीत सुनने रही?”

“हँ। विवाहक मौसममे बच्चासभकेँ बोल सिखबैत छलीह। एक बेर हम ‘नाँव’क बदला ‘गाम’ गा देने रही। ओ रोकि कहने छलीह—‘नाँव कह। गाम बदलि सकैत अछि, नाँव नहि।’”

मृणालिनीक अँगुरी कलमपर कसि गेल। “ई वाक्य लिखी?”

रेणुका सोचलीह। “लिखू—‘रेणुकाक स्मृति अनुसार हेमलताक कहब।’ निश्चित उद्धरण नहि। शब्दशः एतबे कहल छल कि नहि, हम निश्चयपूर्वक नहि कहब।”

मृणालिनी वएह लिखलक।

“अहाँ बहुत सावधान छी।”

“स्मृति जबान बदलैत अछि। भाव बचैत अछि, शब्द नहि।”

रेणुका भीतर सँ एक पुरान कपड़ाक पोटरी अनबौलनि। ओ स्वयं उठि नहि गेलीह; घरक एक युवती पोटरी देलक।

“एहि मे गीतक कागज अछि?” मृणालिनी पूछलक।

“किछु। मुदा पहिने एक बात।”

रेणुका पोटरीक गाँठ पर हाथ रखलीह। “ई सभ कागज हमरा लग एही लेल बचल जे हेमलता दी लोकक फेकल कागज-पत्तर उठा लैत छलीह। विवाह समाप्त, गीतक कागज भीजल, बच्चाक अभ्यास-पन्ना फाटल—ओ कहैत छलीह, ‘जाहिमे नाम अछि, फेकू नहि।’”

मृणालिनी किछु नहि कहलक। प्रमाण जतेक जुटैत छल, नाँवक सूत्र एतेक सघन लगय लागैत छल जे ओकरा डर सेहो होइत—कहीं ओ स्वयं सभ प्रमाणकें एक अर्थमे धकेलि तऽ नहि रहल?

ओ अपन नोटमे लिखलक—‘नामक विषय बारम्बार अबैत अछि; सम्भव चयन-पक्षपात। विपरीत उदाहरण सेहो खोजब।’

रेणुका नोट देखलीह। “ई की?”

“अपन सावधानी। हम जे खोजैत छी, ओही बात सभ ठाम देखय लगि सकैत छी।”

रेणुका प्रसन्न भऽ हँसलीह। “एखन तोरा कागज देखाएब उचित लगैत अछि।”

ओ पोटरी खोललीह। भीतर पुरान विवाह-गीतक कागज, किछु देवनागरी, किछु तिरहुता, किछु केवल बोल याद रखबाक लेल खसड़ा।

एक पन्नाक बीच देवनागरीमे पाँति छल—‘जतए जइह, नैहरक नाँव मोन राखिह।’

नीचाँ छोट लिखाइ—‘हेमलता दीक सिखाओल धुन।’

मृणालिनी बहुत देर पन्ना देखैत रहल।

“ई कागज ककर हाथक?”

रेणुका कहलीह, “मोर माय। लिखाइ चिन्हैत छी। तिथि नहि। कदाचित साठिक दशक। एतए माधवीक प्रमाण नहि, केवल ई प्रमाण जे गीतक पाँति परिवारक स्मृतिमे जीवित छल।”

मृणालिनी माथ हिलेलक। “आ पोथीक किनारक पाँति सँ शब्द-मेल।”

“जँ तिरहुता पाठ ठीक अछि।”

“हँ—जँ।”

ओ ‘जँ’ केँ मोट अक्षरमे नोट कएलक।

रेणुका कहलीह, “इतिहासमे ‘जँ’ बहुत उपयोगी शब्द अछि। लेखक लोक एकरा हटाबय चाहैत अछि, पाठक केँ साफ कथा चाही।”

मृणालिनी केँ प्रकाशकक नमूना आवरण मोन पड़ल—एक परिवार, एक भूगोल, एक स्वाद-संसार।

ओ कहलक, “हम एखन ‘एक’ सँ डरय लगल छी।”

रेणुका उत्तर देलीह, “डरू नहि। जतेक अछि ओतेक लिखू।”

गीतक पोटरी आपस बाँधलाक बाद रेणुका किछु बेर मौन रहलि। फेर कहलीह, “तोरा असली कागज देखेबाक अछि?”

मृणालिनी हँसल। “एखन धरि नकली देखबैत रही?”

रेणुका ठहाका लगा देलीह। “असली अर्थ—जे कारण तूँ आयल छह, ओकरा निकट।”

ओ भीतरक युवती केँ एक लकड़ीक छोट सन्दूक अनबाक लेल कहलीह। सन्दूक बहुत पुरान नहि, मुदा भीतरक कपड़ा पीयर पड़ल। रेणुका चाबी अपनैँ खोललीह।

ऊपर किछु विवाह-पत्र, पुरान फोटो, औषधि-पर्ची, जमीनक कागज। नीचाँ एक मोट अभ्यास-पोथी, नीला कपड़ाक आवरण, कोना घिसायल।

रेणुका पोथी उठबैत कहलीह, “ई हेमलता दीक हाथक अछि—कम-से-कम मुख्य भाग। हुनकर लिखाइ हम पहचानैत छी, कारण हमरा बालपनमे ओ हमरा नाम लिखब सिखौने छलीह, आ बादक चिट्ठी सेहो अछि।”

मृणालिनी पोथी लेलनि नहि। “पहिने ई कहू—अहाँक लग कोना आयल?”

“हेमलता दीक मृत्यु बाद कागज अलग-अलग घर गेल। किछु हमर माय लग। माय गेलीह तँ हमरा लग। एहि पोथीक मूल्य कियो पाक-पोथी बुझि नहि रखने छल; बच्चाक अभ्यास मानि छोड़ि देलक।”

“मृत्यु कखन?”

रेणुका तिथि याद करबाक प्रयास कएलनि। “वर्ष निश्चित नहि कहब। सत्तरक दशकक अन्त वा अस्सीक आरम्भ। बादमे कागज देखिकऽ जाँचि सकैत छी।”

मृणालिनी लिखलक—‘तिथि अनिश्चित; अभिलेख जाँच आवश्यक।’

रेणुका पोथी खोलीह। पहिल पृष्ठसभ सचमुच अभ्यास—तिरहुता अक्षर, देवनागरी शब्द, तारीखक प्रयास, किछु गिनती। बीचक पन्ना बदलैत गेल। लिखाइ अधिक आत्मविश्वासी। शीर्षक—अदौरी, अमट, तिलकोर, माछ।

मृणालिनीक हृदय तेज धड़कय लागल, मुदा ओ स्वयं केँ धीमा केलक। ई ओही प्रकारक पोथी छल जकर संकेत परिवारक सन्दूकक कागजमे छल।

एक पन्नापर ‘तिलकोर’क शीर्षक नीचे लिखल—‘माधवी दीदी सँ सुनल/देखल।’ तकर बाद पात चुनबाक चिन्ह, पीठारक दशा, तेलक ताप। नीचे कोष्ठक—‘मूल पन्ना पर माधवी दीदीक हस्ताक्षर।’

मृणालिनी साँस रोकि पढ़लक। ई ठीक ओहि व्यवहारक संग मेल खाइत छल जकर वर्णन परिवारक पोथीमे छल—हेमलता हस्ताक्षर नकल नहि करैत, ओकर उपस्थितिक उल्लेख करैत।

“ई पन्नाक छवि लऽ सकैत छी?”

रेणुका कहलीह, “पहिने पूरा देखू।”

दोसर पन्ना—‘अमट।’ ऊपर तिथि धुँधली। नीचे—‘जानकी काकी आ माधवी दीदीक कहब।’ काँच आमक टुकड़ा, धूप, नमी, अलग रखबाक संकेत। कातमे पाँति—‘माधवी दीदी: जाड़मे आम नहि रहत, खटास रहत।’

मृणालिनीक आँखि अनायास बन्द भऽ गेल। छपल लेखमे जे वाक्य देवकान्तक चमकदार अंग्रेजी बनि गेल छल, एतए स्रोतक नाँव सहित साधारण रूपमे जीवित छल।

रेणुका पूछलीह, “एहि सँ की सिद्ध?”

मृणालिनी आँखि खोलि कहलक, “एतेक—हेमलताक एहि प्रतिलिपिमे माधवीक नाम स्रोत रूपमे अछि। आ ‘जाड़मे आम नहि रहत, खटास रहत’ पाँति माधवीक कहब रूपमे सुरक्षित अछि। एतए सँ ई नहि सिद्ध जे मूल पोथीक सभ किनार-लिखाइ माधवीक।”

रेणुका मुस्कराइलीह। “अब ठीक।”

तेसर महत्त्वक पन्ना विधि नहि, टिप्पणी छल। हेमलताक मुख्य लिखाइमे—‘माधवी दीदी कहलीह—जे बात ककरो मुखसँ, हाथसँ, अनुभवसँ आबि रहल, ओकर नाँव जतेक जानल अछि ओतेक लिखू; नहि जानल तँ नहि गढ़ू।’

मृणालिनी बहुत देर एहि पाँति पर स्थिर रहल।

ओ पूछलक, “ई शब्दशः माधवीक?”

रेणुका कहलीह, “हेमलता एना लिखने अछि। माधवी ठीक एही शब्दमे कहलनि कि नहि, हम नहि कहि सकैत। ई हेमलताक अभिलेखमे माधवीक नामसँ सुरक्षित टिप्पणी अछि—एतबे।”

मृणालिनी टिप्पणीक नीचे एक छोट चिन्ह देखलक—पात। वएह पात-चिन्ह जकर उपयोग १९३४ केर निजी पन्नासभमे देखल गेल छल? कि केवल पातक आकृति?

ओ तुरन्त अर्थ नहि देलक। छवि लेलासँ पहिने रेणुकासँ पूछलक, “ई पातक चिन्ह हेमलता दीक आन पन्नामे सेहो?”

रेणुका किछु पृष्ठ पलटलीह। कखनो पात, कखनो बिन्दु, कखनो किछु नहि। “अछि। अर्थ हमरा नहि मालूम।”

मृणालिनी नोट कएलक—‘पात-चिन्ह उपस्थित; अर्थ अप्रमाणित।’

रेणुका पोथी मृणालिनी दिस सरकौलनि। “आब छवि लिअ। मुदा पूरा पोथी नहि। जे पन्ना तोहर जाँच लेल आवश्यक, पहिने सूची बनाउ। बादमे अंकीय प्रति बनायब।”

मृणालिनी सहमत भेल। ओ तिलकोर, अमट, टिप्पणी, आरम्भक लिखाइ-नमूना, आ दू तिथि-पन्नाक छवि लेलक। प्रत्येक छवि संग पृष्ठ-क्रम, अवस्था, रेणुकाक मौखिक सूचना अलग नोट कएलक।

काज समाप्त होए धरि साँझि भऽ गेल। भीतर सँ मखानक खीर आयल। रेणुका कटोरी मृणालिनी दिस बढबैत कहलीह, “एहि पर कोनो लेखकत्व-विवाद नहि। एखन खाउ।”

मृणालिनी हँसि पड़ल। “विधि ककर?”

“एखन तोरा भूखक।”

“स्रोत?”

“हमर बहू। नाम लिखब?”

भीतर सँ युवती हँसि उत्तर देलक, “सरोजा।”

मृणालिनी कहलक, “मोन राखलहुँ।”

रेणुका खीरक पहिल ग्रास लैत कहलीह, “एहि कारण तोरा पन्ना देखेलहुँ। तूँ उत्तर पाबय सँ बेसी नाँवक ठाम बनाबय चाहैत छह। मुदा सावधान—आब तोरा माधवी भेटि गेलीह, एना मत मानू।”

“नहि मानब।”

“हेमलता भेटलीह?”

“हुनकर प्रतिलिपिक एक भाग भेटल।”

“देवकान्त?”

“हुनकर लिखाइ आ निर्णयक किछु प्रमाण।”

“तखन कथा?”

मृणालिनी कटोरीक भाप दिस देखलक। “एखनहुँ बनि रहल अछि।”

रेणुका माथ हिलेलनि। “नीक। मौखिक स्मृति लिखित कागज केँ सुधारि सकैत अछि, मुदा कागज स्मृतिक भूल सेहो पकड़ैत अछि। दुनू एक-दोसराक मालिक नहि।”

राति घुरबाक पहिने मृणालिनी रेणुकाक अनुमति सँ एक छोट ध्वनि-अभिलेख बनौलक—गीतक पाँति, सम्बन्धक स्मृति, हेमलताक लिखाइक पहचानक आधार। प्रत्येक ठाम रेणुका अपनैँ कहलीह—‘ई निश्चित’, ‘ई सुनेल’, ‘ई अनुमान।’

मृणालिनी संचिका बन्द करैत बुझलक—ओ उत्तर लऽ कऽ नहि, प्रमाणक नवा श्रेणी लऽ कऽ घुरि रहल अछि।

हेमलताक अभ्यास-पोथीमे माधवीक नाँव बचल छल।

आ एहि बेर नाँव धब्बा नहि, स्पष्ट अक्षरमे छल।

अध्याय ३० — अन्तिम पात

जनकपुर सँ घुरलाक बाद मृणालिनी पहिल दिन पोथी नहि खोललक। रेणुकाक घरसँ अनल छविसभ तीन ठाम सुरक्षित कएलक, ध्वनि-अभिलेखक दू प्रति बनौलक, आ हेमलताक अभ्यास-पोथीक जाहि पन्नासभक छवि लेबाक अनुमति भेटल छल, तकर क्रम अलग सूचीमे लिखलक। राति भरि ओकर मन मूल पोथी दिस जाइत रहल, मुदा ओ अपना केँ रोकने रहल।

दोसरा दिन भोरमे ओ पुरान घर पहुँचल। शशिभूषण पहिनेसँ ओसारपर बैसल छलाह।

“नेपाल की देलक?” हुनका प्रश्न छल।

मृणालिनी झोरा मेजपर रखैत कहलक, “उत्तर कम, प्रमाण अधिक।”

“माधवी?”

“हेमलताक प्रतिलिपिमे माधवीक नाँव स्पष्ट अछि। मुदा मूल पोथीक सभ तिरहुता लिखाइ माधवीक अछि—ई एखन नहि कहब।”

शशिभूषणक चेहरापर निराशा आ राहत दुनू एक्के बेर आयल। “तखन आधा बाट?”

“बाट कतेक अछि, एखन नहि जानैत छी।”

ओ पोथी राखल सन्दूक खोललक। सूती आवरणक भीतर जिल्द वएह पुरान गन्ध छोड़ैत छल—कागज, धूलि, हलुक नमीक पुरान स्मृति। मृणालिनी पहिने बाहरी अवस्था देखलक, फेर पृष्ठ-क्रम जाँचलक।

नेपालसँ घुरैत समय हेमलताक एक पाँति ओकर मनमे बारम्बार उठल छल—‘मूल पन्ना पर माधवी दीदीक हस्ताक्षर।’ हेमलता हस्ताक्षरक नकल नहि केने छलीह; केवल उपस्थितिक उल्लेख। मूल पोथीमे एहन हस्ताक्षर एखन धरि स्पष्ट कतहु भेटल नहि।

तिलकोरक पन्ना ओकर पहिल सम्भावना छल। ओहि ठाम सूखल पात भेटल छल। पात हटला बाद ‘मा...’ जकाँ धुँधलायल अक्षर देखल गेल छल।

मृणालिनी पोथी ओहि पृष्ठपर खोललक। पृष्ठ ४१-४२।

सूखल तिलकोर-पात आब मूल पोथीमे नहि छल; अलग अम्लरहित आवरणमे, भेटबाक पृष्ठ-संख्या आ बसन्ती काकीक सम्भावित पहचान सहित सुरक्षित छल। पातक छाया कागजपर एखनहुँ पीयर-भूर रूपमे रहि गेल छल।

ओ हेमलताक अभ्यास-पोथीक छवि कातमे रखलक। ‘तिलकोर — माधवी दीदी सँ सुनल/देखल।’ नीचे विधि। फेर कोष्ठक—‘मूल पन्ना पर माधवी दीदीक हस्ताक्षर।’

मृणालिनी मूल पृष्ठ पर नजरि फेरौलक। दृश्यमान भागमे हस्ताक्षर नहि।

“हेमलता बेठीक मोन रखने होएत?” शशिभूषण पूछलनि।

“भऽ सकैत अछि। अथवा हस्ताक्षर एहि पृष्ठक दोसर रूपमे रहल होएत—कातमे, पाछाँ, अलग पातपर। एखन अनुमान मात्र।”

ओ पृष्ठक भीतरक कात, जिल्दक नजदीक, कातसँ उजास देलक। पहिल दिनक छविसँ तुलना कएलक।

किछु असामान्य देखायल।

सामान्य पृष्ठसभमे धागा दू छेदसँ सीधा जाइत छल। एहि पातक भीतरक कातमे तेसर बहुत छोट छेद जकाँ चिन्ह छल, आ एक महीन भूर धागाक टुकड़ा मूल सिलाइसँ अलग कोणपर।

मृणालिनी हाथ रोकलक।

“की?”

“एहि पन्नाक सिलाइ दोसर जकाँ नहि।”

शशिभूषण झुकलाह। “फाटल होएत, बादमे सीलल?”

“भऽ सकैत अछि।”

ओ पहिल दिनक उच्च-गुणवत्ताक छवि खोललक। ओहि समय सूखल पात भीतर छल, ताहि कारण भीतरक कात पूरा खुलल नहि छल। फोटोमे सेहो महीन धागा देखाइत छल, मुदा ध्यान नहि गेल छल।

मृणालिनी पृष्ठ केँ बलसँ खोलल नहि। आवर्धक काँचसँ देखलक। भीतरक कातमे कागज एक ठाम दू तह जकाँ बुझाइत छल—जेना मूल पातक किनार भीतर मोड़ि फेर चिपकाओल गेल हो।

“अहाँ खोलब?” शशिभूषण पूछलनि।

“नहि।”

“तखन?”

“कागज-संरक्षण जाननिहार कै देखाएब। जँ तह अपनै खुलैत हो तखन अलग बात; जँ चिपकल अछि तँ हम खींचब नहि।”

शशिभूषण कनी अधीर भेलाह। “भीतर किछु अछि कि केवल मोड़?”

मृणालिनी पोथी बन्द करैत कहलक, “ई जानबाक जिज्ञासा कागज तोड़बाक अधिकार नहि दैत।”

ओ तिलकोर-पन्नाक छवि, सिलाइक नजदीकी छवि, आ हेमलताक प्रतिलिपिक सम्बन्धित अंश अलग संचिकाजे राखलक।

नेपाल ओकरा एक प्रमाण देलक छल; घर घुरिते ओ प्रमाण नवा प्रश्न खोलि देने छल।

सूखल पात पहिने पन्नाक बीच सँ खसल छल।

एखन बुझाईत छल—कदाचित ओहि पन्नाक भीतर एक दोसर पात एखनहुँ बन्द छल।

**

दोसरा दिन दुपहर कागज-संरक्षणक एक जानकार पुरान घर आएल। मृणालिनी पहिने फोन पर केवल स्थिति कहने छल—पुरान हस्तलिखित पोथी, भीतरक कातमे असामान्य तह, सम्भावित पाछाँक मरम्मत। ओ स्पष्ट कहने छल जे बिना निरीक्षण कोनो चिपकल भाग अलग नहि करबाक अछि।

काज लेल ओसारक बदला भीतरक सूखल कोठरी चुनल गेल। मेजपर स्वच्छ सूती कपड़ा, स्थिर उजास, पोथीक नीचे सहारा। शशिभूषण दुआरि लग बैसल। ईशान सेहो पहुँचि गेल, मुदा मृणालिनी पहिने कहि देलक—“कियो पन्ना छूबत नहि।”

ईशान हँसल। “हम केवल साँस लेब?”

“दूरसँ।”

जानकार पहिने जिल्द, धागा आ पृष्ठक अवस्था देखलक। “ई मूल सिलाइ नहि बुझाईत अछि,” ओ कहलक। “कखनो पन्ना फाटला पर घरहि मे धागा लगा देल जाइत अछि। मुदा

एतए तहक भीतर किछु अतिरिक्त कागजक मोटाइ सेहो भऽ सकैत अछि। निश्चित कहब एखन हतबड़ी होएत।”

मृणालिनी पूछलक, “जँ अलग करब सुरक्षित नहि हो?”

“तँ नहि करब।”

ई उत्तर सुनि ओकरा राहत भेल।

पृष्ठक भीतरक कात बहुत धीरे सहारा देल गेल। सूखल तहक ऊपर कोनो पानी, तेल वा घरक उपाय प्रयोग नहि कएल गेल। उजासक कोण बदलि केवल कागजक सीमा देखल गेल।

एक ठाम तह अपनैँ कनी उठल। भीतर सँ उज्जर नहि, अधिक पीयर पड़ल दोसर कागजक महीन किनार देखायल।

ईशान फुसफुसायल, “किछु अछि।”

मृणालिनी कहलक, “एखन केवल कागजक किनार अछि।”

जानकार किछु देर देखैत रहल। “ई छोट पर्ची जकाँ किछु भीतर मोड़ल अछि। एक कात हलुक चिपकल। बल देब उचित नहि। जतेक अपनैँ मुक्त होइत अछि, ओतबे।”

प्रक्रिया धीमी छल। मिनटसभ पृष्ठ जकाँ लम्बा लगैत। शशिभूषण बीचमे उठि फेर बैसि गेलाह। ईशान मोबाइल निकालि फोटो लेब चाहलक, मुदा मृणालिनी ओकर हाथ रोकलक—“पहिने दस्तावेजक आधिकारिक छवि।”

पातक भीतरक मोड़ धीरे-धीरे खुलल। एक छोट, बहुत पातर कागज, प्रायः हथेलीसँ छोट, दू बेर मोड़ल रूपमे भीतर छल। ओकर एक किनार पुरान चिपचिपाहटक अवशेषसँ अटकल छल; बाकी भाग मुक्त।

जानकार कहलक, “एखन ई अलग कएल जा सकैत अछि। जँ प्रतिरोध भेटल तँ रोकब।”

मृणालिनी केवल माथ हिलेलक।

छोट कागज अन्ततः मूल पृष्ठसँ अलग भेल। कोनो फटाव नहि। ओकरा तुरन्त समतल करबाक प्रयास नहि कएल गेल; जेना छल, ओहि ढंगसँ सहारा पर राखल गेल।

पहिल दृश्य केवल कारी-भूर स्याहीक रेखा छल। अक्षर तिरहुता जकाँ। तहक कारण किछु भाग भीतर मुड़ल।

मृणालिनीक हाथ ठंढा भऽ गेल।

“फोटो,” ओ धीरे कहलक।

पहिने पर्चीक मूल स्थिति, फेर सोझाँक भाग, फेर पाछाँक भाग—सभ क्रमसँ छवि लेल गेल। पृष्ठ ४१-४२क भीतरक तह सेहो।

शशिभूषण पूछलनि, “नाम अछि?”

मृणालिनी तुरन्त उत्तर नहि देलक। तिरहुता अक्षरसभक किछु भाग ओ पढ़ि सकैत छल, किछु नहि। पहिल पाँतिक आरम्भमे दू-तीन अक्षर ओकरा ‘माध...’ जकाँ लगल।

ओ अपनैँ कागजपर लिखलक—‘पहिल दृष्टि: सम्भवतः नाँव; पाठ नहि निश्चित।’

ईशान बेचैन भऽ पूछलक, “कम-से-कम माधवी?”

“नहि।”

“तोरा देखाइत तऽ अछि।”

“देखाइत अछि आ पढ़ल गेल—दूनु अलग।”

पर्चीक एक कोनमे अंक जकाँ चिन्ह छल। मृणालिनी २, १, ९, १, ९, ३, ४ जकाँ रूप अलग-अलग देखैत छल, मुदा तह आ स्याहीक कारण पूरा तिथि एखन पढ़ब उचित नहि।

पाछाँक भागमे देवनागरीक बहुत छोट वाक्य छल—स्याहीक रंग सोझाँक लेख सँ अलग।

ईशान कहलक, “ई तऽ अहाँ पढ़ि सकैत छी।”

मृणालिनी नजरि टिकेलक। अक्षर धुँधला छल, मुदा ‘माधवीक नाँव’ जकाँ अंश सम्भावित। तकर बाद ‘फेर...’ वा ‘धर...’ जकाँ।

ओ फेर वएह नियम लगौलक—अनुमान केँ पाठ नहि बनाउ।

“एहि पाछाँक लिखाइ पहिले तुलना करब,” ओ कहलक। “देवकान्तक प्रमाणित चिट्ठी, मूल पोथीक मुख्य हाथ, स्याहीक क्रम—सभ।”

कागज-संरक्षणक जानकार पर्ची केँ उपयुक्त अलग आवरणमे राखलक, मूल पृष्ठ-सन्दर्भ लिखल गेल। तहक चिपकल अवशेष केँ ओहि दिन हटाओल नहि गेल।

काज पूरा भेलापर शशिभूषण बहुत देर छोट आवरण देखैत रहलाह।

“एतेक छोट कागज लेल एतेक दिन?”

मृणालिनी कहलक, “कागज छोट अछि। दावा पैघ भऽ सकैत अछि।”

शशिभूषण उत्तर नहि देलनि।

तिलकोरक सूखल पात एक अलग आवरणमे छल। छोट तिरहुता पात दोसर आवरणमे।

एक पात स्वादक स्मृति छल।

दोसर कदाचित नाँवक।

**

मृणालिनी ओहि साँझि रेणुका केँ फोन नहि कएलक। पहिने पर्चीक उच्च-गुणवत्ताक छवि व्यवस्थित कएलक, मूल आकार, उजासक दिशा, सोझाँ-पाछाँ स्पष्ट लिखलक। तिरहुता भागक अपन अस्थायी पढ़ाइ अलग कागजपर, प्रत्येक अनिश्चित अक्षरक ठाम प्रश्नचिह्न।

अगिला बिहान रेणुका संग दृश्य-सम्पर्क भेल। स्क्रीनपर रेणुकाक चेहरा आयल, पाछाँ वएह जनकपुरक आँगनक एक भाग।

“एतेक भोरमे नाँव भेटि गेल?” रेणुका पूछलीह।

मृणालिनी कहलक, “कागज भेटल। नाँव एखन पढ़बाक अछि।”

ओ पहिल छवि स्क्रीनपर देखेलक।

रेणुका तुरन्त किछु नहि कहलीह। बहुत देर धरि आवर्धित रूप देखैत रहलि। “तहक रेखा बीचमे अक्षर काटि रहल अछि। पहिले पाँति?”

“हमरा ‘माध...’ जकाँ लगैत अछि। मुदा हम चाहैत छी अहाँ स्वतन्त्र पढ़ू।”

रेणुका चश्मा बदललीह। “पहिल अक्षर ‘म’ पर हमरा संशय कम। अगिला आ-कार। तेसर... ई ‘ध’ भऽ सकैत अछि। फेर ‘वी’?”

मृणालिनी साँस छोड़लक, मुदा लिखलक—‘रेणुका: सम्भव पाठ माधवी; स्वतन्त्र पूर्ण पुष्टि नहि।’

“तोरा खुशी नहि भेल?” रेणुका पूछलीह।

“भेल। एहि कारण अधिक सावधानी चाही।”

रेणुका मुस्कराइलीह। “ठीक।”

दोसरी छविमे तिथि छल। अंकसभक रूप पुरान पन्नासभ सँ मिलान कएल गेल। पर्ची पर तिथि स्पष्ट होए लगल—“२१.९.१९३४।” बीचक बिन्दु स्याहीक, न कागजक दाग—ई मृणालिनी अलग उजासमे देखल छविसँ जाँचलक।

“तिथि लिखू, मुदा ‘पढ़ल रूप’ कहि,” रेणुका कहलीह। “कागज स्वयं कैलेंडर नहि बुझबैत।”

“२१.९.१९३४—पर्ची पर पढ़ल अंक।”

“नीक।”

आब मुख्य वाक्य। तिरहुता पाँति तीन छल। किछु अक्षर स्पष्ट, किछु तहमे दबि हलुक। मृणालिनी हेमलताक अभ्यास-पोथीक अक्षर-रूप कातमे खोलने छल।

पहिल पाँति रेणुका धीरे-धीरे पढ़लीह। मृणालिनी दोहराइत गेल। दू ठाम दूनूक पाठ अलग भेल; ओ दुनू सम्भावना लिखलक।

दोसरी पाँति पर एक शब्द स्पष्ट—‘नाँव’। तेसरी पर ‘खाली’ आ ‘नहि’ जकाँ रूप।

करीब आधा घंटाक तुलना बाद एक सम्भावित पाठ बनल। मृणालिनी देवनागरीमे अस्थायी रूप लिखलक, फेर रेणुका केँ पढ़ि सुनौलनि:

“हम माधवी। २१.९.१९३४। जकर हाथ, जकर अनुभव, जकर कहब सँ जे बात एहि पोथीमे लिखल जाए, ओहि बातक कात ओकर नाँव रहय। नाँव नहि जानल तँ ठाम खाली रहय; दोसरक नाँव नहि धरू।”

स्क्रीनक ओहि पार रेणुका चुप रहलि।

मृणालिनी तुरन्त जोड़लक, “ई पूर्ण निश्चित प्रतिलिपि नहि। ‘हाथ’ शब्दपर एक वैकल्पिक पाठ अछि; ‘ठाम खाली’क बीचक एक अक्षर अस्पष्ट।”

रेणुका माथ हिलेलनि। “अर्थ बदलैत अछि?”

“मुख्य भाव नहि। मुदा प्रकाशनमे मूल छवि, तिरहुता पाठ, अनिश्चित अक्षर आ देवनागरी पाठ अलग-अलग देब।”

रेणुका धीरे कहलीह, “एखन कहि सकैत छह—माधवीक नाँव भेटल?”

मृणालिनी पर्चीक पहिल पाँति फेर देखलक।

“एहि पर्ची पर ‘माधवी’ पढ़ल जा रहल अछि। हेमलताक प्रतिलिपिमे माधवीक नाँव स्रोत रूपमे अछि। दूनू एक-दोसराकेँ बल दैत अछि। हँ—एखन प्रमाण बहुत मजबूत अछि।”

रेणुका पूछलीह, “माधवीक हस्ताक्षर?”

“‘हम माधवी’ आत्म-पहिचान अछि। मुदा हस्तलिपि तुलना लेल माधवीक दोसर निश्चित नमूना एखनहुँ कम अछि। ‘हस्ताक्षर’ शब्द सावधानीसँ उपयोग करब।”

“तोरा संग बहस कठिन अछि।”

“अहाँ सिखेलहुँ।”

रेणुका हँसि पड़लीह।

किछु देर बाद मृणालिनीक आँखि नम भेल। ओ फोनक कैमरा बन्द नहि कएलक, न भाव छिपेबाक चेष्टा।

“की भेल?” रेणुका पूछलीह।

“एतेक पन्ना—” ओ रुकि गेल। “एतेक दिन हम एक नाँव खोजैत रही। आब नाँव भेटला पर लगैत अछि, खोज समाप्त नहि, जिम्मेदारी शुरू भेल।”

रेणुका कहलीह, “नाँव भेटनाइ मनुख भेटनाइ नहि।”

“जानैत छी।”

“आ एक पर्ची सँ पूरा जीवन नहि खुलत।”

“जानैत छी।”

“तखन रोड। इतिहासकारो रोड सकैत अछि, बस आँसू केँ प्रमाण मत बनाउ।”

मृणालिनी हँसैत आँखि पोंछलक।

छोट पर्ची स्क्रीनपर पैघ कऽ देखाओल छल। कागजक रेशा, तहक रेखा, स्याहीक टूटल बिन्दु—सभ।

नाँव स्पष्ट होइत गेल छल।

माधवी एखन केवल अनुमानित नाँव नहि रहलीह; कम-से-कम एहि पर्वी पर ओ स्वयं अपन नाँव लिखने व्यक्ति रूपमे सोझाँ आबि रहल छलीह।

**

रेणुका संग बात समाप्त भेला बाद मृणालिनी पर्वीक पाछाँक देवनागरी लिखाइ पर आयल। एहि भागक स्याही सोझाँक तिरहुता सँ गाढ़ भूर-करी छल, आ कलमक नोक सेहो कनी मोट।

ओ देवकान्तक प्रमाणित तीन नमूना खोललक—कलकत्ताक सम्पादक केँ पठाओल चिट्ठीक प्रति, पोथीक मुख्य देवनागरी पन्ना, आ परिवारक पुरान हिसाबक एक कागज जाहिपर देवकान्तक नाँव नीचे छल।

शशिभूषणक पुरान बात मोन पड़ल—देवकान्तक ‘क’ ऊपर सँ कनी टूटल रहैत छल।

मृणालिनी तुलना कएलक। पाछाँक पाँतिमे ‘क’ सचमुच ऊपर सँ अपूर्ण, ‘न’क अन्तिम घुमाव मुख्य हाथसँ मिलैत, आ ‘ध’क पेट कनी दबायल।

ओ एखनहुँ ‘देवकान्त’ निश्चित नहि लिखलक। नोट बनौलक—‘मुख्य हाथसँ मजबूत साम्य; स्वतन्त्र हस्तलिपि-जाँच शेष।’

पाँति स्वयं छोट छल। स्याही एक ठाम फैलल। ओकर सम्भावित पाठ:

“माधवीक नाँव जतेक ठाम छूटल, फेर धरबाक अछि।”

अन्तिम ‘अछि’ पूरा नहि; केवल ‘अ...’ जकाँ, कागजक कोन घिसायल।

मृणालिनी वाक्य फेर पढ़लक।

ई क्षमायाचना नहि छल। प्रेमक घोषणा नहि। अपराधक पूर्ण स्वीकारोक्ति नहि। केवल सम्पादकीय स्मरण जकाँ एक पाँति—नाँव जतेक ठाम छूटल, फेर धरबाक अछि।

तथापि पाँति भारी छल।

जँ ई देवकान्तक हाथक अछि, तखन ओ कखनो बुझने छलाह जे नाँव छूटल अछि। ‘फेर’ शब्द संकेत करैत छल जे नाँव कखनो छल, फेर गायब भेल, फेर जोड़बाक इच्छा भेल।

मृणालिनी अपनैँ कैँ रोकलक। ‘फेर’क अर्थो अनेक भऽ सकैत। ओ नोटमे लिखलक—
‘पछतावाक सम्भावित संकेत; निश्चित आत्मस्वीकार नहि।’

ईशान साँझि आएल। मृणालिनी ओकरा पर्ची देखेलक।

ओ बहुत देर चुप रहल। “तँ दादा—”

“देवकान्त।”

“ठीक। देवकान्त कदाचित—”

मृणालिनी आँखि उठेलक।

ईशान स्वयं सुधरल। “देवकान्तक मुख्य हाथसँ मेल खाइत बादक टिप्पणी सम्भवतः
नाँव फेर जोड़बाक काजक संकेत दैत अछि।”

“नीक।”

ईशान हँसल नहि। “तूँ हमरा प्रशिक्षण देलह।”

“पोथी देलक।”

शशिभूषण सेहो आएलाह। मृणालिनी पहिने माधवीक पर्ची पढ़ि सुनौलक, अनिश्चित
अक्षर सहित। तकर बाद पाछाँक टिप्पणी।

शशिभूषणक आँखि पर्चीपर टिकि गेल। बहुत देर बाद कहला, “तखन देवकान्त भूल
बुझने छलाह?”

मृणालिनी उत्तर देलक, “सम्भवतः। ई पाँति ओहि दिशामे बलवान संकेत अछि। मुदा
की-कतेक सुधार वास्तवमे कएलनि, से अलग प्रश्न।”

“सुधार-पत्र तऽ पठौने छलाह।”

“हँ। ओ प्रमाण पहिनेसँ अछि। मुदा माधवीक पन्ना पोथीक तह भीतर किएक गेल—ई
एखनहुँ नहि जानैत छी। देवकान्त रखलनि? माधवी? हेमलता? दोसर कियो? तह कखन
सीलल? उत्तर नहि।”

शशिभूषणक चेहरा पर एक विचित्र दुःख छल। “हम चाहैत रही जे या तँ ओ निर्दोष
होथि, या दोषी। बीचक मनुख अधिक कठिन होइत अछि।”

मृणालिनी धीरे कहलक, “मनुख अधिकांश बीचहि मे होइत अछि।”

“तखन किताब—पोथीमे की लिखब?”

“अपराध जहाँ प्रमाणित, ओतए अपराध। सुधारक प्रयास जहाँ प्रमाणित, ओतए से। जे नहि जानैत छी, ओकरा खाली छोड़ब।”

शशिभूषण माथ हिलेलनि।

मृणालिनी छोट पर्चीक सोझाँ-पाछाँक छवि एक्के स्क्रीनपर कात-कात राखलक।

एक कात माधवी अपन नाँव लिखैत छलीह आ कहैत छलीह—जकर ज्ञान, तकर नाँव।

दोसर कात बादक हाथ कहैत छल—माधवीक नाँव जतेक ठाम छूटल, फेर धरबाक अछि।

एके कागजपर अधिकारक दावा आ पछतावाक सम्भावित चिन्ह।

अपराध आ प्रायश्चित्त एक-दोसराकेँ रद्द नहि करैत। दोसरा पाँति पहिल पाँतिक क्षति मेटबैत नहि; पहिल पाँति दोसरा हाथक पछतावा केँ निरर्थको नहि बनबैत।

राति मृणालिनी अभिलेख-पोथीमे अलग खण्ड-जकाँ कोनो शीर्षक नहि, केवल एक पाँति लिखलक—

“अन्तिम पात: नाँव भेटल; न्याय एखन बाकी।”

तकर नीचे स्रोत-सूची:

“मूल तिरहुता पर्ची—पृष्ठ ४१-४२क भीतरक तह; पढ़ल तिथि २१.९.१९३४; ‘माधवी’ पाठ मजबूत।”

“हेमलता प्रतिलिपि—माधवी नाम सहित तिलकोर/अमट।”

“रेणुकाक मौखिक सहयोग—पाठ-सहायता; प्रत्यक्ष १९३४ स्मृति नहि।”

“पाछाँक देवनागरी टिप्पणी—देवकान्तक मुख्य हाथसँ साम्य; अन्तिम हस्तलिपि-जाँच शेष।”

ओ कलम रखि देलक।

सूखल तिलकोर-पात अलग आवरणमे छल। लिखित छोट पात अलग आवरणमे। दुनू एके पृष्ठ-सन्दर्भ सँ जुड़ल।

पहिल पात देहक—कखनो हरियर रहल, खाएल जाए सकैत, सूखि छाया छोड़ि गेल।

दोसर पात शब्दक—तहमे बन्द रहल, मुदा नाँव बचा लेलक।

मृणालिनी पोथी बन्द कएलक।

एहि बेर ओकरा लग रहस्य खुलल जकाँ नहि, उत्तरदायित्व पैघ भेल जकाँ लगल।

नाँव भेटि गेल छल।

इतिहास एखनहुँ पूरा नहि भेल छल।

अध्याय ३१ — सम्पादकक अपराध

माधवीक छोट तिरहुता पात भेटलाक तेसर दिन मृणालिनी मूल पोथी नहि, अपन कम्प्यूटर खोललक। सन्दूकक कागज, रेणुकाक ध्वनि-अभिलेख, हेमलताक अभ्यास-पोथीक छवि—सभ अलग संचिकाजे सुरक्षित छल। आब ओकर सोझाँ वएह दस्तावेज छल जकरा ओ एतेक दिन ‘प्रतिलिपि’ कहैत आबि रहल छल।

फाइलक नाँव साधारण छल—‘भानस-पोथी_पाठ_कार्यप्रति’। ओ खोललक। हजारो पाँति टंकित। खोज, तुलना, टिप्पणी, तिथि, प्रश्नचिह्न। एतेक श्रम देखिकऽ पहिने गर्व होएबाक चाही छल। मुदा ‘हम माधवी’ पर्ची भेटलाक बाद ओकरा अपन फाइल पर पहिल बेर संशय भेल।

ओ मूल पृष्ठ ४१ केर छवि कातमे खोललक। टंकित प्रति दोसर कात।

मूलमे एक वाक्य छल—‘पीठार एतेक गाढ़ जे पातपर ठहरय।’ मृणालिनीक टंकित पाठ—‘पीठार गाढ़ राखू, जाहिसँ पातपर टिकि रहय।’

अर्थ प्रायः एक। शब्द नहि।

ओ स्क्रीनपर दुनू पाँति देखैत रहल। ‘ठहरय’ केँ ‘टिकि रहय’ किएक बदलने छल? ओ स्मृति खँगाललक। कदाचित—ओ तुरन्त अपनैँ रोकलक—कदाचित पहिल दिन ओकरा ‘ठहरय’ आधुनिक पाठक लेल कनी असामान्य लगने छल।

अगिला पाँति। मूल—‘तेलक ताप आँखि नहि, पात कहत।’ टंकित—‘तेलक ताप पात छोड़िते बुझू।’

ई बदलाव केवल शब्द नहि छल। मूल पाँतिमे एक घरक बोलबाक लय छल; टंकित रूप निर्देश-पुस्तिका बनि गेल छल।

मृणालिनी कुर्सीपर सोझ बैसल।

ओ खोज-सुविधामे ‘भानस’ लिखलक। फाइलमे अनेक ठाम मूल ‘भानस’ जस-के-तस छल, मुदा पाँच ठाम ओ ‘रसोइघर’ लिखि देने छल—विशेषतः जतए वाक्यक अर्थ स्पष्ट करय चाहने छल।

‘भानसक इतिहास’ एक ठाम ‘घरक पाक-इतिहास’ बनि गेल छल।

‘अमट’ तीन ठाम कोष्ठक बिना ‘सुखायल आम’ बनल छल।

‘अदौरी’ एक आरम्भिक पृष्ठमे ‘दालिक सुखौना’ रूपमे टंकित छल।

‘पीठार’ कई ठाम ‘चाउरक घोल’ बनि गेल।

मृणालिनी धीरे-धीरे ओ सभ ठाम चिन्ह लगबैत गेल।

ओ अपनैँ सँ कहल—“हम अर्थ बुझाबय चाहने रही।”

कमरा मौन छल। उत्तर कियो नहि देलक।

ओ हेमलताक अभ्यास-पोथीक छवि खोललक। एक पाँतिमे हेमलता लिखने छलीह—
‘जतए मूलमे काटल वा धुँधलायल, ओतए से लिखब; अपनासँ साफ नहि करब।’

मृणालिनी स्क्रीनक अपन साफ पाठ दिस देखलक।

ओ केवल शब्द नहि बदलने छल। किछु ठाम काटल पाँति केँ मुख्य पाठमे नहि अनने छल, किएक तँ ओकरा लग ओ ‘बादक संशोधन’ बुझायल छल। एक ठाम पेंसिलक प्रश्नचिह्न हटा देने छल, किएक तँ ओकरा अर्थ स्पष्ट लगने छल। दू ठाम पुनरुक्ति मेटा देने छल—देवकान्त एके बात दू बेर लिखने छलाह, ओ एक बेर राखलक।

सम्पादकीय सुविधा। पाठकक सहजता। साफ पाठ।

शब्द सभ अपना बचावक लेल पंक्तिबद्ध भऽ गेल।

मृणालिनी मूल पृष्ठ फेर देखलक। देवकान्तक काटल पाँति—कारी रेखाक आर-पार एखनहुँ पढ़ाइत। माधवीक तिरहुता कात-टिप्पणी। प्रश्नचिह्न। स्याहीक दू रंग।

ओ टंकित पाठमे केवल एक सुगठित अनुच्छेद देखलक।

“हम की केलहुँ?” ओकर मुँहसँ निकलल।

बसन्ती काकी दुआरि लग आबि ठाढ़ भेलीह। “ककरा सँ बात?”

मृणालिनी चौकली। “अपनासँ।”

“तखन जवाब भेटत कठिन।”

काकी भीतर आबि स्क्रीन देखलीह। “ई सभ कागज?”

“हमर टंकित प्रति।”

“भूल?”

मृणालिनी कहलक, “भूलसँ बेसी। हम किछु शब्द पाठक लेल सहज बनौने रही।”

बसन्ती काकी कान्ह लग आँचर ठीक करैत पूछलीह, “अर्थ बदलल?”

“किछु ठाम नहि। किछु ठाम स्वर बदलल। किछु ठाम कदाचित अर्थो।”

“तँ मूल रहत?”

“अछि।”

“फेर सुधारू।”

मृणालिनी हँसि नहि सकली। “समस्या एतबे नहि। हम देवकान्तक भूल पर एतेक दिन निर्णय दैत रही—पाठक लेल सुन्दर, छोट, साफ बनबैत ओ दोसरक आवाज बदलने छलाह। हम छोट रूपमे वएह करैत रही।”

बसन्ती काकी स्क्रीनपर अक्षर नहि पढ़ि रहल छलीह; मृणालिनीक चेहरा पढ़ि रहल छलीह।

“ओ जानि-बुझि कऽ केने छलाह?”

“सभ ठाम नहि।”

“अहाँ?”

“हमरो सभ ठाम जानि-बुझि कऽ नहि।”

काकी कहलीह, “तखन भूल बुझलाक बाद की करब, ओहि सँ फरक पड़त।”

मृणालिनी स्क्रीनपर ‘रसोइघर’ शब्द चुनि फेर ‘भानस’ टंकित कएलक।

एक शब्द आपस आयल।

मुदा ओकरा बुझाइत छल—केवल शब्द आपस अनलासँ सम्पादकीय अपराध समाप्त नहि होएत। पहिने स्वीकार करय पड़त जे अपराध सम्भव छल।

**

दुपहर धरि मृणालिनी अपन प्रतिलिपि पर एक नवा जाँच शुरू कएलक। एहि बेर ओ अर्थ नहि, अन्तर खोजैत छल। मूल छवि बाम कात, टंकित पाठ दहिना कात, बीचमे अलग अभिलेख-पोथी।

पहिल श्रेणी—‘शब्द बदलल।’

दोसर—‘पाँति काटल/मेटाओल चिन्ह नहि राखल।’

तेसर—‘अनिश्चित पाठ निश्चित कएल।’

चारिम—‘दू हाथ केँ एके पाठमे मिला देल।’

पाँचम—‘मौखिक स्रोतक नाम टिप्पणीमे खिसकाओल।’

सूची बनैत गेल। प्रत्येक पाँति ओकरा अपन सम्पादकीय आत्मविश्वास पर छोट प्रहार जकाँ लगैत।

एक पृष्ठमे देवकान्तक मुख्य लिखाइ छल—‘अमट धूपमे फेर देखब।’ कातमे दोसर हाथ—‘भीजल टुकड़ा अलग।’ मृणालिनी टंकित प्रति मे दुनू मिला लिखने छल—‘अमट धूपमे फेर देखू; भीजल टुकड़ा अलग राखू।’

पाठक लेल बहुत सुन्दर निर्देश।

अभिलेख लेल बेठीक।

किएक तँ मूलमे दू हाथ छल। मृणालिनी एक आवाज बना देने छल।

ओ कागजपर लिखलक—‘स्वर-संलयन।’ शब्द लिखिते देहमे झुरझुरी उठल।

देवकान्त छपल लेखमे ‘माधवी कहल’ केँ ‘घरक स्त्रीसभ कहैत अछि’ बनौने छलाह। मृणालिनी मूल पोथीमे देवकान्त आ माधवीक दू हाथ केँ एक निरपेक्ष निर्देश बना देने छल। आकार अलग, ढाँचा एक।

ओ अपना पर कठोर होएबाक लोभ रोकलक। आत्म-दोषो कखनो प्रदर्शन बनि सकैत अछि। प्रश्न ई नहि जे ओ बेठीक सम्पादक छलीह; प्रश्न ई जे फाइलमे की बदलल अछि, आ कोना सुधारल जाए।

मृणालिनी प्रत्येक अन्तरक सोझाँ प्रमाण-श्रेणी लिखय लागल।

एक ठाम मूल शब्द अस्पष्ट छल—‘छीलि’ कि ‘चीरि’। ओ पहिने ‘चीरि’ चुनने छल, कारण भोजन-विधिमे अधिक उचित लगने छल। आब लिखलक—‘छी/ची? मूल अस्पष्ट।’

एक ठाम तिरहुता अक्षरक सम्भावित पाठ तीन रूपमे भऽ सकैत छल। ओ पहिने रेणुकाक सुझाओल रूप चुनि लेने छल। आब तीनू सम्भावना अलग राखलक।

एक ठाम देवकान्त पेंसिलसँ बादमे ‘नहि’ जोड़ने छलाह। टंकित प्रति मे ओ ‘नहि’ मुख्य वाक्यक अंग बनि गेल छल। आब मृणालिनी चिन्हित कएलक—‘पाछाँक पेंसिल-संशोधन।’

ओ बुझैत गेल—‘ठीक पाठ’ नामक एकल वस्तु कतेक बेर सम्पादक बनबैत अछि। मूल कागज पर इतिहास एक साथ रहैत अछि: पहिल लेखन, काट, सुधार, असहमति, बादक हाथ, धब्बा, खाली ठाम। पाठकक सुविधा लेल जँ एहि सभ केँ एक वाक्य बनाओल जाए, सुविधा इतिहास पर विजय पाबि लैत अछि।

ईशानक फोन आयल। “भोजनालयक नवा पर्ची देखब?”

मृणालिनी कहलक, “साँझि। एखन अपन अपराध गिनैत छी।”

“की?”

“हमर प्रतिलिपि।”

“तूँ फेर नाटक—” ईशान रुकल। “ठीक, की भेटल?”

मृणालिनी दू उदाहरण सुनौलक।

ईशान कहलक, “मुदा पाठक केँ बुझय योग्य बनबो तऽ पड़त।”

“हँ। मुदा मूल पाठ बदलि कऽ नहि। व्याख्या अलग देल जा सकैत अछि।”

“तूँ चाहैत छह तीन-तीन पाठ?”

“कदाचित। मूल छवि, जस-के-तस प्रतिलिपि, फेर पढ़बाक सुविधा लेल व्याख्यायुक्त पाठ।”

ईशान हँसल। “एक पन्ना भोजनक, चार पन्ना सम्पादनक।”

“जतए जरूरी।”

“पुस्तक कियो पढ़त?”

“जँ छोट करबाक शर्त आवाज मेटेनाइ अछि, कम पाठक चलत।”

ईशान किछु क्षण मौन रहल। “एखन बुझाइत अछि तोरा प्रकाशक किएक पसिन नहि करत।”

“प्रकाशक केँ समझौता प्रस्ताव देब। सत्य केँ नहि।”

फोन रखला बाद मृणालिनी फेर फाइल दिस घुरली।

एहि बेर ओकरा एक बहुत छोट बदलाव भेटल। मूलमे माधवीक सम्भावित टिप्पणी—
'एहि घरमे'। टंकित पाठ—'मिथिलामे'।

मृणालिनीक हाथ रुकि गेल।

ई तऽ वएह भूल छल जकरा ओ आरम्भसँ रोकैत आबि रहल छल—एक घरक अनुभव
कैँ पूरा मिथिला बनाउ।

ओ खोजलक ई बदलाव कोना आयल। पहिल आरम्भिक प्रतिलिपिमे 'एहि घरमे' छल।
दोसर संशोधित फाइलमे 'मिथिलामे'। कातमे ओकर अपन टिप्पणी—'पाठकक प्रसंग'।

ओ कुर्सी सँ उठि खिड़की लग गेल।

बाहर आँगनमे तिलकोरक बेलक दू नवा पात हवा मे हिलि रहल छल। कियो घोषणा
नहि करैत छल जे ई पूरा मिथिलाक पात अछि। ई एहि आँगनक पात छल—आ अपन
विशिष्टतामे मिथिलाक हिस्सा।

मृणालिनी आपस बैसल। 'मिथिलामे' काटि 'एहि घरमे' लिखलक।

तकर बाद अभिलेख-पोथीमे मोट अक्षरमे लिखलक—'पाठकक सुविधा स्रोतक सीमा
बदलबाक अनुमति नहि।'

ओहि पाँतिक नीचे दोसर वाक्य—'सम्पादकक अपराध अक्सर सुविधा नामे प्रवेश करैत
अछि।'

साँझि मृणालिनी नवा सम्पादन-नीतिक पहिल खसड़ा बनौलक। ओ एकरा नियम-
पुस्तिका नहि, उत्तरदायित्वक सूची कहलक।

पहिल नियम—मूल पृष्ठक छवि जहाँ सम्भव, प्रकाशित रूपमे उपलब्ध रहत। पाठक
आँखिसँ देखथि जे स्याही कतए बदलल, पाँति कतए काटल, पृष्ठ कतए धुँधलायल।

दोसर—'कूटस्थ प्रतिलिपि': मूल शब्द, वर्तनी, पाँति-विभाजन, काटल पाठ, जोड़ल
शब्द, प्रश्नचिह्न—जतेक देखाइत अछि, ओतेक। जँ अक्षर नहि पढ़ाइत, कोष्ठकमे
अनिश्चितता। अपन अनुमान मुख्य पाठमे नहि।

तेसर—'पाठ-सहायक रूप': आधुनिक पाठक लेल देवनागरी रूप, कठिन शब्दक अर्थ,
तिरहुता पाठक लिप्यन्तरण, किन्तु प्रत्येक बदलाव स्पष्ट चिन्हित।

चारिम—हाथ अलग। मुख्य हाथ, किनारक दोसर हाथ, पाछाँक पेंसिल, बादक स्याही—सभ केँ हाथ-१, हाथ-२, हाथ-३ कहि अस्थायी चिन्ह देल जा सकैत अछि; जे ठाम नाम प्रमाणित, ओतए नाम। जे ठाम नहि, ओतए ‘अज्ञात हाथ’।

पाँचम—मौखिक स्मृति लिखित पाठमे चुपचाप नहि मिलत। रेणुकाक स्मृति, बसन्ती काकीक कहब, परिवारक कथा—सभ अलग स्रोत-श्रेणी।

छठम—भोजन-विधि वर्तमानमे जँ फेर बनाओल जाए, नवा रसोइघरक परिवर्तन मूल १९३४ विधिमे नहि घुसत। आधुनिक पुनर्रचना अलग खण्ड।

सातम—स्वास्थ्य सम्बन्धी लोक-कहब स्पष्ट रूपसँ लोक-कहब। चिकित्सकीय दावा नहि। कुर्थीक पाँति एकर पहिल उदाहरण।

आठम—जे शब्दक स्थानीय रूप अछि, ओकरा हटाओल नहि जाए। ‘अमट’, ‘अदौरी’, ‘पीठार’, ‘बगिया’, ‘भानस’, ‘तिलकोर’—पहिने मूल शब्द; आवश्यकता पर अर्थ-पट्टी अलग।

नवम—काटल पाँति गायब नहि। जँ देवकान्त किछु काटने छथि, पाठक केँ कटाव देखबाक अधिकार अछि। जँ माधवी कातमे असहमति लिखने छलीह, ओ मुख्य इतिहासक भाग।

दसम—सम्पादक अपन संशोधनक तिथि राखत। फाइल बदलल, तखन पुरान रूप सुरक्षित। ‘पहिल बेरहि सभ ठीक छल’ जकाँ झूठ नहि।

मृणालिनी दस नियम पढ़लक। ओकरा हेमलताक अभ्यास-पोथी याद आयल—बच्चाक टेढ़ अक्षर बचाउ, बगलमे ठीक रूप। प्रायः शताब्दी बाद वएह साधारण शिक्षा डिजिटल सम्पादनक नीति बनि रहल छल।

ओ नियमक ऊपर शीर्षक लिखलक—‘मूल पाठ अलग, व्याख्या अलग।’

ईशान साँझि भोजनालय सँ सीधे आयल। हाथमे नवा पर्चीसभ। मृणालिनी ओकरा अपन नियम देखेलक।

ईशान पाँचम नियम पढ़ि कहलक, “तूँ भोजनालयक वेबसाइटो शोध-पत्र बना देब।”

“अंकीय पृष्ठ। आ सभ नियम भोजनालय पर लागू नहि।”

“कुन-कुन?”

“स्रोतक नाम, स्वास्थ्य-दाबी, घर-विशेषक सीमा, वर्तमान पुनर्रचना अलग—ई सभ लागू।”

ईशान नवा कुर्थी-पर्ची मेजपर रखलक। आब लिखल छल—‘कुर्थी दालि — परिवारक पुरान भानस-पोथीमे जानकीक लोक-कहब संग दर्ज। स्वास्थ्य सम्बन्धी पाँति लोक-मान्यता, चिकित्सकीय परामर्श नहि।’

मृणालिनी पढ़लक। “बेसी नीक।”

“बेसी?”

“‘पुरान भानस-पोथी’ ठीक। ‘जानकीक लोक-कहब’ ठीक। स्रोत-जाँचक अंकीय कड़ी जोड़ू।”

“फेर काज।”

“हँ।”

ईशान हँसि कुर्सीपर बैसल। “तोहर नियम पढ़ि एक बात बुझलहुँ। हम भोजन बदलैत छी, मुदा बदलल अछि से कहि सकैत छी। समस्या तखन जे ‘पुरान’ कहि नवा वस्तु बेचू।”

मृणालिनी ओकरा देखलक। “एहि वाक्य केँ बचा कऽ राख।”

“नाँव सहित?”

“हँ, ईशान।”

दूनू हँसि पड़ल।

मृणालिनी अपन फाइलक पहिल पृष्ठपर लाल अक्षर नहि, साधारण कारी अक्षरमे चेतावनी जोड़लक—‘ई कार्य-प्रतिलिपि पूर्वमे सम्पादकीय सामान्यीकरण सँ प्रभावित छल। संशोधित संस्करण मूल छवि सँ पुनः तुलना कएल जा रहल अछि।’

ओ चाहैत तऽ पुरान भूलयुक्त फाइल मेटा सकैत छल। नहि मेटेलक। नाँव बदललक—‘पूर्व-सम्पादन_सुरक्षित’।

नवा फाइल—‘मूल-आधारित_द्विस्तरीय-पाठ’।

पहिल सुधार तिलकोर-पन्ना सँ शुरू भेल।

मुख्य हाथक पाँति अलग। माधवीक सम्भावित किनार-पाठ अलग। हेमलताक प्रतिलिपि अलग साक्ष्य। अन्तिम पात अलग दस्तावेज।

एक पृष्ठ तीन-चारि आवाजमे खुलल।

पाठ जटिल भेल।

इतिहास कनी अधिक सत्य।

**

दू दिन बाद परिवारक बैठक फेर दालानमे भेल। एहि बेर मेजपर प्रकाशकक चमकदार आवरण नहि छल। मूल पोथी बन्द आवरणमे, हेमलताक छविसभ, माधवीक छोट पातक प्रतिलिपि, आ मृणालिनीक सम्पादन-नीति।

शशिभूषण, ईशान, बसन्ती काकी आ मृणालिनी बैसल। मृणालिनी पहिने स्पष्ट कहलक—“आइ निर्णय पुस्तक छपेबाक नहि। पहिने हम की जानैत छी आ की नहि, से एक मतसँ दर्ज करब।”

शशिभूषण कहला, “ठीक।”

मृणालिनी पहिल कागज खोललक। “एक—मुख्य पोथीक बहुत भाग देवकान्तक हाथक। ई मजबूत।”

दोसर—“किनारक तिरहुता लेखनमे कम-से-कम किछु अंश माधवीसँ जुड़ल होएबाक मजबूत प्रमाण, मुदा सभ किनारक हाथ माधवीक अछि—एखन नहि।”

तेसर—“हेमलताक अभ्यास-पोथीमे माधवीक नाँव सहित तिलकोर, अमट आ श्रेय-सम्बन्धी टिप्पणी। रेणुका हेमलताक हाथ पहचानैत छथि; तिथि-पुष्टि आ किछु पृष्ठक भौतिक जाँच बाकी।”

चारिम—“अन्तिम पात पर ‘हम माधवी’ पाठ मजबूत; पढ़ल तिथि २१.९.१९३४। मूल तिरहुता पाठमे किछु अक्षर अनिश्चित, से प्रकाशित रूपमे चिन्हित रहत।”

पाँचम—“पाछाँक देवनागरी टिप्पणी देवकान्तक मुख्य हाथसँ मिलैत बुझाइत अछि; स्वतन्त्र हस्तलिपि-जाँच बाकी। तकर आशय माधवीक छूटल नाँव फेर धरबाक दिस अछि।”

छठम—“देवकान्तक छपल लेखमे स्रोत-संक्षेप, माधवीक नाँवक अनुपस्थिति, कुर्थी लोक-कहबक अधिक निश्चित रूप—ई सभ दस्तावेजित समस्या।”

सातम—“सुधार-पत्रक प्रमाण बतबैत अछि जे देवकान्त कम-से-कम किछु भूल सुधारबाक काज शुरू केने छलाह।”

शशिभूषण चुपचाप सुनैत रहलाह।

मृणालिनी आठम पृष्ठ खोललक। “आ आठम—हमर अपन भूल। टंकित प्रतिलिपिमे हम किछु मूल शब्द सामान्य कऽ देने रही, दू हाथ मिला देने रही, अनिश्चित पाठ साफ बना देने रही। आब ई सभ अलग कएल जा रहल अछि।”

ईशान मृणालिनी दिस देखलक। बसन्ती काकी शांत छलीह।

शशिभूषण पहिल बेर माथ उठौलनि। “ई सभ कहब जरूरी?”

“हँ।”

“पुस्तकमे सेहो?”

“सम्पादकीय टिप्पणीमे। नहि तँ पाठक बुझत जे हम निष्पक्ष काँच जकाँ मूल पाठ पहुँचा रहल छी। सम्पादक सेहो चयन करैत अछि।”

शशिभूषणक मुखपर असहमति नहि, थकान छल। “तखन ककरो नाँव साफ नहि बाँचत।”

मृणालिनी कहलक, “साफ नाँव चाही, साफ मूर्ति नहि।”

कमरा फेर मौन।

ईशान धीमे कहलक, “प्रकाशक केँ की कहब?”

“कार्य-शीर्षक बदलत। एकल लेखकक दाबी एखन नहि। बहुस्तरीय श्रेय।”

“शब्द?”

“अगिला बैठकमे प्रमाण अनुसार तय करब। कदाचित—” मृणालिनी रुकली, फेर सुधारल—“कदाचित ‘देवकान्तक संकलन, माधवीक लेखन/ज्ञान-स्रोत सहित’ जकाँ किछु; मुदा ‘लेखन’क सीमा पहिले हस्तलिपि-जाँच बाद।”

शशिभूषण मूल पोथीक आवरण पर हाथ रखलनि।

“हम बचपन सँ सुनैत आयल जे ई देवकान्तक पोथी,” ओ कहला। “बाबूजी सेहो वएह कहैत छलाह। हमरा लग ई घरक गौरव छल।”

मृणालिनी किछु नहि कहलक।

“पहिने हमरा लगैत छल तूँ देवकान्त केँ छोट करय चाहैत छह।”

“हम—”

शशिभूषण हाथ उठा रोकलनि। “नहि, सुन। आब बुझैत छी, जँ माधवीक नाँव जोड़ल जाए तँ देवकान्त छोट नहि भऽ जाएताह।”

वाक्य कहि ओ बहुत देर पोथी दिस देखैत रहलाह।

बसन्ती काकी धीरे कहलीह, “जकर नाँव अपन अछि, ओकरा देलासँ दोसरक नाँव घटैत नहि।”

ईशान कहलक, “कखनो बाजारक आवरण छोट पड़ि सकैत अछि, बस।”

सभक चेहरापर हलुक हँसी आयल। तनाव पहिल बेर कनी ढील भेल।

मृणालिनी शशिभूषण सँ पूछलक, “तखन प्रकाशकक पुरान आवरण अस्वीकार?”

“हँ।”

“लेखकत्व-जाँच पूरा होए धरि एकल नाम नहि?”

“हँ।”

“माधवीक नाँव मुख्य श्रेय-ढाँचामे?”

शशिभूषण कनी रुकलाह। “जतेक प्रमाण अछि, ओतेक। कम नहि, बेसी नहि।”

मृणालिनी मुस्करायल। “एतबे चाही।”

ईशान पूछलक, “आ हेमलता?”

“प्रतिलिपिकार आ स्वतन्त्र साक्ष्य रूपमे स्पष्ट श्रेय,” मृणालिनी कहलक।

“जानकी, नसीमा, रमानन्द?”

“स्रोत-सूचीमे नहि मात्र—जतए हुनकर ज्ञान पाठ बनबैत अछि, ओतए पाठक सोझाँ नाँव।”

बसन्ती काकी कहलीह, “तखन पुस्तक मोट होएत।”

मृणालिनी हँसल। “होएत।”

“उठेबाक काज पाठकक।”

सभ हँसि पड़ल।

बैठक समाप्त होए लगल। मृणालिनी कागज समेटैत छल कि शशिभूषण फेर कहला,
“एक बात आरो।”

“की?”

“तोहर अपन भूलयुक्त पुरान प्रतिलिपि मेटेब नहि।”

मृणालिनी ठमकल।

“किएक?”

“तूँ कहैत छह ने, भूल मेटा देलासँ अगिला लोक मानत पहिल बेरहि सभ ठीक छल।”

मृणालिनी ओकरा देखलक। ई हेमलताक नियम आब शशिभूषणक मुँहसँ घुरि आयल
छल।

“नहि मेटाएब,” ओ कहलक।

पोथीक अपराध केवल १९३४ केर नहि रहल। २०२६ केर सम्पादक सेहो अपना हाथक
निशान देखय सीखि रहल छल।

न्यायक अगिला चरण दोसरक भूल उजागर करब नहि, अपन चयन केँ सेहो दृश्य
बनाउब छल।

अध्याय ३२ — नाँव सहित

दू सप्ताह बाद प्रकाशन-गृहक नवा आवरण-खसड़ा आयल। एहि बेर लिफाफा खोलिते मृणालिनी पहिने शीर्षक नहि, श्रेय-पाँति देखलक।

ऊपर मोट अक्षरमे केवल—“मिथिला भानस-पोथी”।

तकर नीचाँ छोट मुदा स्पष्ट पाँति—“देवकान्तक संकलन आ मुख्य लेखन · माधवीक प्रमाणित लेखन आ मौखिक ज्ञान-स्रोत सहित”।

अगिला पृष्ठक श्रेय-ढाँचा अलग छल—“हेमलताक प्रतिलिपि-साक्ष्य; जानकी, नसीमा, रमानन्द आ अन्य नामित स्रोत; आलोचनात्मक सम्पादन—मृणालिनी।”

मृणालिनी बहुत देर कागज देखैत रहल। ई अन्तिम शब्दावली नहि छल; प्रकाशक स्वयं ऊपर लिखने छल—‘हस्तलिपि-जाँच आ परिवारक अन्तिम सहमति अनुसार संशोधन सम्भव।’

शशिभूषण ओसारमे आएलाह। “एहि बेर देवकान्तक नाँव हटि गेल?”

“हटल नहि। स्थान बदलल।”

“मुखपृष्ठक बीचमे नहि।”

“कारण पोथी एकल लेखकक प्रमाणित कृति नहि।”

शशिभूषण खसड़ा हाथमे लेलनि। पहिल बेर हुनका चेहरापर पुरान चोट जकाँ किछु नहि आयल। ओ धीरे पढ़लनि—“देवकान्तक संकलन आ मुख्य लेखन...”

“ई कम नहि,” मृणालिनी कहलक।

“नहि।”

ओ दोसर पाँति पढ़लनि—“माधवीक प्रमाणित लेखन आ मौखिक ज्ञान-स्रोत सहित।”

शशिभूषण पूछलनि, “प्रमाणित लेखन कतेक?”

“अन्तिम पात निश्चित रूपसँ ओकर आत्म-पहिचान सहित अछि। हेमलताक प्रतिलिपि तिलकोर, अमट आ श्रेय-वाक्य माधवीक नाँवसँ जोड़ैत अछि। मूल पोथीक सभ तिरहुता किनार-लिखाइ एखन ओकर नामे नहि देब।”

“तखन पाँतिमे ‘प्रमाणित’ शब्द उचित।”

“एखन धरि।”

ईशान भोजनालयसँ सीधे आबि पहुँचि गेल। हाथमे नवा भोजन-सूची आ कुर्थीक पर्ची। आवरण देखते कहलक, “अन्ततः नाम बदलि गेल।”

मृणालिनी कहलक, “नाम नहि, दाबी बदलल।”

ईशान खसड़ा पढ़लक। “हमरा एक बात खटक रहल अछि। जानकी, नसीमा, रमानन्द केवल भीतरक पृष्ठपर किएक?”

मृणालिनी ओकरा देखलक। “ठीक प्रश्न।”

शशिभूषण कहला, “मुखपृष्ठपर सभ नाँव अँटत नहि।”

“अँटब जरूरी नहि,” मृणालिनी कहलक। “मुदा आरम्भिक श्रेय-पृष्ठ पाठकक सोझाँ रहत। स्रोत-सूची अन्तमे लुकाओल नहि जाएत।”

ईशान कहलक, “तँ एक पूरा पृष्ठ—‘एहि पोथीक आवाजसभ’?”

मृणालिनीक चेहरा चमकल। “हँ। जकर प्रमाण जतेक, ओतेक। कियो ‘सहायक’ कहि छोट नहि।”

शशिभूषण कनी सोचि कहला, “देवकान्तक पाछाँक टिप्पणी सेहो छपत?”

“छपत। मूल छवि, सम्भावित पाठ, आ स्पष्ट टिप्पणी—ई देवकान्तक मुख्य हाथसँ मेल खाइत अछि, मुदा अन्तिम स्वतन्त्र हस्तलिपि-जाँच शेष। ओकरा क्षमायाचना कहि निश्चित नहि करब।”

“माधवीक पात?”

“मूल तिरहुता छवि, कूटस्थ प्रतिलिपि, देवनागरी पाठ, अनिश्चित अक्षरसभ चिन्हित। ओकर पाछाँक टिप्पणी अलग।”

ईशान हँसि कहलक, “एहि पोथी केँ पढ़बाक लेल पाठक केँ पोथी संग प्रशिक्षण चाही।”

“पाठक मूर्ख नहि,” मृणालिनी कहलक। “ओकरा अनिश्चितता देखाओल जा सकैत अछि।”

प्रकाशक संग अंकीय बैठक साँझि भेल। अनिरुद्ध सेन खसड़ाक स्क्रीन खोलि पूछलनि, “बिक्रीक दृष्टिसँ मुख्य नाम एखनहुँ देवकान्त रहथि तँ सहज होएत। मुदा परिवारक निर्णय हम मानैत छी। एक प्रश्न—‘माधवीक लेखन’ पर कानूनी अनुमति?”

मृणालिनी कहलक, “कानूनी अधिकारक अन्तिम मत विशेषज्ञसँ लेब। एखन सम्पादकीय श्रेयक भाषा पर बात अछि। परिवारक कागजक भौतिक स्वामित्व एक बात, माधवीक लेखकत्वक नैतिक श्रेय दोसर।”

अनिरुद्ध माथ हिलौलनि। “तखन पुस्तक-विमोचनक तिथि एखन नहि?”

“हस्तलिपि-जाँच, स्रोत-पृष्ठ आ सम्पादकीय टिप्पणी पूरा भेला बाद।”

ईशान फुसफुसायल, “प्रकाशक हमरा घृणा करय लगत।”

अनिरुद्ध सुनि हँसि पड़लाह। “प्रकाशक समयसँ घृणा करैत अछि, प्रमाणसँ नहि। बस समय बताउ।”

बैठकक अन्तमे कार्य-शीर्षक स्वीकृत भेल—एकल लेखकविहीन मुख्य शीर्षक, बहुस्तरीय श्रेय, अनिश्चितता सहित।

मृणालिनी फाइल बन्द करबाक पहिने पहिल आवरण-खसड़ा खोललक—“देवकान्तक मिथिला भानस।” तकर बगलमे नवा—“मिथिला भानस-पोथी।”

पहिल आवरण अधिक चमकदार छल। दोसर अधिक साँच।

ओ पहिल खसड़ा मेटेलक नहि। ‘अस्वीकृत प्रारम्भिक आवरण’ नामे सुरक्षित कएलक।

इतिहासक भूल सेहो इतिहासक भाग छल।

✱

ईशानक भोजनालयमे एक सप्ताह बाद नवा भोजन-सूची चलनमे आयल। पुरान कुर्थी-पर्ची काँचक भीतर प्रदर्शन लेल नहि, अभिलेखक संचिकाजे राखल गेल—‘पहिल नमूना, चिकित्सकीय दावा हटाओल गेल।’ ग्राहकक मेजपर आब छोट पाँति छल:

“कुर्थी दालि — एहि परिवारक पुरान भानस-पोथीमे जानकीक लोक-कहब संग दर्ज। स्वास्थ्य सम्बन्धी पाँति लोक-मान्यता; चिकित्सकीय परामर्श नहि।”

कातमे क्यूआर संकेत। ओ खोलला पर मूल पृष्ठक छवि नहि, पहिने छोट परिचय—
कागज नाजुक अछि; छवि अनुमति अनुसार; स्रोत-नाम आ सम्पादकीय टिप्पणी अलग।

मृणालिनी भोजनालय पहुँचल तँ ईशान ओकरा बिना अभिवादन भोजन-सूची थमा
देलक। “जाँचू।”

“हम ग्राहक छी कि परीक्षक?”

“तूँ कखनो ग्राहक मात्र नहि रहलह।”

तिलकोरक पाँति बदलल छल—“तिलकोरक तरुआ — एहि परिवारक घर-विशेषक
विधि आधार; वर्तमान रूप रसोइघरक पुनर्रचना।” नीचे—“वर्तमान दल: रीना, सरिता,
मनीषा।”

मृणालिनी पूछलक, “रीना, सरिता, मनीषासँ नाँव छापबाक अनुमति लेलह?”

ईशान मोबाइल खोलि तीनू संदेश देखेलक—“हँ, नाम देल जा सकैत अछि।”

“नीक।”

“आब प्रशंसा?”

“एकटा।”

“एकटा मात्र?”

“दाम बहुत बेसी अछि।”

ईशान हँसि पड़ल। “ई विरासत-सम्मत आलोचना नहि।”

मखानक पाँतिमे उत्पादक समूहक नाँव छल, मुदा पोखरि-स्वामित्व पर ईशान जानि-
बुझि कऽ कोनो पैघ दावा नहि केने छल। ‘आपूर्तिकर्ताक जानकारी अनुसार’ लिखल छल,
आ विस्तृत विवरणक पृष्ठपर स्रोत-तिथि।

बगियाक कात लिखल—“परिवारक भानस-पोथीक एक विधि सँ प्रेरित; वर्तमान
भरावन आ आकार रसोइघरक दल द्वारा अनुकूलित।”

मृणालिनी कहलक, “ई ‘प्रेरित’ शब्द नीक। नवा रूपकेँ पुरान मूल नहि बना रहल।”

ईशान कहलक, “तोहर नियम—‘पुरान कहि नवा नहि बेचब’—आब हमर कर्मचारी
हमरा पर प्रयोग करैत अछि।”

ओ रीना कै बजेलक।

रीना बाहर आबि कहलक, “काल्हि ईशानजी कहैत छलाह पिरुकियाक मोड़ पुरान घरक वएह ढंगक। हम पूछलियनि—प्रमाण?”

मृणालिनी हँसि पड़ल। ईशान माथ पकड़ि लेलक।

“तखन?”

रीना कहलक, “हम लिखलहुँ—‘घरक स्मृति सँ प्रेरित वर्तमान मोड़।’”

“बहुत नीक।”

ईशान कहलक, “सम्पादकीय रोग फैलि गेल।”

मृणालिनी उत्तर देलक, “जँ रोगक लक्षण नाँव बचेनाइ अछि, ठीक अछि।”

दुपहरक भीड़ शुरू होएबाक पहिने एक वृद्ध ग्राहक आबि कुर्थीक पाँति पढ़लनि। ओ ईशानसँ पूछलनि, “ई पथरी सम्बन्धी बात किएक हटेलहुँ? हमरा घरमे सेहो कहल जाइत छल।”

ईशान कहलक, “कहब हटाओल नहि। निश्चित दावा हटाओल। अहाँ चाही तँ अपन घरक कहब हमरा लिखि दिअ; ओकरा अलग मौखिक स्मृति रूपमे रखब।”

मृणालिनी दूर सँ सुनैत रहल।

ग्राहक कहला, “हमर माय कहैत छलीह—जाड़मे कुर्थी देह गरम राखैत।”

ईशान पूछलक, “अहाँ चाहैत छी हुनकर नाँव संग दर्ज हो?”

वृद्ध किछु बेर सोचलनि। “हँ। नाम—सुभद्रा देवी।”

ईशान नाँव लिखलनि, तिथि, ग्राहकक नाँव, आ जोड़लनि—‘पारिवारिक मौखिक स्मृति; स्वतंत्र चिकित्सकीय प्रमाण नहि।’

मृणालिनी कै एहि छोट क्रियामे एक पूरा परिवर्तन देखायल। पहिले विपणन-दल लोकक कहब कै दावा बनबैत छल; आब भोजनालय लोकक कहब कै स्रोत सहित स्मृति बनबैत छल।

ईशान ओकरा देखिकऽ कहलक, “किछु व्यापारो सीखि सकैत अछि।”

“मनुख सीखैत अछि। व्यापार अपनै नहि।”

“ठीक। ई वाक्यो नाँव सहित?”

“मृणालिनी।”

ईशान हँसि नवा नोटमे लिखि देलक—‘मृणालिनी: मनुख सीखैत अछि; व्यापार अपनै नहि।’

“ई किएक?”

“सौ बरख बाद कियो ई हमरा कहब बना नहि दे।”

दूनु हँसि पड़ल।

रसोइघर सँ तिलकोर तलयबाक हलुक गन्ध आबि रहल छल। बाहर भोजन-सूची नवा छल; भीतर आगि, तेल, पात आ हाथक काज चलि रहल छल।

विरासत एखन केवल पुरान कागजक उद्धरण नहि, वर्तमान काजक उत्तरदायित्व बनि रहल छल।

पुरान घरक बिक्रीक कागज प्रायः पूरा भऽ गेल छल। अगिला सप्ताह चाबी नवा मालिक केँ देबाक छल। शशिभूषण बहुत दिन एहि निर्णयक विरोध केने छलाह, मुदा घरक देखभाल, मरम्मत, अलग-अलग शहरमे बसल परिवार, आ बढ़ैत खर्च अन्ततः निर्णयक पक्षमे गेल।

बसन्ती काकी कहलीह, “घर बिकत, आँगन नहि?”

ईशान पूछलक, “आँगन कोना बचत?”

काकी तिलकोरक बेल दिस देखलीह। “जकर मोनमे रहत, ओतए।”

मृणालिनी तुरन्त एहि वाक्य केँ नोट करय चाहलक, फेर रुकि गेल। काकी देखिते हँसलीह। “लिखू। ई पोथीक नहि, हमर कहब अछि।”

मृणालिनी नाँव सहित लिखलक।

अन्तिम सामूहिक भोजनक विचार ईशानक छल, मुदा बसन्ती काकी शर्त रखलीह—
“भोजनालयक मेज नहि। एहि आँगनमे पाँति नहि तऽ कम-से-कम सभ एक संग। जे बनत, घरक ढंगसँ।”

कियो भारी सूची नहि बनौलक। भात, दालि, एक-दू तरकारी, अचार, दही, तिलकोरक तरुआ, अन्तमे पिरुकिया। कुर्थी नहि—काकी कहलीह, “एहि दालिक चर्चा एतेक भऽ गेल; आइ दोसर किछु खाउ।”

ईशान हँसल। “अहाँ सेहो कुर्थीसँ थाकि गेलहुँ?”

“दालि नहि थाकल; हम थाकल छी।”

भोजन बनेबाक काज केवल बसन्ती काकी पर नहि छोड़ल गेल। रीना आ सरिता भोजनालयसँ आएलीह; ईशान भण्डार सँ सामग्री आनलक; शशिभूषण पात-पानि व्यवस्थित कएलनि; मृणालिनी तिलकोरक पात चुनय बसन्ती काकी संग गेल।

बेल पुरान देवालपर चढ़ल छल। किछु पात पैघ आ कठोर, किछु नव कोमल। मृणालिनी एक पात छूलक।

बसन्ती काकी पूछलीह, “की देखैत छह?”

“नस। कोमलता। आकार।”

“आ?”

मृणालिनी मुस्करायल। “ककर हाथ चुनलक।”

काकी कहलीह, “आब तोरा रोग पुरान भऽ गेल।”

दुनू हँसलीह।

पात चुनैत समय मृणालिनी केँ पहिल सूखल तिलकोर-पात मोन पड़ल, जे पोथीक पृष्ठ ४१-४२ बीच सँ खसल छल। ओ पात एखन अम्लरहित आवरणमे सुरक्षित छल—न खाएबाक, न छूबबाक वस्तु।

एहि बेलक पात जीवित छल।

मृणालिनी एक सुन्दर कोमल पात हाथमे लेलक। क्षणभरि मन भेल—एहि घरक अन्तिम भोजनक स्मृति रूपमे फेर पोथीमे दबा दिअ। पुरान पात जकाँ।

ओ बसन्ती काकी केँ कहलक, “एकटा पात अलग राखी?”

“किएक?”

“स्मृति लेल।”

काकी पात दिस देखलीह। “छवि लिअ। पात खाउ।”

वाक्य एतेक सहज छल जे मृणालिनी ठमकि गेल।

ओ मोबाइल निकालि पातक छवि लेलक—बेल संग, देवाल संग, काकीक हाथ संग।
केवल पात अलग पृष्ठभूमिपर नहि।

फेर ओ पात बाकी पातसभ संग भानसघरमे देलक।

रीना पीठारक गाढ़पन देखैत पूछलक, “एहि घरक पन्नामे लिखल रूप राखब कि
भोजनालयक?”

मृणालिनी कहलक, “आइ एहि घरक जतेक बसन्ती काकी मोन रखैत छथि, ओतेक।
जे नहि मोन, अनुमान नहि।”

काकी कहलीह, “आ मात्रा?”

“मापि लेब?” ईशान पूछलक।

काकी हँसलीह। “आइ मापि सकैत छी, मुदा लिखिह—आइक मात्रा। पुरान घरक
शाश्वत नियम नहि।”

ईशान माप लिखलक।

तिलकोरक तरुआ पातिल सँ निकलिते गन्ध आँगन भरि गेल। मृणालिनी ओ पात चिन्हि
नहि सकैत छल जे ओकर हाथमे छल; सभ एक संग भोजन भऽ गेल छल।

पाँति कठोर क्रममे नहि लगल। चटाई, चौकी, कुर्सी—जेकरा जतए सुविधा। बसन्ती
काकी बीचमे; शशिभूषण कात; ईशान, मृणालिनी, रीना, सरिता, घरक किछु सम्बन्धी।

पहिल तरुआ बसन्ती काकी मृणालिनी केँ देलीह। “संग्रहालय नहि।”

मृणालिनी हँसि पातक टुकड़ा तोड़लक।

स्वाद परिचित छल, मुदा ओ एहि बेर ओकरा शब्दमे पकड़बाक प्रयास नहि कएलक। न
पीठारक नाप, न तेलक ताप, न नसक उम्र।

ओ खा लेलक।

ईशान पूछलक, “नोट नहि?”

“नहि।”

“इतिहास समाप्त?”

“नहि। भोजन ठंडा होएबाक पहिने खा रहल छी।”

बसन्ती काकी प्रसन्न भऽ माथ हिलेलनि।

किछु बेर बाद पिरुकिया आयल। ईशान एक छोट पिरुकिया मृणालिनी लग राखि कहलक, “कम मिठास। कियो मोन रखने अछि।”

मृणालिनी ओकरा देखलक। “ई देवकान्त-माधवीक नकल नहि बनाउ।”

“नहि। बस तोरा बहुत मीठ पसिन नहि।”

“तखन ठीक।”

ओ पिरुकिया खएलक।

घर बिकबाक पहिने अन्तिम सामूहिक भोजन कोनो संस्कारक भव्य अन्त नहि बनल। बीचमे पानि छलकि गेल, एक कटोरी टूटल, शशिभूषण नून माँगैत रहलाह, ईशान पिरुकिया बेसी खा लेलक।

एहि अव्यवस्थामे मृणालिनी कै राहत भेटल। जीवित परम्परा संग्रहालयक सजायल कोठरी नहि होइत; ओकरा भूल, हँसी, भूख आ टूटल कटोरी सेहो चाही।

भोजनक बाद मृणालिनी तिलकोर-बेलक अन्तिम छवि फेर देखलक।

पात पोथीमे नहि गेल।

पात देहक हिस्सा बनि चुकल छल।

चाबी देबाक दिन भोरमे मृणालिनी एकसरि पुरान घर गेल। सामान प्रायः हटि चुकल छल। भित्ति पर जतए फोटो छल, ओतए उज्जर चौकोर छाप। भानसघरक चूल्हि ठंडा। ओसारक मेज नहि। सन्दूक सुरक्षित रूपसँ परिवारक नवा अभिलेख-ठाममे पहिने पठाओल जा चुकल छल।

आँगन खाली लगैत छल, मुदा पूर्ण मौन नहि। गाछपर चिरैया, बाहर सड़कक आवाज, पड़ोसीक दुआरि खुलबाक ध्वनि।

मृणालिनी तिलकोरक बेल लग गेल। नवा मालिक बेल राखत कि हटाओत, ई ओ नहि जानैत छल। ओ आग्रह करि सकैत छल, मुदा घर बेचला बाद अपन अधिकारक सीमा सेहो बूझैत छल।

ओ केवल बेलक किछु छवि लेलक। स्थान, तिथि, घरक अन्तिम हस्तान्तरण-दिन— अभिलेख लेल।

फोनमे रेणुकाक संदेश आयल—“हेमलता दीक मृत्यु-वर्षक कागज एखन नहि भेटल। खोजि रहल छी।”

मृणालिनी उत्तर देलक—“हतबड़ी नहि। नहि भेटल तँ ‘नहि भेटल’ रहत।”

तकर बाद प्रकाशकक संदेश—हस्तलिपि-जाँचक विशेषज्ञ अगिला मास उपलब्ध।

ईशानक संदेश—भोजनालयक अंकीय पृष्ठपर नवा स्रोत-सूची चढ़ि गेल।

सभ बाट खुलल छल; कोनो पूरा नहि।

मृणालिनी ओसारक सीढ़ीपर बैसि अपन अभिलेख-पोथी खोललक। अन्तिम खण्डमे माधवीक बादक जीवनक शीर्षक बनल छल, मुदा नीचे बहुत कम सामग्री:

“१९३४ — जनकपुर दिस प्रस्थान।”

“हेमलताक बादक प्रतिलिपिमे माधवीक नाँव जीवित।”

“माधवीक सम्भावित तिरहुता पात — २१.९.१९३४।”

“तकर बादक निवास, विवाह, काज, मृत्यु — प्रमाण अपर्याप्त।”

बस।

मृणालिनी केँ पहिने ई खालीपन असह्य लगैत। एखन नहि।

ओ नीचे लिखलक—“एहि ठाम जीवन-वृत्त पूरा करबाक लेल अनुमान नहि जोड़ल जाए।”

किछु बेर बाद पृष्ठ पलटल। प्रकाशनक कार्य-श्रेय:

“मिथिला भानस-पोथी।”

“देवकान्त — संकलन, मुख्य लेखन, किछु सम्पादकीय संशोधन; छपल लेख आ सुधार-पत्रक लेखक।”

“माधवी — प्रमाणित तिरहुता लेखनक कम-से-कम एक पात; अनेक विधि, वाक्य आ ज्ञान-स्रोत हेमलताक प्रतिलिपि आ देवकान्तक नोट द्वारा नामित; अन्य किनार-लिखाइक लेखकत्व जाँचाधीन।”

“हेमलता — प्रतिलिपिकार; माधवीक नामित स्रोत-परम्पराक स्वतन्त्र साक्ष्य।”

“जानकी — पारिवारिक भोजन-ज्ञान आ लोक-कहबक नामित स्रोत।”

“नसीमा — माछ-बाजार आ खरीद सम्बन्धी नामित स्रोत।”

“रमानन्द — मखानक श्रम आ पोखरि-काज सम्बन्धी नामित स्रोत।”

“अन्य नामित/अनाम स्रोत — प्रमाण अनुसार।”

तकर बाद मृणालिनी अपन नाँव लिखलक—“मृणालिनी — आलोचनात्मक सम्पादक; २०२६ केर प्रतिलिपिमे आरम्भिक सामान्यीकरणक उत्तरदायित्व सहित।”

ओ ‘उत्तरदायित्व सहित’ काटलक नहि।

एक पृष्ठ छोड़ि अन्तिम टिप्पणी लिखलक:

“ई संस्करण माधवीक पूरा जीवन आपस नहि देत। कोनो संस्करण देओ नहि सकैत। जकर प्रमाण अछि, ओकर नाँव देल जाए; जकर प्रमाण नहि, ओकर ठाम खाली रहय। खाली ठाम हार नहि—सीमा अछि।”

मृणालिनी लिखि रुकल। ‘इतिहास सुधारल जा सकैत अछि, पूरा अपना नहि सकैत’ लिखबाक मन भेल। वाक्य सुन्दर छल, कदाचित बहुत सुन्दर।

ओ लिखलनि नहि।

दुआरि बाहर शशिभूषणक आवाज आयल—नवा मालिक आबि गेल छल।

मृणालिनी उठल।

घरक चाबी शशिभूषण देलनि। औपचारिक कागज पर हस्ताक्षर भेल। नवा मालिक परिवारक लोककेँ भीतर फेर देखबाक लेल कहला, मुदा कियो बहुत देर नहि रुकल।

दुआरि पार करैत मृणालिनी पाछाँ देखलक।

ओ एहि बेर अपनैँ सँ पूछलक नहि जे माधवी १९३४ मे जनकपुरक भीड़मे पाछाँ देखने छलीह कि नहि। ओ प्रश्नक उत्तर नहि छल; एहि दृश्य पर ओकर अधिकारो नहि।

ओ वर्तमानक घर देखलक—देवाल, बेल, खाली ओसार।

तकर बाद चलि गेल।

साँझि नवा अभिलेख-ठाममे मूल पोथी खोलबाक आवश्यकता नहि छल। मृणालिनी केवल माधवीक पातक अंकीय छवि खोललक।

पहिल पाँतिक ‘हम माधवी’ स्पष्ट देखाइत छल।

ओ छविक वर्णनमे लिखलक—“व्यक्ति-नाम: माधवी। नाँव मेटायल नहि।”

फेर फाइल बन्द कएलक।

अगिला पृष्ठ एखनहुँ खाली छल।

ओकरा भरबाक कोनो हतबड़ी नहि छल।

विदेह प्रकाशन

मैथिली उपन्यास · ३२ अध्याय · चारि खण्ड

पातक भीतर लिखल नाँव

जखन पुरान घर खुजैत अछि, तखन नाम नहि—कागच बाजय लगैत अछि

मृणालिनी अपन पुश्तैनी घर बेचबासँ पहिने एकबेर बन्द कोठलीसभ खोली कागच-पत्तर, फोटो, आ नामहीन दस्तावेज सूचीबद्ध करय आयल अछि। बसन्ती काकी, जे चालीस वर्षसँ ओहि घरकें साँस देत रहलीह, प्रत्येक वस्तुक पाछाँ एकटा स्मृति छोड़ैत चलैत छथि। उपरका बन्द कोठलीमे किछु अछि जे काकी 'मोन नहि' आ 'कहब नहि' दुनूकें अलग रखैत चुप छथि। १९३४ केर मिथिलाक एकटा घटनाक डोरी २०२६ धरि आबैत अछि—आ मृणालिनी बुझाय लागैत अछि जे घरक कागचमे लिखल नाम आ पातक बीच फर्क बहुत कम अछि।

— विदेह परिवार

लेखकक विषयमे

गजेन्द्र ठाकुर — मैथिली भाषाक प्रथम पाक्षिक ई-पत्रिका विदेह (ISSN 2229-547X) क संस्थापक-सम्पादक आ विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलनक प्रवर्तक। पातक भीतर लिखल नाँव — मिथिला, स्मृति आ पारिवारिक पहचानक दार्शनिक अन्वेषण।



विदेह वेबसाइट
videha.co.in



विदेह गिटहब पृष्ठ
videha-ejournal.github.io/videha

ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

गजेन्द्र ठाकुर

"जे घरमे लिखल अछि, ओ कहियो मेटाओल नहि जा सकैत अछि।"